

Dear Friend:

Perfection is always a goal but seldom attained, and we believe that we have failed in gaining perfection in preparing this index. Because of this, we urge the users of this index to notify us of any errors they may find, and these will be corrected as soon as possible. Notify us at: mlmoser1@juno.com. Thanks.

METROPOLITAN TABERNACLE PULPIT and New Park Street Pulpit INDEX

By M. L. Moser

805 Winding Creek Trail, Red Oak, TX 75154

(972) 617-6966

mlmoser1@juno.com

GENESIS

| | | | | |
|--|---|---------|---------|----------|
| Gen. 1:1-31 | Exposition | Vol. 55 | pg. 201 | 4/22/09 |
| Gen. 1:2 | The Spirit's Work in the New Creation | Vol. 55 | pg. 109 | 3/4/09 |
| Gen. 1:4 | The First Day of Creation | Vol. 21 | pg. 493 | 8/29/75 |
| Gen. 1:1-5 | Light, Natural and Spiritual | Vol. 11 | pg. 637 | 11/12/65 |
| Gen. 1:7 | "And It Was So" | Vol. 53 | pg. 529 | 10/31/07 |
| Gen. 2:1-17 | Exposition | Vol. 57 | pg. 248 | 5/25/11 |
| Gen. 3:1-24 | Exposition | Vol. 39 | pg. 130 | 3/12/93 |
| Gen. 3:1-24 | Exposition | Vol. 50 | pg. 443 | 9/8/04 |
| Gen. 3:1 | An Antidote To Satan's Devices | Vol. 46 | pg. 613 | 12/30/00 |
| Gen. 3:8-9 | How God Comes To Man | Vol. 50 | pg. 433 | 9/8/04 |
| Gen. 3:9 | God's First Words To the First Sinner | Vol. 7 | pg. 513 | 10/6/61 |
| Gen. 3:14-15 | The Serpent's Sentence | Vol. 36 | pg. 517 | 9/21/90 |
| Gen. 3:15 | Christ The Conqueror of Satan | Vol. 22 | pg. 661 | 11/26/76 |
| Gen. 3:18 | Thorns and Thistles | Vol. 39 | pg. 121 | 3/12/93 |
| Gen. 4:6-7 | To Those Who Are Angry With Their Godly Friends | Vol. 32 | pg. 613 | 11/14/86 |
| Gen. 4:9 | Am I My Brother's Keeper? | Vol. 24 | pg. 97 | 1878 |
| Gen. 4:10 | Am I Clear of His Blood? | Vol. 8 | pg. 409 | 7/20/62 |
| Gen. 4:10 & Heb. 12:24 | The Blood of Abel and the Blood of Jesus | Vol. 12 | pg. 481 | 9/2/66 |
| Gen. 5:21 & Heb. 11:5-6 & Jude 14-15 | Enoch | Vol. 22 | pg. 433 | 7/30/76 |
| Gen. 7:1-24 | Exposition | Vol. 56 | pg. 225 | 5/5/10 |
| Gen. 7:1 | Noah's Eminence | Vol. 56 | pg. 217 | 5/5/10 |
| Gen. 7:1, 7 | A Family Sermon | Vol. 23 | pg. 61 | 1877 |
| Gen. 7:15 | The Parable of the Ark | Vol. 53 | pg. 265 | 5/30/07 |

| | | | | |
|---------------------------|--|---------|---------|----------|
| Gen. 7:16 | Shut In Or Shut Out | Vol. 27 | pg. 449 | 8/14/81 |
| Gen. 8:1-22 | Exposition | Vol. 40 | pg. 381 | 8/12/94 |
| Gen. 8:9 | The Dove's Return to the Ark | Vol. 11 | pg. 361 | 7/2/65 |
| Gen. 8:9 | The Weary Dove's Return | Vol. 40 | pg. 373 | 8/12/94 |
| Gen. 8:15-22 | Exposition | Vol. 42 | pg. 323 | 7/5/96 |
| Gen. 8:20-22 | Exposition | Vol. 51 | pg. 562 | 11/16/05 |
| Gen. 8:21 | Human Depravity and Divine Mercy | Vol. 11 | pg. 97 | 2/19/65 |
| Gen. 8:22 | The Sermon of the Seasons | Vol. 32 | pg. 157 | 3/14/86 |
| Gen. 9:8-17 | Exposition | Vol. 51 | pg. 562 | 11/16/05 |
| Gen. 9:16 | The Rainbow | Vol. 9 | pg. 361 | 6/28/63 |
| Gen. 11:31; 12:5 | Abram's Call; or, Half-way and All The Way | Vol. 34 | pg. 121 | 2/26/88 |
| Gen. 12:1-7 | Exposition | Vol. 43 | pg. 310 | 6/27/97 |
| Gen. 12:2 | Abraham's Double Blessing | Vol. 43 | pg. 301 | 6/27/97 |
| Gen. 12:5 | Effectual Calling—Illustrated By the Call of Abraham | Vol. 14 | pg. 661 | 11/29/68 |
| Gen. 14:17-24 | Exposition | Vol. 43 | pg. 310 | 6/27/97 |
| Gen. 14:17-24 | Exposition | Vol. 49 | pg. 34 | 1/18/03 |
| Gen. 14:18-20 | Jesus Meeting His Warriors | Vol. 10 | pg. 509 | 9/11/64 |
| Gen. 15:1-21 | Exposition | Vol. 49 | pg. 34 | 1/18/03 |
| Gen. 15:1 | Abraham's Great Reward | Vol. 49 | pg. 25 | 1/18/03 |
| Gen. 15:1 | Two Choice Assurances | Vol. 58 | pg. 565 | 11/28/12 |
| Gen. 15:6 | Justification by Faith — Illustrated by Abram | Vol. 14 | pg. 673 | 12/6/68 |
| Gen. 15:11 | Abram and the Ravenous Bird | Vol. 7 | pg. 577 | 11/24/61 |
| Gen. 15:11 | Driving Away the Vultures From the Sacrifice | Vol. 33 | pg. 637 | 11/27/87 |
| Gen. 15:16 | Filling Up The Measure of Iniquity | Vol. 53 | pg. 277 | 6/6/07 |
| Gen. 16:13 | Omniscience | Vol. 2 | pg. 249 | 6/15/56 |
| Gen. 16:13 | God's Overtaking Mercy | Vol. 62 | pg. 385 | 8/17/16 |
| Gen. 16:13-14 | Hagar At the Fountain | Vol. 31 | pg. 613 | 11/8/85 |
| Gen. 17:1-2 | Consecration to God—Illustrated By Abraham | Vol. 14 | pg. 685 | 12/13/68 |
| Gen. 17:1-2 | The Life, Walk, and Triumph of Faith | Vol. 18 | pg. 649 | 1872 |
| Gen. 18:17-33 | Exposition | Vol. 41 | pg. 81 | 2/17/95 |
| Gen. 19:12 | A Solemn Enquiry Concerning Our Families | Vol. 10 | pg. 657 | 11/20/64 |
| Gen. 19:12-28 | Exposition | Vol. 41 | pg. 81 | 2/17/95 |
| Gen. 19: 15 | Hastening Lot | Vol. 51 | pg. 337 | 7/13/05 |
| Gen. 19:16 | Lingers Hastened | Vol. 14 | pg. 13 | 1/12/68 |
| Gen. 19:16 | Dangerous Lingerer | Vol. 61 | pg. 121 | 3/18/15 |
| Gen. 19:17 | "Number 2,400; or, "Escape For Thy Life" | Vol. 41 | pg. 73 | 2/17/95 |
| Gen. 19:17, 19 | The Ship On Fire--A Voice of Warning | Vol. 10 | pg. 37 | 11/8/63 |
| Gen. 19:20 | Little Sins | Vol. 5 | pg. 185 | 4/17/59 |
| Gen. 19:23 | The Flight To Zoar | Vol. 45 | pg. 469 | 10/1/99 |
| Gen. 19:27-28 | The Smoke of Their Torments | Vol. 10 | pg. 669 | 11/20/64 |
| Gen. 21:16 | Compassion for Souls | Vol. 17 | pg. 73 | 2/5/71 |
| Gen. 21:19 & Lk. 24:31 | Eyes Opened | Vol. 12 | pg. 157 | 3/18/66 |
| Gen. 21:19 | A Welcome Discovery | Vol. 19 | pg. 409 | 1873 |
| Gen. 21:19 | Eyes Opened | Vol. 25 | pg. 125 | 1879 |
| Gen. 22:1-19 | Exposition | Vol. 57 | pg. 237 | 5/18/11 |
| Gen. 22:1 | Abraham's Trial: A Lesson For Believers | Vol. 37 | pg. 493 | 9/27/91 |
| Gen. 22:2 | Mature Faith — Illustrated by Abraham | Vol. 15 | pg. 241 | 5/2/69 |
| Gen. 22:8 | A Type and Its Teaching | Vol. 62 | pg. 361 | 8/3/16 |
| Gen. 22:14 | Jehovah-Jireh | Vol. 30 | pg. 541 | 10/12/84 |
| Gen. 22:15-18 | Exposition | Vol. 43 | pg. 310 | 6/27/97 |
| Gen. 24:1-16 | Exposition | Vol. 61 | pg. 237 | 5/20/15 |
| Gen. 24:5-8 | No Compromise | Vol. 34 | pg. 553 | 10/7/88 |
| Gen. 24:49 | An Urgent Request For An Immediate Answer | Vol. 37 | pg. 589 | 11/22/91 |
| Gen. 24:55 | Delay Is Dangerous | Vol. 13 | pg. 529 | 1867 |
| Gen. 26:29 | "Thou Art Now the Blessed of the Lord" | Vol. 38 | pg. 13 | 1/10/92 |
| Gen. 27:1-29 | Exposition | Vol. 61 | pg. 407 | 8/26/15 |

| | | | | |
|----------------------------------|--|---------|---------|----------|
| Gen. 27:35 | Household Sin and Sorrow | Vol. 61 | pg. 397 | 8/26/15 |
| Gen. 27:38 | Warning and Encouragement | Vol. 54 | pg. 457 | 9/24/08 |
| Gen. 28:16 | Jacob's Waking Exclamation | Vol. 7 | pg. 425 | 7/21/61 |
| Gen. 28:19; 31:3 | Four Choice Sentences | Vol. 27 | pg. 645 | 2/3/81 |
| Gen. 35:3; 48:21 | | | | |
| Gen. 31:13 | The God of Bethel | Vol. 21 | pg. 673 | 1875 |
| Gen. 32:1-32 | Exposition | Vol. 47 | pg. 382 | 8/11/01 |
| Gen. 32:1-32 | Exposition | Vol. 49 | pg. 69 | 2/8/03 |
| Gen. 32:1-32 | Exposition | Vol. 52 | pg. 141 | 3/15/06 |
| Gen. 32:1-32 | Exposition | Vol. 52 | pg. 514 | 10/18/06 |
| Gen. 32:1-2 & 2 Sam. 17:27-29 | Mahanaim, or Hosts of Angels | Vol. 26 | pg. 361 | 6/20/80 |
| Gen. 32:9-12 | Jacob's Model Prayer | Vol. 52 | pg. 505 | 10/18/06 |
| Gen. 32:10 | Humility the Friend of Prayer | Vol. 30 | pg. 349 | 6/22/84 |
| Gen. 32:11-12 | Jacob's Fear and Faith | Vol. 49 | pg. 61 | 2/8/03 |
| Gen. 32:12 | The Master-key, Opening the Gate of Heaven | Vol. 33 | pg. 1 | 1/2/87 |
| Gen. 32:28 | Power With God | Vol. 52 | pg. 121 | 3/8/06 |
| Gen. 32:29 | "He Blessed Him There" | Vol. 56 | pg. 493 | 10/13/10 |
| Gen. 33:1-12 | Exposition | Vol. 47 | pg. 382 | 8/11/01 |
| Gen. 32:22-30 | Exposition | Vol. 42 | pg. 490 | 10/11/96 |
| Gen. 33:9-11 | "I Have Enough" | Vol. 47 | pg. 373 | 8/11/01 |
| Dt. 33:25 | "As Thy Days, So Shall Thy Strength Be." | Vol. 4 | pg. 361 | 8/22/58 |
| Gen. 35:1 | Family Reformation; Or, Jacob's Second Visit To Bethel | Vol. 24 | pg. 49 | 1878 |
| Gen. 39:2 | A Miniature Portrait of Joseph | Vol. 27 | pg. 413 | 7/24/81 |
| Gen. 41:9 | Have You Forgotten Him? | Vol. 12 | pg. 145 | 3/11/66 |
| Gen. 42:1-2 | A Discourse To the Despairing | Vol. 40 | pg. 445 | 9/23/94 |
| Gen. 42:1-2 | Corn In Egypt | Vol. 5 | pg. 73 | 1/16/59 |
| Gen. 42:6 | Rough, But Friendly | Vol. 59 | pg. 529 | 11/6/13 |
| Gen. 42:21 | A New Leaf For the New Year | Vol. 42 | pg. 613 | 12/27/96 |
| Gen. 42:22 | Do Not Sin Against The Child | Vol. 14 | pg. 625 | 11/8/68 |
| Gen. 42:36 | All These Things—A Sermon With Three Texts | Vol. 14 | pg. 589 | 10/18/68 |
| Gen. 43:22 | "Do Not Sin Against The Child" | Vol. 57 | pg. 78 | 2/16/11 |
| Gen. 45:1-13 | Exposition | Vol. 43 | pg. 226 | 5/9/97 |
| Gen. 45:1-5 | Jesus and His Brethren | Vol. 43 | pg. 217 | 5/9/97 |
| Gen. 45:3-5 | Joseph and His Brethren | Vol. 8 | pg. 265 | 5/11/62 |
| Gen. 45:9-28 | Exposition | Vol. 42 | pg. 299 | 6/21/96 |
| Gen. 45:28 | Jacob and Doubting Souls—A Parallel | Vol. 42 | pg. 289 | 6/21/96 |
| Gen. 46:1-4 | The Unchanging God Cheering Jacob In His Change | Vol. 35 | pg. 637 | 12/1/89 |
| Gen. 48:15-16 | A Bit of History For Old and Young | Vol. 33 | pg. 385 | 7/10/87 |
| Gen. 49:1-28 | Exposition | Vol. 58 | pg. 165 | 4/4/12 |
| Gen. 49:1-33 | Exposition | Vol. 45 | pg. 57 | 1/29/99 |
| Gen. 49:4 | Instability | Vol. 3 | pg. 405 | 10/11/57 |
| Gen. 49:8 | Praise For Jesus | Vol. 58 | pg. 157 | 4/4/12 |
| Gen. 49:10 | Shiloh | Vol. 20 | pg. 85 | 1874 |
| Gen. 49:22 & Dt. 33:13 | By The Fountain | Vol. 35 | pg. 601 | 11/3/89 |
| Gen. 49:23-24 | Joseph Attacked By the Archers | Vol. 1 | pg. 125 | 4/1/55 |
| Gen. 49:25 | A Boundless Benediction | Vol. 43 | pg. 397 | 8/22/97 |
| Gen. 49:33 | Sermons From Saintly Death-beds | Vol. 13 | pg. 661 | 12/1/67 |

EXODUS

| | | | | |
|-----------------------------|-------------------------------|---------|---------|----------|
| Ex. 1:10-12 | Prosperity Under Persecution | Vol. 17 | pg. 349 | 1871 |
| Ex. 2:23-25 & Ex. 3:9-10 | Israel's Cry and God's Answer | Vol. 45 | pg. 337 | 7/16/99 |
| Ex. 3:1-10 | Exposition | Vol. 62 | pg. 575 | 11/30/16 |
| Ex. 3:1-14 | Exposition | Vol. 59 | pg. 69 | 2/6/13 |

| | | | | |
|---------------------------|---|---------|---------|---------------|
| Ex. 3:6& Heb. 11:16 | The Two Pivots | Vol. 45 | pg. 361 | 7/30/99 |
| Ex. 4:22-23; 6:1 | The Great Emancipator | Vol. 24 | pg. 589 | 1878 |
| Ex. 6:9 | To The Saddest of the Sad | Vol. 34 | pg. 301 | 6/3/88 |
| Ex. 7:12 | The Power of Aaron's Rod | Vol. 9 | pg. 409 | 7/26/63 |
| Ex. 8:1 | A Divine Challenge! | Vol. 6 | pg. 285 | 4/22/60 |
| Ex. 8:8 | "Take Away the Frogs" | Vol. 59 | pg. 61 | 2/6/13 |
| Ex. 9:27 | Confession of Sin—A Sermon With Seven Texts | Vol. 3 | pg. 49 | 1/18/57 |
| | The Hardened Sinner — Ex. 9:27 | | | |
| | The Double-minded Man — Num. 22:34 | | | |
| | The Insincere Man — 1 Sam. 15:24 | | | |
| | The Doubtful Penitent — Josh. 7:20 | | | |
| | The Repentance of Despair — Mt. 27:4 | | | |
| | The Repentance of the Saint — Job 7:20 | | | |
| | The Blessed Confessions — Lk. 15:18 | | | |
| Ex. 10:1-20 | Exposition | Vol. 43 | pg. 70 | 2/7/97 |
| Ex. 10:3 | The Question Between the Plagues | Vol. 43 | pg. 61 | 2/7/97 |
| Ex. 10:26 | All or None; or, Compromises Refused | Vol. 31 | pg. 157 | 3/29/85 |
| Ex. 10:26 | Full Redemption | Vol. 6 | pg. 181 | 4/22/60 |
| Ex. 11:7 | Separating the Precious From the Vile | Vol. 6 | pg. 149 | 3/25/60 |
| Ex. 12:1-27 | Exposition | Vol. 47 | pg. 239 | 5/19/01 |
| Ex. 12:1-2 | The Beginning of Months | Vol. 28 | pg. 1 | 1/1/82 |
| Ex. 12:3-4 | Too Little For the Lamb | Vol. 51 | pg. 253 | 5/25/05 |
| Ex. 12:8 | Bitter Herbs | Vol. 47 | pg. 229 | 5/19/01 |
| Ex. 12:13 | The Blood | Vol. 5 | pg. 25 | 12/12/58 1859 |
| Ex. 12:13 | The Sacred Love-token | Vol. 21 | pg. 481 | 8/22/75 |
| Ex. 12:21-27 | The Blood of Sprinkling and the Children | Vol. 33 | pg. 577 | 10/23/87 |
| Ex. 12:26 | A Question For Communicants | Vol. 38 | pg. 373 | 8/7/92 |
| Ex. 12:41 | The Exodus | Vol. 2 | pg. 9 | 12/9/55 |
| Ex. 12:42 | A Holy Celebration | Vol. 19 | pg. 37 | 1873 |
| Ex. 13:13 | Redeeming the Unclean | Vol. 61 | pg. 217 | 5/13/15 |
| Ex. 13:21-22 | Exposition | Vol. 58 | pg. 10 | 1/4/12 |
| Ex. 14:1-31 | Exposition | Vol. 58 | pg. 10 | 1/4/12 |
| Ex. 14:3 | Entangled In the Land | Vol. 37 | pg. 73 | 2/8/91 |
| Ex. 14:13 | Direction In Dilemma | Vol. 9 | pg. 649 | 11/22/63 |
| Ex. 14:15 | Forward! Forward! Forward! | Vol. 10 | pg. 13 | 10/18/63 1864 |
| Ex. 14:15 | Unseasonable Prayer | Vol. 49 | pg. 469 | 10/1/03 |
| Ex. 14:19-20& | The Glory In the Rear | Vol. 30 | pg. 421 | 8/3/84 |
| Isa. 63:8 & Isa. 52:12 | | | | |
| Ex. 15:1-21 | Exposition | Vol. 44 | pg. 227 | 5/8/98 |
| Ex. 15:1-27 | Exposition | Vol. 39 | pg. 154 | 3/26/93 |
| Ex. 15:1-2 | Jubilate | Vol. 31 | pg. 589 | 10/25/85 |
| Ex. 15:22-26 | Marah Better Than Elim | Vol. 39 | pg. 145 | 3/26/93 |
| Ex. 15:23-25 | Marah; or, the Bitter Waters Sweetened | Vol. 17 | pg. 241 | 4/23/71 |
| Ex. 15:26 | "Jehovah-Rophi" | Vol. 28 | pg. 325 | 6/11/82 |
| Ex. 16:1-5 | Exposition | Vol. 39 | pg. 525 | 10/29/93 |
| Ex. 16:4 | Lessons From the Manna | Vol. 39 | pg. 517 | 10/29/93 |
| Ex. 16:11-36 | Exposition | Vol. 39 | pg. 525 | 10/29/93 |
| Ex. 17:8 | War With Amalek | Vol. 12 | pg. 529 | 9/23/66 |
| Ex. 17:8-9 | Both Sides of the Shield | Vol. 37 | pg. 613 | 12/6/91 |
| Ex. 17:9 | The War of Truth | Vol. 3 | pg. 41 | 1/11/57 |
| Ex. 20:1-17 | Exposition | Vol. 51 | pg. 154 | 3/23/05 |
| Ex. 20:18-20 | The Mediator — The Interpreter | Vol. 35 | pg. 409 | 7/28/89 |
| Ex. 21:5-6 | The Ear Bored With An Aul | Vol. 20 | pg. 289 | 1874 |
| Ex. 21:5-6 | Ears Bored To the Door-post | Vol. 59 | pg. 25 | 1/16/13 |
| Ex. 24:1-10 | Exposition | Vol. 58 | pg. 130 | 3/14/12 |

| | | | | |
|--------------|---|---------|---------|--------------|
| Ex. 25:10-22 | Exposition | Vol. 49 | pg. 322 | 7/5/03 |
| Ex. 28:36-38 | The Iniquity of Our Holy Things | Vol. 36 | pg. 373 | 7/6/90 |
| Ex. 29:1 | The Consecration of Priests | Vol. 20 | pg. 637 | 11/15/74 |
| Ex. 29:33 | Eating the Sacrifice | Vol. 43 | pg. 361 | 8/1/97 |
| Ex. 29:38-46 | Exposition | Vol. 61 | pg. 227 | 5/13/15 |
| Ex. 30:7-8 | Incense and Light | Vol. 29 | pg. 145 | 3/11/83 |
| Ex. 30:11-16 | Silver Sockets: or, Redemption the Foundation | Vol. 27 | pg. 61 | 1/30/81 |
| Ex. 32:1-35 | Exposition | Vol. 41 | pg. 58 | 2/3/95 |
| Ex. 32:1-29 | Exposition | Vol. 50 | pg. 250 | 5/19/04 |
| Ex. 32:7-14 | Exposition | Vol. 42 | pg. 490 | 10/11/96 |
| Ex. 32:14 | The Mediation of Moses | Vol. 41 | pg. 49 | 2/3/95 |
| Ex. 32:26 | On Whose Side Are You? | Vol. 26 | pg. 205 | 4/4/80 |
| Ex. 32:26 | “Who Is On the Lord’s Side”? | Vol. 50 | pg. 241 | 5/19/04 |
| Ex. 33:7 | The Tabernacle—Without The Camp | Vol. 7 | pg. 89 | 2/10/61 |
| Ex. 33:14 | Choice Food For Pilgrims To Canaan | Vol. 27 | pg. 85 | 1881, pg. 85 |
| Ex. 33:15 | Removal | Vol. 48 | pg. 613 | 12/28/02 |
| Ex. 33:18 | A View of God’s Glory | Vol. 54 | pg. 565 | 11/26/08 |
| Ex. 33:18 | God’s Glory and His Goodness | Vol. 61 | pg. 97 | 3/4/15 |
| Ex. 33:19 | Election No Discouragement To Seeking Souls | Vol. 10 | pg. 73 | 2/7/64 |
| Ex. 34:14 | A Jealous God | Vol. 9 | pg. 182 | 3/29/63 |
| Ex. 34:29-35 | The Shining of the Face of Moses | Vol. 36 | pg. 253 | 5/18/90 |

LEVITICUS

| | | | | |
|---------------|---|---------|---------|----------|
| Lev. 1:4-5 | Putting the Hand Upon the Head of the Sacrifice | Vol. 30 | pg. 157 | 3/16/84 |
| Lev. 1:5 | Slaying the Sacrifice | Vol. 30 | pg. 169 | 3/23/84 |
| Lev. 2:13 | Salt For Sacrifice | Vol. 33 | pg. 41 | 1/23/87 |
| Lev. 4:3 | The Sin Offering | Vol. 13 | pg. 133 | 3/10/67 |
| Lev. 4:6-7 | The Sprinkling of the Blood of the Sacrifice | Vol. 30 | pg. 265 | 5/11/84 |
| Lev. 4:7 | Blood Even On the Golden Altar | Vol. 40 | pg. 325 | 7/15/94 |
| Lev. 4:27-31 | The Sin-offering For the Common People | Vol. 18 | pg. 241 | 4/28/72 |
| Lev. 4:29 | Laying the Hand On the Sacrifice | Vol. 49 | pg. 337 | 7/19/03 |
| Lev. 5:17-18 | Sins of Ignorance | Vol. 23 | pg. 661 | 11/25/77 |
| Lev. 11:2-3 | The Clean and the Unclean | Vol. 9 | pg. 154 | 1863 |
| Lev. 13:12-13 | The Cleansing of the Leper | Vol. 6 | pg. 41 | 12/30/60 |
| Lev. 16:1-31 | Exposition | Vol. 40 | pg. 333 | 7/15/94 |
| Lev. 16:30 | The Annual Atonement | Vol. 32 | pg. 541 | 10/3/86 |
| Lev. 16:34 | The Day of Atonement | Vol. 2 | pg. 329 | 8/10/56 |
| Lev. 16:34 | The Day of Atonement | Vol. 60 | pg. 157 | 4/2/14 |
| Lev. 22:21 | A Plain Man’s Sermon | Vol. 32 | pg. 25 | 1/17/86 |
| Lev. 24:41-45 | Joy Hindering Faith | Vol. 38 | pg. 505 | 10/23/92 |
| Lev. 25:1-7 | Exposition | Vol. 38 | pg. 478 | 10/2/92 |
| Lev. 25:17-22 | Exposition | Vol. 38 | pg. 478 | 10/2/92 |

NUMBERS

| | | | | |
|--------------|---------------------------------|---------|---------|----------|
| Num. 4:1-33 | Exposition | Vol. 49 | pg. 262 | 5/31/03 |
| Num. 4:24-26 | Lowly Service | Vol. 49 | pg. 205 | 5/3/03 |
| Num. 4:49 | The Numbered People | Vol. 25 | pg. 73 | 1879 |
| Num. 6:23-27 | Two Choice Benedictions | Vol. 59 | pg. 433 | 9/11/13 |
| 2 Cor. 13:14 | | | | |
| Num. 8:5-22 | Exposition | Vol. 49 | pg. 215 | 5/3/03 |
| Num. 6:22-27 | The Blessing of the High Priest | Vol. 36 | pg. 577 | 10/26/90 |
| Num. 9:1-23 | Exposition | Vol. 41 | pg. 165 | 4/9/95 |
| Num. 9:11-12 | Feeding On a Whole Christ | Vol. 41 | pg. 157 | 4/7/95 |
| Num. 10:29 | A Generous Proposal | Vol. 16 | pg. 97 | 1870 |

| | | | | |
|-----------------------------|--|---------|---------|----------|
| Num. 10:35 | The March! | Vol. 7 | pg. 161 | 3/31/61 |
| Num. 11:1-10 | Exposition | Vol. 39 | pg. 525 | 10/29/93 |
| Num. 11:23 | The Glorious Right Hand of the Lord | Vol. 7 | pg. 121 | 2/24/61 |
| Num. 13:32 & Num. 14:6-7 | The Spies | Vol. 4 | pg. 257 | 6/6/58 |
| Num. 14:11 | Mistrust of God Deplored and Denounced | Vol. 25 | pg. 565 | 10/5/79 |
| Num. 14:24 | Caleb — The Man for the Times | Vol. 9 | pg. 613 | 11/1/63 |
| Num. 16:47-48 | The High Priest Standing Between the Dead & Living | Vol. 6 | pg. 437 | 10/21/60 |
| Num. 19:1-22 | Exposition | Vol. 42 | pg. 598 | 12/13/96 |
| Num. 19:2-3 | The Red Heifer | Vol. 9 | pg. 481 | 8/30/63 |
| Num. 21:1-6 | Two Wilderness Incidents | Vol. 56 | pg. 433 | 9/8/10 |
| Num. 21:1-9 | Exposition | Vol. 56 | pg. 442 | 9/8/10 |
| Num. 21:4-9 | The First Setting Up of the Brazen Serpent | Vol. 29 | pg. 289 | 5/10/83 |
| Num. 21:8 | Man's Ruin and God's Remedy | Vol. 5 | pg. 481 | 11/20/59 |
| Num. 21:9 | Number 1,500, or Lifting Up the Brazen Serpent | Vol. 25 | pg. 589 | 10/19/79 |
| Num. 21:16-18 | A Song at the Well-head | Vol. 13 | pg. 577 | 10/10/67 |
| Num. 23:10 | The End of the Righteous Desired | Vol. 13 | pg. 217 | 4/21/67 |
| Num. 23:21 | The Best War-cry | Vol. 29 | pg. 133 | 3/4/83 |
| Num. 24:17 | "The Star Out of Jacob" | Vol. 59 | pg. 97 | 2/27/13 |
| Num. 26:63-65 | The Census of Israel | Vol. 37 | pg. 193 | 4/5/91 |
| Num. 27:5 | Women's Rights — A Parable | Vol. 55 | pg. 193 | 4/22/09 |
| Num. 32:23 | The Great Sin of Doing Nothing | Vol. 32 | pg. 457 | 8/5/86 |
| Num. 35:11 | The Sinner's Refuge | Vol. 45 | pg. 217 | 5/7/99 |

DEUTERONOMY

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Dt. 1:6 | Advance! | Vol. 51 | pg. 493 | 10/12/05 |
| Dt. 1:25 | Foretastes of the Heavenly Life | Vol. 45 | pg. 49 | 1/29/99 |
| Dt. 1:38 | Encourage Your Minister | Vol. 9 | pg. 601 | 10/18/63 |
| Dt. 2:7 | Forty Years | Vol. 20 | pg. 349 | 6/14/74 |
| Dt. 4:29-31 | Conversions Encouraged | Vol. 22 | pg. 145 | 3/12/76 |
| Dt. 6:1-23 | Exposition | Vol. 60 | pg. 466 | 9/24/14 |
| Dt. 6:1-25 | Exposition | Vol. 43 | pg. 166 | 4/4/97 |
| Dt. 6:23 | Brought Out, To Be Brought In | Vol. 43 | pg. 157 | 4/4/97 |
| Dt. 7:20 | Secret Sins Driven Out by Stinging Hornets | Vol. 12 | pg. 61 | 1/28/66 |
| Dt. 8:1-20 | Exposition | Vol. 41 | pg. 500 | 10/20/95 |
| Dt. 8:1-20 | Exposition | Vol. 44 | pg. 418 | 8/28/98 |
| Dt. 8:2 | Moses' Dying Charge To Israel | Vol. 40 | pg. 37 | 1/28/94 |
| Dt. 8:3 | Bread For the Hungry | Vol. 7 | pg. 561 | 11/10/61 |
| Dt. 8:3 | Living On the Word | Vol. 44 | pg. 313 | 7/3/98 |
| Dt. 8:3-6 | The Pilgrim's Grateful Recollections | Vol. 16 | pg. 373 | 7/3/70 |
| Dt. 10:14-16 | Election and Holiness | Vol. 6 | pg. 133 | 3/11/60 |
| Dt. 11:10-12 | Canaan On Earth | Vol. 2 | pg. 33 | 12/30/55 |
| Dt. 11:12 | Good Cheer For the New Year | Vol. 13 | pg. 1 | 1/6/67 |
| Dt. 11:21 | Days of Heaven Upon the Earth | Vol. 60 | pg. 457 | 9/24/14 |
| Dt. 15:2 | Forgiveness, Freedom, Favour | Vol. 38 | pg. 469 | 10/2/92 |
| Dt. 15:15 | Remember! | Vol. 24 | pg. 181 | 3/31/78 |
| Dt. 18:15-19 | The Prophet Like Unto Moses | Vol. 25 | pg. 433 | 8/3/79 |
| Dt. 22:8 | Battlements | Vol. 52 | pg. 373 | 8/2/06 |
| Dt. 23:14 | Camp Law and Camp Life | Vol. 36 | pg. 661 | 12/14/90 |
| Dt. 25:1-18 | Exposition | Vol. 38 | pg. 478 | 10/2/92 |
| Dt. 29:1-21 | Exposition | Vol. 59 | pg. 11 | 1/2/13 |
| Dt. 29:4 | Men Without Heart, Sight, or Hearing | Vol. 28 | pg. 13 | 1/8/82 |
| Dt. 29:18 | The Root That Beareth Wormwood | Vol. 12 | pg. 661 | 12/2/66 |
| Dt. 30:11-14 | Plain Gospel For Plain People | Vol. 33 | pg. 325 | 6/12/87 |
| Dt. 31:47 | Religion — A Reality! | Vol. 8 | pg. 361 | 6/22/62 |

| | | | | |
|--------------|---|---------|---------|---------------|
| Dt. 32:1-39 | Exposition | Vol. 63 | pg. 153 | 3/29/17 |
| Dt. 32:1-43 | Exposition | Vol. 47 | pg. 117 | 3/10/01 |
| Dt. 32:2 | Small Rain For Tender Herbs | Vol. 33 | pg. 697 | 12/25/87 |
| Dt. 32:5 & | The Secret Spot | Vol. 13 | pg. 625 | 11/10/67 |
| Dt. 32:9 & | Choice Portions | Vol. 8 | pg. 289 | 5/25/62 |
| Lam. 3:24 | | | | |
| Dt. 32:11-12 | The Divine Discipline | Vol. 59 | pg. 1 | 1/2/13 |
| Dt. 32:20 & | Unbelief Condemned and Faith Commended | Vol. 30 | pg. 313 | 6/8/84 |
| Psa. 40:4 | | | | |
| Dt. 32:29 | Memento Mori | Vol. 6 | pg. 141 | 3/18/60 |
| Dt. 32:36 | Man's Extremity, God's Opportunity | Vol. 47 | pg. 109 | 3/10/01 |
| Dt. 32:39 | The Royal Prerogative | Vol. 25 | pg. 171 | 1879, pg. 171 |
| Dt. 32:47 | A Sermon of Personal Testimony | Vol. 44 | pg. 289 | 6/19/98 |
| Dt. 33:1-29 | Exposition | Vol. 62 | pg. 430 | 9/7/16 |
| Dt. 33:16 | A Remarkable Benediction | Vol. 62 | pg. 565 | 11/30/16 |
| Dt. 33:24-25 | Shoes of Iron, and Strength Sufficient: A New Years Promise | Vol. 35 | pg. 1 | 1/6/89 |
| Dt. 33:25 | "As Thy Days, So Shall Thy Strength Be" | Vol. 4 | pg. 361 | 8/22/58 |
| Dt. 33:26-28 | Israel's God and God's Israel | Vol. 14 | pg. 181 | 3/29/68 |
| Dt. 33:27 | Underneath | Vol. 24 | pg. 265 | 5/12/78 |
| Dt. 33:27 | The Everlasting Arms | Vol. 41 | pg. 493 | 10/20/95 |
| Dt. 33:29 | Happiness The Privilege And Duty of Christians | Vol. 23 | pg. 337 | 6/10/77 |
| Dt. 33:27 | Present Privilege and Future Favour | Vol. 11 | pg. 205 | 3/22/65 |
| Dt. 34:5 | The Death of Moses | Vol. 33 | pg. 313 | 6/5/87 |

JOSHUA

| | | | | |
|----------------|--|---------|---------|----------|
| Josh. 1:2-3 | Taking Possession of Our Inheritance | Vol. 35 | pg. 277 | 5/12/89 |
| Josh. 1:5 | Strengthening Medicine For God's Servants | Vol. 21 | pg. 49 | 1875 |
| Josh. 1:7 | Joshua's Obedience | Vol. 14 | pg. 97 | 1868 |
| Josh. 1:10-11 | Crossing the Jordan | Vol. 34 | pg. 457 | 8/12/88 |
| Josh. 1:11 | Discipline in Christ's Army | Vol. 56 | pg. 121 | 3/10/10 |
| Judg. 1:12-15 | Achsah's Asking, A Pattern of Prayer | Vol. 39 | pg. 277 | 6/11/93 |
| Josh. 2:21 | The Scarlet Line In the Window | Vol. 55 | pg. 517 | 10/28/09 |
| Josh. 3:4 | Untrodden Ways | Vol. 18 | pg. 349 | 6/23/72 |
| Josh. 5:13-15 | Joshua's Vision | Vol. 14 | pg. 85 | 2/16/68 |
| Josh. 6:2-3 | Jericho Captured | Vol. 11 | pg. 265 | 1865 |
| Josh. 7:3; 8:1 | All The People At Work For Jesus | Vol. 23 | pg. 325 | 5/9/77 |
| Josh. 17:14 | Retrospect—"The Lord Hath Blessed" | Vol. 32 | pg. 61 | 1886 |
| Josh. 17:18 | Driving Out the Canaanites and Their Iron Chariots | Vol. 34 | pg. 577 | 7/12/88 |
| Josh. 24:4 | Certain Singular Subjects | Vol. 29 | pg. 241 | 1883 |
| Josh. 24:13 | Gathering Without Planting | Vol. 57 | pg. 205 | 5/4/11 |
| Josh. 24:15 | Decision—Illustrated by the Case of Joshua | Vol. 21 | pg. 217 | 4/18/75 |

JUDGES

| | | | | |
|---------------|--------------------------------|---------|---------|----------|
| Judg. 1:19-20 | Chariots of Iron | Vol. 28 | pg. 637 | 9/28/82 |
| Judg. 2:4-5 | Bochim; or, the Weepers | Vol. 28 | pg. 517 | 8/10/82 |
| Judg. 3:20 | A Message From God | Vol. 61 | pg. 181 | 4/22/15 |
| Judg. 4:22 | Sin Slain | Vol. 6 | pg. 407 | 7/29/60 |
| Judg. 5:11 | Songs of Deliverance | Vol. 13 | pg. 421 | 7/28/67 |
| Judg. 5:12 | "Magnificat" | Vol. 6 | pg. 429 | 10/14/60 |
| Judg. 6:22-24 | One War Over and Another Begun | Vol. 28 | pg. 505 | 9/17/82 |
| Judg. 7:13-14 | The Dream of the Barley Cake | Vol. 31 | pg. 649 | 11/22/85 |
| Judg. 7:19-25 | Exposition | Vol. 40 | pg. 21 | 1/14/94 |
| Judg. 8:1-27 | Exposition | Vol. 40 | pg. 21 | 1/14/94 |
| Judg. 8:4 | Faint; But Not Faint-hearted | Vol. 40 | pg. 13 | 1/14/94 |

| | | | | |
|-------------------|--|---------|---------|----------|
| Judg. 9:8-9 | The Faithful Olive Tree | Vol. 56 | pg. 361 | 7/28/10 |
| Judg. 11:35 | Retreat Impossible | Vol. 23 | pg. 121 | 1877 |
| Judg. 13:22-23 | Manoah's Wife and Her Excellent Argument | Vol. 23 | pg. 109 | 1877 |
| Judg. 13:23 | Cheer For the Faint-hearted | Vol. 8 | pg. 157 | 1/26/62 |
| Judg. 14:8-9 | Hands Full of Honey | Vol. 29 | pg. 61 | 1/28/83 |
| Judg. 15:18 | The Fainting Hero | Vol. 55 | pg. 73 | 2/11/09 |
| Judg. 16:3 | Our Champion | Vol. 52 | pg. 493 | 10/11/06 |
| Judg. 16:20-21 | Samson Conquered | Vol. 4 | pg. 473 | 11/21/58 |
| Judg. 16:22 | Shaven and Shorn, But Not Beyond Hope | Vol. 33 | pg. 13 | 1/9/87 |
| Judg. 18:7, 27-28 | The Danger of Carnal Security | Vol. 42 | pg. 529 | 11/8/96 |

RUTH

| | | | | |
|--------------|---------------------------------------|---------|---------|---------|
| Ruth 1:1-22 | Exposition | Vol. 47 | pg. 466 | 9/29/01 |
| Ruth 1:16 | Ruth Deciding For God | Vol. 46 | pg. 289 | 6/24/00 |
| Ruth 2:12 | Ruth's Reward; Or, Cheer For Converts | Vol. 31 | pg. 397 | 6/29/85 |
| Ruth 2:14 | Mealtime In the Cornfields | Vol. 9 | pg. 421 | 8/2/63 |
| Ruth 2:15 | Spiritual Gleaning | Vol. 44 | pg. 409 | 8/28/98 |
| Ruth 2:15-16 | A Sermon For Gleaners | Vol. 8 | pg. 445 | 8/10/62 |

1 SAMUEL

| | | | | |
|-----------------|---|---------|---------|----------|
| 1 Sam. 1:15 | A Woman of a Sorrowful Spirit | Vol. 26 | pg. 37 | 1880 |
| 1 Sam. 1:17-18 | The Use of the Bow | Vol. 28 | pg. 68 | 1882 |
| 1 Sam. 2:1-10 | Exposition | Vol. 57 | pg. 310 | 6/29/11 |
| 1 Sam. 2:1-36 | Exposition | Vol. 50 | pg. 514 | 10/20/04 |
| 1 Sam. 2:3 | The King's Weighings | Vol. 29 | pg. 457 | 8/26/83 |
| 1 Sam. 2:6 | From Death to Life | Vol. 9 | pg. 433 | 7/26/63 |
| 1 Sam. 2:8 | Beggars Becoming Princes | Vol. 57 | pg. 301 | 6/29/11 |
| 1 Sam. 2:12-36 | Exposition | Vol. 54 | pg. 118 | 3/5/08 |
| 1 Sam. 2:30 | The Road To Honour | Vol. 30 | pg. 637 | 10/12/84 |
| 1 Sam. 2:30 | Honour For Honour | Vol. 50 | pg. 505 | 10/20/04 |
| 1 Sam. 3:1-18 | Exposition | Vol. 54 | pg. 118 | 3/5/08 |
| 1 Sam. 3:1-21 | Exposition | Vol. 43 | pg. 346 | 7/18/97 |
| 1 Sam. 3:4 | "Here Am I" | Vol. 54 | pg. 109 | 3/5/08 |
| 1 Sam. 3:9 | The Child Samuel's Prayer | Vol. 10 | pg. 473 | 1864 |
| 1 Sam. 3:10 | "Speak, Lord" | Vol. 43 | pg. 337 | 7/18/97 |
| 1 Sam. 3:17 | A Private Enquiry | Vol. 37 | pg. 25 | 1/18/91 |
| 1 Sam. 4:3 | The Form and Spirit of Religion | Vol. 4 | pg. 169 | 4/4/58 |
| 1 Sam. 4:7 | Is God in the Camp? | Vol. 38 | pg. 25 | 1/17/92 |
| | Spurgeon's Comments On Above Sermon | Vol. 38 | pg. 24 | 1/9/92 |
| 1 Sam. 5:2-4 | Dagon's Ups and Downs | Vol. 23 | pg. 133 | 1877 |
| 1 Sam. 7:2-5 | Three Decisive Steps | Vol. 37 | pg. 457 | 9/6/91 |
| 1 Sam. 7:12 | Ebenezer! | Vol. 9 | pg. 158 | 3/15/63 |
| 1 Sam. 9:1-27 | Exposition | Vol. 54 | pg. 33 | 1/16/08 |
| 1 Sam. 9:3, 20 | Looking For One Thing and Finding Another | Vol. 54 | pg. 25 | 1/16/08 |
| 1 Sam. 9:27 | Samuel and the Young Man Saul | Vol. 26 | pg. 393 | 1880 |
| 1 Sam. 10:1-8 | Exposition | Vol. 54 | pg. 33 | 1/16/08 |
| 1 Sam. 10:22-23 | Hiding Among the Stuff | Vol. 58 | pg. 469 | 10/3/12 |
| 1 Sam. 12:1-25 | Exposition | Vol. 50 | pg. 394 | 8/11/04 |
| 1 Sam. 12:17 | Harvest Time | Vol. 50 | pg. 385 | 8/11/04 |
| 1 Sam. 12:23 | Samuel: An Example of Intercession | Vol. 26 | pg. 277 | 5/9/80 |
| 1 Sam. 15:22 | Obedience Better Than Sacrifice | Vol. 12 | pg. 217 | 1866 |
| 1 Sam. 16:12 | Who Are Elected? | Vol. 11 | pg. 373 | 7/9/65 |
| 1 Sam. 17:36-37 | The Lion-slayer — The Giant-killer | Vol. 21 | pg. 505 | 9/5/75 |
| 1 Sam. 17:36-37 | The Lion and the Bear: Trophies Hung Up | Vol. 30 | pg. 625 | 9/25/84 |

| | | | | |
|-----------------|---|---------|---------|----------|
| 1 Sam. 17:50 | David's First Victory | Vol. 50 | pg. 589 | 12/8/04 |
| 1 Sam. 18:1-16 | Exposition | Vol. 48 | pg. 178 | 4/13/02 |
| 1 Sam. 18:17 | War! War! War! | Vol. 5 | pg. 201 | 5/1/59 |
| 1 Sam. 20:1-17 | Exposition | Vol. 48 | pg. 178 | 4/13/02 |
| 1 Sam. 20:1-42 | Exposition | Vol. 39 | pg. 574 | 11/26/93 |
| 1 Sam. 20:3 | But A Step | Vol. 31 | pg. 625 | 11/29/85 |
| 1 Sam. 20:10 | A Word For the Persecuted | Vol. 20 | pg. 457 | 8/16/74 |
| 1 Sam. 20:17 | Love Plighting Troth | Vol. 48 | pg. 169 | 4/13/02 |
| 1 Sam. 20:25 | The Empty Place: A Christmas Day Sermon | Vol. 38 | pg. 613 | 12/25/92 |
| 1 Sam. 20:27 | The Empty Seat | Vol. 25 | pg. 37 | 1879 |
| 1 Sam. 21:9 | Craving the Best Things | Vol. 54 | pg. 589 | 12/10/08 |
| 1 Sam. 22:1-2 | Recruits For the King | Vol. 62 | pg. 481 | 10/12/16 |
| 1 Sam. 25:32-33 | Preventing Grace | Vol. 51 | pg. 97 | 2/23/05 |
| 1 Sam. 25:32-33 | Christians Kept From Sin | Vol. 53 | pg. 205 | 4/25/07 |
| 1 Sam. 27:1 | The Danger of Doubting | Vol. 8 | pg. 145 | 3/16/62 |
| 1 Sam. 30:1-13 | Exposition | Vol. 61 | pg. 239 | 5/20/15 |
| 1 Sam. 30:1-25 | Exposition | Vol. 54 | pg. 83 | 2/13/08 |
| 1 Sam. 30:6-8 | Ziklag; or, David Encouraging Himself In God | Vol. 27 | pg. 365 | 6/26/81 |
| 1 Sam. 30:13 | A Searching Question | Vol. 54 | pg. 73 | 2/13/08 |
| 1 Sam. 30:20 | "David's Spoil" | Vol. 34 | pg. 193 | 4/15/88 |
| 1 Sam. 30:21-25 | The Statute of David For the Sharing of the Spoil | Vol. 37 | pg. 313 | 6/7/91 |

2 SAMUEL

| | | | | |
|-----------------|--|---------|---------|----------|
| 2 Sam. 1:26 | The Love of Jonathan, and the Love of Jesus | Vol. 39 | pg. 565 | 11/26/93 |
| 2 Sam. 2:1 | Enquiring of God | Vol. 52 | pg. 337 | 7/12/06 |
| 2 Sam. 3:17-18 | "Now Then Do It" | Vol. 23 | pg. 529 | 9/23/77 |
| 2 Sam. 3:36 | "The King Can Do No Wrong" | Vol. 41 | pg. 313 | 7/7/95 |
| 2 Sam. 3:39 | Man's Weakness, and God's Anointing | Vol. 6 | pg. 381 | 9/9/60 |
| 2 Sam. 5:17-25 | Exposition | Vol. 40 | pg. 82 | 2/18/94 |
| 2 Sam. 5:24 | The Sound In the Mulberry Trees | Vol. 3 | pg. 317 | 5/31/57 |
| 2 Sam. 5:24-25 | The Lord Leading; David Following | Vol. 40 | pg. 73 | 2/18/94 |
| 2 Sam. 6:20-22 | David Dancing Before the Ark Because of His Election | Vol. 34 | pg. 361 | 7/1/88 |
| 2 Sam. 6:20-22 | The Jeer of Sarcasm, and the Retort of Piety | Vol. 6 | pg. 277 | 4/8/60 |
| 2 Sam. 7:1-22 | Exposition | Vol. 45 | pg. 467 | 9/22/99 |
| 2 Sam. 7:18-29 | Exposition | Vol. 48 | pg. 623 | 12/28/02 |
| 2 Sam. 7:18-22 | Marrow and Fatness | Vol. 20 | pg. 193 | 3/29/74 |
| 2 Sam. 7:18-29 | Exposition | Vol. 50 | pg. 70 | 2/4/04 |
| 2 Sam. 7:21 | God's Heart the Source of All Blessing | Vol. 45 | pg. 457 | 9/24/99 |
| 2 Sam. 7:25 | The Plea of Faith | Vol. 2 | pg. 273 | 6/22/56 |
| 2 Sam. 7:27 | Where True Prayer Is Found | Vol. 24 | pg. 253 | 5/5/78 |
| 2 Sam. 7:27 | Prayer Found in the Heart | Vol. 50 | pg. 61 | 2/4/04 |
| 2 Sam. 11:1 | An Exhortation — C. H. Spurgeon | Vol. 8 | pg. 277 | 5/18/62 |
| | A Salutation — Merle D'Aubigne, of Geneva | | | |
| 2 Sam. 11:1 | A Summons To Battle | Vol. 15 | pg. 565 | 10/10/69 |
| 2 Sam. 12:13-14 | The Safeguards of Forgiveness | Vol. 52 | pg. 157 | 3/29/06 |
| 2 Sam. 14:14 | Means For Restoring the Banished | Vol. 16 | pg. 505 | 9/11/70 |
| 2 Sam. 14:29-31 | The Barley-field On Fire | Vol. 10 | pg. 193 | 4/3/64 |
| 2 Sam. 15:12-37 | Exposition | Vol. 52 | pg. 334 | 7/5/06 |
| 2 Sam. 15:13-23 | Exposition | Vol. 60 | pg. 536 | 11/5/14 |
| 2 Sam. 15:21 | Loyal To The Core | Vol. 26 | pg. 5 | 1880 |
| 2 Sam. 15:21 | Following Christ | Vol. 62 | pg. 133 | 3/23/16 |
| 2 Sam. 15:23 | The King Passing Over Kedron | Vol. 60 | pg. 529 | 11/5/14 |
| 2 Sam. 16:11-12 | The Mission of Affliction | Vol. 55 | pg. 469 | 9/30/09 |
| 2 Sam. 17:23 | Very Singular | Vol. 52 | pg. 325 | 7/5/06 |
| 2 Sam. 18:29 | An Anxious Enquiry For A Beloved Son | Vol. 24 | pg. 505 | 9/5/78 |

| | | | | |
|----------------|---------------------------------------|---------|---------|----------|
| 2 Sam. 19:10 | Bringing The King Back | Vol. 14 | pg. 241 | 4/19/68 |
| 2 Sam. 23:1-5 | Exposition | Vol. 42 | pg. 56 | 2/2/96 |
| 2 Sam. 23:4 | “Clear Shining After Rain” | Vol. 38 | pg. 565 | 11/27/92 |
| 2 Sam. 23:4 | Royal Emblems For Loyal Subjects | Vol. 51 | pg. 373 | 8/3/05 |
| 2 Sam. 23:4 | The Rule of Christ | Vol. 52 | pg. 361 | 7/26/06 |
| 2 Sam. 23:5 | David’s Dying Song | Vol. 1 | pg. 141 | 4/15/55 |
| 2 Sam. 23:5 | David’s Sublime Consolation | Vol. 59 | pg. 253 | 5/29/13 |
| 2 Sam. 23:9-10 | The Man Whose Hand Clave To His Sword | Vol. 56 | pg. 181 | 4/14/10 |

1 KINGS

| | | | | |
|----------------|---|---------|---------|----------|
| 1 Ki. 2:30 | The Horns of the Altar | Vol. 31 | pg. 113 | 1885 |
| 1 Ki. 4:20-28 | The Dromedaries | Vol. 25 | pg. 637 | 1879 |
| 1 Ki. 5:1-18 | Exposition | Vol. 58 | pg. 367 | 8/1/12 |
| 1 Ki. 5:14 | A Practical Discourse | Vol. 58 | pg. 361 | 8/1/12 |
| 1 Ki. 5:17 | Foundation Work | Vol. 35 | pg. 373 | 7/7/89 |
| 2 Ki. 7:3-7 | Who Found It Out? | Vol. 32 | pg. 301 | 6/6/86 |
| 2 Ki. 7:19 | The Sin of Unbelief | Vol. 1 | pg. 17 | 1/14/55 |
| 1 Ki. 8:38-40 | The Plague of the Heart | Vol. 25 | pg. 457 | 8/10/79 |
| 1 Ki. 8:53 | Solomon’s Plea | Vol. 21 | pg. 253 | 5/2/75 |
| 1 Ki. 9:2-3 | Essential Points In Prayer | Vol. 35 | pg. 25 | 1/20/89 |
| 1 Ki. 10:1-13 | Exposition | Vol. 48 | pg. 238 | 5/18/02 |
| 1 Ki. 10:1, 3 | Consulting With Jesus | Vol. 48 | pg. 217 | 5/11/02 |
| 1 Ki. 10:2 | Heart — Communing | Vol. 48 | pg. 229 | 5/18/02 |
| 1 Ki. 11:40-43 | Exposition | Vol. 42 | pg. 368 | 8/2/96 |
| 1 Ki. 12:1-33 | Exposition | Vol. 42 | pg. 368 | 8/2/96 |
| 1 Ki. 12:24 | “This Thing Is From Me” | Vol. 42 | pg. 361 | 8/2/96 |
| 1 Ki. 14:6 | A Hearer In Disguise | Vol. 10 | pg. 449 | 7/31/64 |
| 1 Ki. 14:13 | Abijah, or Some Good Thing Towards the Lord | Vol. 29 | pg. 565 | 10/21/83 |
| 1 Ki. 14:13 | A Bad King’s Good Son | Vol. 58 | pg. 445 | 9/19/12 |
| 1 Ki. 14:21-24 | Exposition | Vol. 39 | pg. 214 | 4/30/93 |
| 1 Ki. 17:1-24 | Exposition | Vol. 44 | pg. 549 | 11/13/98 |
| 1 Ki. 17:4 | God’s Care of Elijah | Vol. 57 | pg. 397 | 8/24/11 |
| 1 Ki. 17:8-9 | The Widow of Sarepta | Vol. 14 | pg. 349 | 6/21/68 |
| 1 Ki. 17:16 | The Inexhaustible Barrel | Vol. 6 | pg. 33 | 12/18/59 |
| 1 Ki. 18:12 | Obadiah; Or, Early Piety Eminent Piety | Vol. 30 | pg. 553 | 10/19/84 |
| 1 Ki. 18:17-40 | Exposition | Vol. 62 | pg. 71 | 2/10/16 |
| 1 Ki. 18:21 | Elijah’s Appeal To the Undecided | Vol. 3 | pg. 217 | 5/31/57 |
| 1 Ki. 18:36 | Elijah’s Plea | Vol. 31 | pg. 173 | 1885 |
| 1 Ki. 18:40 | No Quarter | Vol. 18 | pg. 361 | 6/30/72 |
| 1 Ki. 18:41 | God’s Answer to Persistent Prayer | Vol. 59 | pg. 493 | 10/16/13 |
| 1 Ki. 19:1-18 | Exposition | Vol. 49 | pg. 203 | 4/26/03 |
| 1 Ki. 19:1-21 | Exposition | Vol. 55 | pg. 562 | 11/18/09 |
| 1 Ki. 19:4 | Elijah Fainting | Vol. 47 | pg. 205 | 5/5/01 |
| 1 Ki. 19:8 | Faintness and Refreshing | Vol. 54 | pg. 445 | 9/17/08 |
| 1 Ki. 19:11-13 | A Voice With Four Messages | Vol. 55 | pg. 553 | 11/18/09 |
| 1 Ki. 19:11-13 | God’s Gentle Power | Vol. 62 | pg. 61 | 2/10/16 |
| 1 Ki. 19:12-13 | The Still Small Voice | Vol. 28 | pg. 373 | 7/9/82 |
| 1 Ki. 20:1-34 | Exposition | Vol. 49 | pg. 502 | 10/15/03 |
| 1 Ki. 20:11 | Girding On the Harness | Vol. 20 | pg. 517 | 9/6/74 |
| 1 Ki. 20:28 | God of the Hills and God of the Valleys | Vol. 22 | pg. 481 | 8/27/76 |
| 1 Ki. 20:31-34 | Ben-hadad’s Escape — An Encouragement for Sinners | Vol. 9 | pg. 577 | 10/11/63 |
| 1 Ki. 20:33 | Observing the King’s Word | Vol. 49 | pg. 493 | 10/15/03 |
| 1 Ki. 20:40 | Gone. Gone For Ever | Vol. 22 | pg. 301 | 5/28/76 |

2 KINGS

| | | | | |
|---------------------------------|--|---------|---------|----------|
| 2 Ki. 2:11 | Preparing To Depart | Vol. 54 | pg. 517 | 10/29/08 |
| 2 Ki. 2:14 | Where Is The God of Elijah? | Vol. 44 | pg. 541 | 11/13/98 |
| 2 Ki. 3:15 | The Minstrel | Vol. 27 | pg. 437 | 8/7/81 |
| 2 Ki. 3:16-18 | “Make This Valley Full of Ditches” | Vol. 13 | pg. 229 | 4/28/67 |
| 2 Ki. 4:1-7 | Exposition | Vol. 57 | pg. 9 | 1/5/11 |
| 2 Ki. 4:1-37 | Exposition | Vol. 56 | pg. 117 | 3/3/10 |
| 2 Ki. 4:3 | The Filling of Empty Vessels | Vol. 35 | pg. 13 | 1/13/89 |
| 2 Ki. 4:6 | The Oil and the Vessels | Vol. 25 | pg. 193 | 1879 |
| 2 Ki. 4:26 | Infant Salvation | Vol. 7 | pg. 505 | 9/29/61 |
| 2 Ki. 4:34 | The Seven Sneezes | Vol. 25 | pg. 121 | 1879 |
| 2 Ki. 4:38, 41-42 | The Great Pot and the Twenty Loaves | Vol. 56 | pg. 109 | 3/3/10 |
| 2 Ki. 5:11 | “I Thought” | Vol. 20 | pg. 277 | 5/17/74 |
| 2 Ki. 5:12 | Mr. Evil — Questioning Tried and Executed | Vol. 6 | pg. 89 | 2/5/60 |
| 2 Ki. 5:13 | A Serious Remonstrance | Vol. 15 | pg. 529 | 1869 |
| 2 Ki. 6:1-23 | Exposition | Vol. 55 | pg. 453 | 9/16/09 |
| 2 Ki. 6:17 | Young Man! A Prayer For You | Vol. 37 | pg. 397 | 8/2/91 |
| 2 Ki. 6:17 | Eyes Opened | Vol. 54 | pg. 529 | 11/5/08 |
| 2 Ki. 6:27 | The Unfailing Help | Vol. 55 | pg. 445 | 9/16/09 |
| 2 Ki. 7:2 | Beware of Unbelief | Vol. 21 | pg. 325 | 6/6/75 |
| 2 Ki. 7:4 | The Sinner’s Only Alternative | Vol. 50 | pg. 361 | 7/28/04 |
| 2 Ki. 7:9 | Public Testimony: A Debt to God and Man | Vol. 33 | pg. 669 | 1887 |
| 2 Ki. 8:12-13 | Startling! | Vol. 49 | pg. 193 | 4/26/03 |
| 2 Ki. 10:31 | Heedlessness In Religion | Vol. 12 | pg. 205 | 4/15/66 |
| 2 Ki. 11:10 | New Uses For Old Trophies | Vol. 17 | pg. 49 | 11/20/70 |
| 2 Ki. 13:1-25 | Exposition | Vol. 39 | pg. 177 | 4/9/93 |
| 2 Ki. 13:18-19 | Three Arrows, or Six? | Vol. 39 | pg. 169 | 4/9/93 |
| 2 Ki. 13:19 | The Arrows of the Lord’s Deliverance | Vol. 10 | pg. 265 | 3/22/64 |
| 2 Ki. 17:23-41 | Exposition | Vol. 51 | pg. 155 | 3/23/05 |
| 2 Ki. 17:25 & 2 Ki. 17:33-34 | Sham Conversion | Vol. 51 | pg. 145 | 3/23/05 |
| 2 Ki. 17:41 | Mongrel Religion | Vol. 27 | pg. 557 | 10/2/81 |
| 2 Ki. 18:4-5 | Iconoclast | Vol. 16 | pg. 625 | 11/13/70 |
| 2 Ki. 20:1-7 | Exposition | Vol. 58 | pg. 455 | 9/19/12 |
| 2 Ki. 20:12-13 | Hezekiah and the Ambassadors, or Vainglory Rebuked | Vol. 12 | pg. 433 | 8/5/66 |

1 CHRONICLES

| | | | | |
|----------------------------------|--|---------|---------|----------|
| 1 Chr. 4:10 | The Prayer of Jabez | Vol. 17 | pg. 313 | 1871 |
| 1 Chr. 4:23 | With The King For His Work! | Vol. 24 | pg. 109 | 11/1/77 |
| 1 Chr. 12:8-15 | David and His Volunteers | Vol. 58 | pg. 169 | 4/11/12 |
| 1 Chr. 12:16-18 | Recruits For King Jesus | Vol. 30 | pg. 145 | 2/17/84 |
| 1 Chr. 13:1-14 | Exposition | Vol. 49 | pg. 526 | 10/29/03 |
| 1 Chr. 13:8, 12 | The Lesson of Uzza | Vol. 49 | pg. 517 | 10/29/03 |
| 1 Chr. 15:1-4 | Exposition | Vol. 49 | pg. 526 | 10/29/03 |
| 1 Chr. 15:11-16 | Exposition | Vol. 49 | pg. 526 | 10/29/03 |
| 1 Chr. 15:13 | Importance of Small Things In Religion | Vol. 6 | pg. 165 | 4/8/60 |
| 1 Chr. 15:25-29 | Exposition | Vol. 49 | pg. 526 | 10/29/03 |
| 1 Chr. 16:4 | The Recorders | Vol. 22 | pg. 445 | 6/25/76 |
| 1 Chr. 16:9 | Good Talk | Vol. 60 | pg. 145 | 3/26/14 |
| 1 Chr. 21:1-8 | Exposition | Vol. 55 | pg. 492 | 10/7/09 |
| 1 Chr. 21:9-20 | Exposition | Vol. 55 | pg. 527 | 10/28/09 |
| 1 Chr. 21:7-30 | Exposition | Vol. 42 | pg. 310 | 6/28/96 |
| 1 Chr. 21:25-30 | Exposition | Vol. 38 | pg. 298 | 6/19/92 |
| 1 Chr. 21:26-30 | Exposition | Vol. 62 | pg. 298 | 1/27/16 |
| 1 Chr. 21:28 & 1 Chr. 22:1-19 | The Threshing-floor of Ornan Exposition | Vol. 30 | pg. 601 | 11/9/84 |
| | | Vol. 42 | pg. 310 | 6/28/96 |

| | | | | |
|----------------|--------------------------------------|---------|---------|----------|
| 1 Chr. 22:1-19 | Exposition | Vol. 38 | pg. 298 | 6/19/92 |
| 1 Chr. 22:1-19 | Exposition | Vol. 62 | pg. 45 | 1/27/16 |
| 1 Chr. 22:1 | Araunah's Threshing Floor | Vol. 61 | pg. 445 | 9/23/15 |
| 1 Chr. 22:14 | One Worker Preparing For Another | Vol. 38 | pg. 289 | 6/19/92 |
| 1 Chr. 22:18 | "The Best of All Is, God Is With Us" | Vol. 42 | pg. 301 | 6/28/96 |
| 1 Chr. 22:19 | Exhortation—"Set Your Heart" | Vol. 32 | pg. 77 | 1886 |
| 1 Chr. 28:1-21 | Exposition | Vol. 38 | pg. 526 | 10/30/92 |
| 1 Chr. 28:8 | Intelligent Obedience | Vol. 57 | pg. 385 | 8/17/11 |
| 1 Chr. 28:9 | Sincere Seekers Assured Finders | Vol. 61 | pg. 589 | 12/16/15 |
| 1 Chr. 28:19 | God's Handwriting Upon David | Vol. 38 | pg. 517 | 10/30/92 |

2 CHRONICLES

| | | | | |
|-----------------|---|---------|---------|----------|
| 2 Chr. 2:11 | A King Sent In Love | Vol. 48 | pg. 1 | 1/5/02 |
| 2 Chr. 5:13-14 | Temple Glories | Vol. 7 | pg. 217 | 3/31/61 |
| 2 Chr. 7:1-3 | | | | |
| 2 Chr. 6:28-30 | The Place of Prayer and Pardon | Vol. 45 | pg. 409 | 8/27/99 |
| 2 Chr. 11:1-17 | Exposition | Vol. 48 | pg. 202 | 4/27/02 |
| 2 Chr. 12:1-16 | Exposition | Vol. 39 | pg. 214 | 4/30/93 |
| 2 Chr. 12:1-16 | Exposition | Vol. 48 | pg. 202 | 4/27/02 |
| 2 Chr. 12:8 | Servitude or Service — Which? | Vol. 39 | pg. 205 | 4/30/93 |
| 2 Chr. 12:14 | Rehoboam The Unready | Vol. 47 | pg. 493 | 10/20/01 |
| 2 Chr. 16:1 | Reform | Vol. 5 | pg. 105 | 2/13/59 |
| 2 Chr. 16:9 | A Lesson From the Life of King Asa | Vol. 20 | pg. 25 | 1874 |
| 2 Chr. 17:16 | Wanted! — Volunteers | Vol. 37 | pg. 541 | 10/25/91 |
| 2 Chr. 20:1-30 | Exposition | Vol. 51 | pg. 94 | 2/16/05 |
| 2 Chr. 20:4 | The Singing Army | Vol. 51 | pg. 85 | 2/16/05 |
| 2 Chr. 23:13 | Manasseh | Vol. 2 | pg. 409 | 11/30/56 |
| 2 Chr. 24:1-25 | Exposition | Vol. 40 | pg. 286 | 6/17/94 |
| 2 Chr. 24:17-18 | "Goodness, As A Morning Cloud" | Vol. 40 | pg. 277 | 6/17/94 |
| 2 Chr. 27:6 | Jotham's Peculiar Honour | Vol. 53 | pg. 517 | 10/24/07 |
| 2 Chr. 28:1-16 | Exposition | Vol. 39 | pg. 202 | 4/23/93 |
| 2 Chr. 28:1-5 | Exposition | Vol. 44 | pg. 177 | 4/10/98 |
| 2 Chr. 28:10 | A Home Question | Vol. 6 | pg. 65 | 1/15/60 |
| 2 Chr. 28:16-27 | Exposition | Vol. 44 | pg. 177 | 4/10/98 |
| 2 Chr. 28:22 | "That King Ahaz" | Vol. 52 | pg. 301 | 6/21/06 |
| 2 Chr. 28:23 | Ruins | Vol. 44 | pg. 169 | 4/10/98 |
| 2 Chr. 30:17-20 | To Those Who Feel Unfit For The Communion | Vol. 36 | pg. 109 | 1890 |
| 2 Chr. 31:1 | Reform | Vol. 5 | pg. 105 | 2/13/59 |
| 2 Chr. 31:21 | Life In Earnest | Vol. 8 | pg. 73 | 2/2/62 |
| 2 Chr. 32:8 | Words To Rest On | Vol. 38 | pg. 157 | 4/3/92 |
| 2 Chr. 33:1-19 | Exposition | Vol. 54 | pg. 202 | 4/23/08 |
| 2 Chr. 33:1-20 | Exposition | Vol. 40 | pg. 442 | 9/16/94 |
| 2 Chr. 33:2 & | Pardon For the Greatest Guilt | Vol. 40 | pg. 433 | 9/16/94 |
| 2 Chr. 33:12-13 | | | | |
| 2 Chr. 33:9-13 | A Miracle of Grace | Vol. 62 | pg. 145 | 3/30/16 |
| 2 Chr. 33:10-11 | Another Lesson From Manasseh's Life | Vol. 40 | pg. 517 | 11/4/94 |
| 2 Chr. 33:12-13 | The Old Testament "Prodigal" | Vol. 59 | pg. 229 | 5/15/13 |
| 2 Chr. 34:14-33 | Exposition | Vol. 58 | pg. 251 | 5/23/12 |
| 2 Chr. 34:15 & | A Very Early Bible Society | Vol. 58 | pg. 241 | 5/23/12 |
| 2 Chr. 34:18-19 | | | | |
| 2 Chr. 34:27 | Self-humbling | Vol. 13 | pg. 241 | 5/5/67 |
| 2 Chr. 35:2 | Cheer Up, My Comrades! | Vol. 26 | pg. 13 | 1880 |

Ezra 4:14 Good Cause For Great Zeal Vol. 19 pg. 97 1873

NEHEMIAH

Neh. 1:1-11 Exposition Vol. 47 pg. 83 2/17/01
 Neh. 1:1-11 Exposition Vol. 59 pg. 358 7/24/13
 Neh. 1:11 Those Who Desire Vol. 47 pg. 73 2/17/01
 Neh. 2:1-6 Exposition Vol. 59 pg. 358 7/24/13
 Neh. 2:4 Ejaculatory Prayer Vol. 23 pg. 709 9/9/77
 Neh. 3:8 The Broad Wall Vol. 57 pg. 601 12/21/11
 Neh. 3:15 King's Gardens Vol. 14 pg. 25 12/29/67
 Neh. 4:1-23 Exposition Vol. 38 pg. 214 5/1/92
 Neh. 4:9 The Two Guards, Praying and Watching Vol. 38 pg. 205 5/1/92
 Neh. 4:10 Rubbish Vol. 20 pg. 73 1874
 Neh. 5:7 Witnesses Against You Vol. 36 pg. 25 1/19/90
 Neh. 9:17 A God Ready To Pardon Vol. 22 pg. 13 1/9/76
 Neh. 12:42-43 The Joy of the Lord, The Strength of His People Vol. 17 pg. 709 12/31/71

ESTHER

Esth. 4:13-14 Esther's Exaltation; or, Who Knoweth? Vol. 30 pg. 229 4/27/84
 Esth. 9:1 Providence — As Seen In the Book of Esther Vol. 20 pg. 613 11/1/74

JOB

Job 1:1-5 Exposition Vol. 47 pg. 47 1/27/01
 Job 1:1-22 Exposition Vol. 57 pg. 34 1/19/11
 Job 1:4-5 A Merry Christmas Vol. 7 pg. 33 12/23/60
 Job 1:6-22 Exposition Vol. 42 pg. 142 3/22/96
 Job 1:8 Satan Considering the Saints Vol. 11 pg. 193 4/9/65
 Job 1:20-22 Job's Resignation Vol. 42 pg. 133 2/22/96
 Job 1:21 Fifteen Years After! Vol. 53 pg. 61 1/31/07
 Job 1:22 Patient Job, and the Baffled Enemy Vol. 36 pg. 603 9/28/90
 Job 3:23 The Sorrowful Man's Question Vol. 46 pg. 121 3/18/00
 Job 5:26 The Death of the Christian Vol. 1 pg. 323 9/9/55
 Job 5:27 "So It Is" Vol. 36 pg. 637 11/30/90
 Job 6:6 A Cure For Unsavoury Meats: Or Salt for the White Of An Egg Vol. 29 pg. 385 7/5/83
 Job 6:10 Concealing the Words of God Vol. 25 pg. 241 4/27/79
 Job 7:1-21 Exposition Vol. 46 pg. 597 12/16/00
 Job 7:1 The Hand of God in the History of A Man Vol. 21 pg. 565 10/10/75
 Job 7:12 "Am I A Sea, or A Whale?" Vol. 37 pg. 289 5/31/91
 Job 7:21 Why Some Sinners Are Not Pardoned Vol. 46 pg. 589 12/16/00
 Job 8:7 The Beginning, Increase, and End of the Divine Life Vol. 6 pg. 197 4/29/60
 Job 8:11-13 A Sermon From a Rush Vol. 11 pg. 529 9/24/65
 Job 9:20 A Blow At Self-righteousness Vol. 7 pg. 17 12/16/60
 Job 9:20 & Rom. 8:33-34 False Justification and True Vol. 51 pg. 193 4/20/05
 Job 9:30-31 Washed To Greater Foulness Vol. 32 pg. 361 1886
 Job 9:30-31 Cleansing — Wrong Or Right? Vol. 53 pg. 589 12/5/07
 Job 9:33 The Great Arbitration Case Vol. 11 pg. 649 1865
 Job 10:2 The Sweet Uses of Adversity Vol. 5 pg. 465 11/13/59
 Job 10:12 Three Blessings of the Heavenly Charter Vol. 39 pg. 301 6/25/93
 Job 10:12-13 A Song and a Solace Vol. 46 pg. 313 7/8/00
 Job 11:1-20 Exposition Vol. 46 pg. 250 5/27/00
 Job 11:16 Comfort From the Future Vol. 46 pg. 241 5/27/00
 Job 12:9-10 Everywhere and Yet Forgotten Vol. 6 pg. 317 7/29/60

| | | | | |
|--------------|---|---------|---------|----------|
| Job 13:10 | Intercessory Prayer | Vol. 7 | pg. 449 | 8/11/61 |
| Job 13:15 | Faith's Ultimatum | Vol. 21 | pg. 397 | 7/18/75 |
| Job 13:15 | Faith Tried and Triumphant | Vol. 57 | pg. 409 | 8/31/11 |
| Job 13:22 | How To Converse With God | Vol. 21 | pg. 529 | 9/19/75 |
| Job 13:23 | Struggles of Conscience | Vol. 6 | pg. 397 | 9/23/60 |
| Job 13:25 | A Frail Leaf | Vol. 57 | pg. 457 | 9/28/11 |
| Job 14:4 | Out of Nothing Comes Nothing | Vol. 47 | pg. 313 | 7/7/01 |
| Job 14:14 | A Voice From the Hartley Colliery | Vol. 8 | pg. 61 | 1/30/62 |
| Job 14:14 | Our Life, Our Work, Our Change | Vol. 13 | pg. 433 | 8/4/67 |
| Job 15:4 | Restraining Prayer | Vol. 51 | pg. 325 | 7/6/05 |
| Job 15:11 | Concerning the Consolations of God | Vol. 35 | pg. 433 | 8/11/89 |
| Job 16:20 | Man's Scorn and God's Succour | Vol. 59 | pg. 457 | 9/25/13 |
| Job 16:22 | Our Last Journey | Vol. 23 | pg. 505 | 9/9/77 |
| Job 17:9 | The Righteous Holding On His Way | Vol. 13 | pg. 258 | 5/12/67 |
| Job 17:9 | The Final Perseverance of the Saints | Vol. 23 | pg. 361 | 6/24/77 |
| Job 18:12 | The Hunger-bite | Vol. 25 | pg. 702 | 1879 |
| Job 19:1-29 | Exposition | Vol. 50 | pg. 550 | 11/10/04 |
| Job 19:25 | Job's Sure Knowledge | Vol. 50 | pg. 541 | 11/10/04 |
| Job 19:25-27 | I Know That My Redeemer Liveth | Vol. 9 | pg. 205 | 4/12/63 |
| Job 19:28 | The Root of the Matter | Vol. 9 | pg. 217 | 4/12/63 |
| Job 19:28 | The Substance of True Religion | Vol. 27 | pg. 269 | 5/15/81 |
| Job 21:29-31 | Not Now, But Hereafter! | Vol. 7 | pg. 497 | 9/22/61 |
| Job 22:15-17 | The Old Way of the Wicked | Vol. 15 | pg. 133 | 3/7/69 |
| Job 22:26 | Delight In The Almighty | Vol. 31 | pg. 253 | 5/3/85 |
| Job 22:29 | A Word In Season | Vol. 13 | pg. 39 | 1867 |
| Job 22:29 | A Message To the Glad and the Sad | Vol. 43 | pg. 577 | 12/5/97 |
| Job 23:1-17 | Exposition | Vol. 38 | pg. 430 | 9/4/92 |
| Job 23:1-17 | Exposition | Vol. 43 | pg. 586 | 12/5/97 |
| Job 23:1-17 | Exposition | Vol. 47 | pg. 298 | 6/23/01 |
| Job 23:3 | Longing To Find God | Vol. 38 | pg. 421 | 9/4/92 |
| Job 23:3 | The Anxious Enquirer | Vol. 45 | pg. 145 | 3/26/99 |
| Job 23:3-4 | Order and Argument In Prayer | Vol. 12 | pg. 385 | 7/15/66 |
| Job 23:6 | The Question of Fear and the Answer of Faith | Vol. 3 | pg. 9 | 8/31/56 |
| Job 23:8-10 | Believers Tested By Trials | Vol. 47 | pg. 289 | 6/23/01 |
| Job 23:10 | Whither Goest Thou? | Vol. 35 | pg. 421 | 8/4/89 |
| Job 23:11-12 | The Fair Portrait of a Saint | Vol. 26 | pg. 145 | 3/7/80 |
| Job 23:13 | The Infallibility of God's Purpose | Vol. 7 | pg. 465 | 8/25/61 |
| Job 24:1-25 | Exposition | Vol. 47 | pg. 298 | 6/23/01 |
| Job 27:1-23 | Exposition | Vol. 44 | pg. 93 | 2/20/98 |
| Job 27:2 | A Vexed Soul Comforted | Vol. 44 | pg. 85 | 2/20/98 |
| Job 27:10 | The Touchstone of Godly Sincerity | Vol. 17 | pg. 205 | 1871 |
| Job 28:7-8 | The Way of Wisdom | Vol. 49 | pg. 601 | 12/17/03 |
| Job 29:2 | Comfort For the Desponding | Vol. 1 | pg. 387 | 11/25/55 |
| Job 29:2-4 | Job's Regret and Our Own | Vol. 17 | pg. 517 | 9/17/71 |
| Job 29:20 | Freshness | Vol. 28 | pg. 145 | 2/16/82 |
| Job 30:23 | Concerning Death | Vol. 32 | pg. 529 | 9/26/86 |
| Job 30:25 | Christian Sympathy — A Sermon for the Lancashire Distress | Vol. 8 | pg. 625 | 11/9/62 |
| Job 32:7 | The Voices of Our Day | Vol. 58 | pg. 1 | 1/4/12 |
| Job 33:1-33 | Exposition | Vol. 43 | pg. 94 | 2/21/97 |
| Job 33:6-33 | Exposition | Vol. 42 | pg. 95 | 2/23/96 |
| Job 33:14-18 | A Hard Case | Vol. 42 | pg. 85 | 2/23/96 |
| Job 33:14-30 | An Old-fashioned Conversion | Vol. 19 | pg. 145 | 3/16/73 |
| Job 33:24 | Deliverance From the Pit | Vol. 43 | pg. 85 | 2/21/97 |
| Job 33:24-25 | Footsteps of Mercy | Vol. 15 | pg. 685 | 1869 |
| Job 34:1-37 | Exposition | Vol. 46 | pg. 177 | 4/15/00 |
| Job 34:29 | God — All In All | Vol. 13 | pg. 109 | 2/24/67 |
| Job 34:31-32 | For The Sick and Afflicted | Vol. 22 | pg. 37 | 1876 |

| | | | | |
|--------------|-----------------------------------|--------|---------|-------------|
| Job 34:33 | Pride Catechized | Vol.46 | pg. 169 | 4/15/00 |
| Job 34:33 | Conceit Rebuked | Vol.49 | pg. 265 | 6/7/03 |
| Job 35:10 | Questions Which Ought To Be Asked | Vol.26 | pg. 1 | 1880, pg. 1 |
| Job 35:10 | Songs In the Night | Vol.44 | pg. 97 | 2/27/98 |
| Job 36:2 | God's Advocates Breaking Silence | Vol.24 | pg. 145 | 3/17/78 |
| Job 36:2 | Speaking On God's Behalf | Vol.62 | pg. 601 | 12/21/16 |
| Job 36:5 | The Magnanimity of God | Vol.23 | pg. 577 | 10/21/77 |
| Job 37:7 | The Sealed Hand—A Winter Sermon | Vol.58 | pg. 73 | 2/15/12 |
| Job 38:17 | The Doors of the Shadow of Death | Vol.51 | pg. 13 | 1/5/05 |
| Job 38:25-27 | Rain and Grace, — A Parallel | Vol.44 | pg. 385 | 8/14/98 |
| Job 38:31 | The Pleiades and Orion | Vol.14 | pg. 361 | 6/28/68 |
| Job 40:3-4 | Indwelling Sin | Vol. 2 | pg. 233 | 6/1/56 |
| Job 42:5-6 | Job Among the Ashes | Vol.34 | pg. 97 | 2/19/88 |
| Job 42:10 | The Turning of Job's Captivity | Vol.21 | pg. 613 | 1875 |

PSALMS

| | | | | |
|-------------|---|--------|---------|----------|
| Psa. 1:1-3 | The Truly Blessed Man | Vol.57 | pg. 469 | 10/5/11 |
| Psa. 1:4 | The Chaff Driven Away | Vol. 5 | pg. 441 | 10/23/59 |
| Psa. 1:15 | Prayer To God in Trouble an Acceptable Sacrifice | Vol.25 | pg. 649 | 11/9/79 |
| Psa. 2:1-2 | Exposition | Vol.49 | pg. 180 | 4/12/03 |
| Psa. 2:1-12 | Exposition | Vol.48 | pg. 562 | 11/23/02 |
| Psa. 2:2 | The Greatest Trial on Record | Vol. 9 | pg. 97 | 2/22/63 |
| Psa. 2:8-9 | Christ's Universal Kingdom, and How It Cometh | Vol.26 | pg. 253 | 4/25/80 |
| Psa. 2:12 | Exposition | Vol.41 | pg. 190 | 4/21/95 |
| Psa. 2:12 | An Earnest Entreaty | Vol.63 | pg. 61 | 2/8/17 |
| Psa. 2:12 | An Earnest Invitation | Vol. 5 | pg. 281 | 7/3/59 |
| Psa. 3:1-8 | Exposition | Vol.62 | pg. 10 | 1/6/16 |
| Psa. 4:1-6 | Exposition | Vol.62 | pg. 10 | 1/6/16 |
| Psa. 4:1-8 | Exposition | Vol.57 | pg. 549 | 11/16/11 |
| Psa. 4:2 | Christ's Glory Turned To Shame | Vol.57 | pg. 541 | 11/16/11 |
| Psa. 4:3 | "A Peculiar People" | Vol.43 | pg. 385 | 8/15/97 |
| Psa. 4:4-5 | Plain Directions to Those Who Would Be Saved From Sin | Vol.34 | pg. 385 | 7/15/88 |
| Psa. 4:6 | The Search After Happiness | Vol.54 | pg. 385 | 8/13/08 |
| Psa. 5:1-12 | Exposition | Vol.57 | pg. 549 | 11/16/11 |
| Psa. 5:11 | Joy, Joy For Ever | Vol.36 | pg. 289 | 5/25/90 |
| Psa. 6:1-10 | Exposition | Vol.39 | pg. 310 | 6/25/93 |
| Psa. 7:12 | Turn or Burn | Vol. 2 | pg. 417 | 12/7/56 |
| Psa. 8:1-9 | Exposition | Vol.39 | pg. 310 | 6/25/93 |
| Psa. 8:2 | God Glorified By Children's Mouths | Vol.26 | pg. 373 | 6/27/80 |
| Psa. 9:1-20 | Exposition | Vol.50 | pg. 334 | 7/7/04 |
| Psa. 9:4 | Tender Words of Terrible Apprehension! | Vol. 6 | pg. 461 | 11/4/60 |
| Psa. 9:4 | Joy In Salvation | Vol.62 | pg. 121 | 3/16/16 |
| Psa. 9:10 | Dilemma and Deliverance | Vol. 6 | pg. 9 | 12/4/59 |
| Psa. 9:17 | Tender Words of Terrible Apprehension! | Vol. 6 | pg. 461 | 11/4/60 |
| Psa. 9:18 | Good Cheer For the Needy | Vol.50 | pg. 169 | 4/7/04 |
| Psa. 10:14 | The Poor Man's Friend | Vol.53 | pg. 469 | 9/26/07 |
| Psa. 10:17 | Thought-reading Extraordinary | Vol.30 | pg. 529 | 10/5/84 |
| Psa. 10:17 | A New Year's Retrospect and Prospect | Vol.40 | pg. 1 | 1/7/94 |
| Psa. 11:3 | An Immovable Foundation | Vol.12 | pg. 277 | 5/13/66 |
| Psa. 12:1-8 | Exposition | Vol.39 | pg. 262 | 5/28/93 |
| Psa. 12:1-8 | Exposition | Vol.42 | pg. 549 | 11/15/96 |
| Psa. 12:1 | A Suitable Watchword | Vol.54 | pg. 289 | 6/18/08 |
| Psa. 12:5 | The Power of a Sigh | Vol.42 | pg. 217 | 5/10/96 |
| Psa. 12:6 | The Bible Tried and Proved | Vol.35 | pg. 253 | 5/5/89 |
| Psa. 13:1-6 | Exposition | Vol.39 | pg. 262 | 5/28/93 |

| | | | | |
|---------------|---|---------|---------|----------|
| Psa. 13:1-6 | Howling Changed To Singing | Vol. 39 | pg. 265 | 5/28/93 |
| Psa. 14:1-7 | Exposition | Vol. 39 | pg. 262 | 5/28/93 |
| Psa. 14:6 | Are You Mocked? | Vol. 62 | pg. 229 | 4/18/16 |
| Psa. 16:1-11 | Exposition | Vol. 47 | pg. 130 | 3/17/01 |
| Psa. 16:1-11 | Exposition | Vol. 49 | pg. 23 | 1/11/03 |
| Psa. 16:1 | Christ's Prayer and Plea | Vol. 57 | pg. 589 | 12/14/11 |
| Psa. 16:8 | The Secret of a Happy Life | Vol. 22 | pg. 409 | 7/16/76 |
| Psa. 16:11 | Life, and the Path To It | Vol. 49 | pg. 13 | 1/11/03 |
| Psa. 17:1-15 | Exposition | Vol. 46 | pg. 563 | 11/25/00 |
| Psa. 17:7 | "Marvelous Lovingkindness" | Vol. 46 | pg. 553 | 11/25/00 |
| Psa. 17:7 | An Earnest Entreaty | Vol. 61 | pg. 361 | 8/5/15 |
| Psa. 17:8 | The Eye — A Similitude | Vol. 15 | pg. 673 | 1869 |
| Psa. 17:15 | The Hope of Future Bliss | Vol. 1 | pg. 189 | 5/20/55 |
| Psa. 18:1-19 | Exposition | Vol. 46 | pg. 275 | 6/10/00 |
| Psa. 18:1-20 | Exposition | Vol. 41 | pg. 465 | 9/29/95 |
| Psa. 18:1-35 | Exposition | Vol. 48 | pg. 357 | 7/27/02 |
| Psa. 18:1-50 | Exposition | Vol. 54 | pg. 298 | 6/18/08 |
| Psa. 18:16 | Divine Interpositions | Vol. 24 | pg. 493 | 9/8/78 |
| Psa. 18:19 | Blessings Manifold and Marvelous | Vol. 61 | pg. 409 | 9/2/15 |
| Psa. 18:23 | Kept From Iniquity | Vol. 41 | pg. 457 | 9/29/95 |
| Psa. 18:29 | One Trophy For Two Exploits | Vol. 49 | pg. 133 | 3/22/03 |
| Psa. 18:44 | Prompt Obedience | Vol. 58 | pg. 325 | 7/11/12 |
| Psa. 19:1-14 | Exposition | Vol. 48 | pg. 190 | 4/20/02 |
| Psa. 19:1-14 | Exposition | Vol. 50 | pg. 83 | 2/11/04 |
| Psa. 19:7 | Revelation and Conversion | Vol. 50 | pg. 73 | 2/11/04 |
| Psa. 19:7-9 | God In Nature and In Revelation | Vol. 58 | pg. 373 | 8/8/12 |
| Psa. 19:11 | The Warnings and the Rewards of the Word of God | Vol. 36 | pg. 157 | 3/16/90 |
| Psa. 19:11 | David Warned and Rewarded | Vol. 48 | pg. 181 | 4/20/02 |
| Psa. 19:12 | Secret Sins | Vol. 3 | pg. 73 | 2/8/57 |
| Psa. 19:12 | Sin Immeasurable | Vol. 6 | pg. 101 | 2/12/60 |
| Psa. 19:13 | Presumptuous Sins | Vol. 3 | pg. 225 | 6/7/57 |
| Psa. 20:1-9 | Exposition | Vol. 44 | pg. 141 | 3/20/98 |
| Psa. 20:1-9 | Exposition | Vol. 45 | pg. 407 | 8/20/99 |
| Psa. 21:1-13 | Exposition | Vol. 44 | pg. 141 | 3/20/98 |
| Psa. 21:1-13 | Exposition | Vol. 45 | pg. 407 | 8/20/99 |
| Psa. 21:3 | Goodness Going Before | Vol. 58 | pg. 553 | 11/21/12 |
| Psa. 21:5 | Christ's Crowning Glory | Vol. 50 | pg. 145 | 3/24/04 |
| Psa. 21:6 | Exceeding Gladness | Vol. 31 | pg. 121 | 3/8/85 |
| Psa. 22:1-9 | Exposition | Vol. 51 | pg. 322 | 6/29/05 |
| Psa. 22:1-21 | Exposition | Vol. 40 | pg. 298 | 6/10/94 |
| Psa. 22:1-22 | Exposition | Vol. 59 | pg. 466 | 9/25/13 |
| Psa. 22:1-31 | Exposition | Vol. 41 | pg. 298 | 6/23/95 |
| Psa. 22:1-31 | Exposition | Vol. 42 | pg. 190 | 4/19/96 |
| Psa. 22:1-31 | Exposition | Vol. 46 | pg. 213 | 5/6/00 |
| Psa. 22:1-31 | Exposition | Vol. 54 | pg. 189 | 4/16/08 |
| Psa. 22:1 | Cries From the Cross | Vol. 44 | pg. 145 | 3/27/98 |
| Psa. 22:2 | Unanswered Prayer | Vol. 59 | pg. 109 | 3/6/13 |
| Psa. 22:8 | Faith Among Mockers | Vol. 30 | pg. 109 | 1884 |
| Psa. 22:22-23 | Jesus the Example of Holy Praise | Vol. 14 | pg. 133 | 3/8/68 |
| Psa. 22:26 | Good News For Seekers | Vol. 22 | pg. 493 | 9/3/76 |
| Psa. 22:27 | The Triumph of Christianity | Vol. 18 | pg. 229 | 4/21/72 |
| Psa. 22:29 | Life's Need and Maintenance | Vol. 22 | pg. 349 | 6/18/76 |
| Psa. 22:29 | Keeping the Soul Alive | Vol. 61 | pg. 49 | 2/4/15 |
| Psa. 23:1-6 | Exposition | Vol. 42 | pg. 34 | 1/19/96 |
| Psa. 23:1-6 | Exposition | Vol. 50 | pg. 273 | 6/2/04 |
| Psa. 23:1-6 | Exposition | Vol. 51 | pg. 46 | 1/19/05 |
| Psa. 23:1-6 | Exposition | Vol. 56 | pg. 261 | 5/26/10 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|---------------|
| Psa. 23:1 | “The Lord Is My Shepherd” | Vol. 52 | pg. 457 | 9/20/06 |
| Psa. 23:1 | The Good Shepherd | Vol. 53 | pg. 481 | 10/3/07 |
| Psa. 23:3 | My Restorer | Vol. 19 | pg. 721 | 12/28/73 |
| Psa. 23:4 | The Valley of the Shadow of Death | Vol. 27 | pg. 229 | 8/12/80 |
| Psa. 23:5 | The Overflowing Cup | Vol. 15 | pg. 313 | 6/6/69 |
| Psa. 23:5 | The Overflowing Cup | Vol. 21 | pg. 145 | 1875 |
| Psa. 24:1-10 | Exposition | Vol. 56 | pg. 261 | 5/26/10 |
| Psa. 24:3 | Climbing the Mountain | Vol. 7 | pg. 385 | 6/16/61 |
| Psa. 24:9 | A Triumphal Entrance | Vol. 13 | pg. 265 | 12/13/66 |
| Psa. 25:1-22 | Exposition | Vol. 45 | pg. 441 | 9/10/99 |
| Psa. 25:10 | The Covenanter | Vol. 33 | pg. 421 | 7/31/87 |
| Psa. 25:11 | Great Pardon For Great Sin | Vol. 52 | pg. 241 | 5/17/06 |
| Psa. 25:14 | Private and Confidential | Vol. 60 | pg. 493 | 10/15/14 |
| Psa. 25:18 | A Troubled Prayer | Vol. 13 | pg. 157 | 1867, pg. 157 |
| Psa. 26:1-12 | Exposition | Vol. 57 | pg. 418 | 8/31/11 |
| Psa. 26:3 | Think Well and Do Well | Vol. 16 | pg. 577 | 10/23/70 |
| Psa. 26:9 | The Saint’s Horror at the Sinner’s Hell | Vol. 9 | pg. 445 | 8/16/63 |
| Psa. 26:12 | Standing and Singing | Vol. 59 | pg. 481 | 10/9/13 |
| Psa. 27:1-14 | Exposition | Vol. 41 | pg. 34 | 1/20/95 |
| Psa. 27:1-14 | Exposition | Vol. 43 | pg. 526 | 10/31/97 |
| Psa. 27:1-14 | Exposition | Vol. 44 | pg. 273 | 6/5/98 |
| Psa. 27:1-14 | Exposition | Vol. 51 | pg. 381 | 8/3/05 |
| Psa. 27:1-14 | Exposition | Vol. 52 | pg. 598 | 12/6/06 |
| Psa. 27:1-14 | Exposition | Vol. 61 | pg. 59 | 2/4/15 |
| Psa. 27:8 | The Echo | Vol. 13 | pg. 469 | 1867 |
| Psa. 27:9 | A Mighty Plea | Vol. 19 | pg. 661 | 11/23/73 |
| Psa. 27:13 | Believing To See | Vol. 13 | pg. 457 | 1867 |
| Psa. 27:13 | Seeing God’s Goodness Here | Vol. 52 | pg. 589 | 12/6/06 |
| Psa. 27:14 | Brave Waiting | Vol. 23 | pg. 481 | 8/26/77 |
| Psa. 28:1 | Safe Though Sin-surrounded | Vol. 62 | pg. 505 | 10/26/16 |
| Psa. 28:1-6 | Exposition | Vol. 61 | pg. 83 | 2/18/15 |
| Psa. 28:7 | A Sacred Solo | Vol. 24 | pg. 385 | 1878 |
| Psa. 28:9 | A Prayer For the Church Militant | Vol. 13 | pg. 481 | 1867 |
| Psa. 28:35 | Divine Gentleness Acknowledged | Vol. 12 | pg. 181 | 4/1/66 |
| Psa. 29:4 | The Majestic Voice | Vol. 2 | pg. 265 | 6/22/56 |
| Psa. 30:1-12 | Exposition | Vol. 52 | pg. 10 | 12/28/05 |
| Psa. 30:4 | Singing Saints | Vol. 42 | pg. 517 | 11/1/96 |
| Psa. 31:1-24 | Exposition | Vol. 42 | pg. 117 | 3/8/96 |
| Psa. 31:1-24 | Exposition | Vol. 45 | pg. 515 | 10/22/99 |
| Psa. 31:1-24 | Exposition | Vol. 53 | pg. 477 | 9/26/07 |
| Psa. 31:15 | “My Times Are in Thy Hands | Vol. 37 | pg. 277 | 5/17/91 |
| Psa. 31:19 | David’s Holy Wonder at the Lord’s Great Goodness | Vol. 13 | pg. 541 | 9/19/67 |
| Psa. 31:22 | Consolation For the Despairing | Vol. 19 | pg. 685 | 12/7/73 |
| Psa. 31:22 | A Hasty Expression Penitently Retracted | Vol. 27 | pg. 157 | 1881 |
| Psa. 31:23 | The Saints’ Love To God | Vol. 51 | pg. 505 | 10/19/05 |
| Psa. 31:23 | Constraining Love! | Vol. 6 | pg. 309 | 6/3/60 |
| Psa. 31:24 | The Cure For a Weak Heart | Vol. 42 | pg. 109 | 3/8/96 |
| Psa. 32:1-7 | Exposition | Vol. 59 | pg. 119 | 12/18/13 |
| Psa. 32:1-11 | Exposition | Vol. 38 | pg. 574 | 11/27/92 |
| Psa. 32:1-11 | Exposition | Vol. 44 | pg. 82 | 2/13/98 |
| Psa. 32:1-11 | Exposition | Vol. 49 | pg. 322 | 7/5/03 |
| Psa. 32:1-11 | Exposition | Vol. 50 | pg. 226 | 5/5/04 |
| Psa. 32:1-11 | Exposition | Vol. 50 | pg. 467 | 9/22/04 |
| Psa. 32:1-11 | Exposition | Vol. 53 | pg. 191 | 4/11/07 |
| Psa. 32:1-11 | Exposition | Vol. 59 | pg. 119 | 3/6/13 |
| Psa. 32:1-11 | Exposition | Vol. 61 | pg. 200 | 4/29/15 |
| Psa. 32:11 | Exposition | Vol. 57 | pg. 476 | 10/5/11 |

| | | | | |
|------------------------------|--|---------|---------|----------|
| Psa. 32:1 | Pardon and Justification | Vol. 53 | pg. 409 | 8/22/07 |
| Psa. 32:2 | Guile Forsaken When Guilt Is Forgiven | Vol. 23 | pg. 181 | 3/25/77 |
| Psa. 32:3 | The Danger of Unconfessed Sin | Vol. 23 | pg. 421 | 1877 |
| Psa. 32:3-4 | Terrible Convictions and Gentle Drawings | Vol. 6 | pg. 213 | 5/6/60 |
| Psa. 32:5 | Confession of Sin Illustrated | Vol. 11 | pg. 409 | 7/23/65 |
| Psa. 32:6 | Prayer, the Proof of Godliness | Vol. 41 | pg. 517 | 11/3/95 |
| Psa. 32:8-9 | Bit and Bridle: How To Escape Them | Vol. 37 | pg. 97 | 2/15/91 |
| Psa. 33:1 | Praise Comely To the Upright | Vol. 61 | pg. 241 | 5/27/15 |
| Psa. 33:18 | Hoping In God's Mercy | Vol. 60 | pg. 37 | 1/22/14 |
| Psa. 34:1-20 | Exposition | Vol. 61 | pg. 200 | 2/11/15 |
| Psa. 33:1-22 | Exposition | Vol. 41 | pg. 369 | 8/4/95 |
| Psa. 33:1-22 | Exposition | Vol. 41 | pg. 526 | 11/3/95 |
| Psa. 34:1-22 | Exposition | Vol. 42 | pg. 345 | 7/19/96 |
| Psa. 34:1-22 | Exposition | Vol. 55 | pg. 298 | 6/17/09 |
| Psa. 34:1-22 | Exposition | Vol. 56 | pg. 430 | 9/1/10 |
| Psa. 34:1-23 | Exposition | Vol. 60 | pg. 274 | 6/4/14 |
| Psa. 34:5 | Looking Unto Jesus | Vol. 4 | pg. 241 | 5/23/58 |
| Psa. 34:6 | A Poor Man's Cry, and What Came Of It | Vol. 37 | pg. 133 | 3/8/91 |
| Psa. 34:10 | Lions Lacking — But the Children Satisfied | Vol. 2 | pg. 89 | 2/10/56 |
| Psa. 34:10 | Seeking Richly Rewarded | Vol. 60 | pg. 265 | 6/4/14 |
| Psa. 35:3 | Full Assurance | Vol. 7 | pg. 259 | 4/28/61 |
| Psa. 35:3 | Soul Satisfaction | Vol. 55 | pg. 145 | 3/25/09 |
| Psa. 35:3 | Assurance Sought | Vol. 63 | pg. 13 | 1/11/17 |
| Psa. 36:6 | Fathomless | Vol. 59 | pg. 397 | 8/21/13 |
| Psa. 37:1-10 | Exposition | Vol. 59 | pg. 408 | 8/21/13 |
| Psa. 37:1-18 | Exposition | Vol. 40 | pg. 179 | 4/15/94 |
| Psa. 37:1-40 | Exposition | Vol. 47 | pg. 189 | 4/21/01 |
| Psa. 37:1-40 | Exposition | Vol. 52 | pg. 418 | 8/23/06 |
| Psa. 37:1-40 | Exposition | Vol. 55 | pg. 81 | 2/11/09 |
| Psa. 37:1-40 | Exposition | Vol. 57 | pg. 21 | 1/12/11 |
| Psa. 37:17-40 | Exposition | Vol. 59 | pg. 491 | 10/9/13 |
| Psa. 37:4 | Sunshine in the Heart | Vol. 8 | pg. 325 | 6/15/62 |
| Psa. 37:7 | "Rest In The Lord" | Vol. 23 | pg. 25 | 1/14/77 |
| Psa. 37:39 | A Testimony To Free and Sovereign Grace | Vol. 33 | pg. 157 | 1887 |
| Psa. 37:7 | A Comforting Message For the Closing Year | Vol. 40 | pg. 613 | 12/30/94 |
| Psa. 37:35-37 | Facts and Inferences | Vol. 57 | pg. 13 | 1/12/11 |
| Psa. 37:31 | The Best Thing In the Best Place | Vol. 52 | pg. 409 | 8/23/06 |
| Psa. 38:1-22 | Exposition | Vol. 40 | pg. 526 | 11/4/94 |
| Psa. 38:1-22 | Exposition | Vol. 50 | pg. 574 | 11/24/04 |
| Psa. 38 (Title) | Things To Be Remembered | Vol. 59 | pg. 145 | 3/27/13 |
| Psa. 38:4 | "Cases of Conscience" | Vol. 50 | pg. 565 | 11/24/04 |
| Psa. 38:9 | Desires Towards God: A Sermon For the Weak | Vol. 26 | pg. 589 | 10/24/80 |
| Psa. 39:1-13 | Exposition | Vol. 40 | pg. 58 | 2/4/94 |
| Psa. 39:1-13 | Exposition | Vol. 40 | pg. 572 | 12/2/94 |
| Psa. 39:1-13 | Exposition | Vol. 57 | pg. 46 | 1/26/11 |
| Psa. 39:3 | Quiet Musing! | Vol. 10 | pg. 353 | 1864 |
| Psa. 39:4 | "Brief Life Is Here Our Portion" | Vol. 60 | pg. 325 | 7/9/14 |
| Psa. 39:6-8 | Earth's Vanities, and Heaven's Verities | Vol. 40 | pg. 49 | 2/4/94 |
| Psa. 39:12 | Strangers and Sojourners | Vol. 57 | pg. 37 | 1/26/11 |
| Psa. 40:1-17 | Exposition | Vol. 40 | pg. 142 | 3/25/94 |
| Psa. 40:1-17 | Exposition | Vol. 51 | pg. 10 | 12/29/04 |
| Psa. 40:1-3 | Brought Up From the Horrible Pit | Vol. 28 | pg. 445 | 8/13/82 |
| Psa. 40:3 | The New Song On Earth | Vol. 41 | pg. 361 | 8/4/95 |
| Psa. 40:6-8 & Heb. 10:5-7 | "Lo, I Come": Exposition | Vol. 37 | pg. 241 | 4/26/91 |
| Psa. 40:7 | "Lo, I Come": Application | Vol. 37 | pg. 253 | 5/3/91 |
| Psa. 40:9-10 | The Master's Profession — The Disciple's Pursuit | Vol. 17 | pg. 109 | 4/21/70 |

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|----------|
| Psa. 40:9-11 | A Memorable Milestone | Vol. 51 | pg. 1 | 12/29/04 |
| Psa. 40:12-13 | “Out of the Depths” | Vol. 40 | pg. 133 | 3/25/94 |
| Psa. 40:17 | The Happy Beggar | Vol. 53 | pg. 241 | 5/16/07 |
| Psa. 41:1-13 | Exposition | Vol. 43 | pg. 453 | 9/19/97 |
| Psa. 41:4 | A Singular Plea In Prayer | Vol. 43 | pg. 445 | 9/19/97 |
| Psa. 42:1-11 | Exposition | Vol. 43 | pg. 453 | 9/19/97 |
| Psa. 42:1-6 | Exposition | Vol. 60 | pg. 371 | 11/19/14 |
| Psa. 42:1-11 | Exposition | Vol. 49 | pg. 405 | 8/20/03 |
| Psa. 42:1-11 | Exposition | Vol. 57 | pg. 451 | 9/21/11 |
| Psa. 42:11 | Exposition | Vol. 60 | pg. 371 | 7/30/14 |
| Psa. 42:1 | The Panting Hart | Vol. 14 | pg. 409 | 7/26/68 |
| Psa. 42:6 | Sweet Stimulants For the Fainting Soul | Vol. 48 | pg. 457 | 9/28/02 |
| Psa. 42:7 | Deep Calleth Unto Deep | Vol. 15 | pg. 205 | 4/11/69 |
| Psa. 42:11 | The Secret of Health | Vol. 21 | pg. 181 | 3/28/75 |
| Psa. 43:1-5 | Exposition | Vol. 57 | pg. 540 | 11/9/11 |
| Psa. 43:1-11 | Exposition | Vol. 47 | pg. 130 | 3/17/01 |
| Psa. 44:1-8 | Exposition | Vol. 49 | pg. 443 | 9/10/03 |
| Psa. 44:1 | The Story of God’s Mighty Acts | Vol. 5 | pg. 305 | 7/17/59 |
| Psa. 45:1-9 | Exposition | Vol. 60 | pg. 119 | 3/5/14 |
| Psa. 45:1-14 | Exposition | Vol. 62 | pg. 249 | 5/25/16 |
| Psa. 45:1-17 | Exposition | Vol. 49 | pg. 443 | 9/10/03 |
| Psa. 45:1-17 | Exposition | Vol. 53 | pg. 238 | 5/9/07 |
| Psa. 45:2 | The Gracious Lips of Jesus | Vol. 54 | pg. 97 | 2/27/08 |
| Psa. 45:3-5 | The Almighty Warrior | Vol. 58 | pg. 109 | 3/7/12 |
| Psa. 45:5 | The King’s Sharp Arrows | Vol. 53 | pg. 229 | 5/9/07 |
| Psa. 45:7 | The Oil of Gladness | Vol. 22 | pg. 25 | 1/16/76 |
| Psa. 45:7-8 | The Gladness of the Man of Sorrows | Vol. 9 | pg. 133 | 3/8/63 |
| Psa. 45:16 | The True Apostolical Succession | Vol. 7 | pg. 609 | 12/15/61 |
| Psa. 45:16 | The Unbroken Line of True Nobles | Vol. 21 | pg. 589 | 10/17/75 |
| Psa. 46:1-11 | Exposition | Vol. 57 | pg. 155 | 3/30/11 |
| Psa. 46:1-3 | Earthquake, But Not Heartquake | Vol. 33 | pg. 121 | 2/27/87 |
| Psa. 46:8-9 | The Desolations of the Lord, The Consolation of His Saints | Vol. 4 | pg. 201 | 4/28/58 |
| Psa. 47:1-9 | Exposition | Vol. 48 | pg. 312 | 6/29/02 |
| Psa. 47:1-9 | Exposition | Vol. 51 | pg. 96 | 2/16/05 |
| Psa. 47:4 | A Wise Desire | Vol. 1 | pg. 253 | 7/8/55 |
| Psa. 48:1-14 | Exposition | Vol. 48 | pg. 347 | 7/20/02 |
| Psa. 48:1-14 | Exposition | Vol. 58 | pg. 367 | 8/1/12 |
| Psa. 48:8 | “As We Have Heard, So Have We Seen” | Vol. 34 | pg. 157 | 3/18/88 |
| Psa. 48:8 | Experience Confirming Testimony | Vol. 60 | pg. 109 | 3/5/14 |
| Psa. 48:9 | A Worthy Theme For Thought | Vol. 48 | pg. 277 | 6/15/02 |
| Psa. 48:12-14 | Beholding God’s Church | Vol. 60 | pg. 433 | 9/10/14 |
| Psa. 49:1-20 | Exposition | Vol. 51 | pg. 22 | 5/5/05 |
| Psa. 50:1-10 | Exposition | Vol. 61 | pg. 299 | 6/24/15 |
| Psa. 50:1-23 | Exposition | Vol. 55 | pg. 119 | 3/4/09 |
| Psa. 50:1-23 | Exposition | Vol. 56 | pg. 466 | 9/22/10 |
| Psa. 50:5 | The Two Gatherings | Vol. 56 | pg. 457 | 9/22/10 |
| Psa. 50:14-15 | True Worship | Vol. 61 | pg. 289 | 6/24/15 |
| Psa. 50:14-23 | Exposition | Vol. 61 | pg. 393 | 8/19/15 |
| Psa. 50:15 | Robinson Crusoe’s Text | Vol. 31 | pg. 685 | 12/27/85 |
| Psa. 50:21 | Mistakes Concerning God | Vol. 54 | pg. 553 | 11/19/08 |
| Psa. 55:1-17 | Exposition | Vol. 62 | pg. 94 | 2/24/16 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 41 | pg. 310 | 6/30/95 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 41 | pg. 453 | 9/22/95 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 42 | pg. 598 | 12/13/96 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 43 | pg. 153 | 3/28/97 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 44 | pg. 454 | 9/18/98 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 50 | pg. 479 | 9/29/04 |

| | | | | |
|--|--|---------|---------|----------|
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 51 | pg. 224 | 5/4/05 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 52 | pg. 501 | 10/11/06 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 53 | pg. 442 | 9/5/07 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 57 | pg. 573 | 11/30/11 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 59 | pg. 475 | 10/2/13 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 59 | pg. 608 | 12/18/13 |
| Psa. 51:1-19 | Exposition | Vol. 61 | pg. 368 | 8/5/15 |
| Psa. 51:4 | Unimpeachable Justice | Vol. 2 | pg. 257 | 6/15/56 |
| Psa. 51:6 | God's Desire For Us, and His Work In Us | Vol. 61 | pg. 541 | 11/18/15 |
| Psa. 51:7 | A Mingled Strain | Vol. 32 | pg. 701 | 1886 |
| Psa. 51:7 | The Guilt and the Cleansing | Vol. 53 | pg. 433 | 9/5/07 |
| Psa. 51:7 | The Wordless Book | Vol. 57 | pg. 565 | 11/30/11 |
| Psa. 51:8 | Broken Bones | Vol. 15 | pg. 157 | 3/21/69 |
| Psa. 51:10 | Gracious Renewal | Vol. 9 | pg. 37 | 1/25/63 |
| Psa. 51:11-13 | A Most Needful Prayer Concerning the Holy Spirit | Vol. 16 | pg. 553 | 10/9/70 |
| Psa. 51:14 | Soul Murder — Who Is Guilty? | Vol. 12 | pg. 541 | 9/30/66 |
| Psa. 51:17 | Repentance After Conversion | Vol. 41 | pg. 301 | 6/30/95 |
| Psa. 55:22 | A Good Man In An Evil Case | Vol. 49 | pg. 217 | 5/10/03 |
| Psa. 57:1 & Psa. 55:22 & Isa. 1:10 | Three Texts, But One Subject—Faith | Vol. 39 | pg. 553 | 11/19/93 |
| Psa. 56:1-13 | Exposition | Vol. 56 | pg. 587 | 12/1/10 |
| Psa. 56:1-13 | Exposition | Vol. 58 | pg. 179 | 4/11/12 |
| Psa. 56:3 | Faith Hand In Hand With Fear | Vol. 57 | pg. 265 | 6/8/11 |
| Psa. 56:3 & Isa. 12:2 | Fearing and Trusting — Trusting and Not Fearing | Vol. 59 | pg. 325 | 7/10/13 |
| Psa. 57:1-6 | Exposition | Vol. 50 | pg. 95 | 2/18/04 |
| Psa. 57:1-11 | Exposition | Vol. 38 | pg. 550 | 11/13/92 |
| Psa. 57:1-11 | Exposition | Vol. 56 | pg. 587 | 12/1/10 |
| Psa. 57:2 | Strong Faith in a Faithful God | Vol. 61 | pg. 61 | 2/11/15 |
| Psa. 57:4 | Among Lions | Vol. 25 | pg. 541 | 9/4/79 |
| Psa. 57:7-11 | Exposition | Vol. 50 | pg. 11 | 12/31/03 |
| Psa. 57:8 | The Alarum | Vol. 17 | pg. 337 | 1871 |
| Psa. 59:10 | A Singular Title and A Special Favour | Vol. 20 | pg. 385 | 7/12/74 |
| Psa. 59:10 | God's Mercy Going Before | Vol. 60 | pg. 313 | 7/2/14 |
| Psa. 60:8 | Moab Is My Washpot | Vol. 17 | pg. 181 | 1871 |
| Psa. 61:2 | The High Rock | Vol. 47 | pg. 241 | 5/26/01 |
| Psa. 60:4 | Our Banner | Vol. 52 | pg. 133 | 3/15/06 |
| Psa. 62:1-12 | Exposition | Vol. 54 | pg. 526 | 10/29/08 |
| Psa. 62:1-12 | Exposition | Vol. 56 | pg. 598 | 12/7/10 |
| Psa. 62:2 | God Alone the Salvation of His People | Vol. 2 | pg. 209 | 5/18/56 |
| Psa. 62:5 | Waiting Only Upon God | Vol. 3 | pg. 293 | 8/2/57 |
| Psa. 63:1-11 | Exposition | Vol. 57 | pg. 442 | 9/14/11 |
| Psa. 63:1-11 | Exposition | Vol. 51 | pg. 142 | 3/16/05 |
| Psa. 63:1-11 | Exposition | Vol. 47 | pg. 132 | 3/17/01 |
| Psa. 63:1-11 | Exposition | Vol. 41 | pg. 586 | 12/8/95 |
| Psa. 63:1-11 | Exposition | Vol. 52 | pg. 347 | 7/12/06 |
| Psa. 63:1-11 | Exposition | Vol. 62 | pg. 490 | 10/12/16 |
| Psa. 63:1-2 | A Wilderness Cry | Vol. 24 | pg. 433 | 8/4/78 |
| Psa. 63:7 | Experience and Assurance | Vol. 36 | pg. 529 | 9/28/90 |
| Psa. 65:1-2 | Praises and Vows Accepted In Zion | Vol. 17 | pg. 661 | 1871 |
| Psa. 65:5 | God In Heaven, and Men On the Sea | Vol. 58 | pg. 457 | 9/26/12 |
| Psa. 65:10 | Spring in the Heart | Vol. 12 | pg. 85 | 2/11/66 |
| Psa. 65:11 | Thanksgiving and Prayer | Vol. 9 | pg. 541 | 9/27/63 |
| Psa. 65:11 | Crowning Blessings Ascribed To God | Vol. 25 | pg. 289 | 5/18/79 |
| Psa. 66:1-15 | Exposition | Vol. 60 | pg. 239 | 5/14/14 |
| Psa. 66:1-20 | Exposition | Vol. 54 | pg. 390 | 8/13/08 |

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|----------|
| Psa. 66:10 | The Church's Probation | Vol. 51 | pg. 613 | 12/21/05 |
| Psa. 67:6-7 | The Minstrelsy of Hope | Vol. 14 | pg. 373 | 7/5/68 |
| Psa. 68:1-35 | Exposition | Vol. 46 | pg. 82 | 2/18/00 |
| Psa. 68:18 | Our Lord's Triumphant Ascension | Vol. 36 | pg. 241 | 5/11/90 |
| Psa. 68:19-20 | Daily Blessings For God's People | Vol. 62 | pg. 1 | 1/6/16 |
| Psa. 68:20-21 | The Royal Prerogative | Vol. 26 | pg. 109 | 2/15/80 |
| Psa. 68:28 | Some Marks of God's People | Vol. 46 | pg. 73 | 2/18/00 |
| Psa. 69:1-21 | Exposition | Vol. 59 | pg. 309 | 6/26/13 |
| Psa. 69:5 | God's Knowledge of Sin | Vol. 44 | pg. 13 | 1/9/98 |
| Psa. 69:13 | The Truth of God's Salvation | Vol. 40 | pg. 169 | 4/15/94 |
| Psa. 69:14 | The Believer Sinking in the Mire | Vol. 11 | pg. 289 | 1865 |
| Psa. 70:4 | Our Watchword | Vol. 17 | pg. 541 | 10/1/71 |
| Psa. 70:5 | Pleading | Vol. 17 | pg. 601 | 10/29/71 |
| Psa. 71:1-14 | Exposition | Vol. 58 | pg. 526 | 10/31/12 |
| Psa. 71:1-24 | Exposition | Vol. 53 | pg. 33 | 1/10/07 |
| Psa. 71:1-24 | Exposition | Vol. 57 | pg. 611 | 12/21/11 |
| Psa. 71:3 | God Our Continual Resort | Vol. 31 | pg. 481 | 9/6/85 |
| Psa. 71:14 | More and More | Vol. 17 | pg. 361 | 7/2/71 |
| Psa. 71:15 | God's Innumerable Mercies | Vol. 53 | pg. 25 | 1/10/07 |
| Psa. 71:16 | Faith's Firm Resolve | Vol. 36 | pg. 505 | 7/18/89 |
| Psa. 71:17 | God's Pupil, God's Preacher: An Autobiography | Vol. 39 | pg. 349 | 7/23/93 |
| Psa. 71:17 | God, The Children's Teacher | Vol. 57 | pg. 481 | 10/15/11 |
| Psa. 71:17-18 | The Old Man's Sermon | Vol. 21 | pg. 541 | 9/26/75 |
| Psa. 72:1-4 | Exposition | Vol. 48 | pg. 11 | 1/5/02 |
| Psa. 72:1-20 | Exposition | Vol. 42 | pg. 70 | 2/9/96 |
| Psa. 72:1-20 | Exposition | Vol. 58 | pg. 22 | 1/11/12 |
| Psa. 72:2 | A Sermon For the Most Miserable of Men | Vol. 15 | pg. 61 | 1/31/69 |
| Psa. 72:12 | The Poor Man's Friend | Vol. 18 | pg. 109 | 1872 |
| Psa. 72:15 | Pray For Jesus | Vol. 12 | pg. 589 | 10/21/66 |
| Psa. 72:15 | Homage Offered To the Great King | Vol. 54 | pg. 325 | 2/9/08 |
| Psa. 72:17 | The Eternal Name | Vol. 1 | pg. 205 | 5/27/55 |
| Psa. 72:17 | Jesus: "All Blessing and All Blest" | Vol. 37 | pg. 61 | 2/1/91 |
| Psa. 72:17 | "Blessed In Him" | Vol. 42 | pg. 61 | 2/9/96 |
| Psa. 72:19 | David's Dying Prayer | Vol. 3 | pg. 177 | 4/26/57 |
| Psa. 73:1-28 | Exposition | Vol. 40 | pg. 550 | 11/18/94 |
| Psa. 73:1-28 | Exposition | Vol. 53 | pg. 430 | 8/29/07 |
| Psa. 73:1-28 | Exposition | Vol. 59 | pg. 143 | 3/20/13 |
| Psa. 73:1-28 | Exposition | Vol. 59 | pg. 405 | 8/21/13 |
| Psa. 73:17-18 | The Sinner's End | Vol. 8 | pg. 709 | 12/28/62 |
| Psa. 73:22-25 | Flesh and Spirit — A Riddle | Vol. 8 | pg. 481 | 8/31/62 |
| Psa. 73:24 | Guidance To Grace and Glory | Vol. 40 | pg. 565 | 12/2/94 |
| Psa. 73:28 | An Assuredly Good Thing | Vol. 15 | pg. 373 | 7/4/69 |
| Psa. 73:28 | "Let Us Pray" | Vol. 6 | pg. 17 | 11/6/59 |
| Psa. 74:20 | The Covenant Pleaded | Vol. 25 | pg. 5 | 1879 |
| Psa. 76:3 | The Arrows of the Bow Broken In Zion | Vol. 14 | pg. 37 | 1/19/68 |
| Psa. 77:1-20 | Exposition | Vol. 39 | pg. 358 | 7/23/93 |
| Psa. 77:1-20 | Exposition | Vol. 44 | pg. 70 | 2/6/98 |
| Psa. 77:1-20 | Exposition | Vol. 44 | pg. 334 | 7/10/98 |
| Psa. 77:1-20 | Exposition | Vol. 61 | pg. 346 | 7/22/15 |
| Psa. 77:1-20 | The Saint's Trials and the Divine Deliverances | Vol. 63 | pg. 37 | 1/25/17 |
| Psa. 77:2 | Refusing To Be Comforted | Vol. 44 | pg. 325 | 7/10/98 |
| Psa. 77:9 | A Question for a Questioner | Vol. 31 | pg. 301 | 5/31/85 |
| Psa. 78:9-72 | Exposition | Vol. 43 | pg. 465 | 9/26/97 |
| Psa. 78:9 | Turning Back In the Day of Battle | Vol. 12 | pg. 337 | 1866 |
| Psa. 78:10-61 | Exposition | Vol. 52 | pg. 201 | 4/19/06 |
| Psa. 78:41 | Limiting God | Vol. 5 | pg. 377 | 8/28/59 |
| Psa. 78:51-52 | God's Dealings With Egypt and Israel | Vol. 47 | pg. 181 | 4/21/01 |

| | | | | |
|---------------|--------------------------------------|---------|---------|----------|
| Psa. 80:1-19 | Exposition | Vol. 54 | pg. 440 | 9/10/08 |
| Psa. 80:19 | One Antidote For Many Ills | Vol. 5 | pg. 473 | 11/9/56 |
| Psa. 80:14 | The Vine of Israel | Vol. 57 | pg. 145 | 3/30/11 |
| Psa. 81:1-16 | Exposition | Vol. 40 | pg. 466 | 9/30/94 |
| Psa. 81:1-16 | Exposition | Vol. 54 | pg. 440 | 5/7/08 |
| Psa. 81:10 | Opening The Mouth | Vol. 21 | pg. 133 | 1875 |
| Psa. 81:10 | Encouragements To Prayer | Vol. 40 | pg. 457 | 9/30/94 |
| Psa. 81:10 | The Wide-open Mouth Filled | Vol. 50 | pg. 181 | 4/14/04 |
| Psa. 83:1-18 | Exposition | Vol. 40 | pg. 310 | 7/1/94 |
| Psa. 83:3 | God's Hidden Ones | Vol. 40 | pg. 301 | 7/1/94 |
| Psa. 83:16 | Shame Leading To Salvation | Vol. 42 | pg. 541 | 11/15/96 |
| Psa. 84:1-12 | Exposition | Vol. 43 | pg. 57 | 1/31/97 |
| Psa. 84:1-12 | Exposition | Vol. 50 | pg. 143 | 3/17/04 |
| Psa. 84:1-12 | Exposition | Vol. 50 | pg. 371 | 7/28/04 |
| Psa. 84:1-12 | Exposition | Vol. 53 | pg. 299 | 6/13/07 |
| Psa. 84:3 | The Sparrow and the Swallow | Vol. 53 | pg. 253 | 5/23/07 |
| Psa. 84:11 | Grace <i>and</i> Glory | Vol. 43 | pg. 49 | 1/31/97 |
| Psa. 84:11 | "Grace and Glory" | Vol. 59 | pg. 277 | 6/12/13 |
| Psa. 84:11-12 | A Feast For the Upright | Vol. 28 | pg. 265 | 5/14/82 |
| Psa. 85:1-13 | Exposition | Vol. 41 | pg. 393 | 8/18/95 |
| Psa. 85:1-13 | Exposition | Vol. 47 | pg. 610 | 12/22/01 |
| Psa. 85:6 | A Prayer For Revival | Vol. 41 | pg. 385 | 8/18/95 |
| Psa. 85:8 | Peace: How Gained, How Broken | Vol. 35 | pg. 589 | 10/27/89 |
| Psa. 86:6-7 | Concerning Prayer | Vol. 34 | pg. 625 | 11/25/88 |
| Psa. 86:17 | Tokens For Good | Vol. 26 | pg. 529 | 1880 |
| Psa. 87:6 | The Last Census | Vol. 7 | pg. 273 | 4/14/61 |
| Psa. 87:7 | Blessings Traced To Their Source | Vol. 56 | pg. 421 | 9/1/10 |
| Psa. 88:1-18 | Exposition | Vol. 41 | pg. 478 | 10/6/95 |
| Psa. 88:7 | For The Troubled | Vol. 19 | pg. 13 | 1/12/73 |
| Psa. 88:13 | Heman's Sorrowful Psalm | Vol. 41 | pg. 469 | 10/6/95 |
| Psa. 89:1-37 | Exposition | Vol. 40 | pg. 91 | 2/25/94 |
| Psa. 89:1-37 | Exposition | Vol. 55 | pg. 190 | 4/15/09 |
| Psa. 89:1-52 | Exposition | Vol. 57 | pg. 141 | 3/23/11 |
| Psa. 89:1-2 | Maschil of Ethan | Vol. 26 | pg. 601 | 1880 |
| Psa. 89:13 | The Mighty Arm | Vol. 12 | pg. 73 | 2/4/66 |
| Psa. 89:13 | The Mighty Arm | Vol. 22 | pg. 517 | 9/17/76 |
| Psa. 89:17 | The Glory of Our Strength | Vol. 55 | pg. 181 | 4/15/09 |
| Psa. 89:19 | The People's Christ | Vol. 1 | pg. 77 | 2/25/55 |
| Psa. 89:49 | Unparalleled Lovingkindnesses | Vol. 57 | pg. 133 | 3/23/11 |
| Psa. 90:1-12 | Exposition | Vol. 2 | pg. 41 | 12/31/55 |
| Psa. 90:1-17 | Exposition | Vol. 53 | pg. 130 | 3/7/07 |
| Psa. 90:1-17 | Exposition | Vol. 55 | pg. 249 | 5/20/09 |
| Psa. 90:1-17 | Exposition | Vol. 60 | pg. 21 | 1/8/14 |
| Psa. 90:1-17 | Exposition | Vol. 60 | pg. 334 | 7/9/14 |
| Psa. 90:1 | The Glorious Habitation | Vol. 1 | pg. 347 | 10/14/55 |
| Psa. 90:14 | The Young Man's Prayer | Vol. 9 | pg. 313 | 6/7/63 |
| Psa. 90:14 | The "Beau Ideal" of Life | Vol. 52 | pg. 229 | 5/10/06 |
| Psa. 90:15-17 | Gladness for Sadness | Vol. 29 | pg. 37 | 1/14/83 |
| Psa. 90:17 | Established Work | Vol. 55 | pg. 205 | 4/29/09 |
| Psa. 91:1-16 | Exposition | Vol. 39 | pg. 94 | 2/19/93 |
| Psa. 91:1-16 | Exposition | Vol. 57 | pg. 439 | 9/14/11 |
| Psa. 91:1 | Under His Shadow | Vol. 57 | pg. 433 | 9/14/11 |
| Psa. 91:2 | My God | Vol. 22 | pg. 313 | 3/30/76 |
| Psa. 91:3 | The Snare of the Fowler | Vol. 3 | pg. 137 | 3/29/57 |
| Psa. 91:4 | Safe Shelter | Vol. 15 | pg. 649 | 1869 |
| Psa. 91:11 | Angelic Protection In Appointed Ways | Vol. 52 | pg. 13 | 1/4/06 |
| Psa. 91:14 | Love's Reward | Vol. 60 | pg. 553 | 11/19/14 |

| | | | | |
|--------------------|--|---------|---------|----------|
| Psa. 91:15 | Shall and Will | Vol. 60 | pg. 349 | 7/23/14 |
| Psa. 92:1-15 | Exposition | Vol. 58 | pg. 94 | 2/22/12 |
| Psa. 92:2 | Morning and Evening Songs | Vol. 19 | pg. 589 | 1873 |
| Psa. 92:10 | Fresh Grace Confidently Expected | Vol. 19 | pg. 397 | 7/20/73 |
| Psa. 92:10 | Righteous Hatred | Vol. 4 | pg. 345 | 8/8/58 |
| Psa. 92:13-15 | The Trees In God's Courts | Vol. 23 | pg. 409 | 1877 |
| Psa. 94:1-23 | Exposition | Vol. 40 | pg. 393 | 8/19/94 |
| Psa. 94:1-23 | Exposition | Vol. 58 | pg. 81 | 2/15/12 |
| Psa. 94:9 | The Planter of the Ear Must Hear | Vol. 35 | pg. 661 | 12/15/89 |
| Psa. 94:12-15 | Blessed Discipline | Vol. 40 | pg. 385 | 8/19/94 |
| Psa. 94:19 | Multitudinous Thoughts and Sacred Comforts | Vol. 15 | pg. 421 | 8/1/69 |
| Psa. 94:19 | Medicine For the Distracted | Vol. 19 | pg. 325 | 6/8/73 |
| Psa. 95:1-11 | Exposition | Vol. 58 | pg. 612 | 8/1/12 |
| Psa. 95:1-11 | Exposition | Vol. 58 | pg. 367 | 12/19/12 |
| Psa. 95:5 | The Sea! The Sea! The Wide and Open Sea! | Vol. 58 | pg. 97 | 2/29/12 |
| Psa. 95:7-8 | Today! Today! Today! | Vol. 26 | pg. 433 | 8/1/80 |
| Psa. 96:1-3 | The New Song and the Old Story | Vol. 49 | pg. 457 | 9/24/03 |
| Psa. 97:11 | Sown Light | Vol. 14 | pg. 577 | 10/11/68 |
| Psa. 98:1 | The New Song | Vol. 9 | pg. 109 | 12/28/62 |
| Psa. 98:1-2 | "Marvelous Things" | Vol. 54 | pg. 157 | 4/2/08 |
| Psa. 99:1; 97:1 | The Sequel To Divine Sovereignty | Vol. 58 | pg. 13 | 1/11/12 |
| Psa. 100:1-5 | Exposition | Vol. 40 | pg. 249 | 5/27/94 |
| Psa. 100:1-5 | The Ceremony of Laying the First Stone of the New Tabernacle | Vol. 5 | pg. 245 | 8/16/59 |
| Psa. 100:2 | Serving the Lord With Gladness | Vol. 13 | pg. 493 | 9/8/67 |
| Psa. 100:3-5 | The Claims of God | Vol. 20 | pg. 565 | 10/11/74 |
| Psa. 100:5 | The Eternal Truth of God | Vol. 21 | pg. 649 | 1875 |
| Psa. 101:1-8 | Exposition | Vol. 40 | pg. 249 | 5/27/94 |
| Psa. 101:2 | A Holy and Homely Resolve | Vol. 21 | pg. 229 | 1875 |
| Psa. 101:6 | The King and His Court | Vol. 40 | pg. 241 | 5/27/94 |
| Psa. 102:1-28 | Exposition | Vol. 49 | pg. 586 | 12/3/03 |
| Psa. 102:1-28 | Exposition | Vol. 54 | pg. 491 | 10/8/08 |
| Psa. 102:6 & 103:5 | Owl or Eagle? | Vol. 49 | pg. 577 | 12/3/03 |
| Psa. 102:13-14 | Zion's Prosperity | Vol. 44 | pg. 301 | 6/26/98 |
| Psa. 102:16 | God's Glory In the Building Up of Zion | Vol. 55 | pg. 265 | 6/3/09 |
| Psa. 102:17 | Good News for the Destitute | Vol. 19 | pg. 625 | 11/9/73 |
| Psa. 102:19-22 | Gratitude For Great Deliverances | Vol. 54 | pg. 481 | 10/8/08 |
| Psa. 103:1-22 | Exposition | Vol. 40 | pg. 9 | 1/7/94 |
| Psa. 103:1-22 | Exposition | Vol. 38 | pg. 622 | 12/25/92 |
| Psa. 103:1-22 | Exposition | Vol. 45 | pg. 177 | 4/9/99 |
| Psa. 103:1-22 | Exposition | Vol. 48 | pg. 502 | 10/19/02 |
| Psa. 103:1-22 | Exposition | Vol. 49 | pg. 334 | 7/12/03 |
| Psa. 103:1-22 | Exposition | Vol. 54 | pg. 503 | 10/15/08 |
| Psa. 103:1-22 | Exposition | Vol. 58 | pg. 118 | 3/7/12 |
| Psa. 103:1-22 | Exposition | Vol. 59 | pg. 369 | 7/31/13 |
| Psa. 103:1 | The Saints Blessing the Lord | Vol. 18 | pg. 601 | 10/20/72 |
| Psa. 103:1 | The Keynote of the Year | Vol. 36 | pg. 1 | 1/5/90 |
| Psa. 103:3 | The First Note of My New Song | Vol. 25 | pg. 493 | 8/31/79 |
| Psa. 103:5 | Our Youth Renewed | Vol. 60 | pg. 361 | 7/30/14 |
| Psa. 103:9 | The Lord Chiding His People | Vol. 20 | pg. 253 | 5/3/74 |
| Psa. 103:12 | Plenary Absolution | Vol. 19 | pg. 229 | 1873 |
| Psa. 103:13 | God's Fatherly Pity | Vol. 28 | pg. 157 | 3/2/82 |
| Psa. 103:13 | Our Heavenly Father's Pity | Vol. 45 | pg. 433 | 9/10/99 |
| Psa. 103:13-14 | The Tender Pity of the Lord | Vol. 16 | pg. 397 | 7/17/70 |
| Psa. 104:14 | In the Hay-field | Vol. 13 | pg. 349 | 6/23/67 |
| Psa. 104:16 | The Cedars of Lebanon | Vol. 9 | pg. 505 | 9/13/63 |
| Psa. 104:17-18 | Lessons From Nature | Vol. 17 | pg. 445 | 8/13/71 |

| | | | | |
|-----------------|---|---------|---------|----------|
| Psa. 104:26 | There Go The Ships | Vol. 21 | pg. 577 | 1875 |
| Psa. 104:28 | The Commissariat of the Universe | Vol. 55 | pg. 289 | 6/17/09 |
| Psa. 104:34 | The Sweet and the Sweetener | Vol. 41 | pg. 109 | 3/10/95 |
| Psa. 104:34 | Meditation On God | Vol. 46 | pg. 409 | 9/2/00 |
| Psa. 134:34 | The Pleasures of Piety | Vol. 47 | pg. 613 | 12/29/01 |
| Psa. 105:19 | Trial By the Word | Vol. 22 | pg. 73 | 2/6/76 |
| Psa. 105:26-38 | Exposition | Vol. 43 | pg. 70 | 2/7/97 |
| Psa. 105:37 | A Stanza of Deliverance | Vol. 38 | pg. 49 | 1/31/92 |
| Psa. 106:1-48 | Exposition | Vol. 44 | pg. 586 | 12/4/98 |
| Psa. 106:1-48 | Exposition | Vol. 56 | pg. 189 | 4/14/10 |
| Psa. 106:1-48 | Exposition | Vol. 62 | pg. 141 | 3/23/16 |
| Psa. 106:4 | A Visit From the Lord | Vol. 44 | pg. 577 | 12/4/98 |
| Psa. 106:4 | Fine Pleading | Vol. 62 | pg. 553 | 11/23/16 |
| Psa. 106:4-5 | The Poor Man's Prayer | Vol. 25 | pg. 41 | 1879 |
| Psa. 106:7 | Sin: Its Spring-head, Stream, and Sea | Vol. 37 | pg. 265 | 5/10/91 |
| Psa. 106:8 | Why Are Men Saved? | Vol. 3 | pg. 65 | 2/1/57 |
| Psa. 106:9 | Israel At the Red Sea | Vol. 2 | pg. 145 | 3/30/56 |
| Psa. 106:44-45 | God's Remembrance of His Covenant | Vol. 32 | pg. 97 | 2/14/86 |
| Psa. 107:1-22 | Exposition | Vol. 53 | pg. 611 | 12/12/07 |
| Psa. 107:1-32 | Exposition | Vol. 51 | pg. 70 | 2/2/05 |
| Psa. 107:1-32 | Exposition | Vol. 57 | pg. 525 | 11/2/11 |
| Psa. 107:14-16 | Song for the Free, and Hope for the Bound | Vol. 33 | pg. 625 | 11/20/87 |
| Psa. 107:17-20 | The History of Sundry Fools | Vol. 31 | pg. 97 | 3/1/85 |
| Psa. 107:17-22 | A Visit To Christ's Hospital | Vol. 53 | pg. 601 | 12/12/07 |
| Psa. 107:17-22 | Sickness and Prayer, Healing and Praise | Vol. 57 | pg. 517 | 11/2/11 |
| Psa. 107:23-32 | Exposition | Vol. 53 | pg. 502 | 10/10/07 |
| Psa. 107:33-43 | Exposition | Vol. 53 | pg. 539 | 10/31/07 |
| Psa. 107:26 | An Old-fashioned Remedy | Vol. 51 | pg. 61 | 2/2/05 |
| Psa. 107:30 | Their Desired Haven | Vol. 58 | pg. 397 | 8/22/12 |
| Psa. 108:1-13 | Exposition | Vol. 50 | pg. 12 | 12/31/03 |
| Psa. 108:7 | "God Hath Spoken! — Rejoice!" | Vol. 50 | pg. 1 | 12/31/03 |
| Psa. 110:1-7 | Exposition | Vol. 48 | pg. 562 | 11/23/02 |
| Psa. 110:1-7 | Exposition | Vol. 61 | pg. 430 | 1/28/15 |
| Psa. 110:1-7 | Exposition | Vol. 61 | pg. 47 | 9/9/15 |
| Psa. 110:3 | A Willing People and an Immutable Leader | Vol. 2 | pg. 161 | 4/13/56 |
| Psa. 110:3 | The Dew of Christ's Youth | Vol. 47 | pg. 193 | 4/28/01 |
| Psa. 111:1-10 | Exposition | Vol. 49 | pg. 454 | 9/17/03 |
| Psa. 111:4-5 | Remembering God's Works | Vol. 49 | pg. 445 | 9/17/03 |
| Psa. 111:5 | The Covenant | Vol. 57 | pg. 361 | 8/3/11 |
| Psa. 112:7 | Heart's-ease | Vol. 11 | pg. 481 | 8/27/65 |
| Psa. 113:1-9 | Exposition | Vol. 39 | pg. 70 | 2/5/93 |
| Psa. 113:7-8 | From the Dunghill to the Throne | Vol. 11 | pg. 613 | 11/5/65 |
| Psa. 114:1-8 | Exposition | Vol. 48 | pg. 347 | 7/20/02 |
| Psa. 115:1-18 | Exposition | Vol. 39 | pg. 11 | 1/8/93 |
| Psa. 115:1-18 | Exposition | Vol. 48 | pg. 297 | 6/22/02 |
| Psa. 115:1 | "Non Nobis, Domine! | Vol. 48 | pg. 289 | 6/22/02 |
| Psa. 115:18 | The Right Key-note For the New Year | Vol. 39 | pg. 1 | 1/1/93 |
| Psa. 115:15 | The Lord Blessing His Saints | Vol. 18 | pg. 589 | 9/26/72 |
| Psa. 116:1-6 | Exposition | Vol. 60 | pg. 323 | 7/2/14 |
| Psa. 116:1-11 | Exposition | Vol. 61 | pg. 442 | 9/16/15 |
| Psa. 116:1-19 | Exposition | Vol. 45 | pg. 537 | 11/5/99 |
| Psa. 116:1-19 | Exposition | Vol. 50 | pg. 119 | 3/3/04 |
| Psa. 116:1-19 | Exposition | Vol. 53 | pg. 633 | 12/26/07 |
| Psa. 116:1-19 | Exposition | Vol. 56 | pg. 274 | 6/2/10 |
| Psa. 116:1 | Prayer Answered, Love Nourished | Vol. 5 | pg. 121 | 2/27/59 |
| Psa. 116:3-4, 8 | To Souls In Agony | Vol. 21 | pg. 73 | 1875 |
| Psa. 116:5 | Covenant Blessings | Vol. 46 | pg. 301 | 7/1/00 |

| | | | | |
|-----------------|---|--------|---------|----------|
| Psa. 116:7 | “Return Unto Thy Rest” | Vol.47 | pg. 601 | 12/22/01 |
| Psa. 116:10 | Faith Justifying Speech | Vol.56 | pg. 265 | 6/2/10 |
| Psa. 116:10-19 | Exposition | Vol.62 | pg. 562 | 11/23/16 |
| Psa. 116:12 | Overwhelming Obligations | Vol.16 | pg. 25 | 1870 |
| Psa. 116:15 | Precious Deaths | Vol.18 | pg. 97 | 2/18/72 |
| Psa. 116:16 | The Exeter-hall Sermon To Young Men | Vol.29 | pg. 505 | 9/2/83 |
| Psa. 116:16 | Personal Service | Vol. 6 | pg. 205 | 5/3/60 |
| Psa. 118:1-29 | Exposition | Vol.57 | pg. 406 | 8/24/11 |
| Psa. 118:1-29 | Exposition | Vol.60 | pg. 490 | 10/8/14 |
| Psa. 118:17-18 | Gratitude For Deliverance From the Grave | Vol.38 | pg. 1 | 1/3/92 |
| | Spurgeon’s Comments On Sermon | Vol.38 | pg. 12 | 1/3/92 |
| Psa. 118:22-25 | The Head Stone of the Corner | Vol.24 | pg. 349 | 6/23/78 |
| Psa. 118:13-14 | An Epistle Illustrated By A Psalm | Vol.43 | pg. 481 | 10/10/97 |
| Psa. 118:15-16 | The Joy of Holy Households | Vol.43 | pg. 493 | 10/17/97 |
| Psa. 118:16 | God’s Valiant Right Hand | Vol.59 | pg. 313 | 7/3/13 |
| Psa. 118:17 | Declaring the Works of the Lord | Vol.43 | pg. 505 | 10/24/97 |
| Psa. 119:17-28 | Exposition | Vol.48 | pg. 467 | 9/28/02 |
| Psa. 119:1-16 | Exposition | Vol.41 | pg. 154 | 3/31/95 |
| Psa. 119:1-20 | Exposition | Vol.59 | pg. 561 | 11/20/13 |
| Psa. 119:6 | A Clear Conscience | Vol.24 | pg. 625 | 1878 |
| Psa. 119:9-32 | Exposition | Vol.58 | pg. 382 | 8/8/12 |
| Psa. 119:20 | Holy Longings | Vol.27 | pg. 121 | 2/27/81 |
| Psa. 119:21-32 | Exposition | Vol.60 | pg. 21 | 1/7/14 |
| Psa. 119:25-40 | Exposition | Vol.60 | pg. 406 | 8/20/14 |
| Psa. 119:25 | Enlivening and Invigorating | Vol.23 | pg. 229 | 1877 |
| Psa. 119:25-32 | Exposition | Vol.43 | pg. 395 | 8/15/97 |
| Psa. 119:25-32 | Exposition | Vol.52 | pg. 141 | 1/4/06 |
| Psa. 119:26 | A Man of God Alone With God | Vol.48 | pg. 433 | 9/14/02 |
| Psa. 119:27 | The Student’s Prayer | Vol.23 | pg. 157 | 1877 |
| Psa. 119:32-40 | Exposition | Vol.43 | pg. 287 | 6/13/97 |
| Psa. 119:33-40 | Exposition | Vol.52 | pg. 141 | 3/15/06 |
| Psa. 119:37 | My Prayer | Vol.18 | pg. 529 | 9/22/72 |
| Psa. 119:37 | Deadness and Quickening | Vol.43 | pg. 277 | 6/13/97 |
| Psa. 119:37 | Vanity Deprecated | Vol.53 | pg. 73 | 2/7/07 |
| Psa. 119:49 | Pleading Prayer | Vol.33 | pg. 349 | 1887 |
| Psa. 119:50 | My Comfort In Affliction | Vol.31 | pg. 641 | 7/7/81 |
| Psa. 119:54 | The Singing Pilgrim | Vol.28 | pg. 181 | 1882 |
| Psa. 119:57 | God Our Portion and His Word Our Treasure | Vol.23 | pg. 493 | 9/2/77 |
| Psa. 119:59 | Thinking and Turning | Vol.20 | pg. 373 | 7/5/74 |
| Psa. 119:64-72 | Exposition | Vol.46 | pg. 395 | 8/19/00 |
| Psa. 119:65-66 | “Good Judgment” | Vol.46 | pg. 385 | 8/19/00 |
| Psa. 119:71 | Two Good Things | Vol.27 | pg. 637 | 6/17/80 |
| Psa. 119:73-88 | Exposition | Vol.41 | pg. 262 | 6/2/95 |
| Psa. 119:81-88 | Exposition | Vol.53 | pg. 83 | 2/7/07 |
| Psa. 119:81-96 | Exposition | Vol.58 | pg. 407 | 8/22/12 |
| Psa. 119:82 | God’s Time For Comforting | Vol.53 | pg. 85 | 2/14/07 |
| Psa. 119:83 | A Bottle In the Smoke | Vol. 2 | pg. 137 | 3/23/56 |
| Psa. 119:88 | Grappling Irons | Vol.30 | pg. 253 | 5/4/84 |
| Psa. 119:89-92 | My Solace In My Affliction | Vol.28 | pg. 229 | 1882 |
| Psa. 119:89-104 | Exposition | Vol.55 | pg. 238 | 5/13/09 |
| Psa. 119:89-112 | Exposition | Vol.39 | pg. 623 | 12/24/93 |
| Psa. 119:97-100 | Loving the Law of the Lord | Vol.54 | pg. 205 | 4/30/08 |
| Psa. 119:103 | The Best Christmas Fare | Vol.39 | pg. 613 | 12/24/93 |
| Psa. 119:103 | The Sweetness of God’s Word | Vol.56 | pg. 229 | 5/12/10 |
| Psa. 119:105-15 | Exposition | Vol.58 | pg. 431 | 9/5/12 |
| Psa. 119:105-20 | Exposition | Vol.57 | pg. 189 | 4/20/11 |
| Psa. 119:111 | The Believer’s Heritage of Joy | Vol.41 | pg. 253 | 6/2/95 |

| | | | | |
|------------------|---|---------|---------|----------|
| Psa. 119:113-20 | Exposition | Vol. 59 | pg. 203 | 4/24/13 |
| Psa. 119:113-28 | Exposition | Vol. 54 | pg. 214 | 4/30/08 |
| Psa. 119:117 | My Hourly Prayer | Vol. 28 | pg. 241 | 2/26/82 |
| Psa. 119:119-26 | Exposition | Vol. 61 | pg. 192 | 4/22/15 |
| Psa. 119:129-44 | Exposition | Vol. 40 | pg. 370 | 8/5/94 |
| Psa. 119:129-44 | Exposition | Vol. 42 | pg. 501 | 10/18/96 |
| Psa. 119:131-33 | Holy Longings | Vol. 36 | pg. 349 | 6/29/90 |
| Psa. 119:132 | A Page From A Royal Diary | Vol. 40 | pg. 361 | 8/5/94 |
| Psa. 119:133 | A Well-ordered Life | Vol. 15 | pg. 361 | 6/27/69 |
| Psa. 119:133 | Ordered Steps | Vol. 42 | pg. 493 | 10/18/96 |
| Psa. 119:137-152 | Exposition | Vol. 42 | pg. 226 | 5/10/96 |
| Psa. 119:144 | Alive | Vol. 26 | pg. 685 | 12/12/80 |
| Psa. 119:145-46 | Struggling Against Sin | Vol. 61 | pg. 505 | 10/21/15 |
| Psa. 119:145-68 | Exposition | Vol. 61 | pg. 371 | 8/5/15 |
| Psa. 119:145-68 | Exposition | Vol. 61 | pg. 502 | 10/21/15 |
| Psa. 119:153-74 | Exposition | Vol. 60 | pg. 634 | 12/31/14 |
| Psa. 119:162 | Great Spoil | Vol. 28 | pg. 49 | 1/22/82 |
| Psa. 119:165 | The Lover of God's Law Filled With Peace | Vol. 34 | pg. 37 | 1/22/88 |
| Psa. 119:168 | A Sincere Summary, And a Searching Scrutiny | Vol. 46 | pg. 181 | 4/22/00 |
| Psa. 120:1-3 | Exposition | Vol. 58 | pg. 480 | 10/3/12 |
| Psa. 120:5 | The Sojourn In Mesech | Vol. 48 | pg. 241 | 5/25/02 |
| Psa. 121:1-7 | Exposition | Vol. 58 | pg. 439 | 9/12/12 |
| Psa. 121:1-8 | Exposition | Vol. 40 | pg. 35 | 1/21/94 |
| Psa. 122:1-9 | Exposition | Vol. 40 | pg. 35 | 1/21/94 |
| Psa. 122:1-9 | Exposition | Vol. 41 | pg. 22 | 1/13/95 |
| Psa. 123:1-4 | Exposition | Vol. 55 | pg. 274 | 6/3/09 |
| Psa. 123:2 | Wakeful and Watchful Eyes | Vol. 45 | pg. 613 | 12/24/99 |
| Psa. 124:1-4 | Exposition | Vol. 40 | pg. 622 | 12/30/94 |
| Psa. 124:7 | The Bird Escaped From the Snare | Vol. 28 | pg. 701 | 1882 |
| Psa. 125:1-5 | Exposition | Vol. 44 | pg. 155 | 3/27/98 |
| Psa. 125:1-5 | Exposition | Vol. 49 | pg. 492 | 10/8/03 |
| Psa. 125:1-5 | Exposition | Vol. 55 | pg. 274 | 6/3/09 |
| Psa. 125:1 | The Immovability of the Believer | Vol. 24 | pg. 709 | 12/22/78 |
| Psa. 125:2 | The Security of the Church | Vol. 3 | pg. 429 | 11/1/57 |
| Psa. 126:1-6 | Exposition | Vol. 44 | pg. 119 | 3/6/98 |
| Psa. 126:1-6 | Exposition | Vol. 49 | pg. 372 | 8/2/03 |
| Psa. 126:6 | Tearful Sowing and Joyful Reaping | Vol. 15 | pg. 229 | 4/25/69 |
| Psa. 127:1-5 | Exposition | Vol. 44 | pg. 119 | 3/6/98 |
| Psa. 127:2 | The Peculiar Sleep of the Beloved | Vol. 1 | pg. 85 | 3/4/55 |
| Psa. 127:1-2 | Co-workers With God | Vol. 44 | pg. 109 | 3/6/98 |
| Psa. 129:1-8 | Exposition | Vol. 41 | pg. 346 | 7/21/95 |
| Psa. 130:1-8 | Exposition | Vol. 41 | pg. 346 | 7/21/95 |
| Psa. 129:1-8 | "Persecuted, But Not Forsaken" | Vol. 44 | pg. 277 | 6/12/98 |
| Psa. 130:1-8 | Exposition | Vol. 44 | pg. 346 | 7/17/98 |
| Psa. 130:1-8 | Exposition | Vol. 50 | pg. 227 | 5/5/04 |
| Psa. 130:1-8 | Exposition | Vol. 57 | pg. 465 | 9/28/11 |
| Psa. 130:1-8 | Exposition | Vol. 61 | pg. 251 | 5/28/15 |
| Psa. 130:3-4 | A Psalmist's Question and Answer | Vol. 48 | pg. 385 | 8/17/02 |
| Psa. 130:4 | "There Is Forgiveness" | Vol. 41 | pg. 337 | 7/21/95 |
| Psa. 130:4 | Forgiveness and Fear | Vol. 50 | pg. 217 | 5/5/04 |
| Psa. 130:4 | Forgiveness | Vol. 52 | pg. 49 | 1/25/06 |
| Psa. 130:5-6 | Waiting, Hoping, Watching | Vol. 44 | pg. 337 | 7/17/98 |
| Psa. 130:7 | Plenteous Redemption | Vol. 7 | pg. 25 | 1861 |
| Psa. 130:7 | Israel's Hope; or, The Centre of the Target | Vol. 37 | pg. 205 | 4/19/91 |
| Psa. 131:1-3 | Exposition | Vol. 41 | pg. 346 | 7/21/95 |
| Psa. 131:2 | The Weaned Child | Vol. 21 | pg. 1 | 1875 |
| Psa. 132:1-18 | Exposition | Vol. 44 | pg. 476 | 10/2/98 |

| | | | | |
|------------------|---|---------|---------|----------|
| Psa. 132:1-18 | Exposition | Vol. 58 | pg. 142 | 3/21/12 |
| Psa. 132:6-7 | Hearing, Seeking, Finding | Vol. 44 | pg. 469 | 10/2/98 |
| Psa. 132:14 | The Lord's Eternal Rest | Vol. 58 | pg. 133 | 3/21/12 |
| Psa. 132:18 | God's King Magnified | Vol. 58 | pg. 601 | 12/19/12 |
| Psa. 135:1-21 | Exposition | Vol. 44 | pg. 598 | 12/11/98 |
| Psa. 135:4 | A Strange Yet Gracious Choice | Vol. 44 | pg. 589 | 12/11/98 |
| Psa. 136:1-26 | Exposition | Vol. 39 | pg. 393 | 8/13/93 |
| Psa. 136:1-26 | Exposition | Vol. 41 | pg. 201 | 4/28/95 |
| Psa. 136:1-26 | Exposition | Vol. 53 | pg. 586 | 11/28/07 |
| Psa. 136:1-26 | Exposition | Vol. 58 | pg. 417 | 8/29/12 |
| Psa. 136:1-26 | A Song, A Solace, A Sermon, and A Summons | Vol. 13 | pg. 709 | 12/29/67 |
| Psa. 136:4 | God The Wonder-Worker | Vol. 33 | pg. 493 | 9/4/87 |
| Psa. 136:17-22 | Sihon and Og, Or Mercies In Detail | Vol. 22 | pg. 169 | 1876 |
| Psa. 137:1-9 | Exposition | Vol. 46 | pg. 479 | 10/7/00 |
| Psa. 138:1-6 | Exposition | Vol. 58 | pg. 564 | 11/21/12 |
| Psa. 138:1-8 | Exposition | Vol. 45 | pg. 23 | 1/8/99 |
| Psa. 138:1-8 | Exposition | Vol. 60 | pg. 429 | 9/3/14 |
| Psa. 138:1-3 | Open Praise and Public Confessions | Vol. 45 | pg. 13 | 1/8/99 |
| Psa. 138:5 | Singing In the Ways of the Lord | Vol. 27 | pg. 473 | 8/11/81 |
| Psa. 138:8 | Choice Comfort For A Young Believer | Vol. 25 | pg. 661 | 1879 |
| Psa. 138:8 | Faith In Perfection | Vol. 5 | pg. 49 | 1/2/59 |
| Psa. 139:1-18 | Exposition | Vol. 40 | pg. 47 | 1/28/94 |
| Psa. 139:1-24 | Exposition | Vol. 44 | pg. 21 | 2/9/98 |
| Psa. 139:1-24 | Exposition | Vol. 45 | pg. 81 | 2/12/99 |
| Psa. 139:1-24 | Exposition | Vol. 53 | pg. 177 | 4/4/07 |
| Psa. 139:1-24 | Exposition | Vol. 60 | pg. 47 | 1/22/14 |
| Psa. 139:17 | God's Thoughts and Ours | Vol. 57 | pg. 181 | 4/20/11 |
| Psa. 139:17-18 | Our Thoughts About God's Thoughts | Vol. 45 | pg. 73 | 2/12/99 |
| Psa. 139:24 | The Way Everlasting | Vol. 15 | pg. 661 | 1869 |
| Psa. 140:1-13 | Exposition | Vol. 43 | pg. 357 | 7/25/97 |
| Psa. 140:6-7 & | David's Five-stringed Harp | Vol. 43 | pg. 349 | 7/25/97 |
| Psa. 140:12-13 | | | | |
| Psa. 141:1-10 | Exposition | Vol. 43 | pg. 357 | 7/25/97 |
| Psa. 141:5 | Intercessory Prayer | Vol. 18 | pg. 253 | 5/5/72 |
| Psa. 142:1-7 | Exposition | Vol. 51 | pg. 227 | 5/4/05 |
| Psa. 142:1-7 | Exposition | Vol. 55 | pg. 215 | 4/29/09 |
| Psa. 142:1-7 | Exposition | Vol. 60 | pg. 153 | 3/26/14 |
| Psa. 142 - title | David's Prayer In the Cave | Vol. 38 | pg. 541 | 11/13/92 |
| Psa. 143:1-12 | Exposition | Vol. 51 | pg. 179 | 4/6/05 |
| Psa. 143:1-12 | Exposition | Vol. 54 | pg. 455 | 9/17/08 |
| Psa. 143:1-12 | Exposition | Vol. 60 | pg. 155 | 3/26/14 |
| Psa. 143:9 | "Hiding In Thee!" | Vol. 51 | pg. 169 | 4/6/05 |
| Psa. 143:10 | At School | Vol. 26 | pg. 77 | 1880 |
| Psa. 144:1-16 | Exposition | Vol. 40 | pg. 82 | 2/18/94 |
| Psa. 144:15 | Pictures of Happiness | Vol. 59 | pg. 361 | 7/31/13 |
| Psa. 145:1-21 | Exposition | Vol. 43 | pg. 262 | 5/30/97 |
| Psa. 145:1-21 | Exposition | Vol. 52 | pg. 58 | 1/25/06 |
| Psa. 145:1-2 | The Happy Duty of Daily Praise | Vol. 32 | pg. 289 | 5/30/86 |
| Psa. 145:6-7 | How "The Unspeakable" Is Spoken Of | Vol. 31 | pg. 133 | 3/15/85 |
| Psa. 145:7 | The Philosophy and Propriety of Abundant Praise | Vol. 25 | pg. 205 | 4/13/79 |
| Psa. 145:10 | Concerning Saints | Vol. 30 | pg. 457 | 1884 |
| Psa. 145:11 | Christian Conversation | Vol. 46 | pg. 469 | 10/7/00 |
| Psa. 146:1-10 | Exposition | Vol. 40 | pg. 69 | 2/11/94 |
| Psa. 146:7 | The Lord — The Liberator | Vol. 8 | pg. 685 | 12/14/62 |
| Psa. 146:7-9 | The Lord's Famous Titles | Vol. 40 | pg. 61 | 2/11/94 |
| Psa. 147:1-20 | Exposition | Vol. 40 | pg. 104 | 3/4/94 |
| Psa. 147:1-20 | Exposition | Vol. 41 | pg. 322 | 7/7/95 |

| | | | | |
|----------------|---|--------|---------|----------|
| Psa. 147:1-20 | Exposition | Vol.42 | pg. 202 | 4/26/96 |
| Psa. 147:1-20 | Exposition | Vol.43 | pg. 321 | 7/4/97 |
| Psa. 147:2 | Good Cheer For Outcasts | Vol.22 | pg. 373 | 6/15/76 |
| Psa. 147:3 | Healing For the Wounded | Vol. 1 | pg. 403 | 11/11/55 |
| Psa. 147:3 | Christ's Hospital | Vol.38 | pg. 277 | 6/12/92 |
| Psa. 147:9 | The Ravens' Cry | Vol.12 | pg. 49 | 1/14/66 |
| Psa. 147:11 | Fearing and Hoping | Vol.43 | pg. 313 | 7/4/97 |
| Psa. 147:14-15 | Peace At Home, and Prosperity Abroad | Vol. 6 | pg. 221 | 5/9/60 |
| Psa. 147:15 | The Swiftly Running Word | Vol.27 | pg. 377 | 7/3/81 |
| Psa. 147:16-18 | Frost and Thaw | Vol.12 | pg. 25 | 1/14/66 |
| Psa. 148:1-6 | Exposition | Vol.44 | pg. 380 | 8/7/98 |
| Psa. 149:1-9 | Exposition | Vol.41 | pg. 334 | 7/14/95 |
| Psa. 149:1-12 | Exposition | Vol.43 | pg. 129 | 3/14/97 |
| Psa. 149:2 | Our King Our Joy | Vol.16 | pg. 661 | 11/27/70 |
| Psa. 149:2 | Jubilee Joy; or, Believers Joyful In Their Mind | Vol.33 | pg. 337 | 6/19/87 |
| Psa. 149:4 | "Beautiful For Ever" | Vol.43 | pg. 121 | 3/14/97 |
| Psa. 149:4-6 | Hallelujah! Hallelujah! | Vol.41 | pg. 325 | 7/14/95 |
| Psa. 150:1-6 | Exposition | Vol.41 | pg. 334 | 7/14/95 |

PROVERBS

| | | | | |
|------------------------------|--|--------|---------|----------|
| Prov. 4:13 | The Hold Fast | Vol.24 | pg. 325 | 6/9/78 |
| Prov. 4:23 | The Great Reservoir | Vol. 4 | pg. 113 | 2/21/58 |
| Prov. 4:25 | "Eyes Right" | Vol.34 | pg. 685 | 12/23/88 |
| Prov. 5:11 | Last Things | Vol.11 | pg. 721 | 12/31/65 |
| Prov. 5:22 | Sinners Bound With the Cords of Sin | Vol.16 | pg. 85 | 2/13/70 |
| Prov. 6:20-23 | An Appeal To Children of Godly Parents | Vol.41 | pg. 145 | 3/31/95 |
| Prov. 6:22 | The Talking Book | Vol.17 | pg. 589 | 10/22/71 |
| Prov. 9:26 | Withholding Corn | Vol.11 | pg. 421 | 7/30/65 |
| Prov. 11:25 | The Waterer Watered | Vol.11 | pg. 229 | 4/23/65 |
| Prov. 11:30 | Soul Winning | Vol.15 | pg. 25 | 1869 |
| Prov. 11:30 | The Soul-winner | Vol.22 | pg. 253 | 1/20/76 |
| Prov. 14:10 | Man Unknown To Man | Vol.35 | pg. 193 | 4/14/89 |
| Prov. 14:14 | How A Man's Conduct Comes Home To Him | Vol.21 | pg. 289 | 5/16/75 |
| Prov. 14:26 | Godly Fear and Its Goodly Consequence | Vol.22 | pg. 229 | 1876 |
| Prov. 15:11 | God, The All-seeing One | Vol. 4 | pg. 97 | 2/14/58 |
| Prov. 15:19 | The Hedge of Thorns and the Plain Way | Vol.33 | pg. 97 | 1887 |
| Prov. 16:2 | Unsound Spiritual Trading | Vol.15 | pg. 13 | 1/10/69 |
| Prov. 16:20 | Trust In God — True Wisdom | Vol. 7 | pg. 353 | 5/12/61 |
| Prov. 17:17 | The Unrivaled Friend | Vol.15 | pg. 613 | 11/7/69 |
| Prov. 18:10 | Our Stronghold | Vol. 9 | pg. 49 | 10/26/62 |
| Prov. 18:12 | Pride and Humility | Vol. 2 | pg. 345 | 8/17/56 |
| Prov. 18:14 | The Cause and Cure of a Wounded Spirit | Vol.42 | pg. 577 | 12/6/96 |
| Prov. 18:24 | A Faithful Friend | Vol. 3 | pg. 105 | 3/8/57 |
| Prov. 20:4 | The Sluggard's Reproof | Vol.48 | pg. 73 | 2/16/02 |
| Prov. 22:13 & Prov. 26:13 | One Lion: Two Lions: No Lion At All | Vol.28 | pg. 397 | 6/8/82 |
| Prov. 23:17-18 | "All the Day Long" | Vol.36 | pg. 337 | 6/22/90 |
| Prov. 23:19 | Three Important Precepts | Vol.36 | pg. 361 | 7/13/90 |
| Prov. 23:23 | Buying the Truth | Vol.61 | pg. 109 | 3/11/15 |
| Prov. 23:26 | The Heart: A Gift For God | Vol.33 | pg. 661 | 12/11/87 |
| Prov. 24:30-32 | The Sluggard's Farm | Vol.34 | pg. 313 | 6/10/88 |
| Prov. 24:30-32 | The Broken Fence | Vol.59 | pg. 553 | 11/20/13 |
| Prov. 25:2 | God's Glory In Hiding Sin | Vol.49 | pg. 313 | 7/5/03 |
| Prov. 25:25 | Good News | Vol.50 | pg. 25 | 1/14/04 |
| Prov. 27:1-27 | Exposition | Vol.54 | pg. 94 | 2/20/08 |

| | | | | |
|----------------------------|------------------------------------|---------|---------|---------|
| Prov. 27:1 | To-morrow | Vol. 2 | pg. 321 | 8/25/56 |
| Prov. 27:1 | Cheer For Despondency | Vol. 56 | pg. 61 | 2/3/10 |
| Prov. 27:7 | Spiritual Appetite | Vol. 21 | pg. 193 | 4/4/75 |
| Prov. 27:8 | The Wandering Bird | Vol. 61 | pg. 157 | 4/8/15 |
| Prov. 27:10 | The Best Friend | Vol. 45 | pg. 289 | 6/18/99 |
| Prov. 27:18 | The Way To Honour | Vol. 19 | pg. 349 | 1873 |
| Prov. 27:18 | The Honoured Servant | Vol. 45 | pg. 481 | 10/8/99 |
| Prov. 28:13 & Psa. 85:2 | Two Coverings and Two Consequences | Vol. 62 | pg. 85 | 2/24/16 |
| Prov. 28:14 | The Right Kind of Fear | Vol. 52 | pg. 37 | 1/18/06 |
| Prov. 29:25 | Two Ancient Proverbs | Vol. 54 | pg. 85 | 2/20/08 |
| Prov. 30:2 | A Homily For Humble Folks | Vol. 36 | pg. 217 | 4/27/90 |
| Prov. 31:6-7 | The Gospel Cordial | Vol. 57 | pg. 61 | 2/9/11 |

ECCLESIASTES

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|----------|
| Eccl. 3:8 | “A Time To Love” | Vol. 56 | pg. 505 | 10/20/10 |
| Eccl. 6:12 | The Known and the Unknown | Vol. 42 | pg. 193 | 4/26/96 |
| Eccl. 7:1 | The Believer’s Deathday Better Than His Birthday | Vol. 27 | pg. 145 | 3/3/81 |
| Eccl. 7:2 | The House of Mourning and the House of Feasting | Vol. 54 | pg. 421 | 9/3/08 |
| Eccl. 7:8 | An Observation of the Preacher | Vol. 53 | pg. 625 | 12/26/07 |
| Eccl. 8:4 | The Word of a King | Vol. 28 | pg. 709 | 1882 |
| Eccl. 8:10 | The Wicked Man’s Life, Funeral, and Epitaph | Vol. 4 | pg. 281 | 6/13/58 |
| Eccl. 8:12 | Five Fears | Vol. 3 | pg. 325 | 8/23/57 |
| Eccl. 9:10 | A Home Mission Sermon | Vol. 5 | pg. 273 | 6/26/59 |
| Eccl. 9:10 | The Spur | Vol. 19 | pg. 361 | 1873 |
| Eccl. 11:1-10 | Exposition | Vol. 38 | pg. 334 | 7/10/92 |
| Eccl. 11:3 | Black Clouds and Bright Blessings | Vol. 56 | pg. 445 | 9/15/10 |
| Eccl. 11:4 | Sowing In the Wind; Reaping Under Clouds | Vol. 38 | pg. 325 | 7/10/92 |
| Eccl. 11:6-10 | Exposition | Vol. 52 | pg. 405 | 8/16/06 |
| Eccl. 12:1-14 | Exposition | Vol. 38 | pg. 334 | 7/10/92 |
| Eccl. 12:1-14 | Exposition | Vol. 52 | pg. 406 | 8/16/06 |

SONG OF SOLOMON

| | | | | |
|-----------------|--|---------|---------|----------|
| S. of S. 1:1-7 | Exposition | Vol. 43 | pg. 226 | 5/9/97 |
| S. of S. 1:1-7 | Exposition | Vol. 59 | pg. 467 | 9/25/13 |
| S. of S. 1:1-17 | Exposition | Vol. 42 | pg. 285 | 6/14/96 |
| S. of S. 1:2 | “Better Than Wine” | Vol. 42 | pg. 157 | 4/5/96 |
| S. of S. 1:4 | The Memory of Christ’s Love | Vol. 39 | pg. 61 | 2/5/93 |
| S. of S. 1:4 | A Refreshing Canticle | Vol. 48 | pg. 409 | 8/31/02 |
| S. of S. 1:4 | Rejoicing and Remembering | Vol. 42 | pg. 181 | 4/19/96 |
| S. of S. 1:6 | Self-humbling and Self-searching | Vol. 17 | pg. 265 | 1871 |
| S. of S. 1:6 | The Unkept Vineyard; or, Personal Work Neglected | Vol. 32 | pg. 693 | 9/19/86 |
| S. of S. 1:7 | The Church’s Love To Her Loving Lord | Vol. 11 | pg. 349 | 1865 |
| S. of S. 1:7 | Love To Jesus | Vol. 6 | pg. 413 | 9/30/60 |
| S. of S. 1:7-8 | The Good Shepherdess | Vol. 19 | pg. 313 | 6/1/73 |
| S. of S. 1:12 | Fragrant Graces | Vol. 61 | pg. 476 | 10/7/15 |
| S. of S. 1:13 | A Bundle of Myrrh | Vol. 10 | pg. 133 | 3/6/64 |
| S. of S. 2:1-7 | Exposition | Vol. 59 | pg. 467 | 9/25/13 |
| S. of S. 2:1-7 | Exposition | Vol. 63 | pg. 94 | 2/22/17 |
| S. of S. 2:1-7 | Exposition | Vol. 62 | pg. 562 | 11/23/16 |
| S. of S. 2:1-17 | Exposition | Vol. 42 | pg. 479 | 10/4/96 |
| S. of S. 2:1 | The Rose and the Lily | Vol. 13 | pg. 661 | 12/8/67 |
| S. of S. 2:1 | The Best of the Best | Vol. 42 | pg. 313 | 7/5/96 |
| S. of S. 2:2 | The Lily Among Thorns | Vol. 26 | pg. 133 | 2/29/80 |

| | | | | |
|-------------------|---|---------|---------|----------|
| S. of S. 2:3 | The Apple Tree In The Wood | Vol. 19 | pg. 373 | 7/6/73 |
| S. of S. 2:3 | Under the Apple Tree | Vol. 57 | pg. 217 | 5/11/11 |
| S. of S. 2:7 | The Roes and the Hinds | Vol. 25 | pg. 145 | 1879 |
| S. of S. 2:10-13 | A Sermon For Spring | Vol. 8 | pg. 109 | 2/23/62 |
| S. of S. 2:13 | The Tender Grapes | Vol. 42 | pg. 409 | 8/30/96 |
| S. of S. 2:16 | The Interest of Christ and His People In Each Other | Vol. 7 | pg. 209 | 3/29/61 |
| S. of S. 2:16 | Loved and Loving | Vol. 27 | pg. 698 | 1881 |
| S. of S. 2:16 | A Song Among the Lilies | Vol. 20 | pg. 481 | 8/30/74 |
| S. of S. 2:16 | “My Beloved <i>Is</i> Mine” | Vol. 41 | pg. 577 | 12/8/95 |
| S. of S. 2:16-17 | “A Song of My Beloved” | Vol. 56 | pg. 85 | 2/1/710 |
| S. of S. 2:16-17 | Over The Mountains | Vol. 58 | pg. 289 | 6/20/12 |
| S. of S. 2:17 | Darkness Before the Dawn | Vol. 42 | pg. 373 | 8/9/96 |
| S. of S. 2:17 | The Believer’s Glad Prospects | Vol. 58 | pg. 481 | 10/10/12 |
| S. of S. 3:1-4 | The Disconsolate Lover | Vol. 61 | pg. 529 | 11/11/15 |
| S. of S. 3:1-5 | Exposition | Vol. 42 | pg. 479 | 10/4/96 |
| S. of S. 3:1-5 | Exposition | Vol. 43 | pg. 226 | 5/9/97 |
| S. of S. 3:1-5 | Exposition | Vol. 63 | pg. 94 | 2/22/17 |
| S. of S. 3:4 | Love’s Vigilance Rewarded | Vol. 42 | pg. 469 | 10/4/96 |
| S. of S. 3:4-5 | The Real Presence, The Great Want of the Church | Vol. 18 | pg. 85 | 2/11/72 |
| S. of S. 3:6-11 | The Royal Pair In Their Glorious Chariot | Vol. 8 | pg. 661 | 11/30/62 |
| S. of S. 3:10 | Paved With Love | Vol. 19 | pg. 541 | 9/28/73 |
| S. of S. 4:1-16 | Exposition | Vol. 56 | pg. 513 | 10/20/10 |
| S. of S. 4:10-11 | Christ’s Estimate of His People | Vol. 5 | pg. 457 | 1/23/59 |
| S. of S. 4:12 | The Lord’s Own View of His Church and People | Vol. 33 | pg. 205 | 1887 |
| S. of S. 4:12, 15 | A Secret and Yet No Secret | Vol. 8 | pg. 49 | 1/26/62 |
| S. of S. 4:16 | Grace For Communion | Vol. 33 | pg. 37 | 1/2/87 |
| S. of S. 4:16 | “My Garden”—“His Garden” | Vol. 42 | pg. 349 | 7/26/96 |
| S. of S. 5:1 | The King Feasting In His Garden | Vol. 16 | pg. 133 | 3/6/70 |
| S. of S. 5:1 | Love Joying In Love | Vol. 33 | pg. 49 | 1/9/87 |
| S. of S. 5:2 | Asleep and Yet Awake—A Riddle | Vol. 26 | pg. 553 | 10/10/80 |
| S. of S. 5:2 | Warning and Encouragement | Vol. 52 | pg. 541 | 11/8/06 |
| S. of S. 5:2-8 | Nearer and Dearer | Vol. 14 | pg. 61 | 2/2/68 |
| S. of S. 5:6 | The Soul’s Desertion | Vol. 63 | pg. 85 | 2/22/17 |
| S. of S. 5:8 | Heavenly Love-sickness! | Vol. 9 | pg. 625 | 11/8/63 |
| S. of S. 5:9 | The Incomparable Bridegroom and His Bride | Vol. 42 | pg. 277 | 6/14/96 |
| S. of S. 5:10 | Christ’s Perfection and Precedence | Vol. 42 | pg. 385 | 8/16/96 |
| S. of S. 5:13 | Spices, Flowers, Lilies, and Myrrh | Vol. 42 | pg. 397 | 8/23/96 |
| S. of S. 5:16 | Altogether Lovely | Vol. 17 | pg. 397 | 7/23/71 |
| S. of S. 5:16 | The Best Beloved | Vol. 24 | pg. 661 | 1878 |
| S. of S. 6:4 | The Church As She Should Be | Vol. 17 | pg. 193 | 1871 |
| S. of S. 6:5 | Overcoming Christ | Vol. 42 | pg. 481 | 10/11/96 |
| S. of S. 6:12 | The Chariots of Ammi-nadib | Vol. 20 | pg. 61 | 1874 |
| S. of S. 6:13 | Inward Conflicts | Vol. 10 | pg. 561 | 10/9/64 |
| S. of S. 6:13 | “Return, Return, O Shulamite; Return, Return” | Vol. 30 | pg. 433 | 8/10/84 |
| S. of S. 7:11-13 | Good Works In Good Company | Vol. 10 | pg. 705 | 12/18/64 |
| S. of S. 7:11-13 | A Call For Revival | Vol. 18 | pg. 457 | 8/18/72 |
| S. of S. 8:5 | Leaning On Our Beloved | Vol. 15 | pg. 349 | 6/20/69 |
| S. of S. 8:6 | Love and Jealousy | Vol. 62 | pg. 277 | 6/15/16 |
| S. of S. 8:6-7 | The Shulamites Choice Prayer | Vol. 7 | pg. 129 | 2/24/61 |
| S. of S. 8:7 | Unpurchasable Love | Vol. 42 | pg. 241 | 5/24/96 |
| S. of S. 8:11-14 | Exposition | Vol. 42 | pg. 419 | 8/30/96 |
| S. of S. 8:12 | Christ’s Love For His Vineyard | Vol. 48 | pg. 301 | 6/29/02 |
| S. of S. 8:13 | The Bridegroom’s Parting Word | Vol. 29 | pg. 217 | 4/15/83 |
| S. of S. 8:14 | Come, My Beloved! | Vol. 40 | pg. 217 | 5/13/94 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Isa. 1:1-9 | Exposition | Vol. 62 | pg. 23 | 1/13/16 |
| Isa. 1:1-20 | Exposition | Vol. 40 | pg. 154 | 4/1/94 |
| Isa. 1:1-20 | Exposition | Vol. 46 | pg. 358 | 7/29/00 |
| Isa. 1:1-20 | Exposition | Vol. 49 | pg. 95 | 2/22/03 |
| Isa. 1:2-19 | Exposition | Vol. 40 | pg. 442 | 9/16/94 |
| Isa. 1:3 | To The Thoughtless | Vol. 18 | pg. 373 | 7/7/72 |
| Isa. 1:6 | The Shame and Spitting | Vol. 25 | pg. 421 | 7/27/79 |
| Isa. 1:7 | The Redeemer's Face Set Like A Flint | Vol. 47 | pg. 361 | 8/4/01 |
| Isa. 1:10 | The Child of Light Walking In Darkness | Vol. 33 | pg. 541 | 9/25/87 |
| Isa. 1:18 | The Silver Trumpet | Vol. 7 | pg. 145 | 3/24/61 |
| Isa. 1:18 | Reasons For Parting With Sin | Vol. 22 | pg. 85 | 2/13/76 |
| Isa. 1:18 | Scarlet Sinners Pardoned and Purified | Vol. 40 | pg. 145 | 4/1/94 |
| Isa. 1:18 | Invitation To a Conference | Vol. 49 | pg. 49 | 2/1/03 |
| Isa. 1:20 | The Infallibility of Scripture | Vol. 34 | pg. 145 | 3/11/88 |
| Isa. 2:1-22 | Exposition | Vol. 51 | pg. 82 | 2/9/05 |
| Isa. 2:2 | A Vision of the Latter Day Glories | Vol. 5 | pg. 249 | 4/24/59 |
| Isa. 2:5 | Walking in the Light of the Lord | Vol. 47 | pg. 61 | 2/10/01 |
| Isa. 2:6-22 | Exposition | Vol. 44 | pg. 177 | 4/10/98 |
| Isa. 2:11 | An Infallible Sign of Revival | Vol. 51 | pg. 73 | 2/9/05 |
| Isa. 2:17 | Man Humbled, God Exalted | Vol. 59 | pg. 409 | 8/28/13 |
| Isa. 2:22 | Man, Whose Breath Is In His Nostrils | Vol. 33 | pg. 529 | 1887 |
| Isa. 3:10-11 | Cheering Words and Solemn Warnings | Vol. 13 | pg. 13 | 1/13/67 |
| Isa. 4:13 | Spiritual Transformations | Vol. 53 | pg. 289 | 6/13/07 |
| Isa. 5:1-7 | Exposition | Vol. 42 | pg. 419 | 8/30/96 |
| Isa. 5:1-19 | Exposition | Vol. 58 | pg. 439 | 9/12/12 |
| Isa. 5:1 | The Well-beloved's Vineyard | Vol. 58 | pg. 433 | 9/12/12 |
| Isa. 5:1 | Holy Song From Happy Saints | Vol. 61 | pg. 433 | 9/16/15 |
| Isa. 5:17 | How the Lambs Feed | Vol. 56 | pg. 253 | 5/26/10 |
| Isa. 5:18 | Cords and Cart-ropes | Vol. 31 | pg. 61 | 2/8/85 |
| Isa. 6:1-13 | Exposition | Vol. 39 | pg. 190 | 4/16/93 |
| Isa. 6:1-13 | Exposition | Vol. 60 | pg. 611 | 12/17/14 |
| Isa. 6:8 | Messengers Wanted | Vol. 12 | pg. 229 | 4/22/66 |
| Isa. 6:8 | The Divine Call For Missionaries | Vol. 23 | pg. 241 | 4/22/77 |
| Isa. 6:13 | The Leafless Tree | Vol. 3 | pg. 113 | 3/8/57 |
| Isa. 7:1-16 | Exposition | Vol. 39 | pg. 202 | 4/23/93 |
| Isa. 7:9 | No Fixity Without Faith | Vol. 39 | pg. 193 | 4/23/93 |
| Isa. 7:14-15 | The Birth of Christ | Vol. 40 | pg. 601 | 12/23/94 |
| Isa. 8:14 | Christ A Sanctuary | Vol. 62 | pg. 349 | 7/27/16 |
| Isa. 8:18 | "I and the Children" | Vol. 20 | pg. 517 | 9/20/74 |
| Isa. 8:20 | Search the Scriptures | Vol. 4 | pg. 57 | 1/17/58 |
| Isa. 9:1-7 | Exposition | Vol. 58 | pg. 394 | 8/15/12 |
| Isa. 9:3 | Harvest Joy | Vol. 38 | pg. 337 | 7/17/92 |
| Isa. 9:3 | The Joy of Harvest | Vol. 53 | pg. 457 | 9/19/07 |
| Isa. 9:3 | Joy In Harvest | Vol. 58 | pg. 385 | 8/15/12 |
| Isa. 9:6 | His Name — Wonderful! | Vol. 4 | pg. 393 | 9/19/58 |
| Isa. 9:6 | His Name — The Mighty God | Vol. 5 | pg. 265 | 6/19/59 |
| Isa. 9:6 | A Christian Question | Vol. 6 | pg. 41 | 12/25/59 |
| Isa. 9:6 | His Name — The Everlasting Father | Vol. 12 | pg. 673 | 12/9/66 |
| Isa. 9:6 | His Name — The Counsellor | Vol. 4 | pg. 401 | 9/26/58 |
| Isa. 9:7 | "The Zeal of the Lord" | Vol. 60 | pg. 541 | 11/12/14 |
| Isa. 11:1-2 | Immanuel — The Light of Life | Vol. 36 | pg. 493 | 9/14/90 |
| Isa. 11:10 | Christ's Rest and Ours | Vol. 43 | pg. 529 | 11/7/97 |
| Isa. 12:1 | A New Song For New Hearts | Vol. 16 | pg. 241 | 5/1/70 |
| Isa. 12:2 | "Mr. Moody's Text" | Vol. 43 | pg. 517 | 10/31/97 |
| Isa. 14:1-32 | Exposition | Vol. 45 | pg. 118 | 3/5/99 |
| Isa. 14:22 | Sovereignty and Salvation | Vol. 2 | pg. 49 | 1/6/56 |
| Isa. 14:32 | Questions and Answers Concerning Zion | Vol. 45 | pg. 109 | 3/5/99 |

| | | | | |
|---|--|---------|---------|----------|
| Isa. 19:18-25 | The Fruits of Grace | Vol. 62 | pg. 265 | 6/8/16 |
| Isa. 22:23-25 | The Nail In A Sure Place | Vol. 60 | pg. 181 | 4/16/14 |
| Isa. 25:6 | Good Cheer For Christmas | Vol. 14 | pg. 697 | 12/20/68 |
| Isa. 26:1-14 | Exposition | Vol. 46 | pg. 167 | 4/8/00 |
| Isa. 26:1-21 | Exposition | Vol. 41 | pg. 441 | 9/15/95 |
| Isa. 26:1-21 | Exposition | Vol. 47 | pg. 70 | 2/10/01 |
| Isa. 26:3 | The Song of a City, and the Pearl of Peace | Vol. 31 | pg. 25 | 1/4/85 |
| Isa. 26:3 | “Peace! Perfect Peace!” | Vol. 55 | pg. 601 | 12/16/09 |
| Isa. 26:8-9 | Christians, and Their Communion With God | Vol. 41 | pg. 433 | 9/15/95 |
| Isa. 26:9 | The Desire of the Soul In Spiritual Darkness | Vol. 1 | pg. 237 | 6/24/55 |
| Isa. 26:20 | Good Advice For Troublous Times | Vol. 40 | pg. 541 | 11/18/94 |
| Isa. 26:20-21 | Exposition | Vol. 42 | pg. 167 | 4/5/96 |
| Isa. 27:1-9 | Exposition | Vol. 42 | pg. 167 | 4/5/96 |
| Isa. 27:3 | A Refreshing Promise | Vol. 25 | pg. 157 | 1879 |
| Isa. 27:3 | The Keeper of the Vineyard | Vol. 40 | pg. 589 | 12/16/94 |
| Isa. 27:13 & Psa. 86:5 & Job 17:1 | Ready, Ay, Ready! | Vol. 50 | pg. 49 | 12/28/04 |
| Isa. 28:12 | Rejecters of the Gospel Admonished | Vol. 27 | pg. 205 | 4/17/81 |
| Isa. 28:17 | Refuges of Lies and What Will Become of Them | Vol. 25 | pg. 601 | 10/26/79 |
| Isa. 28:20 | The Bed and Its Covering | Vol. 5 | pg. 153 | 1/9/59 |
| Isa. 28:24 | The Ploughman | Vol. 59 | pg. 577 | 12/4/13 |
| Isa. 28:25 | The Principal Wheat | Vol. 27 | pg. 605 | 8/25/81 |
| Isa. 28:27-28 | Soul-threshing | Vol. 60 | pg. 13 | 1/8/14 |
| Isa. 28:29 | A Feast For Faith | Vol. 12 | pg. 517 | 9/16/66 |
| Isa. 30:15 | Messages To Sinners and Saints | Vol. 52 | pg. 205 | 4/26/06 |
| Isa. 30:18 | A Waiting God and A Waiting People | Vol. 30 | pg. 97 | 2/17/84 |
| Isa. 30:19 | Encouragement To Trust And Pray | Vol. 24 | pg. 337 | 6/16/78 |
| Isa. 30:21 | The Voice Behind Thee | Vol. 28 | pg. 421 | 7/23/82 |
| Isa. 32:2 | Rivers of Water In A Dry Place | Vol. 21 | pg. 385 | 7/11/75 |
| Isa. 32:2 | Our Hiding Place | Vol. 49 | pg. 529 | 11/5/03 |
| Isa. 32:2 | “The Shadow of a Great Rock” | Vol. 53 | pg. 133 | 3/14/07 |
| Isa. 33:15-16 | The Rocky Fortress and Its Inhabitant | Vol. 30 | pg. 73 | 2/3/84 |
| Isa. 33:17 | The King In His Beauty | Vol. 13 | pg. 289 | 5/26/67 |
| Isa. 33:17 | A Vision of the King | Vol. 57 | pg. 85 | 2/23/11 |
| Isa. 33:17 | A Precious Promise For A Pure People | Vol. 62 | pg. 589 | 12/14/16 |
| Isa. 33:20-23 | Broad Rivers and Streams | Vol. 9 | pg. 25 | 1/18/63 |
| Isa. 33:24 | Healing and Pardon | Vol. 32 | pg. 325 | 6/20/86 |
| Isa. 35:1-10 | Exposition | Vol. 63 | pg. 10 | 1/4/17 |
| Isa. 35:4 | Good Cheer For Many That Fear | Vol. 49 | pg. 37 | 1/25/03 |
| Isa. 35:5-6 | The Dumb Singing | Vol. 45 | pg. 265 | 6/4/99 |
| Isa. 35:6 | The Dumb Become Singers | Vol. 58 | pg. 589 | 12/12/12 |
| Isa. 35:8 | The Holy Road | Vol. 32 | pg. 409 | 8/1/86 |
| Isa. 35:8 | Weak Hands and Feeble Knees | Vol. 5 | pg. 145 | 3/20/59 |
| Isa. 36:5 | In Whom Art Thou Trusting? | Vol. 11 | pg. 469 | 1865 |
| Isa. 38:1 | Landlord and Tenant | Vol. 53 | pg. 13 | 1/3/07 |
| Isa. 38:14 | Consolation For Poor Petitioners | Vol. 61 | pg. 337 | 7/22/15 |
| Isa. 38:17 | Miracles of Love | Vol. 19 | pg. 253 | 5/4/73 |
| Isa. 38:17 | Love’s Medicines and Miracles | Vol. 23 | pg. 73 | 1/21/77 |
| Isa. 38:17 | A Sense of Pardoned Sin | Vol. 6 | pg. 237 | 5/20/60 |
| Isa. 40:1-17 | Exposition | Vol. 60 | pg. 549 | 11/12/14 |
| Isa. 40:1-31 | Exposition | Vol. 47 | pg. 308 | 6/30/01 |
| Isa. 40:1-31 | Exposition | Vol. 49 | pg. 10 | 1/4/03 |
| Isa. 40:1 | Comfort Proclaimed | Vol. 4 | pg. 449 | 9/21/56 |
| Isa. 40:6-8 & 1 Pet. 1:23-25 | The Withering Work of the Spirit | Vol. 17 | pg. 373 | 7/9/71 |
| Isa. 40:8 | Man Transient: God’s Word Eternal | Vol. 60 | pg. 625 | 12/31/14 |

| | | | | |
|---|--|---------|---------|----------|
| Isa. 40:9-11 | Exposition | Vol. 51 | pg. 46 | 1/19/05 |
| Isa. 40:11 | The Lambs and Their Shepherd | Vol. 9 | pg. 637 | 11/15/63 |
| Isa. 40:11 | Jesus — The Shepherd | Vol. 11 | pg. 541 | 10/1/65 |
| Isa. 40:11 | Jesus and the Lambs | Vol. 14 | pg. 73 | 2/9/68 |
| Isa. 40:11 | A Sabbath-School Sermon | Vol. 23 | pg. 601 | 10/28/77 |
| Isa. 40:25-31 | Exposition | Vol. 60 | pg. 549 | 11/12/14 |
| Isa. 40:29 | Causes and Cure of Fainting | Vol. 49 | pg. 1 | 1/4/03 |
| Isa. 40:31 | The Unwearied Runner | Vol. 15 | pg. 337 | 4/15/69 |
| Isa. 40:31 | Renewing Strength | Vol. 29 | pg. 697 | 1883 |
| Isa. 41:1-11 | Exposition | Vol. 60 | pg. 536 | 11/5/14 |
| Isa. 41:1-18 | Exposition | Vol. 60 | pg. 190 | 4/16/14 |
| Isa. 41:1 | Solemn Pleadings For Revival | Vol. 21 | pg. 61 | 1/3/75 |
| Isa. 41:8 & Jas. 2:23 | The Friend of God | Vol. 33 | pg. 265 | 5/8/87 |
| Isa. 41:1-20 | Exposition | Vol. 38 | pg. 406 | 8/21/92 |
| Isa. 41:8-20 | Exposition | Vol. 44 | pg. 394 | 8/14/98 |
| Isa. 41:10 | The Sweet Harp of Consolation | Vol. 13 | pg. 385 | 7/14/67 |
| Isa. 41:10 | Away With Fear | Vol. 16 | pg. 265 | 4/10/70 |
| Isa. 41:14 | Fear Not | Vol. 3 | pg. 389 | 10/4/57 |
| Isa. 41:14 | Thy Redeemer | Vol. 3 | pg. 398 | 10/4/57 |
| Isa. 41:17 | Wordless Prayers Heard In Heaven | Vol. 46 | pg. 481 | 10/14/00 |
| Isa. 41:18 | Two "I Wills" In Isaiah 41 | Vol. 38 | pg. 397 | 8/21/92 |
| Isa. 42:1-6 | Exposition | Vol. 60 | pg. 563 | 11/19/14 |
| Isa. 42:1-17 | Exposition | Vol. 61 | pg. 21 | 1/14/15 |
| Isa. 42:3 | Smoking Flax | Vol. 31 | pg. 165 | 1885 |
| Isa. 42:6-7 | A Call To Prayer and Testimony | Vol. 37 | pg. 85 | 2/8/91 |
| Isa. 42:7 | Victor Emmanuel, Emancipator | Vol. 17 | pg. 217 | 1871 |
| Isa. 42:9 | The Philosophy of Promise | Vol. 25 | pg. 685 | 6/29/79 |
| Isa. 42:16 | Joyful Transformations | Vol. 14 | pg. 709 | 12/27/68 |
| Isa. 42:16 | The Blind Befriended | Vol. 22 | pg. 469 | 3/9/76 |
| Isa. 43:1-7 | Exposition | Vol. 43 | pg. 610 | 12/19/97 |
| Isa. 43:1-7 | Exposition | Vol. 48 | pg. 478 | 10/5/02 |
| Isa. 43:1-7 | Exposition | Vol. 55 | pg. 478 | 9/30/09 |
| Isa. 43:1-19 | Exposition | Vol. 54 | pg. 310 | 6/25/08 |
| Isa. 43:1-25 | Exposition | Vol. 50 | pg. 298 | 6/16/04 |
| Isa. 43:1 | A Mighty Saviour | Vol. 3 | pg. 33 | 1/4/57 |
| Isa. 43:1-4 & Isa. 43:22-24 & Isa. 44:21-23 | Love Abounding, Love Complaining, Love Abiding | Vol. 32 | pg. 205 | 4/11/86 |
| Isa. 43:1-4 | Four Contrasts | Vol. 43 | pg. 601 | 12/19/97 |
| Isa. 43:2 | Fire! Fire! Fire! | Vol. 7 | pg. 393 | 6/23/61 |
| Isa. 43:2-3 | Trials Expected and Conquered | Vol. 50 | pg. 157 | 3/31/04 |
| Isa. 43:3 | Jehovah's Valuation of His People | Vol. 36 | pg. 541 | 10/5/90 |
| Isa. 43:4 | Precious, Honourable, Beloved | Vol. 16 | pg. 109 | 2/20/70 |
| Isa. 43:4 | The Value and Rank of the Believer | Vol. 28 | pg. 409 | 1882 |
| Isa. 43:4 | Christ's Work No Failure | Vol. 33 | pg. 61 | 1/30/87 |
| Isa. 43:6 | North and South | Vol. 17 | pg. 469 | 1871 |
| Isa. 43:6 | The Church Encouraged and Exhorted | Vol. 48 | pg. 469 | 10/5/02 |
| Isa. 43:10 | Witnesses For God | Vol. 55 | pg. 481 | 10/7/09 |
| Isa. 43:10 | God's Witnesses | Vol. 11 | pg. 445 | 8/13/65 |
| Isa. 43:10 | Refined, But Not with Silver | Vol. 24 | pg. 469 | 1878 |
| Isa. 43:14-28 | Exposition | Vol. 50 | pg. 539 | 11/3/04 |
| Isa. 43:18-25 | Exposition | Vol. 61 | pg. 23 | 1/14/15 |
| Isa. 43:18-28 | Exposition | Vol. 48 | pg. 478 | 10/5/02 |
| Isa. 43:21-28 | Exposition | Vol. 49 | pg. 430 | 9/3/03 |
| Isa. 43:21-28 | Exposition | Vol. 43 | pg. 610 | 12/19/97 |
| Isa. 43:22-28 | Exposition | Vol. 41 | pg. 393 | 8/18/95 |

| | | | | |
|--|--|---------|---------|----------|
| Isa. 43:25 | Forgiveness | Vol. 1 | pg. 181 | 5/20/55 |
| Isa. 43:25 | Free Pardon | Vol. 19 | pg. 637 | 1873 |
| Isa. 43:25 & Jer. 31:4 & Heb. 7:12; 9:17 | God's Non-remembrance of Sin | Vol. 28 | pg. 577 | 10/22/82 |
| Isa. 43:26 | A Loving Entreaty | Vol. 29 | pg. 541 | 10/7/83 |
| Isa. 44:1-2 | Exposition | Vol. 48 | pg. 478 | 10/5/02 |
| Isa. 44:1-5 | Exposition | Vol. 43 | pg. 610 | 12/19/97 |
| Isa. 44:1-8 | Exposition | Vol. 41 | pg. 393 | 8/18/95 |
| Isa. 44:1-8 | Exposition | Vol. 50 | pg. 540 | 11/3/04 |
| Isa. 44:1-22 | Exposition | Vol. 40 | pg. 514 | 10/28/94 |
| Isa. 44:1-23 | Exposition | Vol. 49 | pg. 430 | 9/3/03 |
| Isa. 44:1-28 | Exposition | Vol. 41 | pg. 429 | 9/8/95 |
| Isa. 44:1-23 | Exposition | Vol. 42 | pg. 56 | 2/2/96 |
| Isa. 44:1-5 | A Promise For Us and For Our Children | Vol. 10 | pg. 205 | 4/10/64 |
| Isa. 44:5 | Converts, and Their Confession of Faith | Vol. 41 | pg. 421 | 9/8/95 |
| Isa. 44:3-5 | A Revival Promise | Vol. 20 | pg. 13 | 1/11/74 |
| Isa. 44:20 | The Deceived Heart | Vol. 46 | pg. 361 | 8/5/00 |
| Isa. 44:21 | "Forget Thee, I Will Not" | Vol. 40 | pg. 505 | 10/28/94 |
| Isa. 44:22 | Grace For the Guilty | Vol. 44 | pg. 150 | 3/27/98 |
| Isa. 44:22 | Barriers Obliterated | Vol. 49 | pg. 421 | 9/3/03 |
| Isa. 44:23 | The Song of Songs | Vol. 21 | pg. 349 | 6/13/75 |
| Isa. 44:23 | The Joy of Redemption | Vol. 42 | pg. 49 | 2/2/96 |
| Isa. 45:1-16 | Exposition | Vol. 61 | pg. 107 | 3/4/15 |
| Isa. 45:1-25 | Exposition | Vol. 49 | pg. 46 | 1/25/03 |
| Isa. 45:1-25 | Exposition | Vol. 50 | pg. 47 | 1/21/04 |
| Isa. 45:7 | The Solar Eclipse | Vol. 4 | pg. 145 | 3/14/58 |
| Isa. 45:19 | Comfort to Seekers From What the Lord Has Not Said | Vol. 9 | pg. 253 | 5/10/63 |
| Isa. 45:22 | "Life For A Look" | Vol. 48 | pg. 541 | 11/16/02 |
| Isa. 45:22 | The Life Look | Vol. 50 | pg. 37 | 1/21/04 |
| Isa. 45:24-25 | Five Divine Declarations | Vol. 48 | pg. 397 | 8/24/02 |
| Isa. 46:1-4 | Idols Found Wanting, But Jehovah Found Faithful | Vol. 34 | pg. 661 | 12/9/88 |
| Isa. 46:4 | The God of the Aged | Vol. 2 | pg. 217 | 5/25/56 |
| Isa. 47:14 | The Portion of the Ungodly | Vol. 8 | pg. 205 | 4/13/62 |
| Isa. 48:1-22 | Exposition | Vol. 40 | pg. 455 | 9/23/94 |
| Isa. 48:8 | God's Foreknowledge of Man's Sin | Vol. 13 | pg. 613 | 11/3/67 |
| Isa. 48:9-11 | Mercy's Master Motive | Vol. 18 | pg. 157 | 3/17/72 |
| Isa. 48:10 | God's People in the Furnace | Vol. 1 | pg. 269 | 8/12/55 |
| Isa. 48:18 | The Great Privation: or, The Great Salvation | Vol. 11 | pg. 37 | 1865 |
| Isa. 49:1-17 | Exposition | Vol. 41 | pg. 46 | 1/27/95 |
| Isa. 49:1-23 | Exposition | Vol. 46 | pg. 572 | 12/2/00 |
| Isa. 49:1-26 | Exposition | Vol. 57 | pg. 93 | 2/23/11 |
| Isa. 49:13-26 | Exposition | Vol. 38 | pg. 346 | 7/17/92 |
| Isa. 49:8 | Christ In the Covenant | Vol. 2 | pg. 393 | 8/31/56 |
| Isa. 49:9 | "Out of Darkness Into Light" | Vol. 41 | pg. 37 | 1/27/95 |
| Isa. 49:10 | Heaven Above, and Heaven Below | Vol. 36 | pg. 73 | 2/2/90 |
| Isa. 49:13 | God Comforting His People | Vol. 52 | pg. 529 | 11/1/06 |
| Isa. 49:16 | A Precious Drop of Honey | Vol. 9 | pg. 301 | 5/31/63 |
| Isa. 49:16 | Neither Forsaken Nor Forgotten | Vol. 46 | pg. 193 | 4/29/00 |
| Isa. 49:16 | God's Memorial of His People | Vol. 61 | pg. 13 | 1/14/15 |
| Isa. 49:20-21 | Church Increase | Vol. 46 | pg. 433 | 9/16/00 |
| Isa. 49:20-21 | The Church A Mother | Vol. 48 | pg. 193 | 4/27/02 |
| Isa. 49:24 | To The Rescue | Vol. 61 | pg. 265 | 6/10/15 |
| Isa. 49:24-26 | Exposition | Vol. 49 | pg. 251 | 5/24/03 |
| Isa. 50:1-11 | Exposition | Vol. 47 | pg. 371 | 8/4/01 |
| Isa. 50:1-11 | Exposition | Vol. 39 | pg. 561 | 11/19/93 |
| Isa. 50:1-11 | Exposition | Vol. 49 | pg. 251 | 5/24/03 |

| | | | | |
|----------------------------|---|---------|---------|----------|
| Isa. 50:2-6 | The Redeemer Described By Himself | Vol. 49 | pg. 181 | 4/19/03 |
| Isa. 51:1 | A Bright Light In Deep Shades | Vol. 18 | pg. 265 | 5/12/72 |
| Isa. 51:1 | A Look and Its Lessons | Vol. 56 | pg. 193 | 4/21/10 |
| Isa. 51:2-3 | Hearken and Look; or, Encouragement For Believers | Vol. 27 | pg. 241 | 4/27/81 |
| Isa. 51:3 | A Prospect of Revival | Vol. 62 | pg. 253 | 6/1/16 |
| Isa. 51:1-13 | Exposition | Vol. 43 | pg. 538 | 11/7/97 |
| Isa. 51:12-13 | Needless Fears | Vol. 54 | pg. 301 | 6/25/08 |
| Isa. 52:2 | A Call To the Depressed | Vol. 60 | pg. 421 | 9/3/14 |
| Isa. 52:10 | The Great Revival | Vol. 4 | pg. 161 | 3/28/58 |
| Isa. 52:13-15 | The Sure Triumph of the Crucified One | Vol. 21 | pg. 241 | 4/25/75 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 39 | pg. 22 | 1/8/93 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 43 | pg. 22 | 1/10/97 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 43 | pg. 441 | 9/12/97 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 49 | pg. 189 | 4/19/03 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 49 | pg. 346 | 7/19/03 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 50 | pg. 576 | 11/24/04 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 59 | pg. 155 | 3/27/13 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 60 | pg. 597 | 12/10/14 |
| Isa. 53:1-12 | Exposition | Vol. 61 | pg. 228 | 5/13/15 |
| Isa. 53:2 | A Root Out of a Dry Ground | Vol. 18 | pg. 565 | 10/13/72 |
| Isa. 53:3 | The Man Of Sorrows | Vol. 19 | pg. 121 | 3/2/73 |
| Isa. 53:3 | Why Christ Is Not Esteemed | Vol. 53 | pg. 157 | 3/28/07 |
| Isa. 53:3 | A Sad Confession | Vol. 62 | pg. 445 | 9/21/16 |
| Isa. 53:5 | The Universal Remedy | Vol. 14 | pg. 553 | 10/4/68 |
| Isa. 53:5 | A Simple Remedy | Vol. 18 | pg. 481 | 9/1/72 |
| Isa. 53:5 | Number Two Thousand; or, Healing By the Stripes of Jesus | Vol. 33 | pg. 709 | 1/1/88 |
| Isa. 53:5 | Christopathy | Vol. 43 | pg. 13 | 1/10/97 |
| Isa. 53:5 & 1 Pet. 2:24 | A Dire Disease Strangely Cured | Vol. 50 | pg. 277 | 6/9/04 |
| Isa. 53:6 | Sin Laid On Jesus | Vol. 12 | pg. 313 | 6/10/66 |
| Isa. 53:6 | Individual Sin Laid On Jesus | Vol. 16 | pg. 205 | 4/10/70 |
| Isa. 53:7 | The Sheep Before The Shearers | Vol. 26 | pg. 349 | 1880 |
| Isa. 53:10 | Expiation | Vol. 10 | pg. 169 | 1864 |
| Isa. 53:10 | Our Expectation | Vol. 37 | pg. 51 | 1891 |
| Isa. 53:10 | The Death of Christ | Vol. 4 | pg. 65 | 1/24/58 |
| Isa. 53:10 | Unmitigated Prosperity | Vol. 51 | pg. 565 | 11/23/05 |
| Isa. 53:11 | The Suffering Christ Satisfied | Vol. 61 | pg. 301 | 7/1/15 |
| Isa. 53:11 | Our Magnificent Saviour | Vol. 63 | pg. 109 | 3/8/17 |
| Isa. 53:12 | The Vanguard and Rereward of the Church | Vol. 5 | pg. 41 | 12/26/58 |
| Isa. 53:12 | The Friend of Sinners | Vol. 8 | pg. 373 | 6/29/62 |
| Isa. 53:12 | Jesus Interceding For Transgressors | Vol. 23 | pg. 649 | 11/18/77 |
| Isa. 53:12 | Christ's Connection with Sinners, the Source of His Glory | Vol. 35 | pg. 85 | 2/17/89 |
| Isa. 53:12 | "Ever This Our War Cry—Victory, Victory!" | Vol. 57 | pg. 577 | 12/7/11 |
| Isa. 54:1-10 | Exposition | Vol. 44 | pg. 611 | 12/18/98 |
| Isa. 54:1-10 | Exposition | Vol. 51 | pg. 563 | 11/16/05 |
| Isa. 54:1-16 | Exposition | Vol. 60 | pg. 584 | 12/3/14 |
| Isa. 54:1-17 | Exposition | Vol. 53 | pg. 117 | 2/28/07 |
| Isa. 54:1 | Songs for Desolate Hearts | Vol. 11 | pg. 505 | 9/10/65 |
| Isa. 54:7-10 | Fat Things, Full of Marrow | Vol. 22 | pg. 421 | 7/23/76 |
| Isa. 54:9 | The Lord No More Wroth With His People | Vol. 36 | pg. 649 | 12/7/90 |
| Isa. 54:9 | Diamond Hinges—"As" and "So" | Vol. 51 | pg. 553 | 11/16/05 |
| Isa. 54:11-12 | Sanctified Sorrow | Vol. 60 | pg. 577 | 12/3/14 |
| Isa. 54:17 | The Saint's Heritage and Watchword | Vol. 50 | pg. 529 | 11/3/04 |
| Isa. 55:1-4 | Exposition | Vol. 61 | pg. 384 | 8/12/15 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 42 | pg. 56 | 2/2/96 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 38 | pg. 502 | 10/16/92 |
| Isa. 55:1-7 | Exposition | Vol. 43 | pg. 441 | 9/12/97 |

| | | | | |
|----------------------------|--|---------|---------|----------|
| Isa. 55:1-11 | Exposition | Vol. 60 | pg. 394 | 9/3/14 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 41 | pg. 201 | 4/28/95 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 44 | pg. 371 | 7/31/98 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 48 | pg. 454 | 9/21/02 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 51 | pg. 466 | 9/21/05 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 50 | pg. 275 | 6/2/04 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 58 | pg. 201 | 4/25/12 |
| Isa. 55:1-13 | Exposition | Vol. 60 | pg. 394 | 8/13/14 |
| Isa. 55:1 | A Free Salvation | Vol. 4 | pg. 273 | 6/11/58 |
| Isa. 55:1 | “Without Money and Without Price” | Vol. 20 | pg. 133 | 3/8/74 |
| Isa. 55:1 | Ho! Ho! | Vol. 58 | pg. 193 | 4/25/12 |
| Isa. 55:1 | Buying Without Money | Vol. 29 | pg. 337 | 6/17/83 |
| Isa. 55:2 | Feeding On the Word | Vol. 38 | pg. 493 | 10/16/92 |
| Isa. 55:2 | The Soul’s Best Food | Vol. 48 | pg. 313 | 7/6/02 |
| Isa. 55:3 | God’s Own Gospel Call | Vol. 35 | pg. 349 | 6/30/89 |
| Isa. 55:3 | Twelve Covenant Mercies | Vol. 39 | pg. 325 | 7/9/93 |
| Isa. 55:4 | Christ’s Triple Character | Vol. 48 | pg. 325 | 7/13/02 |
| Isa. 55:4 | Our Leader Through the Darkness | Vol. 59 | pg. 421 | 9/4/13 |
| Isa. 55:4-6 | The Greatest Gift In Time or Eternity | Vol. 43 | pg. 433 | 9/12/97 |
| Isa. 55:5 | Christ Glorified | Vol. 60 | pg. 589 | 12/10/14 |
| Isa. 55:7 | Abundant Pardon | Vol. 20 | pg. 520 | 9/27/74 |
| Isa. 55:7 | The Need and Nature of Conversion | Vol. 48 | pg. 445 | 9/21/02 |
| Isa. 55:7-9 | God Forgiving Sin | Vol. 36 | pg. 701 | 2/6/90 |
| Isa. 55:8-9 | Man’s Thoughts and God’s Thoughts | Vol. 12 | pg. 97 | 2/18/66 |
| Isa. 55:8-9 | God’s Thoughts And Ways Far Above Ours | Vol. 23 | pg. 673 | 12/2/77 |
| Isa. 55:10-13 | Spring-time In Nature and Grace | Vol. 41 | pg. 193 | 4/28/95 |
| Isa. 55:13 | The Lord’s Name and Memorial | Vol. 14 | pg. 541 | 9/27/68 |
| Isa. 56:4, 6 | Taking Hold of God’s Covenant | Vol. 48 | pg. 25 | 1/19/02 |
| Isa. 56:8 | Others To Be Gathered | Vol. 24 | pg. 553 | 10/6/78 |
| Isa. 57:1-21 | Exposition | Vol. 60 | pg. 382 | 8/6/14 |
| Isa. 57:10-21 | Exposition | Vol. 45 | pg. 105 | 2/26/99 |
| Isa. 57:10 & Jer. 18:12 | Hope, Yet no Hope. No Hope, Yet Hope | Vol. 12 | pg. 193 | 4/8/66 |
| Isa. 57:14 | Roads Cleared | Vol. 27 | pg. 45 | 1881 |
| Isa. 57:16-18 | Contention Ended and Grace Reigning | Vol. 25 | pg. 469 | 8/17/79 |
| Isa. 57:18 | Amazing Grace | Vol. 22 | pg. 97 | 1876 |
| Isa. 57:19 | Rare Fruit | Vol. 26 | pg. 517 | 1880 |
| Isa. 57:20-21 | Restless! Peaceless! | Vol. 50 | pg. 265 | 6/2/04 |
| Isa. 58:1-11 | Exposition | Vol. 45 | pg. 105 | 2/26/99 |
| Isa. 58:1-12 | Exposition | Vol. 60 | pg. 442 | 9/10/14 |
| Isa. 58:1-14 | Exposition | Vol. 41 | pg. 214 | 5/5/95 |
| Isa. 58:1-2 | Ten Wrong Kinds of Hearers | Vol. 39 | pg. 229 | 5/14/93 |
| Isa. 58:8 | God’s Glory Our Rereward | Vol. 53 | pg. 97 | 2/21/07 |
| Isa. 58:11 | A Happy Christian | Vol. 13 | pg. 97 | 1867 |
| Isa. 59:1-2 | Why Some Seekers Are Not Saved | Vol. 41 | pg. 205 | 5/5/95 |
| Isa. 59:9 | Help For Seekers of the Light | Vol. 15 | pg. 433 | 9/8/69 |
| Isa. 59:16-21 | Exposition | Vol. 45 | pg. 177 | 4/9/99 |
| Isa. 59:17 | The Best Cloak | Vol. 14 | pg. 528 | 1868 |
| Isa. 59:19 | The Standard Uplifted In the Face of the Foe | Vol. 12 | pg. 601 | 10/28/66 |
| Isa. 60:1-16 | Exposition | Vol. 45 | pg. 177 | 4/9/99 |
| Isa. 60:1-22 | Exposition | Vol. 48 | pg. 58 | 2/2/02 |
| Isa. 60:1-22 | Exposition | Vol. 50 | pg. 203 | 4/21/04 |
| Isa. 60:1 | Shining Christians | Vol. 45 | pg. 169 | 4/9/99 |
| Isa. 60:8 | Marvellous Increase of the Church | Vol. 2 | pg. 73 | 1/27/56 |
| Isa. 60:8 | The Cloud of Doves | Vol. 48 | pg. 49 | 2/2/02 |
| Isa. 60:8 | Lessons From a Dovecot | Vol. 53 | pg. 373 | 8/1/07 |
| Isa. 60:20 | The Eternal Day | Vol. 20 | pg. 313 | 5/31/74 |

| | | | | |
|------------------------------|--|--------|---------|----------|
| Isa. 61:1-11 | Exposition | Vol.42 | pg. 394 | 8/16/96 |
| Isa. 61:1-11 | Exposition | Vol.43 | pg. 551 | 11/14/97 |
| Isa. 61:1 | Heart-disease Curable | Vol.27 | pg. 341 | 6/19/81 |
| Isa. 61:1 | Freedom At Once and For Ever | Vol.40 | pg. 349 | 7/29/94 |
| Isa. 61:1 | Binding Up Broken Hearts | Vol.54 | pg. 373 | 8/6/08 |
| Isa. 61:1 | Our Lord's Preaching | Vol.57 | pg. 73 | 2/16/11 |
| Isa. 61:2 | Proclamation of Acceptance and Vengeance | Vol.23 | pg. 457 | 8/12/77 |
| Isa. 61:3 | Beauty For Ashes | Vol.17 | pg. 577 | 1871 |
| Isa. 61:3 | Solace For Sad Hearts | Vol.58 | pg. 505 | 10/24/12 |
| Isa. 61:3 | Beauty For Ashes | Vol.59 | pg. 577 | 1/9/13 |
| Isa. 61:3 | "The Oil of Joy For Mourning" | Vol.59 | pg. 73 | 2/13/13 |
| Isa. 61:3 | "The Garment of Praise" | Vol.59 | pg. 169 | 4/10/13 |
| Isa. 61:10 | Good Reasons For a Good Resolution | Vol.43 | pg. 541 | 11/14/97 |
| Isa. 61:11 | Spring | Vol.19 | pg. 181 | 3/30/73 |
| Isa. 62:10 | Clearing The Road To Heaven | Vol.19 | pg. 505 | 1873 |
| Isa. 62:11-12 & Isa. 43:1 | Who Is This? | Vol.33 | pg. 85 | 2/13/87 |
| Isa. 62:12 | Am I Sought Out? | Vol. 9 | pg. 457 | 8/23/63 |
| Isa. 63:1 | A Mighty Saviour | Vol. 3 | pg. 33 | 1/4/57 |
| Isa. 63:3 | The Single-handed Conquest | Vol.44 | pg. 193 | 4/24/98 |
| Isa. 63:7 | A Song Concerning Lovingkindness | Vol.19 | pg. 445 | 8/10/73 |
| Isa. 63:10 | God Fighting Sin | Vol.36 | pg. 685 | 12/28/90 |
| Isa. 63:11-14 | Where Is the Lord? | Vol.38 | pg. 253 | 5/29/92 |
| Isa. 63:12-14 | God's Glorious and Everlasting Name | Vol.37 | pg. 565 | 11/8/91 |
| Isa. 64:1-12 | Exposition | Vol.40 | pg. 598 | 12/16/94 |
| Isa. 64:2 | Trembling At the Word of the Lord | Vol.35 | pg. 97 | 2/24/89 |
| Isa. 64:3 | Divine Surprises | Vol.26 | pg. 289 | 5/16/80 |
| Isa. 64:6-8 | A Sight of Self | Vol. 8 | pg. 121 | 3/2/62 |
| Isa. 64:7 | Taking Hold Upon God | Vol.23 | pg. 553 | 10/7/77 |
| Isa. 64:10 | A Dirge For the Down-grade and A Song For Faith | Vol.35 | pg. 265 | 4/18/89 |
| Isa. 64:13 | The Tenderness of God's Comfort | Vol.56 | pg. 133 | 3/17/10 |
| Isa. 65:1 | The Very Bold Prophecy | Vol.32 | pg. 493 | 9/12/86 |
| Isa. 65:5 | Self-righteousness—A Smouldering Heap of Rubbish | Vol.25 | pg. 553 | 9/28/79 |
| Isa. 65:17-19 | God Rejoicing In the New Creation | Vol.37 | pg. 349 | 7/5/91 |
| Isa. 66:1-2 | Living Temples For the Living God | Vol.18 | pg. 661 | 1872 |
| Isa. 66:8 | Travailing for Souls | Vol.17 | pg. 493 | 9/3/71 |
| Isa. 66:21 | A New Order of Priests and Levites | Vol.17 | pg. 289 | 1871 |

JEREMIAH

| | | | | |
|--------------|--|--------|---------|----------|
| Jer. 1:1-19 | Exposition | Vol.46 | pg. 346 | 7/22/00 |
| Jer. 1:4 | "Going and Weeping" | Vol.53 | pg. 349 | 7/18/07 |
| Jer. 1:4-5 | Mourners, Inquirers, Covenanters | Vol.29 | pg. 649 | 11/25/83 |
| Jer. 1:5 | A Test For True Seekers | Vol.44 | pg. 181 | 4/17/98 |
| Jer. 1:5 | Enquiring The Way To Zion | Vol.53 | pg. 181 | 4/11/07 |
| Jer. 1:11-12 | The Lesson of the Almond Tree | Vol.46 | pg. 265 | 6/10/00 |
| Jer. 1:20 | Perfect Justification and Perfect Pardon | Vol.48 | pg. 349 | 7/27/02 |
| Jer. 2:1-19 | Exposition | Vol.51 | pg. 130 | 3/9/05 |
| Jer. 2:1-25 | Exposition | Vol.41 | pg. 70 | 2/10/95 |
| Jer. 2:2 | "Thy First Love" | Vol.41 | pg. 61 | 2/10/95 |
| Jer. 2:2 | The Love of our Espousals | Vol.51 | pg. 121 | 3/9/05 |
| Jer. 2:18 | Words of Expostulation | Vol. 7 | pg. 65 | 1/20/61 |
| Jer. 2:20-37 | Exposition | Vol.51 | pg. 191 | 4/13/05 |
| Jer. 2:32 | The Bride and Her Ornaments: Sin of Forgetting God | Vol.27 | pg. 689 | 8/4/81 |
| Jer. 2:36 | Gadding About | Vol.52 | pg. 469 | 9/27/06 |
| Jer. 3:1-23 | Exposition | Vol.42 | pg. 82 | 2/16/96 |

| | | | | |
|---------------------------|--|---------|---------|----------|
| Jer. 3:6-15 | Exposition | Vol. 60 | pg. 477 | 10/1/14 |
| Jer. 3:12-13 | A Proclamation From the King of Kings | Vol. 31 | pg. 181 | 4/5/85 |
| Jer. 3:12-25 | Exposition | Vol. 58 | pg. 502 | 10/17/12 |
| Jer. 3:12, 14, 22 | Return! Return! | Vol. 51 | pg. 181 | 4/13/05 |
| Jer. 3:14 | The Relationship of Marriage | Vol. 13 | pg. 409 | 1867 |
| Jer. 3:16 | The Ark of the Covenant | Vol. 27 | pg. 545 | 9/25/81 |
| Jer. 3:19 | Interrogation and Exclamation | Vol. 47 | pg. 409 | 9/1/01 |
| Jer. 3:22-23 | Hope For the Worst Backsliders | Vol. 42 | pg. 73 | 2/16/96 |
| Jer. 4:1-29 | Exposition | Vol. 60 | pg. 479 | 10/1/14 |
| Jer. 4:14 | Bad Lodgers, And How To Treat Them | Vol. 26 | pg. 697 | 1880 |
| Jer. 4:20 | The Wailing of Risca | Vol. 6 | pg. 9 | 12/9/60 |
| Jer. 4:20, 30 | Sudden Sorrow | Vol. 23 | pg. 385 | 7/7/77 |
| Jer. 5:1-6 | Exposition | Vol. 46 | pg. 56 | 2/4/00 |
| Jer. 5:3 | Truthfulness | Vol. 27 | pg. 109 | 1881 |
| Jer. 5:3 | Decided Ungodliness | Vol. 45 | pg. 625 | 12/31/99 |
| Jer. 5:10 | Storming the Battlements | Vol. 1 | pg. 293 | 9/16/55 |
| Jer. 5:10-31 | Exposition | Vol. 46 | pg. 56 | 2/4/00 |
| Jer. 5:22-23 | God's Barriers Against Man's Sin | Vol. 4 | pg. 441 | 11/16/56 |
| Jer. 5:24 | The Former and the Latter Rain | Vol. 15 | pg. 385 | 7/11/69 |
| Jer. 6:14 | A Blast of the Trumpet Against False Peace | Vol. 6 | pg. 117 | 2/26/60 |
| Jer. 6:16 | Rest As A Test | Vol. 47 | pg. 481 | 10/13/01 |
| Jer. 6:19 | Thoughts and Their Fruit | Vol. 57 | pg. 313 | 7/6/11 |
| Jer. 6:29 | The Bellows Burned | Vol. 15 | pg. 505 | 9/12/69 |
| Jer. 7:1-16 | Exposition | Vol. 57 | pg. 322 | 7/6/11 |
| Jer. 7:21-26 | Exposition | Vol. 39 | pg. 154 | 3/26/93 |
| Jer. 8:1-22 | Exposition | Vol. 42 | pg. 549 | 11/15/96 |
| Jer. 8:1-22 | Exposition | Vol. 49 | pg. 562 | 11/19/03 |
| Jer. 8:6 | "What Have I Done?" | Vol. 4 | pg. 33 | 12/27/57 |
| Jer. 8:7 | Migratory Birds | Vol. 49 | pg. 553 | 11/19/03 |
| Jer. 8:11 & Jer. 17:14 | Healed or Deluded? Which? | Vol. 28 | pg. 253 | 5/7/82 |
| Jer. 8:19-20 | A Discourse For A Revival Season | Vol. 11 | pg. 13 | 1/8/65 |
| Jer. 8:20 | Harvest Past; Summer Ended, and Men Unsaved | Vol. 26 | pg. 565 | 10/17/80 |
| Jer. 9:1-26 | Exposition | Vol. 38 | pg. 454 | 9/11/92 |
| Jer. 9:1 | Exposition | Vol. 42 | pg. 549 | 11/15/96 |
| Jer. 9:1 | Exposition | Vol. 49 | pg. 562 | 11/19/03 |
| Jer. 9:1 | India's Ills and England's Sorrows | Vol. 3 | pg. 341 | 9/6/57 |
| Jer. 9:7 | God's People Melted And Tried | Vol. 38 | pg. 445 | 9/18/92 |
| Jer. 10:1-25 | Exposition | Vol. 50 | pg. 358 | 7/21/04 |
| Jer. 10:23 | An Instructive Truth | Vol. 50 | pg. 349 | 7/21/04 |
| Jer. 11:8 | Sins of Omission | Vol. 14 | pg. 601 | 10/25/68 |
| Jer. 12:5 | Are You Prepared to Die? | Vol. 11 | pg. 337 | 1865 |
| Jer. 13:1-11 | The Cast-off Girdle | Vol. 29 | pg. 97 | 1883 |
| Jer. 13:15-17 | Jehovah Hath Spoken: Will Ye Not Hear? | Vol. 29 | pg. 601 | 11/4/83 |
| Jer. 13:23 | The Ethiopian | Vol. 43 | pg. 457 | 9/26/97 |
| Jer. 14:1-22 | Exposition | Vol. 47 | pg. 454 | 9/22/01 |
| Jer. 14:3-4, 22 | The Drought of Nature, The Rain of Grace, etc. | Vol. 35 | pg. 625 | 11/24/89 |
| Jer. 14:7-9 | Praying and Pleading | Vol. 28 | pg. 289 | 1882 |
| Jer. 14:22 | Intercession and Supplication | Vol. 47 | pg. 445 | 9/22/01 |
| Jer. 15:12 | The Northern Iron and the Steel | Vol. 17 | pg. 301 | 1871 |
| Jer. 15:16 | Hidden Manna | Vol. 17 | pg. 145 | 3/12/71 |
| Jer. 15:16 | The Secret Food and the Public Name | Vol. 18 | pg. 613 | 1872 |
| Jer. 17:1 | The Deep-seated Character of Sin | Vol. 14 | pg. 289 | 5/17/68 |
| Jer. 17:1-14 | Exposition | Vol. 57 | pg. 322 | 5/6/11 |
| Jer. 17:12-14 | Our Sanctuary | Vol. 30 | pg. 337 | 6/15/84 |
| Jer. 18:11 | "Return! Return!" | Vol. 43 | pg. 589 | 12/12/97 |
| Jer. 19:13 | Seekers Directed and Encouraged | Vol. 25 | pg. 77 | 1879 |

| | | | | |
|----------------|---|--------|---------|----------|
| Jer. 23:1-32 | Exposition | Vol.42 | pg. 178 | 4/12/96 |
| Jer. 23:6 | Jehovah Tsidkenu — The Lord our Righteousness | Vol. 7 | pg. 377 | 6/2/61 |
| Jer. 23:28 | Winnowing-Time | Vol.15 | pg. 169 | 1/17/67 |
| Jer. 23:29 | God's Fire and Hammer | Vol.42 | pg. 169 | 4/12/96 |
| Jer. 24:7 | Heart-knowledge of God | Vol.20 | pg. 673 | 12/6/74 |
| Jer. 28:13 | The Two Yokes | Vol.18 | pg. 49 | 1/14/72 |
| Jer. 29:11 | God's Thoughts of Peace, and Our Expected End | Vol.33 | pg. 301 | 5/29/87 |
| Jer. 29:13 | A Second Word To Seekers | Vol.22 | pg. 505 | 9/10/76 |
| Jer. 30:1-11 | Exposition | Vol.60 | pg. 396 | 8/13/14 |
| Jer. 30:7 | "The Time of Jacob's Trouble" | Vol.45 | pg. 505 | 10/22/99 |
| Jer. 30:12-17 | Exposition | Vol.60 | pg. 444 | 9/10/14 |
| Jer. 30:17 | Blessed Promises For Dying Outcasts | Vol.29 | pg. 661 | 12/2/83 |
| Jer. 30:21 | Who Is This? | Vol.28 | pg. 433 | 8/6/82 |
| Jer. 31:1-22 | Exposition | Vol.57 | pg. 369 | 8/3/11 |
| Jer. 31:1-26 | Exposition | Vol.47 | pg. 226 | 5/12/01 |
| Jer. 31:1-28 | Exposition | Vol.58 | pg. 309 | 6/27/12 |
| Jer. 31:3 | Secret Drawings Graciously Explained | Vol.32 | pg. 433 | 8/15/86 |
| Jer. 31:3 | Everlasting Love Revealed | Vol.36 | pg. 325 | 6/15/90 |
| Jer. 31:3 | New Tokens of Ancient Love | Vol.50 | pg. 193 | 4/21/04 |
| Jer. 31:8 | A Promise For the Blind | Vol.55 | pg. 169 | 4/8/09 |
| Jer. 31:3 | The Drawings of Love | Vol.63 | pg. 193 | 4/26/17 |
| Jer. 31:8-9 | Gathering In the Chosen | Vol.58 | pg. 301 | 6/27/12 |
| Jer. 31:14, 25 | Fourfold Satisfaction | Vol.47 | pg. 217 | 5/12/01 |
| Jer. 31:18 | Ephraim Bemoaning Himself | Vol.13 | pg. 181 | 3/31/67 |
| Jer. 31:18-20 | The Inner Side of Conversion | Vol.35 | pg. 493 | 9/15/89 |
| Jer. 31:18-26 | Exposition | Vol.44 | pg. 191 | 4/17/98 |
| Jer. 31:22-37 | Exposition | Vol.57 | pg. 381 | 8/10/11 |
| Jer. 31:27-37 | Exposition | Vol.43 | pg. 108 | 2/28/97 |
| Jer. 31:29-37 | Exposition | Vol.58 | pg. 324 | 7/4/12 |
| Jer. 31:31-34 | Exposition | Vol.48 | pg. 35 | 1/19/02 |
| Jer. 31:32 | God, The Husband of His People | Vol.60 | pg. 385 | 8/13/14 |
| Jer. 31:33 | The Law Written on the Heart | Vol.28 | pg. 601 | 10/29/82 |
| Jer. 31:33 | God in the Covenant | Vol. 2 | pg. 313 | 8/3/56 |
| Jer. 31:33 | God's Writing Upon Man's Heart | Vol.52 | pg. 289 | 6/14/06 |
| Jer. 31:34 | Knowing the Lord through Pardoned Sin | Vol.34 | pg. 61 | 1/29/88 |
| Jer. 32:1-27 | Exposition | Vol.46 | pg. 238 | 5/20/00 |
| Jer. 32:6-41 | Exposition | Vol.39 | pg. 106 | 2/26/93 |
| Jer. 32:14 | Sealed and Open Evidences | Vol.39 | pg. 97 | 2/26/93 |
| Jer. 32:17 | Creation — An Argument for Faith | Vol. 8 | pg. 421 | 7/27/62 |
| Jer. 32:26-27 | "Is Anything Too Hard For the Lord?" | Vol.34 | pg. 229 | 4/22/88 |
| Jer. 32:27 | Jehovah's Challenge | Vol.46 | pg. 229 | 5/20/00 |
| Jer. 32:30-42 | Exposition | Vol.39 | pg. 335 | 7/9/93 |
| Jer. 32:39 | Whole-hearted Religion | Vol.27 | pg. 569 | 10/9/81 |
| Jer. 32:40 | Perseverance In Holiness | Vol.35 | pg. 541 | 10/6/89 |
| Jer. 32:41 | The Whole-heartedness of God In Blessing His People | Vol.34 | pg. 421 | 7/29/88 |
| Jer. 33:3 | The Golden Key of Prayer | Vol.11 | pg. 145 | 2/12/65 |
| Jer. 33:3 | Things Unknown | Vol.46 | pg. 97 | 3/4/00 |
| Jer. 33:9 | Chastened Happiness | Vol.27 | pg. 713 | 12/25/81 |
| Jer. 33:15-26 | Exposition | Vol.42 | pg. 323 | 7/5/96 |
| Jer. 38:5 | Zedekiah; or The Man Who Cannot Say "No" | Vol.36 | pg. 673 | 12/21/90 |
| Jer. 44:4 | Two Arguments Against Sin | Vol.46 | pg. 337 | 7/22/00 |
| Jer. 47:5 | The Tender Enquiry of a Friend | Vol.34 | pg. 289 | 1888 |
| Jer. 48:11-12 | The Shrill Trumpet of Admonition | Vol.13 | pg. 397 | 7/21/67 |
| Jer. 49:8 | Dwell Deep, O Deban! | Vol.18 | pg. 685 | 1872 |
| Jer. 50:6 | A Sore Grievance | Vol.60 | pg. 469 | 10/1/14 |
| Jer. 51:50 | Sacred Memories | Vol.45 | pg. 541 | 11/12/99 |

LAMENTATIONS

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Lam. 1:12 | Is It Nothing To You? | Vol. 27 | pg. 533 | 9/11/81 |
| Lam. 1:12 | Pleading With the Indifferent | Vol. 59 | pg. 301 | 6/26/13 |
| Lam. 2:19 | Watch-Night Service | Vol. 2 | pg. 41 | 12/31/55 |
| Lam. 3:1-33 | Exposition | Vol. 42 | pg. 274 | 6/7/96 |
| Lam. 3:1-33 | Exposition | Vol. 57 | pg. 381 | 8/10/11 |
| Lam. 3:1-36 | Exposition | Vol. 54 | pg. 130 | 3/12/08 |
| Lam. 3:12-13 | Satan's Arrows and God's | Vol. 57 | pg. 373 | 8/10/11 |
| Lam. 3:21 | Memory — The Handmaid of Hope | Vol. 11 | pg. 565 | 10/15/65 |
| Lam. 3:22-23 | The Novelties of Divine Mercy | Vol. 55 | pg. 541 | 11/11/09 |
| Lam. 3:25 | "How Good To Those Who Seek" | Vol. 41 | pg. 505 | 10/27/95 |
| Lam. 3:28-29 | Solitude, Silence, Submission | Vol. 42 | pg. 265 | 6/7/96 |
| Lam. 3:27 | The Best Burden For Young Shoulders | Vol. 22 | pg. 241 | 1876 |
| Lam. 3:52-58 | Exposition | Vol. 54 | pg. 156 | 3/26/08 |
| Lam. 3:55-58 | Exposition | Vol. 42 | pg. 274 | 6/7/96 |
| Lam. 3:56 | Comfort For Those Whose Prayers Are Feeble | Vol. 54 | pg. 121 | 3/12/08 |
| Lam. 3:57 | A Wonder Explained By Greater Wonders | Vol. 30 | pg. 649 | 12/7/84 |
| Lam. 3:58 | God Pleading For Saints, and Saints Pleading For God | Vol. 10 | pg. 389 | 7/10/64 |
| Lam. 4:22 | A Message From God for Thee | Vol. 8 | pg. 637 | 11/16/62 |

EZEKIEL

| | | | | |
|-------------------------------|--|---------|---------|----------|
| Ezk. 1:15-19 | God's Providence | Vol. 54 | pg. 493 | 10/15/08 |
| Ezk. 3:17 | The Message From the Lord's Mouth | Vol. 24 | pg. 481 | 9/1/78 |
| Ezk. 9:8 | Spared! | Vol. 48 | pg. 565 | 11/30/02 |
| Ezk. 9:8 | The Greatest Wonder of Grace | Vol. 59 | pg. 505 | 10/23/13 |
| Ezk. 9:9 & 1 Jn. 1:7 | The Evil and Its Remedy | Vol. 4 | pg. 465 | 11/14/58 |
| Ezk. 11:5 | "Thus Saith The Lord" | Vol. 10 | pg. 533 | 9/25/64 |
| Ezk. 11:16 | "A Little Sanctuary" | Vol. 34 | pg. 1 | 1/8/88 |
| Ezk. 12:27 | Now — A Sermon For Young Men and Young Women | Vol. 20 | pg. 169 | 3/19/74 |
| Ezk. 13:10-12 | The Wall Daubed With Untempered Mortar | Vol. 14 | pg. 337 | 5/31/68 |
| Ezk. 14:20 | A Delusion Dispelled | Vol. 28 | pg. 169 | 1882 |
| Ezk. 15:1-2 | The Fruitless Vine | Vol. 3 | pg. 145 | 3/22/57 |
| Ezk. 16:1-2 | Vile Ingratitude! | Vol. 6 | pg. 293 | 5/27/60 |
| Ezk. 16:1-3 | Exposition | Vol. 41 | pg. 538 | 11/10/95 |
| Ezk. 16:5-16 | Exposition | Vol. 41 | pg. 538 | 11/10/95 |
| Ezk. 16:60-63 | Exposition | Vol. 41 | pg. 538 | 11/10/95 |
| Ezk. 16:5-6 | Ezekiel's Deserted Infant | Vol. 8 | pg. 493 | 9/7/62 |
| Ezk. 16:8 | "Two Immutable Things" | Vol. 41 | pg. 529 | 11/10/95 |
| Ezk. 16:9-14 | The Privileged Man | Vol. 14 | pg. 301 | 5/31/68 |
| Ezk. 16:54 | How Saints May Help the Devil | Vol. 5 | pg. 313 | 7/24/59 |
| Ezk. 16:62-63 | The Heart Full and the Mouth Closed | Vol. 22 | pg. 217 | 1876 |
| Ezk. 17:24 | Divine Destruction and Protection | Vol. 62 | pg. 13 | 1/13/16 |
| Ezk. 18:23,32 & Ezk. 18:11 | Pleading and Encouragement | Vol. 30 | pg. 445 | 8/17/84 |
| Ezk. 20:34-38 | The Bond of the Covenant | Vol. 31 | pg. 265 | 5/10/85 |
| Ezk. 20:41 | Sweet Savour | Vol. 12 | pg. 241 | 4/29/66 |
| Ezk. 24:19 | An Ancient Question Modernized | Vol. 38 | pg. 589 | 12/11/92 |
| Ezk. 27:26 | "Thy Rowers Have Brought Thee Into Great Waters" | Vol. 32 | pg. 661 | 12/12/86 |
| Ezk. 33:1-20 | Exposition | Vol. 38 | pg. 598 | 12/11/92 |
| Ezk. 33:11 | Turning From Death | Vol. 58 | pg. 493 | 10/17/12 |
| Ezk. 33:30-32 | Exposition | Vol. 38 | pg. 598 | 12/11/92 |
| Ezk. 33:22 | God's Hand At Eventide | Vol. 58 | pg. 83 | 2/22/12 |

| | | | | |
|---------------|---|---------|---------|----------|
| Ezk. 34:11-25 | Exposition | Vol. 51 | pg. 47 | 1/19/05 |
| Ezk. 34:11-27 | Exposition | Vol. 62 | pg. 262 | 6/1/16 |
| Ezk. 34:11-31 | Exposition | Vol. 44 | pg. 309 | 6/26/98 |
| Ezk. 34:15 | A Promise and a Providence | Vol. 62 | pg. 421 | 9/7/16 |
| Ezk. 34:16 | A Time of Finding For Lost Sheep | Vol. 54 | pg. 169 | 4/9/08 |
| Ezk. 34:26 | The Church of Christ | Vol. 1 | pg. 213 | 6/3/55 |
| Ezk. 34:27 | The Yoke Removed and the Lord Revealed | Vol. 25 | pg. 133 | 1879 |
| Ezk. 34:30-31 | A Call To the Lord's Own Flock | Vol. 30 | pg. 589 | 11/2/84 |
| Ezk. 35:10 | Jehovah-Shammah | Vol. 9 | pg. 589 | 10/25/63 |
| Ezk. 36:9 | A Vision of the Field | Vol. 52 | pg. 397 | 8/16/06 |
| Ezk. 36:11 | Hope For Your Future | Vol. 36 | pg. 41 | 1890 |
| Ezk. 36:16-38 | Exposition | Vol. 47 | pg. 431 | 9/8/01 |
| Ezk. 36:16-38 | Exposition | Vol. 59 | pg. 46 | 1/23/13 |
| Ezk. 36:21-38 | Exposition | Vol. 61 | pg. 395 | 8/19/15 |
| Ezk. 36:25 | Cleansing: A Covenant Blessing | Vol. 32 | pg. 517 | 1886 |
| Ezk. 36:25-32 | Exposition | Vol. 48 | pg. 35 | 1/19/02 |
| Ezk. 36:26 | The Stony Heart Removed | Vol. 8 | pg. 352 | 5/25/62 |
| Ezk. 36:26 | The Heart of Flesh | Vol. 19 | pg. 481 | 9/31/73 |
| Ezk. 36:26 | The New Heart | Vol. 4 | pg. 377 | 9/5/58 |
| Ezk. 36:26-27 | Covenant Blessings | Vol. 18 | pg. 217 | 4/14/72 |
| Ezk. 36:27 | The Covenant Promise of the Spirit | Vol. 37 | pg. 217 | 4/12/91 |
| Ezk. 36:27 | The Holy Spirit In the Covenant | Vol. 53 | pg. 337 | 7/11/07 |
| Ezk. 36:27 | A Gospel Promise | Vol. 62 | pg. 313 | 7/6/16 |
| Ezk. 36:27 | The Necessity of the Spirit's Work | Vol. 5 | pg. 209 | 5/8/59 |
| Ezk. 36:31 | Mistaken Notions About Repentance | Vol. 47 | pg. 421 | 9/8/01 |
| Ezk. 36:31 | What Self Deserves | Vol. 62 | pg. 157 | 4/6/16 |
| Ezk. 36:32 | Free Grace | Vol. 5 | pg. 65 | 1/9/59 |
| Ezk. 36:37 | Prayer — The Forerunner of Mercy | Vol. 3 | pg. 249 | 6/28/57 |
| Ezk. 36:37-38 | Enquire of the Lord | Vol. 22 | pg. 397 | 7/9/76 |
| Ezk. 37:1-28 | Exposition | Vol. 54 | pg. 381 | 8/6/08 |
| Ezk. 37:1-10 | The Restoration and Conversion of the Jews | Vol. 10 | pg. 425 | 6/16/64 |
| Ezk. 37:9 | "Come From the Four Winds, O Breath!" | Vol. 38 | pg. 109 | 3/6/92 |
| Ezk. 37:11-13 | Despair Denounced and Grace Glorified | Vol. 28 | pg. 469 | 8/27/82 |
| Ezk. 38:5 | The Warning Neglected | Vol. 4 | pg. 1 | 11/29/57 |
| Ezk. 40:4 | Taught That We May Teach | Vol. 27 | pg. 37 | 1881 |
| Ezk. 43:12 | Holiness, the Law of God's House | Vol. 27 | pg. 509 | 9/11/81 |
| Ezk. 47:5 | "Waters To Swim In" | Vol. 18 | pg. 313 | 4/25/72 |
| Ezk. 47:8 | The Modern Dead Sea, and the Living Waters | Vol. 31 | pg. 409 | 7/19/85 |
| Ezk. 48:35 | Jehovah-shammah: A Glorious Name For the New Year | Vol. 37 | pg. 1 | 1/4/91 |

DANIEL

| | | | | |
|--------------|-------------------------------------|---------|---------|----------|
| Dan. 1:1-21 | Exposition | Vol. 39 | pg. 34 | 1/15/93 |
| Dan. 1:8 | "Dare To Be A Daniel" | Vol. 39 | pg. 25 | 1/15/93 |
| Dan. 3:14 | Is It True? | Vol. 32 | pg. 625 | 11/21/86 |
| Dan. 3:16-18 | Three Names High On the Muster-roll | Vol. 37 | pg. 421 | 8/16/91 |
| Dan. 3:25 | Consolation In the Furnace | Vol. 11 | pg. 661 | 11/26/65 |
| Dan. 4:34-35 | The Unconquerable King | Vol. 16 | pg. 493 | 9/4/70 |
| Dan. 5:27 | The Scales of Judgment | Vol. 5 | pg. 257 | 6/12/59 |
| Dan. 6:1-24 | Exposition | Vol. 62 | pg. 514 | 10/26/16 |
| Dan. 6:10 | Daniel's Undaunted Courage | Vol. 14 | pg. 325 | 6/14/68 |
| Dan. 6:10 | Daniel Facing the Lions' Den | Vol. 20 | pg. 49 | 1874 |
| Dan. 6:20 | The Lion's Den | Vol. 49 | pg. 565 | 11/26/03 |
| Dan. 8:19 | A Safe Prospective | Vol. 15 | pg. 457 | 7/8/69 |
| Dan. 9:1-13 | Exposition | Vol. 48 | pg. 515 | 10/26/02 |
| Dan. 9:1-19 | Exposition | Vol. 3 | pg. 374 | 10/7/57 |

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|---------|
| Dan. 9:14 | Exposition | Vol. 49 | pg. 468 | 9/24/03 |
| Dan. 9:17 | Prayer For the Church | Vol. 48 | pg. 337 | 7/20/02 |
| Dan. 9:19 | Daniel: A Pattern For Pleaders | Vol. 61 | pg. 529 | 11/4/15 |
| Dan. 9:23 | The Dawn of Revival, Or Prayer Speedily Answered | Vol. 13 | pg. 73 | 2/10/67 |
| Dan. 9:24 | Shutting, Sealing, and Covering; or Messiah's Work | Vol. 28 | pg. 529 | 9/24/82 |
| Dan. 10:11 | Daniel's Band | Vol. 38 | pg. 229 | 5/15/92 |
| Dan. 10:18 | Our Lord's Humanity A Sweet Source of Comfort | Vol. 22 | pg. 289 | 1876 |
| Dan. 10:19 | The Man Greatly Beloved | Vol. 19 | pg. 1 | 1/5/73 |
| Dan. 11:1-11 | Exposition | Vol. 61 | pg. 528 | 11/4/15 |
| Dan. 11:32-33 | Knowledge Commended | Vol. 11 | pg. 25 | 1/15/65 |

HOSEA

| | | | | |
|--------------------------|--|---------|---------|----------|
| Hos. 1:7 | The Lord's Own Salvation | Vol. 34 | pg. 673 | 12/16/88 |
| Hos. 2:5-23 | Exposition | Vol. 39 | pg. 82 | 2/12/93 |
| Hos. 2:5-7 | The Backslider's Way Hedged Up | Vol. 10 | pg. 521 | 9/18/64 |
| Hos. 2:6-23 | Exposition | Vol. 44 | pg. 166 | 4/3/98 |
| Hos. 2:8-9 | The Unknown Giver and the Misused Gifts | Vol. 38 | pg. 181 | 4/17/92 |
| Hos. 2:14-15 | Exposition | Vol. 44 | pg. 227 | 5/8/98 |
| Hos. 2:14 | Strange Ways of Love | Vol. 44 | pg. 157 | 4/3/98 |
| Hos. 2:14 | Strange Dispensations and Matchless Consolations | Vol. 47 | pg. 553 | 11/24/01 |
| Hos. 2:15 | The Backslider's Door of Hope | Vol. 44 | pg. 217 | 5/8/98 |
| Hos. 2:15 | A Door of Hope | Vol. 47 | pg. 505 | 10/27/01 |
| Hos. 2:16-17 | The Climax of God's Love | Vol. 44 | pg. 241 | 5/22/98 |
| Hos. 2:16-17 | God's Work In Man | Vol. 55 | pg. 313 | 7/2/99 |
| Hos. 2:23 & Rom. 9:25 | God's People, or Not God's People | Vol. 39 | pg. 73 | 2/12/93 |
| Hos. 3:5 | The Silken Fetter | Vol. 15 | pg. 481 | 8/29/69 |
| Hos. 3:5 | A Fear To Be Desired | Vol. 48 | pg. 493 | 10/19/02 |
| Hos. 4:17 | Let Him Alone | Vol. 19 | pg. 613 | 1873 |
| Hos. 5:13 | A Caution For Sin-sick Souls | Vol. 49 | pg. 85 | 2/22/03 |
| Hos. 5:15 | The Present Crisis | Vol. 25 | pg. 385 | 7/13/79 |
| Hos. 6:1-2 | Our Miseries, Messengers of Mercy | Vol. 7 | pg. 417 | 7/14/61 |
| Hos. 6:1-2 | Reasons For Turning To The Lord | Vol. 24 | pg. 61 | 1/13/78 |
| Hos. 6:3 | The Blessings of Following On | Vol. 21 | pg. 421 | 1875 |
| Hos. 6:3-4 | Constancy and Inconstancy—A Contrast | Vol. 15 | pg. 49 | 1/24/69 |
| Hos. 6:4-5 | The Rough Hewer | Vol. 36 | pg. 145 | 3/9/90 |
| Hos. 7:7 | "What Shall the Harvest Be?" | Vol. 45 | pg. 349 | 7/23/99 |
| Hos. 7:9 | Grey Hairs | Vol. 14 | pg. 505 | 9/13/68 |
| Hos. 7:11 | A Silly Dove | Vol. 52 | pg. 193 | 4/19/06 |
| Hos. 8:1-2 | The Minister's Trumpet-blast and Church Member's Warning | Vol. 48 | pg. 145 | 3/30/02 |
| Hos. 8:12 | The Bible | Vol. 1 | pg. 109 | 3/18/55 |
| Hos. 10:1-6 | Exposition | Vol. 62 | pg. 419 | 8/31/16 |
| Hos. 10:2 | The Divided Heart | Vol. 62 | pg. 409 | 8/31/16 |
| Hos. 10:2 | A Divided Heart | Vol. 5 | pg. 409 | 9/25/59 |
| Hos. 10:12 | Sow To Yourselves | Vol. 21 | pg. 601 | 10/24/75 |
| Hos. 10:12 | The Duty of the Present Hour | Vol. 26 | pg. 577 | 1880 |
| Hos. 10:12 | An Urgent Necessity | Vol. 63 | pg. 145 | 3/29/17 |
| Hos. 11:1-12 | Exposition | Vol. 42 | pg. 23 | 1/12/96 |
| Hos. 11:1-12 | Exposition | Vol. 52 | pg. 453 | 9/13/06 |
| Hos. 11:1-12 | Exposition | Vol. 62 | pg. 371 | 8/3/16 |
| Hos. 11:3 | Heaven's Nurse Children | Vol. 17 | pg. 637 | 1871 |
| Hos. 11:4 | Bands of Love | Vol. 16 | pg. 313 | 6/5/70 |
| Hos. 11:4 | Silken Cords | Vol. 52 | pg. 445 | 9/13/06 |
| Hos. 11:9 | "God, and Not Man," — What Does It Mean? | Vol. 42 | pg. 13 | 1/12/96 |
| Hos. 12:10 | Everybody's Sermon | Vol. 4 | pg. 329 | 7/25/58 |

| | | | | |
|---------------------------|-------------------------------|---------|---------|----------|
| Hos. 13:1-9 | Exposition | Vol. 52 | pg. 95 | 2/15/06 |
| Hos. 13:1-14 | Exposition | Vol. 41 | pg. 382 | 8/11/95 |
| Hos. 13:5-8 | The Prosperous Man's Reminder | Vol. 24 | pg. 601 | 10/27/78 |
| Hos. 13:6 | Forgetting God | Vol. 52 | pg. 85 | 2/15/06 |
| Hos. 13:9 | Self-destroyed, Yet Saved | Vol. 41 | pg. 373 | 8/11/95 |
| Hos. 13:10 & Psa. 44:4 | Theocracy | Vol. 49 | pg. 433 | 9/10/03 |
| Hos. 13:14 | Consolation From Resurrection | Vol. 34 | pg. 541 | 9/30/88 |
| Hos. 14:1-9 | Exposition | Vol. 42 | pg. 345 | 7/19/96 |
| Hos. 14:1-9 | Exposition | Vol. 47 | pg. 418 | 9/1/01 |
| Hos. 14:1-9 | Exposition | Vol. 52 | pg. 167 | 3/29/06 |
| Hos. 14:1-9 | Exposition | Vol. 52 | pg. 455 | 9/13/06 |
| Hos. 14:1-9 | Exposition | Vol. 55 | pg. 607 | 12/16/09 |
| Hos. 14:1-3 | The Joyous Return | Vol. 37 | pg. 121 | 3/1/91 |
| Hos. 14:3 | The Orphan's Father | Vol. 28 | pg. 693 | 1882 |
| Hos. 14:4 | Grace Abounding | Vol. 9 | pg. 169 | 3/22/63 |
| Hos. 14:4 | Backsliding Healed | Vol. 16 | pg. 145 | 3/13/70 |
| Hos. 14:5-7 | Grace Reviving Israel | Vol. 6 | pg. 445 | 10/21/60 |
| Hos. 14:6 | The Beauty of the Olive Tree | Vol. 55 | pg. 610 | 12/16/09 |
| Hos. 14:8 | Where To Find Fruit | Vol. 10 | pg. 121 | 2/28/64 |
| Hos. 14:8 | Idols Abolished | Vol. 23 | pg. 97 | 1877 |
| Hos. 14:8 | The Great Change | Vol. 42 | pg. 337 | 7/19/96 |

JOEL

| | | | | |
|-----------|--------------------------------|---------|---------|----------|
| Joel 2:8 | Order Is Heaven's First Law | Vol. 52 | pg. 97 | 2/22/06 |
| Joel 2:25 | Truth Stranger Than Fiction | Vol. 35 | pg. 217 | 5/30/86 |
| Joel 2:26 | Wonders | Vol. 19 | pg. 109 | 2/23/73 |
| Joel 2:32 | One More Cast of the Great Net | Vol. 32 | pg. 637 | 11/28/86 |
| Joel 2:32 | A Free Grace Promise | Vol. 35 | pg. 229 | 5/5/89 |
| Joel 3:21 | Perfect Cleansing | Vol. 7 | pg. 249 | 4/7/61 |

AMOS

| | | | | |
|-------------|--|---------|---------|----------|
| Amos 2:13 | The Loaded Wagon | Vol. 8 | pg. 469 | 8/24/62 |
| Amos 3:3 | Preparation For Revival | Vol. 10 | pg. 609 | 10/30/64 |
| Amos 3:3 | Communion With Christ — A Baptizing Sermon | Vol. 46 | pg. 145 | 4/1/00 |
| Amos 3:3-6 | The Voice of the Cholera | Vol. 12 | pg. 445 | 8/12/66 |
| Amos 3:6 | The Royal Death Bed | Vol. 7 | pg. 625 | 12/22/61 |
| Amos 4:12 | Prepare To Meet Thy God | Vol. 16 | pg. 181 | 3/27/70 |
| Amos 4:12 | Prepared To Meet God | Vol. 51 | pg. 589 | 12/7/05 |
| Amos 5:4-27 | Exposition | Vol. 51 | pg. 598 | 12/7/05 |
| Amos 5:8 | Reasons For Seeking God | Vol. 53 | pg. 169 | 4/4/07 |
| Amos 6:1-8 | Exposition | Vol. 52 | pg. 118 | 3/1/06 |
| Amos 6:1 | Scourge For Slumbering Souls | Vol. 7 | pg. 553 | 11/3/61 |
| Amos 6:12 | A Question For Hard-hearted Hearers | Vol. 29 | pg. 229 | 1879 |
| Amos 6:12 | Ploughing A Rock | Vol. 52 | pg. 109 | 3/1/06 |
| Amos 7:1-6 | Exposition | Vol. 52 | pg. 120 | 3/1/06 |
| Amos 7:1 | The King's Mowings | Vol. 55 | pg. 49 | 1/28/08 |
| Amos 7:7-8 | The Plumline | Vol. 50 | pg. 481 | 10/6/04 |
| Amos 8:1-2 | A Basket of Summer Fruit | Vol. 6 | pg. 453 | 10/28/60 |
| Amos 9:9 | The Sieve | Vol. 14 | pg. 445 | 8/16/68 |
| Amos 9:13 | A Revival Sermon | Vol. 6 | pg. 81 | 1/26/60 |

OBADIAH

Obad. 17 Possessing Possessions Vol. 36 pg. 169 3/23/90

JONAH

Jon. 1:1-17 Exposition Vol. 51 pg. 106 2/23/05
 Jon. 1:3 Traveling Expenses On the Two Great Roads Vol. 11 pg. 181 4/2/65
 Jon. 1:3 Runaway Jonah, and the Convenient Ship Vol. 36 pg. 589 11/9/90
 Jon. 1:5 Sleepers Aroused Vol. 50 pg. 469 9/29/04
 Jon. 1:5-6 What Meanest Thou, O Sleeper? Vol. 8 pg. 505 9/14/62
 Jon. 1:12-13 Labour In Vain Vol. 10 pg. 241 5/1/64
 Jon. 2:1-10 Exposition Vol. 54 pg. 346 7/16/08
 Jon. 2:4 Jonah's Resolve, or "Look Again!" Vol. 30 pg. 661 12/14/84
 Jon. 2:7 A Plain Talk Upon An Encouraging Topic Vol. 54 pg. 337 7/16/08
 Jon. 2:7 The Fainting Soul Revived Vol. 62 pg. 205 5/4/16
 Jon. 2:9 Salvation of the Lord Vol. 3 pg. 193 5/10/57
 Jon. 3:1-10 Exposition Vol. 43 pg. 560 11/21/97
 Jon. 3:9 Who Can Tell? Vol. 5 pg. 401 9/18/59
 Jon. 4:1-2 Exposition Vol. 43 pg. 560 11/21/97
 Jon. 4:1-11 Exposition Vol. 43 pg. 82 2/14/97
 Jon. 4:6-8 Jonah's Object-lessons Vol. 43 pg. 73 2/14/97

MICAH

Mic. 1:12 Maroth; or, The Disappointed Vol. 56 pg. 73 2/10/10
 Mic. 2:7 The Holy Ghost The Need of the Age Vol. 33 pg. 145 3/13/87
 Mic. 2:7 "Is the Spirit of the Lord Straitened?" Vol. 37 pg. 433 8/23/91
 Mic. 2:10 A Clarion Call To Saints and Sinners Vol. 37 pg. 517 10/11/91
 Mic. 2:12-13 The Breaker and the Flock Vol. 33 pg. 169 3/20/87
 Mic. 4:1-13 Exposition Vol. 56 pg. 286 6/9/10
 Mic. 4:6 Mercy For the Meanest of the Flock Vol. 56 pg. 277 6/9/10
 Mic. 4:9 The Everlasting Counselor Vol. 53 pg. 553 11/14/07
 Mic. 5:2 The Incarnation and Birth of Christ Vol. 2 pg. 25 12/23/55
 Mic. 5:4 Christ Is Glorious — Let Us Make Him Known Vol. 10 pg. 157 3/20/64
 Mic. 5:4 Our Lord's Transcendent Greatness Vol. 59 pg. 565 11/27/13
 Mic. 6:1-16 Exposition Vol. 39 pg. 477 10/1/93
 Mic. 6:8 Walking Humbly With God Vol. 26 pg. 505 9/12/80
 Mic. 6:8 Micah's Message For Today Vol. 39 pg. 469 10/1/93
 Mic. 6:9 Fast-day Service Vol. 3 pg. 373 10/7/57
 Mic. 7:1-20 Exposition Vol. 57 pg. 106 3/2/11
 Mic. 7:1 Ripe Fruit Vol. 16 pg. 445 8/14/70
 Mic. 7:7 A Sweet Silver Bell Ringing In Each Believer's Heart Vol. 31 pg. 37 2/1/85
 Mic. 7:7 My Own Personal Holdfast Vol. 35 pg. 73 2/10/89
 Mic. 7:9 Woe and Weal Vol. 57 pg. 97 3/2/11
 Mic. 7:18 A Sweet Salaam Vol. 58 pg. 409 8/29/12
 Mic. 7:19 Sin Subdued Vol. 27 pg. 25 1881

NAHAM

Nah. 1:3 Mercy, Omnipotence, and Justice Vol. 3 pg. 241 6/21/57
 Nah. 1:3 What Are the Clouds? Vol. 1 pg. 277 8/19/55
 Nah. 1:7 The Stronghold Vol. 44 pg. 61 2/6/98
 Nah. 2:11-13 Exposition Vol. 39 pg. 406 8/20/93
 Nah. 3:1-19 Exposition Vol. 39 pg. 406 8/20/93
 Nah. 3:7 When Can We Find Comforters? Vol. 39 pg. 397 8/20/93

HABAKKUK

| | | | | |
|--|---|---------|---------|----------|
| Hab. 1:3 | The Sight of Iniquity | Vol.47 | pg. 37 | 1/27/01 |
| Hab. 2:1-11 | Exposition | Vol.45 | pg. 239 | 5/14/99 |
| Hab. 2:1-4 | Watching To See | Vol.45 | pg. 229 | 5/14/99 |
| Hab. 2:4 | A Luther Sermon At the Tabernacle | Vol.29 | pg. 613 | 11/11/83 |
| Hab. 2:4 | Pride the Destroyer | Vol.44 | pg. 481 | 10/9/98 |
| Hab. 2:4 & Rom. 1:17 & Gal. 3:11 & Heb. 10:38 | Faith: Life | Vol.48 | pg. 589 | 12/14/02 |
| Hab. 3:2 | A Message From God to His Church and People | Vol. 12 | pg. 685 | 12/16/66 |
| Hab. 3:2 | The Middle Passage | Vol.25 | pg. 277 | 5/18/79 |
| Hab. 3:2 | Spiritual Revival, The Want of the Church | Vol.44 | pg. 565 | 11/27/98 |

ZEPHANIAH

| | | | | |
|---------------|---------------------------------|--------|---------|----------|
| Zeph. 2:5 | A Warrant For Your Apprehension | Vol.37 | pg. 637 | 12/20/91 |
| Zeph. 3:2 | An Indictment With Four Counts | Vol.27 | pg. 53 | 1881 |
| Zeph. 3:16-18 | A Sermon For The Time Present | Vol.33 | pg. 601 | 10/30/87 |
| Zeph. 3:17 | The Saviour Resting In His Love | Vol.47 | pg. 145 | 3/31/01 |

HAGGAI

| | | | | |
|--------------|---|--------|---------|----------|
| Hag. 1:1-15 | Exposition | Vol.54 | pg. 8 | 1/2/08 |
| Hag. 1:1-15 | Exposition | Vol.61 | pg. 34 | 1/21/15 |
| Hag. 2:1-23 | Exposition | Vol.54 | pg. 8 | 1/2/08 |
| Hag. 2:4-5 | The Abiding of the Spirit the Glory of the Church | Vol.32 | pg. 481 | 9/5/86 |
| Hag. 2:7 | “The Desire of All Nations” | Vol.61 | pg. 25 | 1/21/15 |
| Hag. 2:13-14 | Defiled and Defiling | Vol.42 | pg. 589 | 12/13/96 |
| Hag. 2:19 | Thrice Happy Day! | Vol.54 | pg. 1 | 1/2/08 |

ZECHARIAH

| | | | | |
|--------------------------------|---|---------|---------|----------|
| Zech. 1:8-21 | Two Visions | Vol. 10 | pg. 621 | 11/6/64 |
| Zech. 2:1-5 | The Man With the Measuring Line | Vol. 10 | pg. 693 | 12/11/64 |
| Zech. 2:8 | The Lord’s Care of His People | Vol. 8 | pg. 301 | 4/27/62 |
| Zech. 3:1-5 | Zechariah’s Vision of Joshua the High Priest | Vol. 11 | pg. 49 | 1/22/65 |
| Zech. 3:2 | God’s Firebrands | Vol.57 | pg. 25 | 1/19/11 |
| Zech. 3:9-10 | Done In A Day, But Wondered At For Ever | Vol. 16 | pg. 541 | 9/25/70 |
| Zech. 4:1-3 & Zech. 4:12-14 | The Golden Lamp and Its Goodly Lessons | Vol.26 | pg. 649 | 1880 |
| Zech. 4:6 | Independence of Christianity | Vol. 3 | pg. 333 | 8/31/57 |
| Zech. 4:10 | Small Things Not To Be Despised | Vol.44 | pg. 601 | 12/18/98 |
| Zech. 4:10 | Encouragement For the Depressed | Vol.61 | pg. 577 | 12/9/15 |
| Zech. 6:13 | The King-priest | Vol.25 | pg. 529 | 9/21/79 |
| Zech. 6:13 | Christ Glorified as the Builder of His Church | Vol. 4 | pg. 209 | 5/2/58 |
| Zech. 7:1-14 | Exposition | Vol.61 | pg. 35 | 12/9/15 |
| Zech. 7:5-6 | God or Self-Which? | Vol. 8 | pg. 133 | 3/9/62 |
| Zech. 7:13 | Once A Curse But Now A Blessing | Vol. 9 | pg. 673 | 12/6/63 |
| Zech. 8:1-23 | Exposition | Vol.53 | pg. 333 | 7/4/07 |
| Zech. 8:6 | Marvelous! Marvelous! | Vol.29 | pg. 589 | 10/28/83 |
| Zech. 8:9-22 | Exposition | Vol.61 | pg. 586 | 12/9/15 |
| Zech. 8:13 | Believers A Blessing | Vol.53 | pg. 301 | 6/20/07 |
| Zech. 8:19 | Sad Fasts Changed To Glad Feasts | Vol.38 | pg. 133 | 3/20/92 |
| Zech. 8:21 | A Call To Worship | Vol.19 | pg. 217 | 4/20/73 |
| Zech. 9:1-17 | Exposition | Vol.50 | pg. 238 | 5/12/04 |

| | | | | |
|----------------|-----------------------------------|---------|---------|----------|
| Zech. 9:1-17 | Exposition | Vol. 57 | pg. 116 | 3/9/11 |
| Zech. 9:9 | The Lowly King | Vol. 31 | pg. 517 | 6/25/85 |
| Zech. 9:11 | The Blood of Christ's Covenant | Vol. 31 | pg. 109 | 3/9/11 |
| Zech. 9:11-12 | "Prisoners of Hope" | Vol. 49 | pg. 325 | 7/12/03 |
| Zech. 9:11-12 | Prisoners Delivered | Vol. 50 | pg. 229 | 5/12/04 |
| Zech. 9:11-12 | Freedom Through Christ's Blood | Vol. 54 | pg. 397 | 8/20/08 |
| Zech. 10:1-12 | Exposition | Vol. 31 | pg. 118 | 3/9/11 |
| Zech. 10:6 | Perfect Restoration | Vol. 44 | pg. 445 | 9/18/98 |
| Zech. 10:12 | Strength and Recovery | Vol. 30 | pg. 565 | 9/18/84 |
| Zech. 10:12 | Spiritual Convalescence | Vol. 31 | pg. 349 | 7/27/11 |
| Zech. 11:4 | Exposition | Vol. 62 | pg. 191 | 4/20/16 |
| Zech. 12:1-4 | Exposition | Vol. 62 | pg. 191 | 4/20/16 |
| Zech. 12:1-14 | Exposition | Vol. 50 | pg. 454 | 9/15/04 |
| Zech. 12:10 | The Pierced One Pierces the Heart | Vol. 10 | pg. 341 | 6/19/64 |
| Zech. 12:10 | Mourning For Christ | Vol. 23 | pg. 373 | 7/1/77 |
| Zech. 12:10 | The Bitterness of the Cross | Vol. 46 | pg. 325 | 7/15/00 |
| Zech. 12:10 | Mourning At the Cross | Vol. 50 | pg. 445 | 9/15/04 |
| Zech. 12:10-11 | How Hearts Are Softened | Vol. 33 | pg. 517 | 9/18/87 |
| Zech. 12:10-14 | Exposition | Vol. 41 | pg. 453 | 9/22/95 |
| Zech. 12:10-14 | Exposition | Vol. 46 | pg. 491 | 10/14/00 |
| Zech. 12:12-14 | Apart | Vol. 43 | pg. 145 | 3/28/97 |
| Zech. 13:1 | Exposition | Vol. 50 | pg. 456 | 9/15/04 |
| Zech. 13:1-6 | Exposition | Vol. 41 | pg. 453 | 9/22/95 |
| Zech. 13:1-9 | Exposition | Vol. 47 | pg. 143 | 3/24/01 |
| Zech. 13:1 | The Open Fountain | Vol. 17 | pg. 37 | 1/22/71 |
| Zech. 13:1-2 | Exposition | Vol. 46 | pg. 491 | 10/14/00 |
| Zech. 13:1-2 | The Double Cleansing | Vol. 41 | pg. 445 | 9/22/95 |
| Zech. 13:7 | The Storm and the Shower | Vol. 54 | pg. 181 | 4/16/08 |
| Zech. 14:6-7 | Light At Evening Time | Vol. 62 | pg. 181 | 4/20/16 |
| Zech. 14:7 | Light At Evening Time | Vol. 3 | pg. 421 | 10/25/57 |
| Zech. 14:20 | A Peal of Bells | Vol. 7 | pg. 409 | 7/7/61 |

MALACHI

| | | | | |
|-------------|--------------------------------------|---------|---------|----------|
| Mal. 1:1 | The Burden of the Word of the Lord | Vol. 35 | pg. 613 | 1889 |
| Mal. 1:2 | God's Love Shamefully Questioned | Vol. 43 | pg. 409 | 8/29/97 |
| Mal. 1:2 | Love's Lamentation | Vol. 48 | pg. 265 | 6/8/02 |
| Mal. 2:7 | Great Difference | Vol. 24 | pg. 289 | 5/19/78 |
| Mal. 3:1-18 | Exposition | Vol. 52 | pg. 33 | 1/11/06 |
| Mal. 3:1 | The Messenger of the Covenant | Vol. 8 | pg. 519 | 9/7/62 |
| Mal. 3:3 | The Sitting of the Refiner | Vol. 27 | pg. 1 | 1881 |
| Mal. 3:6 | The Immutability of God | Vol. 1 | pg. 1 | 1/7/55 |
| Mal. 3:8 | Robbers of God | Vol. 36 | pg. 409 | 7/27/90 |
| Mal. 3:10 | Proving God | Vol. 53 | pg. 193 | 4/18/07 |
| Mal. 3:17 | God's Jewels | Vol. 52 | pg. 25 | 1/11/06 |
| Mal. 4:1-6 | Exposition | Vol. 52 | pg. 36 | 1/11/06 |
| Mal. 4:2 | "The Sun of Righteousness" | Vol. 17 | pg. 625 | 11/12/71 |
| Mal. 4:2 | The Rising Sun | Vol. 25 | pg. 149 | 1879 |
| Mal. 4:2 | Bright Prospects For Young Believers | Vol. 55 | pg. 565 | 11/25/09 |

MATTHEW

| | | | | |
|------------|---------------|---------|---------|----------|
| Mt. 1:21 | Jesus | Vol. 24 | pg. 517 | 9/15/78 |
| Mt. 1:23 | "God With Us" | Vol. 21 | pg. 709 | 12/26/75 |
| Mt. 2:1-12 | Exposition | Vol. 39 | pg. 443 | 9/10/93 |
| Mt. 2:1-23 | Exposition | Vol. 42 | pg. 621 | 12/27/96 |

| | | | | |
|--|--|---------|---------|----------|
| Mt. 2:1-2, 9-10 | The Star and the Wise Men | Vol. 29 | pg. 1 | 12/24/82 |
| Mt. 2:1-12 | Exposition | Vol. 40 | pg. 611 | 12/23/94 |
| Mt. 2:1-4 | The Far-off, Near; The Near, Far-off | Vol. 39 | pg. 433 | 9/10/93 |
| Mt. 2:2 | The Sages, The Star, and the Saviour | Vol. 16 | pg. 709 | 12/25/70 |
| Mt. 2:14-15 & Hos. 11:1 | Out Of Egypt | Vol. 28 | pg. 457 | 1882 |
| Mt. 2:23 | The Nazarene and the Sect of the Nazarenes | Vol. 27 | pg. 665 | 6/9/81 |
| Mt. 3:1-12 | Exposition | Vol. 49 | pg. 82 | 2/15/03 |
| Mt. 3:1-17 | Exposition | Vol. 41 | pg. 190 | 4/21/95 |
| Mt. 3:1-17 | Exposition | Vol. 46 | pg. 586 | 12/9/00 |
| Mt. 3:13-17 | Exposition | Vol. 45 | pg. 130 | 3/12/99 |
| Mt. 3:7 | "Flee From the Wrath To Come" | Vol. 46 | pg. 577 | 12/9/00 |
| Mt. 3:16-17 | Lessons From Christ's Baptism | Vol. 58 | pg. 181 | 4/18/12 |
| Mt. 3:16-17 & Mt. 17:5 & Jn. 12:28 | Voices From the Excellent Glory | Vol. 16 | pg. 13 | 1/9/70 |
| Mt. 3:17 | A Great Sermon By the Greatest Preacher | Vol. 41 | pg. 181 | 4/21/95 |
| Mt. 4:1-11 | Exposition | Vol. 45 | pg. 130 | 3/12/99 |
| Mt. 4:1-11 | Exposition | Vol. 52 | pg. 358 | 7/19/06 |
| Mt. 4:1 | "Tempted of the Devil" | Vol. 52 | pg. 349 | 7/19/06 |
| Mt. 4:3 | Sonship Questioned | Vol. 45 | pg. 121 | 3/12/99 |
| Mt. 4:4 | Infallibility — Where To Find It and How To Use It | Vol. 20 | pg. 697 | 12/20/74 |
| Mt. 4:5-7 | Temptations on the Pinnacle | Vol. 12 | pg. 253 | 5/6/66 |
| Mt. 4:12-24 | Exposition | Vol. 45 | pg. 130 | 10/29/99 |
| Mt. 4:15-16 | Light For Those Who Sit In Darkness | Vol. 17 | pg. 505 | 9/10/71 |
| Mt. 4:17 & Lk. 24:47 | Christ's First and Last Subject | Vol. 6 | pg. 341 | 8/19/60 |
| Mt. 4:19 | How To Become Fishers of Men | Vol. 32 | pg. 337 | 1886 |
| Mt. 4:20 | "Straightway" | Vol. 45 | pg. 181 | 4/16/99 |
| Mt. 4:23-25 | Three Homilies From One Text | Vol. 6 | pg. 373 | 9/2/60 |
| Mt. 5:1-12 | Exposition | Vol. 43 | pg. 129 | 3/14/97 |
| Mt. 5:1-12 | Exposition | Vol. 53 | pg. 551 | 11/7/07 |
| Mt. 5:1-12 | The Beatitudes | Vol. 55 | pg. 361 | 7/29/09 |
| Mt. 5:1-30 | Exposition | Vol. 55 | pg. 368 | 7/29/09 |
| Mt. 5:3 | The First Beatitude | Vol. 55 | pg. 373 | 8/5/09 |
| Mt. 5:5 | The Third Beatitude | Vol. 53 | pg. 541 | 11/7/07 |
| Mt. 5:6 | The Hunger and Thirst Which Are Blessed | Vol. 35 | pg. 481 | 9/8/89 |
| Mt. 5:6 | The Fourth Beatitude | Vol. 55 | pg. 385 | 8/12/09 |
| Mt. 5:7 | The Fifth Beatitude | Vol. 55 | pg. 397 | 8/19/09 |
| Mt. 5:8 | The Sixth Beatitude | Vol. 55 | pg. 409 | 8/26/09 |
| Mt. 5:9 | The Peacemaker | Vol. 7 | pg. 593 | 12/8/61 |
| Mt. 5:13-26 | Exposition | Vol. 53 | pg. 598 | 12/5/07 |
| Mt. 5:14 | The Light of the World | Vol. 19 | pg. 241 | 4/27/73 |
| Mt. 5:15-16 | The Candle | Vol. 27 | pg. 217 | 4/24/81 |
| Mt. 5:17 | A Call To Holy Living | Vol. 18 | pg. 13 | 1/14/72 |
| Mt. 5:17-48 | Exposition | Vol. 53 | pg. 141 | 3/14/07 |
| Mt. 5:18 | The Perpetuity of the Law of God | Vol. 28 | pg. 277 | 5/21/82 |
| Mt. 5:31-42 | Exposition | Vol. 55 | pg. 382 | 8/5/09 |
| Mt. 5:41 | Exposition | Vol. 60 | pg. 359 | 7/23/14 |
| Mt. 5:43-48 | Exposition | Vol. 55 | pg. 395 | 8/12/09 |
| Mt. 6:1-4 | Exposition | Vol. 55 | pg. 395 | 8/12/09 |
| Mt. 6:1-8 | Exposition | Vol. 60 | pg. 360 | 7/23/14 |
| Mt. 6:1-24 | Exposition | Vol. 60 | pg. 57 | 1/29/14 |
| Mt. 6:5-34 | Exposition | Vol. 56 | pg. 106 | 2/24/10 |
| Mt. 6:9 | The Fatherhood of God | Vol. 4 | pg. 385 | 9/12/58 |
| Mt. 6:10 | A Heavenly Pattern For Our Earthly Life | Vol. 30 | pg. 241 | 4/30/84 |
| Mt. 6:13 | "Lead Us Not Into Temptation" | Vol. 9 | pg. 265 | 5/17/63 |

| | | | | |
|---|---|---------|---------|----------|
| Mt. 6:13 | “Lead Us Not Into Temptation” | Vol. 24 | pg. 133 | 1878 |
| Mt. 6:22-23 | A Single Eye and Simple Faith | Vol. 6 | pg. 389 | 9/16/60 |
| Mt. 6:31-33 | Thought Condemned, Yet Commanded | Vol. 52 | pg. 61 | 2/1/06 |
| Mt. 6:33 | First Things First — [Address to Bankers] | Vol. 31 | pg. 553 | 9/28/85 |
| Mt. 6:33 | Something Worth Seeking | Vol. 43 | pg. 205 | 5/2/97 |
| Mt. 6:45 | No Difference | Vol. 24 | pg. 277 | 5/12/78 |
| Mt. 7:1-8 | Exposition | Vol. 54 | pg. 287 | 6/11/08 |
| Mt. 7:1-29 | Exposition | Vol. 39 | pg. 286 | 6/11/93 |
| Mt. 7:1-29 | Exposition | Vol. 48 | pg. 586 | 12/7/02 |
| Mt. 7:1-29 | Exposition | Vol. 59 | pg. 502 | 10/16/13 |
| Mt. 7:7-29 | Exposition | Vol. 41 | pg. 514 | 10/27/95 |
| Mt. 7:12 | “Knock!” | Vol. 29 | pg. 301 | 5/27/83 |
| Mt. 7:13-23 | Exposition | Vol. 63 | pg. 191 | 4/19/17 |
| Mt. 7:21 | The Sieve | Vol. 20 | pg. 97 | 1874 |
| Mt. 7:13-29 | Exposition | Vol. 59 | pg. 537 | 11/6/13 |
| Mt. 7:21-23 | The Disowned | Vol. 48 | pg. 577 | 12/7/02 |
| Mt. 7:24-27 | The Two Builders and Their Houses | Vol. 16 | pg. 121 | 2/27/70 |
| Mt. 8:1-13 | Exposition | Vol. 62 | pg. 203 | 4/27/16 |
| Mt. 8:1-27 | Exposition | Vol. 41 | pg. 490 | 10/13/95 |
| Mt. 8:1-27 | Exposition | Vol. 50 | pg. 57 | 1/28/04 |
| Mt. 8:2-3 | And Why Not Me? | Vol. 36 | pg. 481 | 9/7/90 |
| Mt. 8:7 | The Chief Physician and the Centurion’s Servant | Vol. 24 | pg. 373 | 6/30/78 |
| Mt. 8:8 | Self Low, But Christ High | Vol. 36 | pg. 469 | 8/31/90 |
| Mt. 8:8-9 | “A Man Under Authority” | Vol. 41 | pg. 481 | 10/13/95 |
| Mt. 8:10 | A Blessed Wonder | Vol. 16 | pg. 337 | 6/12/70 |
| Mt. 8:11-12 | Heaven and Hell | Vol. 1 | pg. 301 | 9/4/55 |
| Mt. 8:14-15 | First Healing and Then Service | Vol. 31 | pg. 217 | 4/19/85 |
| Mt. 8:16-17 | Help For Your Sickness | Vol. 36 | pg. 33 | 1890 |
| Mt. 8:16-34 | Exposition | Vol. 40 | pg. 238 | 5/20/94 |
| Mt. 8:19-20 | Hopeful, Yet Doubtful | Vol. 40 | pg. 229 | 5/20/94 |
| Mt. 8:23-34 | Exposition | Vol. 39 | pg. 587 | 12/3/93 |
| Mt. 8:26 | Comfort For the Fearful | Vol. 49 | pg. 481 | 10/8/03 |
| Mt. 8:27 | With The Disciples on the Lake of Galilee | Vol. 28 | pg. 589 | 10/6/82 |
| Mt. 9:1 | Exposition | Vol. 40 | pg. 238 | 5/20/94 |
| Mt. 9:1-13 | Exposition | Vol. 39 | pg. 587 | 12/3/93 |
| Mt. 9:1-13 | Exposition | Vol. 42 | pg. 574 | 11/29/96 |
| Mt. 9:1-17 | Exposition | Vol. 58 | pg. 335 | 7/11/12 |
| Mt. 9:1-38 | Exposition | Vol. 42 | pg. 441 | 9/13/96 |
| Mt. 9:2 | The Secret of Happiness | Vol. 56 | pg. 589 | 9/18/10 |
| Mt. 9:2 & Mk. 2:3-5 & Lk. 5:18-20 | Good Cheer From Forgiven Sin | Vol. 52 | pg. 577 | 11/29/06 |
| Mt. 9:2-7 | The Physician Pardons His Palsied Patient | Vol. 39 | pg. 577 | 12/3/93 |
| Mt. 9:9 | “A Man Named Matthew” | Vol. 42 | pg. 565 | 11/29/96 |
| Mt. 9:10 | Christ Receiving Sinners | Vol. 50 | pg. 301 | 6/23/04 |
| Mt. 9:12 | The Great Physician and His Patients | Vol. 11 | pg. 133 | 3/5/65 |
| Mt. 9:18-38 | Exposition | Vol. 58 | pg. 238 | 5/16/12 |
| Mt. 9:20-22 & Lk. 8:42-48 | Good Cheer From Grace Received | Vol. 54 | pg. 1 | 12/27/06 |
| Mt. 9:21 | May I? | Vol. 30 | pg. 613 | 11/6/84 |
| Mt. 9:27-30 | Our Lord’s Question To The Blind Man | Vol. 23 | pg. 289 | 5/13/77 |
| Mt. 9:27-30 | The Plain Man’s Pathway To Peace | Vol. 26 | pg. 541 | 1880 |
| Mt. 9:27-35 | Exposition | Vol. 55 | pg. 177 | 4/8/09 |
| Mt. 9:27-38 | Exposition | Vol. 60 | pg. 624 | 12/24/14 |
| Mt. 9:28 | Faith In Christ’s Ability | Vol. 58 | pg. 229 | 5/16/12 |
| Mt. 9:32-33 | An Unparalleled Cure | Vol. 42 | pg. 433 | 9/13/96 |
| Mt. 9:35-38 | Exposition | Vol. 53 | pg. 465 | 9/19/07 |

| | | | | |
|------------------|---|---------|---------|----------|
| Mt. 9:36 | The Compassion of Jesus | Vol. 60 | pg. 613 | 12/24/14 |
| Mt. 9:36-38 | Exposition | Vol. 54 | pg. 440 | 9/10/08 |
| Mt. 9:37-38;10:1 | Harvest Men Wanted | Vol. 19 | pg. 457 | 8/17/73 |
| Mt. 10:1 | Exposition | Vol. 53 | pg. 465 | 9/19/07 |
| Mt. 10:1-27 | Exposition | Vol. 46 | pg. 226 | 5/13/00 |
| Mt. 10:1-42 | Exposition | Vol. 54 | pg. 440 | 9/10/08 |
| Mt. 10:16 | Sheep Among Wolves | Vol. 23 | pg. 469 | 8/19/77 |
| Mt. 10:16-23 | Exposition | Vol. 60 | pg. 228 | 5/7/14 |
| Mt. 10:16-33 | Exposition | Vol. 59 | pg. 586 | 12/4/13 |
| Mt. 10:22 | Enduring To The End | Vol. 10 | pg. 85 | 2/14/64 |
| Mt. 10:24-42 | Exposition | Vol. 56 | pg. 501 | 10/13/10 |
| Mt. 10:27 | Learning In Private What To Teach In Public | Vol. 46 | pg. 217 | 5/13/00 |
| Mt. 10:30 | The Hairs of Your Head Numbered | Vol. 34 | pg. 49 | 1888 |
| Mt. 10:30 | Providence | Vol. 4 | pg. 177 | 4/11/58 |
| Mt. 10:32-33 | Confession of Christ | Vol. 60 | pg. 217 | 5/7/14 |
| Mt. 10:37-40 | Exposition | Vol. 60 | pg. 228 | 2/26/14 |
| Mt. 11:1-6 | Exposition | Vol. 60 | pg. 36 | 1/15/14 |
| Mt. 11:1-30 | Exposition | Vol. 47 | pg. 11 | 1/6/01 |
| Mt. 11:1-30 | Exposition | Vol. 63 | pg. 130 | 3/15/17 |
| Mt. 11:5 | Preaching For the Poor | Vol. 3 | pg. 57 | 1/25/57 |
| Mt. 11:6 | Offended With Christ | Vol. 24 | pg. 85 | 1878 |
| Mt. 11:12 | Holy Violence | Vol. 5 | pg. 217 | 5/15/58 |
| Mt. 11:19 | The Sinner's Friend | Vol. 10 | pg. 109 | 1864 |
| Mt. 11:20-30 | Exposition | Vol. 46 | pg. 586 | 12/9/00 |
| Mt. 11:25-26 | "Even So, Father!" | Vol. 7 | pg. 369 | 5/26/61 |
| Mt. 11:25-30 | Exposition | Vol. 48 | pg. 263 | 6/1/02 |
| Mt. 11:27-28 | Powerful Persuasives | Vol. 62 | pg. 109 | 3/9/16 |
| Mt. 11:28 | Christ's Word With You | Vol. 28 | pg. 649 | 6/12/81 |
| Mt. 11:28 | The Christ-given Rest | Vol. 39 | pg. 109 | 3/5/93 |
| Mt. 11:28 | The Old Gospel For the New Century | Vol. 47 | pg. 1 | 1/6/01 |
| Mt. 11:28 | Jesus Calling | Vol. 48 | pg. 253 | 6/1/02 |
| Mt. 11:28 | A World-wide Welcome | Vol. 59 | pg. 205 | 5/1/13 |
| Mt. 11:28-30 | Rest, Rest | Vol. 17 | pg. 13 | 1/8/71 |
| Mt. 11:28-30 | Rest For the Labouring | Vol. 22 | pg. 613 | 10/22/76 |
| Mt. 11:28-30 | The Meek and Lowly One | Vol. 5 | pg. 321 | 7/31/59 |
| Mt. 11:29 | The Heart of Jesus | Vol. 19 | pg. 193 | 4/6/73 |
| Mt. 11:30 | Christ's Yoke and Burden | Vol. 49 | pg. 241 | 5/24/03 |
| Mt. 12:3-7 | How To Read The Bible | Vol. 25 | pg. 625 | 1879 |
| Mt. 12:10, 13 | The Withered Hand | Vol. 25 | pg. 409 | 5/22/79 |
| Mt. 12:19-21 | The Gentleness of Jesus | Vol. 19 | pg. 697 | 12/14/73 |
| Mt. 12:20 | Sweet Comfort For Feeble Saints | Vol. 1 | pg. 41 | 2/4/55 |
| Mt. 12:38-42 | Exposition | Vol. 55 | pg. 503 | 10/14/09 |
| Mt. 12:38-45 | Exposition | Vol. 48 | pg. 238 | 5/18/02 |
| Mt. 12:42 | The Queen of the South, or the Earnest Enquirer | Vol. 9 | pg. 553 | 10/4/63 |
| Mt. 12:42 | The Queen of Sheba, A Sign | Vol. 48 | pg. 205 | 5/4/02 |
| Mt. 12:42 | "A Greater Than Solomon" | Vol. 55 | pg. 493 | 10/14/09 |
| Mt. 12:42 | The Queen of Sheba | Vol. 59 | pg. 193 | 4/24/13 |
| Mt. 13:1-23 | Exposition | Vol. 58 | pg. 357 | 6/6/12 |
| Mt. 13:1-23 | Exposition | Vol. 60 | pg. 80 | 2/12/14 |
| Mt. 13:3 | The Sower | Vol. 49 | pg. 361 | 8/2/03 |
| Mt. 13:3-8 | Exposition | Vol. 53 | pg. 465 | 9/19/07 |
| Mt. 13:5-6 | The Seed Upon A Rock | Vol. 49 | pg. 385 | 8/13/03 |
| Mt. 13:7, 22 | Sown Among Thorns | Vol. 34 | pg. 469 | 8/19/88 |
| Mt. 13:10-17 | Exposition | Vol. 39 | pg. 190 | 4/16/93 |
| Mt. 13:12 | More and More, or Less and Less | Vol. 25 | pg. 445 | 8/10/79 |
| Mt. 13:18-23 | Exposition | Vol. 53 | pg. 465 | 9/19/07 |
| Mt. 13:24-50 | Exposition | Vol. 61 | pg. 119 | 3/11/15 |

| | | | | |
|-------------------------|---|---------|---------|----------|
| Mt. 13:24-58 | Exposition | Vol. 58 | pg. 357 | 7/25/12 |
| Mt. 13:30 | Wheat In the Barn | Vol. 60 | pg. 73 | 2/12/14 |
| Mt. 13:51 | A Clear Understanding | Vol. 58 | pg. 265 | 6/6/12 |
| Mt. 13:45-46 | A Great Bargain | Vol. 24 | pg. 397 | 1878 |
| Mt. 13:55-56 | The Carpenter's Son and His Relations | Vol. 58 | pg. 349 | 7/25/12 |
| Mt. 14:13-36 | Exposition | Vol. 53 | pg. 322 | 6/27/07 |
| Mt. 14:14-38 | Exposition | Vol. 51 | pg. 119 | 3/2/05 |
| Mt. 14:16 | One of the Master's Choice Sayings | Vol. 53 | pg. 313 | 6/27/07 |
| Mt. 14:17-18 | Compassion for the Multitude | Vol. 8 | pg. 313 | 6/1/62 |
| Mt. 14:26 | Jesus No Phantom | Vol. 16 | pg. 589 | 10/2/70 |
| Mt. 14:30 | Peter's Shortest Prayer | Vol. 56 | pg. 97 | 2/24/10 |
| Mt. 14:31 | Mr. Fearing Comforted | Vol. 5 | pg. 169 | 4/3/59 |
| Mt. 14:31 | The History of Little Faith | Vol. 31 | pg. 497 | 8/23/85 |
| Mt. 14:31 | Reasons For Doubting Christ | Vol. 51 | pg. 109 | 3/2/05 |
| Mt. 14:31 & Mt. 5:28 | Little Faith and Great Faith | Vol. 36 | pg. 613 | 11/16/90 |
| Mt. 14:31 | Unreasonable Reasons | Vol. 57 | pg. 193 | 4/27/11 |
| Mt. 15:1-12 | Exposition | Vol. 59 | pg. 540 | 11/6/13 |
| Mt. 15:1-13 | Exposition | Vol. 42 | pg. 501 | 10/18/96 |
| Mt. 15:1-20 | Exposition | Vol. 43 | pg. 575 | 11/28/97 |
| Mt. 15:1-39 | Exposition | Vol. 57 | pg. 451 | 9/21/11 |
| Mt. 15:13-28 | Exposition | Vol. 60 | pg. 83 | 2/12/14 |
| Mt. 15:18-31 | Exposition | Vol. 42 | pg. 501 | 9/6/96 |
| Mt. 15:29-39 | Exposition | Vol. 43 | pg. 575 | 11/28/97 |
| Mt. 15:19 | The Heart — A Den of Evil | Vol. 13 | pg. 49 | 1/27/67 |
| Mt. 15:21-28 | Faith Victorious | Vol. 42 | pg. 421 | 9/6/96 |
| Mt. 15:23 | Prayer — Its Discouragements and Encouragements | Vol. 49 | pg. 349 | 7/26/03 |
| Mt. 15:23 | The Saviour's Silence | Vol. 57 | pg. 445 | 9/21/11 |
| Mt. 15:24-25 | How To Meet The Doctrine of Election | Vol. 30 | pg. 469 | 7/31/84 |
| Mt. 15:25 | A Prayer For Everybody | Vol. 44 | pg. 553 | 11/20/98 |
| Mt. 15:26-27 | The Little Dogs | Vol. 22 | pg. 457 | 8/6/76 |
| Mk. 7:27-28 | | | | |
| Mt. 15:27 | Children's Bread Given To Dogs | Vol. 12 | pg. 565 | 10/14/66 |
| Mt. 15:27 | Pleading, Not Contradiction | Vol. 36 | pg. 85 | 2/9/90 |
| Mt. 15:28 | The Perseverance of Faith | Vol. 38 | pg. 193 | 4/24/92 |
| Mt. 16:13-17 | Jesus Known By Personal Revelation | Vol. 34 | pg. 481 | 8/26/88 |
| Mt. 16:21-23 | Exposition | Vol. 47 | pg. 308 | 6/30/01 |
| Mt. 16:24-28 | Exposition | Vol. 47 | pg. 262 | 6/2/01 |
| Mt. 16:28 | An Awful Premonition | Vol. 10 | pg. 573 | 1864 |
| Mt. 17:1-5 | Exposition | Vol. 46 | pg. 35 | 1/21/00 |
| Mt. 17:1-13 | Exposition | Vol. 47 | pg. 262 | 6/2/01 |
| Mt. 17:2 | Christ's Transfigured Face | Vol. 47 | pg. 253 | 6/2/01 |
| Mt. 17:5 | Attention! | Vol. 61 | pg. 1 | 1/7/15 |
| Mt. 17:8 | Jesus Only | Vol. 16 | pg. 193 | 4/3/70 |
| Mt. 17:17 | Hope in Hopeless Cases | Vol. 14 | pg. 397 | 7/19/68 |
| Mt. 17:19-21 | A Desperate Case — How To Meet It | Vol. 10 | pg. 25 | 1/10/64 |
| Mt. 17:19-21 | The Secret of Failure | Vol. 42 | pg. 97 | 3/1/96 |
| Mk. 9:28-29 | | | | |
| Mt. 18:12-13 | One Lost Sheep | Vol. 35 | pg. 241 | 4/28/89 |
| Mt. 18:20 | The Lord With Two or Three | Vol. 30 | pg. 37 | 10/4/83 |
| Mt. 19:13-30 | Exposition | Vol. 43 | pg. 238 | 5/16/97 |
| Mt. 19:19 | Love Thy Neighbour | Vol. 3 | pg. 301 | 8/9/57 |
| Mt. 19:30; 20:16 | The First Last, and the Last First | Vol. 37 | pg. 469 | 9/13/91 |
| Mt. 20:1-7 | Exposition | Vol. 44 | pg. 623 | 12/25/98 |
| Mt. 20:1-16 | Exposition | Vol. 43 | pg. 238 | 5/16/97 |
| Mt. 20:1-28 | Exposition | Vol. 62 | pg. 478 | 10/5/16 |
| Mt. 20:3-4 | From Twenty-five to Thirty-five | Vol. 43 | pg. 229 | 5/16/97 |

| | | | | |
|------------------------------|---|---------|---------|----------|
| Mt. 20:1, 3-6 | Early and Late, or Horæ Gratiaë | Vol. 11 | pg. 685 | 12/10/65 |
| Mt. 20:6 | Good News For the Aged | Vol. 44 | pg. 613 | 12/25/98 |
| Mt. 20:15 | Divine Sovereignty | Vol. 2 | pg. 185 | 5/4/56 |
| Mt. 20:17-19 | The Private Thoughts and Words of Jesus | Vol. 37 | pg. 361 | 7/12/91 |
| Mt. 20:28 | Christ's Great Mission | Vol. 62 | pg. 469 | 10/5/16 |
| Mt. 20:28 | Particular Redemption | Vol. 4 | pg. 129 | 2/28/58 |
| Mt. 21:1-5 | Exposition | Vol. 51 | pg. 287 | 6/8/05 |
| Mt. 21:5 | The Triumphal Entry Into Jerusalem | Vol. 7 | pg. 457 | 8/18/61 |
| Mt. 21:5 | Another Royal Procession | Vol. 18 | pg. 121 | 3/3/72 |
| Mt. 21:9 | Hosanna! | Vol. 37 | pg. 169 | 3/22/91 |
| Mt. 21:9 | The Blessed Christ | Vol. 60 | pg. 481 | 10/18/14 |
| Mt. 21:10 | A Stir, and What Came Of It | Vol. 51 | pg. 277 | 6/8/05 |
| Mt. 21:10 | An Exciting Enquiry | Vol. 54 | pg. 145 | 3/26/08 |
| Mt. 21:10 | "Who Is This?" | Vol. 60 | pg. 85 | 2/19/14 |
| Mt. 21:15-16 | The Children and Their Hosannas | Vol. 30 | pg. 325 | 5/7/84 |
| Mt. 21:17-20 | The Withered Fig Tree | Vol. 35 | pg. 529 | 9/29/89 |
| Mt. 21:23-46 | Exposition | Vol. 47 | pg. 586 | 12/8/01 |
| Mt. 21:28 | Work For Jesus | Vol. 23 | pg. 85 | 1877 |
| Mt. 21:28-30 | Saying <i>Versus</i> Doing | Vol. 47 | pg. 469 | 10/6/01 |
| Mt. 22:1-14 | Exposition | Vol. 48 | pg. 598 | 12/14/02 |
| Mt. 22:2-4 | The Parable of the Wedding Feast | Vol. 17 | pg. 85 | 2/12/71 |
| Mt. 22:5 | Making Light of Christ | Vol. 2 | pg. 353 | 8/17/56 |
| Mt. 22:8-10 | Guests For the Royal Feast | Vol. 58 | pg. 541 | 11/14/12 |
| Mt. 22:10 | "The Wedding Was Furnished With Guests" | Vol. 34 | pg. 253 | 5/6/88 |
| Mt. 22:11-13 | What Is The Wedding Garment? | Vol. 34 | pg. 277 | 5/20/88 |
| Mt. 22:11-14 | The Wedding Garment | Vol. 17 | pg. 97 | 2/19/71 |
| Mt. 22:28-32 | A Sermon To Open Neglecters and Nominal Followers Of Religion | Vol. 13 | pg. 169 | 3/24/67 |
| Mt. 22:30 | The Angelic Life | Vol. 14 | pg. 649 | 11/22/68 |
| Mt. 22:42 | Questions of the Day and the Question of the Day | Vol. 19 | pg. 49 | 1/26/73 |
| Mt. 23:19 | The Altar | Vol. 14 | pg. 517 | 9/20/68 |
| Mt. 23:29-39 | Exposition | Vol. 40 | pg. 478 | 10/7/94 |
| Mt. 23:37 | "I would; But Ye Would Not" | Vol. 40 | pg. 469 | 10/7/94 |
| Mt. 23:37 | What Jesus Would Do | Vol. 45 | pg. 325 | 7/9/99 |
| Mt. 24:1-21 | Exposition | Vol. 40 | pg. 478 | 10/7/94 |
| Mt. 24:1-28 | Exposition | Vol. 58 | pg. 223 | 5/9/12 |
| Mt. 24:12 | A Prophetic Warning | Vol. 58 | pg. 217 | 5/9/12 |
| Mt. 24:24 | Effects of Sound Doctrine | Vol. 6 | pg. 301 | 4/22/60 |
| Mt. 24:39 | Noah's Flood | Vol. 14 | pg. 421 | 3/5/68 |
| Mt. 24:42-51 | Exposition | Vol. 45 | pg. 478 | 10/1/99 |
| Mt. 25:1-13 | Exposition | Vol. 45 | pg. 191 | 4/16/99 |
| Mt. 25:1-13 | Exposition | Vol. 45 | pg. 478 | 10/1/99 |
| Mt. 25:10 | Number 2,500; Or, Entrance and Exclusion | Vol. 43 | pg. 25 | 1/17/97 |
| Mt. 25:13 | The Weeding of the Garden | Vol. 7 | pg. 601 | 12/8/61 |
| Mt. 25:14-30 | Exposition | Vol. 45 | pg. 490 | 10/8/99 |
| Mt. 25:22-23 | The Two Talents | Vol. 4 | pg. 81 | 1/31/58 |
| Mt. 25:28 | Carte-Blanche | Vol. 42 | pg. 1 | 1/5/96 |
| Mt. 25:30, 21 & Lk. 17:10 | Unprofitable Servants | Vol. 26 | pg. 325 | 6/6/80 |
| Mt. 25:31-36 | The Reward of the Righteous | Vol. 12 | pg. 37 | 1/21/66 |
| Mt. 25:32 | The Final Separation | Vol. 21 | pg. 277 | 1875 |
| Mt. 26:2 | "After Two Days Is <i>The</i> Passover" | Vol. 43 | pg. 289 | 6/20/97 |
| Mt. 26:6-30 | Exposition | Vol. 40 | pg. 104 | 3/4/94 |
| Mt. 26:10 | Something Done For Jesus | Vol. 36 | pg. 49 | 1/26/90 |
| Mt. 26:13 | A Woman's Memorial | Vol. 6 | pg. 1 | 11/27/59 |
| Mt. 26:14-35 | Exposition | Vol. 58 | pg. 153 | 3/28/12 |
| Mt. 26:14-45 | Exposition | Vol. 53 | pg. 166 | 3/28/07 |
| Mt. 26:17-20 | Exposition | Vol. 44 | pg. 538 | 11/6/98 |

| | | | | |
|---------------------------------|--|---------|---------|----------|
| Mt. 26:17-30 | Exposition | Vol. 46 | pg. 526 | 11/4/00 |
| Mt. 26:17-30 | Exposition | Vol. 50 | pg. 22 | 1/7/04 |
| Mt. 26:20-30 | Exposition | Vol. 52 | pg. 179 | 4/5/06 |
| Mt. 26:26 | “Take, Eat” | Vol. 40 | pg. 97 | 3/4/94 |
| Mt. 26:26-30 | Exposition | Vol. 38 | pg. 382 | 1892 |
| Mt. 26:28 | The Blood Shed For Many | Vol. 33 | pg. 373 | 7/3/87 |
| Mt. 26:29 | The New Wine of the Kingdom | Vol. 62 | pg. 397 | 8/24/16 |
| Mt. 26:30 | The Memorable Hymn | Vol. 52 | pg. 169 | 4/5/06 |
| Mt. 26:31-35 | Exposition | Vol. 48 | pg. 142 | 3/23/02 |
| Mt. 26:36 | The Garden of the Soul | Vol. 12 | pg. 301 | 1866 |
| Mt. 26:36-46 | Exposition | Vol. 40 | pg. 418 | 9/2/94 |
| Mt. 26:39 | Christian Resignation | Vol. 47 | pg. 85 | 2/24/01 |
| Mt. 26:53-54 | Jesus Declining the Legions | Vol. 33 | pg. 181 | 3/27/87 |
| Mt. 26:57-58 | Exposition | Vol. 48 | pg. 142 | 3/23/02 |
| Mt. 26:57-68 | Exposition | Vol. 42 | pg. 333 | 7/12/96 |
| Mt. 26:59-68 | Exposition | Vol. 59 | pg. 610 | 2/18/13 |
| Mt. 26:64 | Nevertheless. Hereafter | Vol. 23 | pg. 397 | 1877 |
| Mt. 26:67 & Rev. 22:11 | An Awful Contrast | Vol. 42 | pg. 325 | 7/12/96 |
| Mt. 26:69-75 | Exposition | Vol. 48 | pg. 142 | 3/23/02 |
| Mt. 27:5-7 | The Voice From the Cloud, and the Voice of the Beloved | Vol. 29 | pg. 349 | 6/24/83 |
| Mt. 27:15-54 | Exposition | Vol. 49 | pg. 154 | 3/29/03 |
| Mt. 27:19 | The Dream of Pilate’s Wife | Vol. 28 | pg. 121 | 2/26/82 |
| Mt. 27:22-23 | All Are Guilty | Vol. 61 | pg. 205 | 5/6/15 |
| Mt. 27:22-50 | Exposition | Vol. 39 | pg. 537 | 11/5/93 |
| Mt. 27:24-25 | Pilate and Ourselves Guilty of the Saviour’s Death | Vol. 28 | pg. 133 | 3/5/82 |
| Mt. 27:27-54 | Exposition | Vol. 48 | pg. 526 | 11/2/02 |
| Mt. 27:27 | The Whole Band Against Christ | Vol. 39 | pg. 529 | 11/5/93 |
| Mt. 27:27-54 | Exposition | Vol. 50 | pg. 286 | 2/9/04 |
| Mt. 27:28-30 | Mocking the King | Vol. 55 | pg. 157 | 4/1/09 |
| Mt. 27:29 | The Crown of Thorns | Vol. 20 | pg. 217 | 4/13/74 |
| Mt. 27:29 | Mocked of the Soldiers | Vol. 49 | pg. 145 | 3/29/03 |
| Mt. 27:30 | A Gross Indignity | Vol. 60 | pg. 205 | 4/30/14 |
| Mt. 27:32-49 | Exposition | Vol. 63 | pg. 166 | 4/5/17 |
| Mt. 27:33-44 | Exposition | Vol. 51 | pg. 324 | 6/29/05 |
| Mt. 27:43 | “Let Him Deliver Him Now” | Vol. 34 | pg. 337 | 6/17/88 |
| Mt. 27:45 | The Three Hours Darkness | Vol. 32 | pg. 217 | 4/18/86 |
| Mt. 27:45 | The Three Hours’ Darkness | Vol. 61 | pg. 373 | 8/12/15 |
| Mt. 27:46 | “Lama Sabachthani” | Vol. 36 | pg. 133 | 3/2/90 |
| Mt. 27:46 | The Saddest Cry From the Cross | Vol. 48 | pg. 517 | 11/2/02 |
| Mt. 27:46 | Our Lord’s Solemn Enquiry | Vol. 62 | pg. 169 | 4/13/16 |
| Mt. 27:50-51 & Heb. 10:19-20 | The Rent Veil | Vol. 34 | pg. 169 | 3/25/88 |
| Mt. 27:50-53 | The Miracles of Our Lord’s Death | Vol. 34 | pg. 697 | 12/30/88 |
| Mt. 27:50-54 | Exposition | Vol. 39 | pg. 274 | 6/4/93 |
| Mt. 27:50-66 | Exposition | Vol. 63 | pg. 173 | 4/12/17 |
| Mt. 27:61 | Over Against The Sepulchre | Vol. 24 | pg. 157 | 3/24/78 |
| Mt. 28:1-15 | Exposition | Vol. 39 | pg. 418 | 8/27/93 |
| Mt. 28:1-20 | Exposition | Vol. 43 | pg. 249 | 5/23/97 |
| Mt. 28:1-22 | Exposition | Vol. 60 | pg. 345 | 7/16/14 |
| Mt. 28:2 | The Stone Rolled Away | Vol. 15 | pg. 181 | 3/28/69 |
| Mt. 28:4-6 | For Or Against? | Vol. 48 | pg. 157 | 4/6/02 |
| Mt. 28:6 | The Tomb of Jesus | Vol. 1 | pg. 133 | 4/8/55 |
| Mt. 28:6 | A Visit To The Tomb | Vol. 18 | pg. 637 | 1872 |
| Mt. 28:8-10 | Obedience Rewarded | Vol. 39 | pg. 409 | 8/27/93 |
| Mt. 28:9-10 | “All Hail” | Vol. 45 | pg. 301 | 6/25/99 |
| Mt. 28:16-20 | Exposition | Vol. 39 | pg. 502 | 10/15/93 |

| | | | | |
|--------------|------------------------------------|---------|---------|----------|
| Mt. 28:16-20 | Exposition | Vol. 63 | pg. 203 | 4/26/17 |
| Mt. 28:18 | Our Omnipotent Leader | Vol. 42 | pg. 229 | 5/17/96 |
| Mt. 28:18-19 | The Missionaries Charge and Charta | Vol. 7 | pg. 281 | 4/21/61 |
| Mt. 28:18-20 | The Power of the Risen Saviour | Vol. 20 | pg. 601 | 10/25/74 |

MARK

| | | | | |
|--|--|---------|---------|----------|
| Mk. 1:14-35 | Exposition | Vol. 52 | pg. 155 | 3/22/06 |
| Mk. 1:15 | Faith and Repentance Inseparable | Vol. 8 | pg. 397 | 7/13/62 |
| Mk. 1:21-28 | An Astounding Miracle | Vol. 30 | pg. 85 | 2/10/84 |
| Mk. 1:29-33 | The Best House-visitation | Vol. 21 | pg. 301 | 5/23/75 |
| Mk. 1:31 | A Lift For the Prostrate | Vol. 52 | pg. 145 | 3/22/06 |
| Mk. 1:35-39 | Before Day-break With Christ | Vol. 30 | pg. 133 | 2/14/84 |
| Mk. 1:40-42 | The Lord and the Leper | Vol. 34 | pg. 85 | 2/12/88 |
| Mk. 1:45 | Gathering to the Centre | Vol. 22 | pg. 325 | 6/4/76 |
| Mk. 2:1-28 | Exposition | Vol. 52 | pg. 586 | 11/29/06 |
| Mk. 1:28-45 | Exposition | Vol. 56 | pg. 609 | 12/15/10 |
| Mk. 2:1-12 | Exposition | Vol. 56 | pg. 609 | 12/15/10 |
| Mk. 2:1-14 | Exposition | Vol. 61 | pg. 563 | 11/25/15 |
| Mk. 2:12 | The New Fashion | Vol. 21 | pg. 697 | 1875 |
| Mk. 2:17 & Rom. 5:6, 8 & 1 Tim. 1:15 | For Whom Is The Gospel Meant? | Vol. 23 | pg. 169 | 3/25/77 |
| Mk. 3:5 | Jesus Angry With Hard Hearts | Vol. 32 | pg. 181 | 3/28/86 |
| Mk. 3:8 | A Powerful Reason For Coming To Christ | Vol. 26 | pg. 181 | 3/21/80 |
| Mk. 3:10 | Crowding To Touch The Saviour | Vol. 14 | pg. 637 | 11/15/68 |
| Mk. 4:1-25 | Exposition | Vol. 43 | pg. 178 | 4/11/97 |
| Mk. 4:5-6 | The Seed Upon Stony Ground | Vol. 19 | pg. 517 | 9/14/73 |
| Mk. 4:17 | “No Root In Themselves” | Vol. 49 | pg. 409 | 8/27/03 |
| Mk. 4:24 | Hearing With Heed | Vol. 43 | pg. 169 | 4/11/97 |
| Mk. 4:26-29 | What The Farm Labourers Can Do and Cannot Do | Vol. 27 | pg. 329 | 6/12/81 |
| Mk. 4:33-34 | Teaching For The Outer and Inner Circles | Vol. 28 | pg. 385 | 7/16/82 |
| Mk. 4:35-41 | Exposition | Vol. 57 | pg. 131 | 3/16/11 |
| Mk. 4:38 | Christ Asleep In the Vessel | Vol. 19 | pg. 385 | 7/13/73 |
| Mk. 4:40 | Why Is Faith So Feeble? | Vol. 33 | pg. 289 | 5/22/87 |
| Mk. 4:40 | A Painful and Puzzling Question | Vol. 57 | pg. 121 | 3/16/11 |
| Mk. 5:1-20 | Exposition | Vol. 38 | pg. 310 | 6/26/92 |
| Mk. 5:1-24 | Exposition | Vol. 43 | pg. 117 | 3/7/97 |
| Mk. 5:1-43 | Exposition | Vol. 58 | pg. 284 | 6/13/12 |
| Mk. 5:35-43 | Exposition | Vol. 43 | pg. 117 | 3/7/97 |
| Mk. 5:6 | He Ran, and <i>He</i> Ran | Vol. 43 | pg. 109 | 3/7/97 |
| Mk. 5:7 | Resistance To Salvation | Vol. 51 | pg. 601 | 12/14/05 |
| Mk. 5:9 | Satan, Self, Sin, and the Saviour | Vol. 58 | pg. 277 | 6/13/12 |
| Mk. 5:17-19 | Christ’s Curate In Decapolis | Vol. 38 | pg. 301 | 6/26/92 |
| Mk. 5:19 | Going Home — A Christmas Sermon | Vol. 3 | pg. 17 | 12/21/56 |
| Mk. 5:21-43 | The Touch | Vol. 28 | pg. 41 | 1/8/82 |
| Mk. 5:21-48 | Exposition | Vol. 28 | pg. 37 | 1/8/82 |
| Mk. 5:25-28 | The Faculty Baffled — The Great Physician Successful | Vol. 14 | pg. 469 | 8/23/68 |
| Mk. 5:28 | The Touch | Vol. 23 | pg. 613 | 11/4/77 |
| Mk. 5:33 | Tell It All | Vol. 9 | pg. 325 | 6/14/63 |
| Mk. 6:6 | The Sad Wonder | Vol. 16 | pg. 525 | 6/12/70 |
| Mk. 6:20 | John and Herod | Vol. 26 | pg. 401 | 1880 |
| Mk. 6:20 | Preaching! Man’s Privilege and God’s Power! | Vol. 6 | pg. 485 | 11/25/60 |
| Mk. 6:22 | The Moral of a Miracle | Vol. 24 | pg. 637 | 1878 |
| Mk. 6:45-52 | Good Cheer From Christ’s Real Presence | Vol. 55 | pg. 37 | 1/21/09 |
| Mk. 6:52 | The Miracle of the Loaves | Vol. 21 | pg. 97 | 1875 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Mk. 7:20-23 | Hideous Discovery | Vol. 32 | pg. 397 | 7/25/86 |
| Mk. 7:24-30 | Exposition | Vol. 42 | pg. 490 | 10/11/96 |
| Mk. 8:1-30 | Exposition | Vol. 48 | pg. 22 | 1/12/02 |
| Mk. 8:4 | The Problem of the Age | Vol. 32 | pg. 85 | 2/7/86 |
| Mk. 8:19-21 | Certain Curious Calculations About Loaves & Fishes | Vol. 31 | pg. 73 | 2/15/85 |
| Mk. 8:22-25 | Seeing and Not Seeing, or Men As Trees Walking | Vol. 12 | pg. 397 | 7/22/66 |
| Mk. 8:22-25 | The Free-agency of Christ | Vol. 48 | pg. 13 | 1/12/02 |
| Mk. 8:22-26 | The Free-agency of Christ | Vol. 50 | pg. 337 | 7/14/04 |
| Mk. 8:36 | Profit and Loss | Vol. 2 | pg. 305 | 7/6/56 |
| Mk. 9:2-21 | Exposition | Vol. 58 | pg. 622 | 12/26/12 |
| Mk. 9:2-29 | Exposition | Vol. 42 | pg. 106 | 3/1/96 |
| Mk. 9:2-29 | Exposition | Vol. 50 | pg. 214 | 4/28/04 |
| Mk. 9:8 | “Jesus Only” — A Communion Meditation | Vol. 45 | pg. 373 | 8/6/99 |
| Mk. 9:14-32 | Exposition | Vol. 49 | pg. 394 | 8/13/03 |
| Mk. 9:17-20 | Bringing Sinners To The Saviour | Vol. 47 | pg. 277 | 6/16/01 |
| Mk. 9:20-41 | Exposition | Vol. 59 | pg. 84 | 2/13/13 |
| Mk. 9:22-23 | “If Thou Canst.” “If <i>Thou</i> Canst.” | Vol. 37 | pg. 505 | 10/4/91 |
| Mk. 9:23 | Faith Omnipotent | Vol. 8 | pg. 565 | 10/12/62 |
| Mk. 9:23 | Where the “If” Lies | Vol. 29 | pg. 553 | 10/14/83 |
| Mk. 9:24 | Faith’s Dawn and Its Clouds | Vol. 18 | pg. 61 | 1/28/72 |
| Mk. 9:24 | Feeble Faith Appealing To a Strong Saviour | Vol. 50 | pg. 205 | 4/28/04 |
| Mk. 9:30-40 | Exposition | Vol. 42 | pg. 587 | 12/6/96 |
| Mk. 9:43 | Right-hand Sins | Vol. 60 | pg. 337 | 7/16/14 |
| Mk. 9:43-48 | Exposition | Vol. 49 | pg. 394 | 9/13/03 |
| Mk. 10:13-16 | Children Brought To Christ, Not to the Font | Vol. 10 | pg. 413 | 7/24/64 |
| Mk. 10:13-16 | Jesus and the Children | Vol. 32 | pg. 565 | 10/17/86 |
| Mk. 10:13-27 | Exposition | Vol. 61 | pg. 610 | 12/23/15 |
| Mk. 10:17-45 | Exposition | Vol. 51 | pg. 369 | 7/27/05 |
| Mk. 10:21 | A Procession of Cross-bearers | Vol. 51 | pg. 361 | 7/27/05 |
| Mk. 10:21 | Lovely, But Lacking | Vol. 58 | pg. 613 | 12/26/12 |
| Mk. 10:32-53 | Exposition | Vol. 61 | pg. 610 | 12/23/15 |
| Mk. 10:46-52 | Exposition | Vol. 51 | pg. 369 | 9/28/05 |
| Mk. 10:46-52 | Exposition | Vol. 62 | pg. 156 | 3/30/16 |
| Mk. 10:46-52 | Good Cheer From Christ’s Call and From Himself | Vol. 57 | pg. 553 | 11/23/11 |
| Mk. 10:46-52 | The Blind Beggar | Vol. 5 | pg. 329 | 8/7/59 |
| Mk. 10:47-48 | The Blind Man’s Earnest Cries | Vol. 11 | pg. 457 | 8/20/65 |
| Mk. 10:49 | A Gospel Sermon To Outsiders | Vol. 23 | pg. 697 | 8/19/77 |
| Mk. 10:49 | Jesus At A Stand | Vol. 27 | pg. 133 | 3/6/81 |
| Mk. 10:51 | Reasons For A Singular Question | Vol. 42 | pg. 145 | 3/29/96 |
| Mk. 10:51 | The Saviour’s Charity | Vol. 61 | pg. 601 | 12/23/15 |
| Mk. 10:51 | A Definite Challenge For Definite Prayer | Vol. 62 | pg. 529 | 11/9/16 |
| Mk. 11:13 | Nothing But Leaves | Vol. 10 | pg. 97 | 2/21/64 |
| Mk. 11:24 | True Prayer — True Power! | Vol. 6 | pg. 333 | 8/12/60 |
| Mk. 12:6 | One Greater Than the Temple | Vol. 22 | pg. 49 | 1/23/76 |
| Mk. 12:6-9 | The Pleading of the Last Messenger | Vol. 33 | pg. 133 | 3/6/87 |
| Mk. 12:12-44 | Exposition | Vol. 52 | pg. 262 | 5/24/06 |
| Mk. 12:30 | The First and Great Commandment | Vol. 3 | pg. 437 | 11/8/57 |
| Mk. 12:34 | For the Candid and Thoughtful | Vol. 7 | pg. 61 | 1880 |
| Mk. 12:34 | Near The Kingdom, Or In It? | Vol. 52 | pg. 253 | 5/24/06 |
| Mk. 14:1-9 | Exposition | Vol. 60 | pg. 215 | 4/30/14 |
| Mk. 14:6 | To Lovers of Jesus: An Example | Vol. 31 | pg. 193 | 4/12/85 |
| Mk. 14:14 | Wanted, A Guestchamber! | Vol. 13 | pg. 685 | 12/15/67 |
| Mk. 14:22-41 | Exposition | Vol. 60 | pg. 215 | 11/5/14 |
| Mk. 14:27-31 | Exposition | Vol. 47 | pg. 335 | 7/14/01 |
| Mk. 14:32 | Christ In Gethsemane | Vol. 56 | pg. 145 | 3/24/10 |
| Mk. 14:50-52 | John Mark; or, Haste In Religion | Vol. 53 | pg. 37 | 1/17/07 |
| Mk. 14:53-54 | Exposition | Vol. 47 | pg. 335 | 7/14/01 |

| | | | | |
|---|--|--------|---------|----------|
| Mk. 14:53-54 | Exposition | Vol.48 | pg. 142 | 3/23/02 |
| Mk. 14:53-65 | Exposition | Vol.49 | pg. 131 | 3/15/03 |
| Mk. 14:66-72 | Exposition | Vol.47 | pg. 335 | 7/14/01 |
| Mk. 14:66-72 | Exposition | Vol.48 | pg. 142 | 3/23/02 |
| Mk. 14:64 | Our Lord's Trial Before the Sanhedrin | Vol.28 | pg. 73 | 2/5/82 |
| Mk. 14:72 | Fountains of Repentant Tears | Vol.47 | pg. 325 | 7/14/01 |
| Mk. 15:1-41 | Exposition | Vol.54 | pg. 321 | 7/2/08 |
| Mk. 15:15-23 | Exposition | Vol.59 | pg. 311 | 6/26/13 |
| Mk. 15:15-39 | Exposition | Vol.41 | pg. 597 | 12/15/95 |
| Mk. 15:20 & Jn. 19:17 & Mk. 15:21 | The Great Cross-bearer and His Followers | Vol.28 | pg. 553 | 10/8/82 |
| Mk. 15:21 | Up From the Country, and Pressed Into the Service | Vol.31 | pg. 421 | 8/2/85 |
| Mk. 15:23 | The Determination of Christ To Suffer For His People | Vol.41 | pg. 589 | 12/15/95 |
| Mk. 15:34-37 | Exposition | Vol.40 | pg. 586 | 12/9/94 |
| Mk. 15:43-46 | Joseph of Arimathaea | Vol.30 | pg. 373 | 7/6/84 |
| Mk. 16:1-14 | Exposition | Vol.41 | pg. 179 | 4/14/95 |
| Mk. 16:1-20 | Exposition | Vol.42 | pg. 262 | 5/31/96 |
| Mk. 16:1-20 | Exposition | Vol.48 | pg. 251 | 5/25/02 |
| Mk. 16:1-20 | Exposition | Vol.61 | pg. 155 | 4/1/15 |
| Mk. 16:6 | Belief in the Resurrection | Vol.61 | pg. 145 | 4/1/15 |
| Mk. 16:7 | The Messages of Our Lord's Love | Vol.34 | pg. 705 | 8/5/88 |
| Mk. 16:9 | Jesus Appearing to Mary Magdalene | Vol.11 | pg. 172 | 4/16/65 |
| Mk. 16:9 | Mary Magdalene | Vol.14 | pg. 49 | 1/26/68 |
| Mk. 16:10 | A Sad Interior and a Cheery Messenger | Vol.43 | pg. 241 | 5/23/97 |
| Mk. 16:14 | Unbelievers Ubraided | Vol.50 | pg. 313 | 6/30/04 |
| Mk. 16:15-16 | Baptismal Regeneration | Vol.10 | pg. 373 | 6/5/64 |
| Mk. 16:15-16 | Preach, Preach, Preach Everywhere | Vol.15 | pg. 625 | 1869 |
| Mk. 16:16 | Baptism Essential To Obedience | Vol.39 | pg. 601 | 12/17/93 |
| Mk. 16:20 | Christ and His Co-workers | Vol.42 | pg. 253 | 5/31/96 |

LUKE

| | | | | |
|--------------|-------------------------------------|--------|---------|----------|
| Lk. 1:5-17 | Exposition | Vol.41 | pg. 130 | 3/17/95 |
| Lk. 1:5-35 | Exposition | Vol.44 | pg. 380 | 8/7/98 |
| Lk. 1:17 | "A People Prepared For the Lord" | Vol.41 | pg. 121 | 3/17/95 |
| Lk. 1:18, 34 | A Distinction With A Difference | Vol.24 | pg. 169 | 18789 |
| Lk. 1:20 | The Judgment Upon Zacharias | Vol.62 | pg. 25 | 1/20/16 |
| Lk. 1:26-56 | Exposition | Vol.52 | pg. 622 | 12/20/06 |
| Lk. 1:32 | "He Shall Be Great" | Vol.30 | pg. 25 | 12/2/83 |
| Lk. 1:39-56 | Exposition | Vol.51 | pg. 311 | 6/22/05 |
| Lk. 1:46 | The Key-note of a Choice Sonnet | Vol.26 | pg. 25 | 1880 |
| Lk. 1:46-47 | Mary's Song | Vol.10 | pg. 717 | 12/25/64 |
| Lk. 1:46-47 | A Harp of Ten Strings | Vol.37 | pg. 445 | 8/30/91 |
| Lk. 1:46-47 | Mary's Magnificat | Vol.51 | pg. 301 | 6/22/05 |
| Lk. 1:46-55 | Exposition | Vol.57 | pg. 310 | 6/29/11 |
| Lk. 1:46-56 | Exposition | Vol.44 | pg. 380 | 8/7/98 |
| Lk. 1:53 | Alto and Bass | Vol.44 | pg. 373 | 8/7/98 |
| Lk. 1:53 | The Hungry Filled, The Rich Emptied | Vol.52 | pg. 613 | 12/20/06 |
| Lk. 1:77-79 | "The Tender Mercy of Our God" | Vol.32 | pg. 349 | 6/27/86 |
| Lk. 1:78 | God's Tender Mercy | Vol.53 | pg. 109 | 2/28/07 |
| Lk. 2:1-19 | Exposition | Vol.50 | pg. 623 | 12/22/04 |
| Lk. 2:1-40 | Exposition | Vol.55 | pg. 633 | 12/23/09 |
| Lk. 2:7 | No Room For Christ in the Inn | Vol. 8 | pg. 697 | 12/21/62 |
| Lk. 2:10 | God Incarnate, the End of Fear | Vol.12 | pg. 709 | 12/23/66 |
| Lk. 2:10 | The Great Birthday | Vol.22 | pg. 709 | 12/24/76 |

| | | | | |
|---|---|---------|---------|----------|
| Lk. 2:10-12 | Joy Born At Bethlehem | Vol. 17 | pg. 697 | 12/24/71 |
| Lk. 2:14 | The First Christmas Carol | Vol. 4 | pg. 25 | 12/20/57 |
| Lk. 2:15 | A Visit To Bethlehem | Vol. 50 | pg. 613 | 12/22/04 |
| Lk. 2:17-20 | Holy Work For Christmas | Vol. 11 | pg. 709 | 12/24/65 |
| Lk. 2:21-38 | Exposition | Vol. 39 | pg. 58 | 1/29/93 |
| Lk. 2:25 | Simeon | Vol. 11 | pg. 625 | 1865 |
| Lk. 2:28-30 | “Thy Salvation” | Vol. 24 | pg. 313 | 6/2/78 |
| Lk. 2:29-30 | “Nunc Dimittis” | Vol. 17 | pg. 553 | 10/8/71 |
| Lk. 2:29-30 | Simeon’s Swan Song | Vol. 39 | pg. 49 | 1/29/93 |
| Lk. 2:30 | Christ Seen As God’s Salvation | Vol. 55 | pg. 625 | 12/23/09 |
| Lk. 2:32 | Christ The Glory of His People | Vol. 14 | pg. 457 | 3/22/68 |
| Lk. 2:34 | Christ — The Fall and Rise of Many | Vol. 15 | pg. 709 | 12/26/69 |
| Lk. 2:44 | Supposing Him To Have Been in the Company | Vol. 29 | pg. 313 | 6/3/83 |
| Lk. 2:44-46 | A Lost Christ Found | Vol. 45 | pg. 97 | 2/26/99 |
| Lk. 2:48-49 | The First Recorded Words of Jesus | Vol. 28 | pg. 349 | 6/25/82 |
| Lk. 2:49 | Christ About His Father’s Business | Vol. 3 | pg. 121 | 3/15/57 |
| Lk. 3:1-18 | Exposition | Vol. 41 | pg. 130 | 3/17/95 |
| Lk. 3:16 | Loosing the Shoe-latchet | Vol. 18 | pg. 193 | 3/31/72 |
| Lk. 3:21-22 & Lk. 9:28-29 & Mt. 14:23-25 & Jn. 11:41-42 & Lk. 22:31-32 & Lk. 23:46 | The Preparatory Prayers of Christ | Vol. 56 | pg. 1 | 12/30/09 |
| Lk. 4:1-14 | Exposition | Vol. 39 | pg. 454 | 9/17/93 |
| Lk. 4:13 & Mt. 4:11 | Satan Departing, Angels Ministering | Vol. 39 | pg. 445 | 9/17/93 |
| Lk. 4:14-32 | Exposition | Vol. 40 | pg. 359 | 7/29/94 |
| Lk. 4:16-30 | Exposition | Vol. 39 | pg. 502 | 10/15/93 |
| Lk. 4:16-30 | Exposition | Vol. 43 | pg. 299 | 6/20/7 |
| Lk. 4:27 | The Rule of Grace | Vol. 53 | pg. 493 | 10/10/07 |
| Lk. 4:28-30 | Nazareth: or, Jesus Rejected By His Friends | Vol. 13 | pg. 301 | 6/2/67 |
| Lk. 4:33-36 | Exposition | Vol. 44 | pg. 214 | 5/1/98 |
| Lk. 4:33-41 | Exposition | Vol. 50 | pg. 347 | 7/14/04 |
| Lk. 4:38-39 | Fever, and Its Cure | Vol. 36 | pg. 625 | 11/23/90 |
| Lk. 4:39 | The Ministry of Gratitude | Vol. 18 | pg. 517 | 9/15/72 |
| Lk. 5:1-32 | Exposition | Vol. 49 | pg. 286 | 6/14/03 |
| Lk. 5:4 & Jn. 21:6 | The Two Draughts of Fishes | Vol. 8 | pg. 193 | 4/6/62 |
| Lk. 5:5 | “At Thy Word” | Vol. 28 | pg. 205 | 4/16/82 |
| Lk. 5:5 | “Nevertheless At Thy Word” | Vol. 48 | pg. 601 | 12/21/02 |
| Lk. 5:8 | Peter’s Prayer | Vol. 60 | pg. 241 | 5/21/14 |
| Lk. 5:12-17 | Exposition | Vol. 50 | pg. 348 | 7/14/04 |
| Lk. 5:12-26 | Exposition | Vol. 41 | pg. 286 | 6/16/95 |
| Lk. 5:12-32 | Exposition | Vol. 45 | pg. 141 | 3/19/99 |
| Lk. 5:16-26 | Carried By Four | Vol. 17 | pg. 157 | 3/19/71 |
| Lk. 5:17 | The Gospel’s Healing Power | Vol. 12 | pg. 625 | 11/11/66 |
| Lk. 5:17 | “Sitting By” | Vol. 33 | pg. 613 | 11/13/87 |
| Lk. 5:20 | First Forgiveness, Then Healing | Vol. 41 | pg. 277 | 6/16/95 |
| Lk. 5:26 | Strange Things | Vol. 45 | pg. 133 | 3/19/99 |
| Lk. 5:31 | Patients For the Great Physician | Vol. 49 | pg. 277 | 6/14/03 |
| Lk. 6:6-11 | Exposition | Vol. 44 | pg. 214 | 5/1/98 |
| Lk. 6:12 | Special Protracted Prayer | Vol. 14 | pg. 121 | 3/1/68 |
| Lk. 6:15 | Zealots | Vol. 11 | pg. 385 | 7/16/65 |
| Lk. 6:32-34 | The Heroic In Christianity | Vol. 27 | pg. 97 | 2/20/81 |
| Lk. 6:39-40 | The Choice of a Leader | Vol. 21 | pg. 445 | 8/1/75 |
| Lk. 6:46-49 | On Laying Foundations | Vol. 29 | pg. 49 | 1/21/83 |

| | | | | |
|-----------------|---|---------|---------|----------|
| Lk. 7:4-9 | The Centurion: Or, An Exhortation to the Virtuous | Vol. 10 | pg. 645 | 1864 |
| Lk. 7:6-8 | The Centurion's Faith and Humility | Vol. 14 | pg. 145 | 3/15/68 |
| Lk. 7:11-17 | Young Man, Is This For You? | Vol. 34 | pg. 25 | 1/15/88 |
| Lk. 7:24-50 | Exposition | Vol. 42 | pg. 465 | 9/27/96 |
| Lk. 7:34 | "The Very Friend <i>You</i> Need" | Vol. 42 | pg. 457 | 9/27/96 |
| Lk. 7:36-48 | Exposition | Vol. 63 | pg. 71 | 2/8/17 |
| Lk. 7:36-50 | Exposition | Vol. 52 | pg. 574 | 11/22/06 |
| Lk. 7:37-38 | The Woman Which Was A Sinner | Vol. 14 | pg. 157 | 3/22/68 |
| Lk. 7:37-38 | Penitence, Pardon, and Peace | Vol. 59 | pg. 289 | 6/19/13 |
| Lk. 7:38 | Our Place; At Jesus' Feet | Vol. 35 | pg. 45 | 6/8/79 |
| Lk. 7:41 | Debtors <i>And</i> Debtors | Vol. 48 | pg. 97 | 3/2/02 |
| Lk. 7:41-42 | The Two Debtors | Vol. 52 | pg. 565 | 11/22/06 |
| Lk. 7:41-43 | Who Loves Christ Most? | Vol. 50 | pg. 109 | 3/3/04 |
| Lk. 7:42 | Bankrupt Debtors Discharged | Vol. 29 | pg. 493 | 9/16/83 |
| Lk. 7:42-43 | Love's Competition | Vol. 36 | pg. 61 | 2/2/90 |
| Lk. 7:50 | A Gracious Dismissal | Vol. 37 | pg. 13 | 1/11/91 |
| Lk. 7:50; 18:42 | Saving Faith | Vol. 20 | pg. 145 | 3/15/74 |
| Lk. 7:50 | "Go In Peace" | Vol. 48 | pg. 121 | 3/16/02 |
| Lk. 8:1-21 | Exposition | Vol. 49 | pg. 381 | 8/9/03 |
| Lk. 8:1-3 | Exposition | Vol. 54 | pg. 321 | 7/2/08 |
| Lk. 8:4-8 | The Parable of the Sower | Vol. 6 | pg. 173 | 4/15/60 |
| Lk. 8:5 | The Seed By the Wayside | Vol. 49 | pg. 373 | 8/9/03 |
| Lk. 8:6 | Lacking Moisture | Vol. 49 | pg. 397 | 8/20/03 |
| Lk. 8:8 | "This Year Also" | Vol. 25 | pg. 1 | 1879 |
| Lk. 8:12 | Satan's Punctuality, Power, and Purpose | Vol. 25 | pg. 97 | 1879 |
| Lk. 8:18 | Heedful Hearing | Vol. 59 | pg. 265 | 6/5/13 |
| Lk. 8:26-56 | Exposition | Vol. 44 | pg. 514 | 10/23/98 |
| Lk. 8:28 | Plain Words With the Careless | Vol. 13 | pg. 601 | 10/13/67 |
| Lk. 8:40 | A Welcome For Jesus | Vol. 44 | pg. 505 | 10/23/98 |
| Lk. 8:41-56 | Exposition | Vol. 62 | pg. 443 | 9/14/16 |
| Lk. 8:43-44 | Cured At Last! | Vol. 34 | pg. 205 | 4/8/88 |
| Lk. 8:46 | Real Contact With Jesus | Vol. 54 | pg. 613 | 12/24/08 |
| Lk. 8:47 | "She Was Not Hid" | Vol. 34 | pg. 217 | 4/15/88 |
| Lk. 9:11 | Real Grace For Real Need | Vol. 15 | pg. 493 | 9/5/69 |
| Lk. 9:11 | Welcome! Welcome! | Vol. 27 | pg. 581 | 10/16/81 |
| Lk. 9:32 | Waking To See Christ's Glory | Vol. 46 | pg. 25 | 1/21/00 |
| Lk. 9:37-62 | Exposition | Vol. 38 | pg. 442 | 9/11/92 |
| Lk. 9:42 | The Comer's Conflict With Satan | Vol. 2 | pg. 369 | 8/24/56 |
| Lk. 9:42 | The Devil's Last Throw | Vol. 29 | pg. 577 | 6/10/83 |
| Lk. 9:52-53 | Why Men Reject Christ | Vol. 42 | pg. 205 | 5/3/96 |
| Lk. 9:57-62 | Fickle Followers | Vol. 38 | pg. 433 | 9/11/92 |
| Lk. 9:57-62 | Exposition | Vol. 39 | pg. 502 | 10/15/93 |
| Lk. 9:61 | The Broken Column | Vol. 7 | pg. 441 | 8/4/61 |
| Lk. 10:1-22 | Exposition | Vol. 39 | pg. 370 | 7/30/93 |
| Lk. 10:21-22 | The Joy of Jesus | Vol. 26 | pg. 673 | 12/5/80 |
| Lk. 10:20 | Why May I Rejoice? | Vol. 22 | pg. 601 | 10/29/76 |
| Lk. 10:21 | The Lord's Chosen Ministers | Vol. 39 | pg. 361 | 7/30/93 |
| Lk. 10:25-37 | The Good Samaritan | Vol. 23 | pg. 349 | 6/17/77 |
| Lk. 10:25-37 | Exposition | Vol. 57 | pg. 563 | 11/23/11 |
| Lk. 10:25-42 | Exposition | Vol. 55 | pg. 574 | 11/25/09 |
| Lk. 10:38 | Good News For You | Vol. 8 | pg. 553 | 10/5/62 |
| Lk. 10:38 | Martha and Mary | Vol. 16 | pg. 229 | 4/24/70 |
| Lk. 10:38-42 | Exposition | Vol. 51 | pg. 143 | 3/16/05 |
| Lk. 10:39 | Love At Leisure | Vol. 51 | pg. 133 | 3/16/05 |
| Lk. 10:40 | Cumbered With Much Serving | Vol. 55 | pg. 457 | 9/23/09 |
| Lk. 10:41-42 | Martha and Mary | Vol. 61 | pg. 349 | 7/29/15 |
| Lk. 10:42 | The One Thing Needful | Vol. 17 | pg. 565 | 10/15/71 |

| | | | | |
|---|---|---------|---------|-------------|
| Lk. 10:44 & Jn. 9:25 & Phil. 3:13 | A Threefold Motto | Vol. 62 | pg. 517 | 11/2/16 |
| Lk. 11:9-10 | Prayer Certified of Success | Vol. 19 | pg. 25 | 1/19/73 |
| Lk. 11:1-26 | Exposition | Vol. 56 | pg. 633 | 12/29/10 |
| Lk. 11:11-13 | Right Replies To Right Requests | Vol. 16 | pg. 613 | 11/6/70 |
| Lk. 11:14-54 | Exposition | Vol. 52 | pg. 609 | 12/13/06 |
| Lk. 11:21 & Psa. 29:11 | The Peace of the Devil, and the Peace of God | Vol. 36 | pg. 421 | 8/3/90 |
| Lk. 11:21-26 | “The Strong One Driven Out By a Stronger One” | Vol. 11 | pg. 73 | 2/5/65 |
| Lk. 11:27-28 | Believers As Blessed As The Blessed Virgin | Vol. 32 | pg. 505 | 9/19/86 |
| Lk. 11:27-28 | The True Lineage | Vol. 52 | pg. 601 | 12/13/06 |
| Lk. 11:29 | A Word With Those Who Wait For Signs and Wonders | Vol. 15 | pg. 601 | 10/31/69 |
| Lk. 11:33-36 | The Eye and the Light | Vol. 35 | pg. 553 | 10/13/89 |
| Lk. 12:1-32 | Exposition | Vol. 50 | pg. 417 | 8/25/04 |
| Lk. 12:1-44 | Exposition | Vol. 53 | pg. 104 | 2/21/07 |
| Lk. 12:1 | Hypocrisy | Vol. 5 | pg. 97 | 2/6/59 |
| Lk. 12:12-48 | Exposition | Vol. 39 | pg. 166 | 4/2/93 |
| Lk. 12:13-44 | Exposition | Vol. 41 | pg. 622 | 12/29/95 |
| Lk. 12:22-48 | Exposition | Vol. 42 | pg. 381 | 8/9/96 |
| Lk. 12:32 | Little, But Lovely | Vol. 63 | pg. 49 | 2/1/17 |
| Lk. 12:35-48 | Exposition | Vol. 41 | pg. 563 | 11/24/95 |
| Lk. 12:29 | Anxiety, Ambition, Indecision | Vol. 50 | pg. 85 | 2/18/04 |
| Lk. 12:37-38 | Watching For Christ’s Coming | Vol. 39 | pg. 157 | 4/2/93 |
| Lk. 12:54-57 | Signs of the Times | Vol. 19 | pg. 553 | 10/5/73 |
| Lk. 12:49 | Fire — The Want of the Times | Vol. 15 | pg. 73 | 2/7/69 |
| Lk. 13:1-13 | Exposition | Vol. 56 | pg. 215 | 4/28/10 |
| Lk. 13:1-22 | Exposition | Vol. 43 | pg. 598 | 12/12/97 |
| Lk. 13:1-5 | Accidents, Not Punishments | Vol. 7 | pg. 481 | 9/8/61 |
| Lk. 13:6-9 | Exposition | Vol. 42 | pg. 419 | 8/30/96 |
| Lk. 13:6-30 | Exposition | Vol. 39 | pg. 238 | 5/14/93 |
| Lk. 13:7-8 | Judgment Threatening But Mercy Sparing | Vol. 11 | pg. 517 | 9/17/65 |
| Lk. 13:8 | “This Year Also” | Vol. 25 | pg. 1 | 1879, pg. 1 |
| Lk. 13:10-17 | Exposition | Vol. 44 | pg. 214 | 5/1/98 |
| Lk. 13:10-13 | The Lifting Up of the Bowed Down | Vol. 24 | pg. 421 | 7/14/78 |
| Lk. 13:10-13 | A Sabbath Miracle | Vol. 50 | pg. 325 | 7/7/04 |
| Lk. 13:10-23 | Exposition | Vol. 62 | pg. 539 | 11/9/16 |
| Lk. 13:11-13 | Christ Looseth From Infirmities | Vol. 56 | pg. 205 | 4/28/10 |
| Lk. 13:11-35 | Exposition | Vol. 49 | pg. 550 | 11/12/03 |
| Lk. 13:17 | Receiving the Kingdom of God As A Little Child | Vol. 24 | pg. 577 | 10/20/78 |
| Lk. 13:18-19 | The Mustard Seed: A Sermon For Sabbath-School Teacher | Vol. 35 | pg. 565 | 10/20/89 |
| Lk. 13:18-34 | Exposition | Vol. 45 | pg. 334 | 7/9/99 |
| Lk. 13:24 | Self-delusion | Vol. 8 | pg. 577 | 10/19/62 |
| Lk. 13:24 | The Strait Gate | Vol. 63 | pg. 181 | 4/19/17 |
| Lk. 13:30 | Great Changes | Vol. 51 | pg. 217 | 5/4/05 |
| Lk. 13:33 | Jerusalem The Guilty | Vol. 62 | pg. 325 | 7/13/16 |
| Lk. 14:1-6 | Exposition | Vol. 44 | pg. 214 | 5/1/98 |
| Lk. 14:7-24 | Exposition | Vol. 56 | pg. 526 | 10/27/10 |
| Lk. 14:10 | The Mission of the Son of Man | Vol. 4 | pg. 313 | 7/11/58 |
| Lk. 14:18 | A Bad Excuse Is Worse Than None | Vol. 10 | pg. 377 | 7/3/64 |
| Lk. 14:20 | A Straight Talk | Vol. 36 | pg. 13 | 1/12/90 |
| Lk. 14:22 | “Yet There Is Room” | Vol. 56 | pg. 517 | 10/27/10 |
| Lk. 14:22 | More Room for More People | Vol. 62 | pg. 433 | 9/14/16 |
| Lk. 14:23 | “Compel Them To Come In” | Vol. 5 | pg. 17 | 12/5/58 |
| Lk. 14:25-35 | Exposition | Vol. 46 | pg. 371 | 8/5/00 |
| Lk. 14:26 | Characteristics of Christ’s Disciples | Vol. 45 | pg. 565 | 11/26/99 |
| Lk. 14:28-30 | Counting the Cost | Vol. 20 | pg. 109 | 2/22/74 |

| | | | | |
|---------------|---|---------|---------|----------|
| Lk. 14:31-32 | Consider Before You Fight | Vol. 11 | pg. 301 | 1865 |
| Lk. 15:1-24 | Exposition | Vol. 59 | pg. 105 | 2/27/13 |
| Lk. 15:1-24 | Exposition | Vol. 61 | pg. 130 | 3/18/15 |
| Lk. 15:1-27 | Exposition | Vol. 60 | pg. 249 | 5/21/14 |
| Lk. 15:1-32 | Exposition | Vol. 41 | pg. 249 | 5/26/95 |
| Lk. 15:1-32 | Exposition | Vol. 43 | pg. 274 | 6/6/97 |
| Lk. 15:1-32 | Exposition | Vol. 48 | pg. 381 | 8/10/02 |
| Lk. 15:1-32 | Exposition | Vol. 49 | pg. 620 | 12/24/03 |
| Lk. 15:1 | The Approachableness of Jesus | Vol. 14 | pg. 253 | 5/3/68 |
| Lk. 15:1-2 | Christ and His Hearers | Vol. 60 | pg. 277 | 6/11/14 |
| Lk. 15:2 | An Appeal To Sinners | Vol. 4 | pg. 433 | 9/14/56 |
| Lk. 15:2 | Open House For All Comers | Vol. 11 | pg. 697 | 12/17/65 |
| Lk. 15:4 | "Until He Find It" | Vol. 49 | pg. 109 | 3/8/03 |
| Lk. 15:4-6 | Our Great Shepherd Finding the Sheep | Vol. 35 | pg. 37 | 1/27/89 |
| Lk. 15:4-7 | The Parable of the Lost Sheep | Vol. 30 | pg. 517 | 9/28/84 |
| Lk. 15:8-10 | The Lost Silver Piece | Vol. 17 | pg. 25 | 1/15/71 |
| Lk. 15:10 | The Sympathy of the Two Worlds | Vol. 4 | pg. 305 | 7/4/58 |
| Lk. 15:10 | A High Day In Heaven | Vol. 48 | pg. 373 | 8/10/02 |
| Lk. 15:11-32 | Exposition | Vol. 60 | pg. 287 | 6/11/14 |
| Lk. 15:17 | Number One Thousand; or "Bread Enough and To Spare" | Vol. 17 | pg. 385 | 7/16/71 |
| Lk. 15:17 | The Prodigal's Climax | Vol. 41 | pg. 241 | 5/26/95 |
| Lk. 15:20 | The Prodigal's Return | Vol. 4 | pg. 89 | 2/7/58 |
| Lk. 15:20 | The Prodigal's Reception | Vol. 10 | pg. 497 | 9/4/64 |
| Lk. 15:20 | The Turning Point | Vol. 20 | pg. 469 | 8/23/74 |
| Lk. 15:20 | Prodigal Love for the Prodigal Son | Vol. 37 | pg. 649 | 12/27/91 |
| Lk. 15:20-21 | A Programme Never Carried Out | Vol. 43 | pg. 265 | 6/6/97 |
| Lk. 15:22, 26 | The Reception of Sinners | Vol. 20 | pg. 649 | 11/22/74 |
| Lk. 15:25-32 | Exposition | Vol. 60 | pg. 71 | 2/5/14 |
| Lk. 16:2 | The Sunday-School Teacher — A Steward | Vol. 4 | pg. 217 | 5/4/58 |
| Lk. 16:2 | The Last Sermon for the Year | Vol. 41 | pg. 613 | 12/29/95 |
| Lk. 16:17 | All Things Are Ready. Come | Vol. 23 | pg. 277 | 5/13/77 |
| Lk. 16:26 | The Bridgeless Gulf | Vol. 9 | pg. 373 | 7/5/63 |
| Lk. 16:31 | A Preacher From the Dead | Vol. 3 | pg. 285 | 7/26/57 |
| Lk. 17:1-10 | Exposition | Vol. 39 | pg. 551 | 11/12/93 |
| Lk. 17:1-10 | Exposition | Vol. 51 | pg. 575 | 11/23/05 |
| Lk. 17:5 | The Necessity of Increased Faith | Vol. 1 | pg. 245 | 7/1/55 |
| Lk. 17:5 | Increased Faith the Strength of Peace Principles | Vol. 22 | pg. 565 | 10/15/76 |
| Lk. 17:5 | Growth In Faith | Vol. 59 | pg. 589 | 12/11/13 |
| Lk. 17:7-10 | Our Service For Christ Never Finished | Vol. 39 | pg. 541 | 11/12/93 |
| Lk. 17:11-10 | Exposition | Vol. 39 | pg. 70 | 2/5/93 |
| Lk. 17:11-19 | Exposition | Vol. 40 | pg. 69 | 2/11/94 |
| Lk. 17:11-32 | Exposition | Vol. 51 | pg. 347 | 7/13/05 |
| Lk. 17:12-14 | Only Trust Him! Only Trust Him! | Vol. 27 | pg. 701 | 6/26/81 |
| Lk. 17:15-19 | "Where Are The Nine?" or Praise Neglected | Vol. 32 | pg. 685 | 12/26/86 |
| Lk. 17:17 | "Where Are the Nine?" Where? | Vol. 51 | pg. 529 | 11/2/05 |
| Lk. 17:18-50 | Exposition | Vol. 50 | pg. 154 | 3/24/04 |
| Lk. 17:22 | And Why Not? | Vol. 22 | pg. 625 | 11/12/76 |
| Lk. 17:32 | Remember Lot's Wife | Vol. 25 | pg. 481 | 8/24/79 |
| Lk. 18:1 | When Should We Pray? | Vol. 43 | pg. 253 | 5/30/97 |
| Lk. 18:1-8 | The Importunate Widow | Vol. 15 | pg. 97 | 2/21/69 |
| Lk. 18:1-14 | Exposition | Vol. 41 | pg. 22 | 1/13/95 |
| Lk. 18:1-14 | Exposition | Vol. 46 | pg. 382 | 8/12/00 |
| Lk. 18:1-14 | Exposition | Vol. 50 | pg. 72 | 2/4/04 |
| Lk. 18:1-14 | Exposition | Vol. 56 | pg. 10 | 12/30/09 |
| Lk. 18:1-27 | Exposition | Vol. 49 | pg. 478 | 10/1/03 |
| Lk. 18:7 | Prayerful Importunity | Vol. 49 | pg. 289 | 6/21/03 |
| Lk. 18:8 | The Search For Faith | Vol. 33 | pg. 277 | 5/15/87 |

| | | | | |
|--------------|---|--------|---------|----------|
| Lk. 18:10 | The Blessings of Public Worship | Vol.41 | pg. 13 | 1/13/95 |
| Lk. 18:13 | A Sermon For the Worst Man on Earth | Vol.33 | pg. 109 | 2/20/87 |
| Lk. 18:13 | Confession and Absolution | Vol. 4 | pg. 409 | 10/3/58 |
| Lk. 18:14 | Too Good To Be Saved! | Vol.46 | pg. 373 | 8/12/00 |
| Lk. 18:31-43 | Exposition | Vol.42 | pg. 153 | 3/29/96 |
| Lk. 18:31-43 | Exposition | Vol.62 | pg. 59 | 2/3/16 |
| Lk. 18:35-43 | Exposition | Vol.39 | pg. 190 | 4/16/93 |
| Lk. 18:35-43 | Exposition | Vol.46 | pg. 119 | 3/11/00 |
| Lk. 18:35-43 | Exposition | Vol.47 | pg. 574 | 12/1/01 |
| Lk. 18:37 | The Soul's Crisis | Vol.15 | pg. 697 | 1869 |
| Lk. 19:1-10 | Exposition | Vol.42 | pg. 153 | 3/29/96 |
| Lk. 19:1-10 | Exposition | Vol.46 | pg. 119 | 3/11/00 |
| Lk. 19:1-10 | Exposition | Vol.47 | pg. 574 | 12/1/01 |
| Lk. 19:1-27 | Exposition | Vol.46 | pg. 550 | 11/18/00 |
| Lk. 19:1-48 | Exposition | Vol.53 | pg. 369 | 7/25/07 |
| Lk. 19:5 | Effectual Calling | Vol. 2 | pg. 153 | 3/30/56 |
| Lk. 19:5 | Must He? | Vol.47 | pg. 565 | 12/1/01 |
| Lk. 19:6 | Jesus Joyfully Received | Vol.46 | pg. 541 | 11/18/00 |
| Lk. 19:6 | The Honoured Guest | Vol.61 | pg. 553 | 11/25/15 |
| Lk. 19:7 | The Sinner's Saviour | Vol.22 | pg. 577 | 10/1/76 |
| Lk. 19:9 | A Day To Be Remembered | Vol.46 | pg. 109 | 3/11/00 |
| Lk. 19:10 | Good News For the Lost | Vol.19 | pg. 133 | 3/9/73 |
| Lk. 19:10 | Saving the Lost | Vol.47 | pg. 577 | 12/8/01 |
| Lk. 19:10 | The Errand of Mercy | Vol.53 | pg. 361 | 7/25/07 |
| Lk. 19:10 | Christ the Seeker and Saviour of the Lost | Vol.58 | pg. 313 | 7/4/12 |
| Lk. 19:10 | The Mission of the Son of Man | Vol. 4 | pg. 313 | 7/11/58 |
| Lk. 19:12-13 | The Servants and the Pounds | Vol.33 | pg. 241 | 4/24/87 |
| Lk. 19:28 | Our Glorious Leader | Vol.63 | pg. 1 | 1/4/17 |
| Lk. 19:31 | A Greater Than Solomon | Vol.27 | pg. 293 | 2/6/81 |
| Lk. 19:37-40 | Praise Thy God, O Zion | Vol.12 | pg. 121 | 2/25/66 |
| Lk. 19:41 | The Lamentations of Jesus | Vol.26 | pg. 661 | 11/28/80 |
| Lk. 19:51-56 | Exposition | Vol.47 | pg. 574 | 11/24/01 |
| Lk. 20:9-16 | Exposition | Vol.42 | pg. 252 | 5/24/96 |
| Lk. 20:37-38 | Departed Saints Yet Living | Vol.31 | pg. 541 | 10/4/85 |
| Lk. 21:1-38 | Exposition | Vol.42 | pg. 609 | 12/20/96 |
| Lk. 21:28-31 | Joyful Anticipation of the Second Advent | Vol.42 | pg. 601 | 12/20/96 |
| Lk. 21:33 | The Perpetuity of the Gospel | Vol.45 | pg. 397 | 8/20/99 |
| Lk. 22:1-39 | Exposition | Vol.43 | pg. 201 | 4/25/97 |
| Lk. 22:7-34 | Exposition | Vol.45 | pg. 214 | 4/30/99 |
| Lk. 22:7-54 | Exposition | Vol.54 | pg. 418 | 8/27/08 |
| Lk. 22:14-24 | Exposition | Vol.45 | pg. 430 | 9/3/99 |
| Lk. 22:14-46 | Exposition | Vol.48 | pg. 118 | 3/9/02 |
| Lk. 22:14 | Christ and His Table-companions | Vol.54 | pg. 409 | 8/27/08 |
| Lk. 22:19 | The Lord's Supper: A Remembrance of Jesus | Vol.34 | pg. 445 | 8/19/88 |
| | Attached Letter From Mr. Spurgeon | Vol.34 | pg. 456 | 8/19/88 |
| Lk. 22:27 | Servus Servorum | Vol.43 | pg. 193 | 4/25/97 |
| Lk. 22:32 | Peter After His Restoration | Vol.34 | pg. 409 | 1888 |
| Lk. 22:32 | Christ's Prayer For Peter | Vol.45 | pg. 205 | 4/30/99 |
| Lk. 22:39-65 | Exposition | Vol.42 | pg. 526 | 11/1/96 |
| Lk. 22:43 | The Weakened Christ Strengthened | Vol.48 | pg. 109 | 3/9/02 |
| Lk. 22:44 | Gethsemane | Vol. 9 | pg. 73 | 2/8/63 |
| Lk. 22:44 | The Agony In Gethsemane | Vol.20 | pg. 589 | 10/18/74 |
| Lk. 22:47-48 | The Betrayal | Vol. 9 | pg. 85 | 2/15/63 |
| Lk. 22:54-62 | Exposition | Vol.45 | pg. 214 | 4/30/99 |
| Lk. 22:54-62 | Exposition | Vol.48 | pg. 142 | 3/23/02 |
| Lk. 22:60-62 | Peter's Restoration | Vol.34 | pg. 397 | 7/22/88 |
| Lk. 22:61-62 | Peter's Fall and Restoration | Vol.48 | pg. 133 | 3/23/02 |

| | | | | |
|---|--|---------|---------|----------|
| Lk. 22:63-65 | Majesty In Misery | Vol. 49 | pg. 157 | 4/5/03 |
| Lk. 22:63-71 | Exposition | Vol. 49 | pg. 131 | 3/15/03 |
| Lk. 23:1 | Exposition | Vol. 49 | pg. 131 | 3/15/03 |
| Lk. 23:1-16 | Exposition | Vol. 62 | pg. 179 | 4/13/16 |
| Lk. 23:1-26 | Exposition | Vol. 59 | pg. 311 | 12/18/13 |
| Lk. 23:8-9 | Our Lord Before Herod | Vol. 28 | pg. 97 | 2/19/82 |
| Lk. 23:11 | Setting Jesus At Nought | Vol. 34 | pg. 601 | 11/11/88 |
| Lk. 23:13-28 | Exposition | Vol. 61 | pg. 168 | 4/8/15 |
| Lk. 23:18-25 | Exposition | Vol. 62 | pg. 239 | 4/18/16 |
| Lk. 23:26-33 | Exposition | Vol. 59 | pg. 311 | 6/26/13 |
| Lk. 23:27-31 | Wherefore Should I Weep? | Vol. 22 | pg. 589 | 10/22/76 |
| Lk. 23:27-49 | Exposition | Vol. 39 | pg. 274 | 6/4/93 |
| Lk. 23:27-49 | Exposition | Vol. 41 | pg. 597 | 12/15/95 |
| Lk. 23:32-34 | Exposition | Vol. 62 | pg. 239 | 5/18/16 |
| Lk. 23:34 | The First Cry From the Cross | Vol. 15 | pg. 589 | 10/24/69 |
| Lk. 23:34 | Christ's Plea For Ignorant Sinners | Vol. 38 | pg. 313 | 7/3/92 |
| Lk. 23:34 | Unknown Depths and Heights | Vol. 53 | pg. 577 | 11/28/07 |
| Lk. 23:34 | A Plea From the Cross | Vol. 63 | pg. 157 | 4/5/17 |
| Lk. 23:39-43 | Witnessing at the Cross | Vol. 59 | pg. 337 | 7/17/13 |
| Lk. 23:40-42 | The Dying Thief In a New Light | Vol. 32 | pg. 49 | 1/31/86 |
| Lk. 23:42-43 | The Believing Thief | Vol. 35 | pg. 181 | 4/7/89 |
| Lk. 23:46 | Our Lord's Last Cry From the Cross | Vol. 39 | pg. 265 | 6/4/93 |
| Lk. 23:46 & Psa. 31:6 & Acts 7:59 | The Last Words of Christ On the Cross | Vol. 45 | pg. 493 | 10/15/99 |
| Lk. 23:48 | Mourning At The Sight of the Crucified | Vol. 15 | pg. 145 | 3/14/69 |
| Lk. 24:1-53 | Exposition | Vol. 47 | pg. 154 | 3/31/01 |
| Lk. 24:1-53 | Exposition | Vol. 56 | pg. 166 | 3/31/10 |
| Lk. 24:5 | A Timely Expostulation | Vol. 60 | pg. 121 | 3/12/14 |
| Lk. 24:5-6 | "The Lord Is Risen Indeed" | Vol. 19 | pg. 205 | 4/13/73 |
| Lk. 24:13-35 | Exposition | Vol. 61 | pg. 491 | 10/14/15 |
| Lk. 24:13-48 | Exposition | Vol. 38 | pg. 514 | 10/23/92 |
| Lk. 24:16 | Jesus Near But Unrecognised | Vol. 20 | pg. 361 | 1874 |
| Lk. 24:25 | Folly or Unbelief | Vol. 33 | pg. 481 | 8/28/87 |
| Lk. 24:28-29 | The Blessed Guest Detained | Vol. 28 | pg. 217 | 4/23/82 |
| Lk. 24:32-44 | Exposition | Vol. 41 | pg. 179 | 4/14/95 |
| Lk. 24:36 | "Peace Be Unto You" | Vol. 61 | pg. 193 | 4/29/15 |
| Lk. 24:36-41 | The First Appearance of the Risen Lord to the Eleven | Vol. 33 | pg. 217 | 4/10/87 |
| Lk. 24:38 | Christ the Cure for Troubled Hearts | Vol. 41 | pg. 169 | 4/14/95 |
| Lk. 24:40 | The Wounds of Jesus | Vol. 5 | pg. 233 | 1/30/59 |
| Lk. 24:41 | Too Good To Be True! | Vol. 7 | pg. 617 | 12/15/61 |
| Lk. 24:41-45 | Joy Hindering Faith | Vol. 38 | pg. 505 | 10/23/92 |
| Lk. 24:47 | "Beginning at Jerusalem" | Vol. 29 | pg. 373 | 6/14/83 |
| Lk. 24:47 | "Repentance and Remission" | Vol. 56 | pg. 553 | 11/17/10 |
| Lk. 24:49-53 | Exposition | Vol. 51 | pg. 419 | 8/24/05 |
| Lk. 24:50-53 | Our Lord's Attitude In Ascension | Vol. 51 | pg. 397 | 8/17/05 |

JOHN

| | | | | |
|--|---------------------|---------|---------|---------|
| Jn. 1:1-34 | Exposition | Vol. 38 | pg. 273 | 6/5/92 |
| Jn. 1:1-24 | Exposition | Vol. 39 | pg. 490 | 10/8/93 |
| Jn. 1:1-34 | Exposition | Vol. 56 | pg. 538 | 11/3/10 |
| Jn. 1:7 & Mt. 4:18-19 & Mt. 10:1-2 | Peter's Three Calls | Vol. 12 | pg. 409 | 1866 |
| Jn. 1:11 | Ingratitude of Man | Vol. 18 | pg. 325 | 6/9/72 |

| | | | | |
|-----------------|---|---------|---------|----------|
| Jn. 1:11-13 | Faith and Its Attendant Privileges | Vol. 21 | pg. 25 | 1875 |
| Jn. 1:11-13 | The Simplicity and Sublimity of Salvation | Vol. 38 | pg. 265 | 6/5/92 |
| Jn. 1:12 | Open Heart For the Great Saviour | Vol. 12 | pg. 13 | 12/17/65 |
| Jn. 1:12 | The New Year's Guest | Vol. 30 | pg. 1 | 12/16/83 |
| Jn. 1:14 | The Glory of Christ — Beheld! | Vol. 7 | pg. 529 | 10/20/61 |
| Jn. 1:14, 17 | The True Tabernacle, and Its Glory of Grace & Peace | Vol. 31 | pg. 529 | 9/27/85 |
| Jn. 1:15-37 | Exposition | Vol. 49 | pg. 82 | 2/15/03 |
| Jn. 1:16 | The Fullness of Christ — Received | Vol. 7 | pg. 537 | 10/20/61 |
| Jn. 1:16 | The Fullness of Christ the Treasury of the Saints | Vol. 20 | pg. 229 | 4/19/74 |
| Jn. 1:16 | The Fullness of Jesus The Treasury of Saints | Vol. 15 | pg. 121 | 2/28/69 |
| Jn. 1:16 | The Fullness and the Filling | Vol. 63 | pg. 97 | 3/1/17 |
| Jn. 1:19-33 | Exposition | Vol. 61 | pg. 214 | 5/6/15 |
| Jn. 1:19-51 | Exposition | Vol. 45 | pg. 525 | 10/29/99 |
| Jn. 1:29-42 | Exposition | Vol. 60 | pg. 552 | 11/12/14 |
| Jn. 1:29-51 | Exposition | Vol. 40 | pg. 406 | 8/26/94 |
| Jn. 1:29 | “Behold the Lamb of God” | Vol. 33 | pg. 565 | 10/16/87 |
| Jn. 1:29 | The Baptist's Message | Vol. 45 | pg. 517 | 10/29/99 |
| Jn. 1:29 | “The Lamb of God” | Vol. 56 | pg. 529 | 11/3/10 |
| Jn. 1:35-36 | The Lamb of God In Scripture | Vol. 39 | pg. 481 | 10/8/93 |
| Jn. 1:36 | Behold the Lamb | Vol. 18 | pg. 385 | 7/14/72 |
| Jn. 1:37-51 | The First Five Disciples | Vol. 10 | pg. 277 | 5/15/64 |
| Jn. 1:39; 21:12 | Two Loving Invitations | Vol. 11 | pg. 313 | 1865 |
| Jn. 1:42 | Every-Day Usefulness | Vol. 15 | pg. 85 | 2/14/69 |
| Jn. 1:43-45 | Found By Jesus, And Finding Jesus | Vol. 40 | pg. 397 | 8/26/94 |
| Jn. 1:45 | Finding and Following Christ | Vol. 56 | pg. 565 | 11/24/10 |
| Jn. 1:45-51 | Nathanael and the Fig Tree | Vol. 16 | pg. 157 | 3/20/70 |
| Jn. 1:47 | Nathanael: or, The Man Needed For the Day | Vol. 35 | pg. 61 | 2/3/89 |
| Jn. 1:50 | Nathanael; or, The Ready Believer and His Reward | Vol. 34 | pg. 241 | 1888 |
| Jn. 1:50-51 | Greater Things Yet. Who Shall See Them? | Vol. 25 | pg. 325 | 6/8/79 |
| Jn. 2:1-11 | Exposition | Vol. 39 | pg. 346 | 7/16/93 |
| Jn. 2:5 | Obeying Christ's Orders | Vol. 39 | pg. 337 | 7/16/93 |
| Jn. 2:7 | The Waterpots At Cana | Vol. 26 | pg. 493 | 1880 |
| Jn. 2:9-10 | Satan's Banquet | Vol. 5 | pg. 1 | 11/28/58 |
| Jn. 2:9-10 | The Feast of the Lord | Vol. 5 | pg. 10 | 11/28/58 |
| Jn. 2:11 | The Beginning of Miracles Which Jesus Did | Vol. 36 | pg. 397 | 7/20/90 |
| Jn. 3:1-15 | Exposition | Vol. 56 | pg. 442 | 9/8/10 |
| Jn. 3:1-18 | Exposition | Vol. 39 | pg. 610 | 12/17/93 |
| Jn. 3:1-18 | Exposition | Vol. 46 | pg. 95 | 2/25/00 |
| Jn. 3:1-18 | Exposition | Vol. 53 | pg. 406 | 8/15/07 |
| Jn. 3:1-21 | Exposition | Vol. 54 | pg. 274 | 6/4/08 |
| Jn. 3:1-21 | Exposition | Vol. 61 | pg. 287 | 6/17/15 |
| Jn. 3:1-21 | Exposition | Vol. 54 | pg. 621 | 12/24/08 |
| Jn. 3:1-24 | Exposition | Vol. 42 | pg. 213 | 5/3/96 |
| Jn. 3:3 | Regeneration | Vol. 3 | pg. 185 | 5/3/57 |
| Jn. 3:5 | Jesus Christ's Idiom | Vol. 53 | pg. 385 | 8/15/07 |
| Jn. 3:7 | Every Man's Necessity | Vol. 25 | pg. 49 | 1879 |
| Jn. 3:7 | The Necessity of Regeneration | Vol. 54 | pg. 577 | 12/3/08 |
| Jn. 3:8 | The Holy Spirit Compared to the Wind | Vol. 11 | pg. 277 | 1865 |
| Jn. 3:8 | The Heavenly Wind | Vol. 23 | pg. 301 | 5/27/77 |
| Jn. 3:8 | The Spirit and the Wind | Vol. 35 | pg. 53 | 2/2/88 |
| Jn. 3:13-36 | Exposition | Vol. 61 | pg. 597 | 12/16/15 |
| Jn. 3:14 | The Mysteries of the Brazen Serpent | Vol. 3 | pg. 365 | 9/27/57 |
| Jn. 3:14-17 | Exposition | Vol. 46 | pg. 597 | 12/16/00 |
| Jn. 3:16 | Immeasurable Love | Vol. 31 | pg. 385 | 7/26/85 |
| Jn. 3:18 | None But Jesus — First Part AM Service | Vol. 7 | pg. 97 | 2/17/61 |
| Jn. 3:18 | None But Jesus — Second Part PM Service | Vol. 7 | pg. 113 | 2/17/61 |
| Jn. 3:18 | The Essence of the Gospel | Vol. 16 | pg. 673 | 12/4/70 |

| | | | | |
|----------------|---|---------|---------|----------|
| Jn. 3:22-36 | Exposition | Vol. 49 | pg. 82 | 2/15/03 |
| Jn. 3:33 | Christ's Testimony Received | Vol. 36 | pg. 433 | 8/10/90 |
| Jn. 3:36 | The Unbeliever's Unhappy Condition | Vol. 17 | pg. 529 | 9/24/71 |
| Jn. 4:1-42 | Exposition | Vol. 38 | pg. 490 | 2/9/92 |
| Jn. 4:1-32 | Exposition | Vol. 41 | pg. 357 | 7/28/95 |
| Jn. 4:1-29 | Exposition | Vol. 44 | pg. 237 | 5/15/98 |
| Jn. 4:1-34 | Exposition | Vol. 50 | pg. 406 | 8/18/04 |
| Jn. 4:1-39 | Exposition | Vol. 55 | pg. 129 | 3/11/09 |
| Jn. 4:1-42 | Exposition | Vol. 45 | pg. 250 | 5/21/99 |
| Jn. 4:6 | Jesus Sitting On the Well | Vol. 44 | pg. 229 | 5/15/98 |
| Jn. 4:7 | The Model Soul-winner | Vol. 41 | pg. 349 | 7/28/95 |
| Jn. 4:10 | Saving Knowledge | Vol. 13 | pg. 649 | 11/24/67 |
| Jn. 4:10 | Sychar's Sinner Saved | Vol. 38 | pg. 481 | 10/9/92 |
| Jn. 4:11 | The Source | Vol. 50 | pg. 397 | 8/18/04 |
| Jn. 4:14 | Life's Ever-springing Well | Vol. 15 | pg. 193 | 4/4/69 |
| Jn. 4:14 | Holy Water | Vol. 20 | pg. 625 | 11/8/74 |
| Jn. 4:15 | The Water of Life | Vol. 13 | pg. 505 | 1867 |
| Jn. 4:17-20 | The Samaritan Woman and Her Mission | Vol. 28 | pg. 493 | 9/10/82 |
| Jn. 4:23-24 | The Axe At the Root — Testimony Against Puseyite Idolatry | Vol. 12 | pg. 325 | 6/17/66 |
| Jn. 4:31-38 | Mysterious Meat | Vol. 32 | pg. 277 | 5/23/86 |
| Jn. 4:34 | A Golden Sentence | Vol. 55 | pg. 121 | 3/11/09 |
| Jn. 4:34 | Jesus About His Father's Business | Vol. 6 | pg. 125 | 3/4/60 |
| Jn. 4:35 | Fields White For Harvest | Vol. 12 | pg. 457 | 7/29/66 |
| Jn. 4:39-42 | Testimony and Experience | Vol. 18 | pg. 301 | 6/2/72 |
| Jn. 4:39-42 | How Faith Comes | Vol. 45 | pg. 241 | 5/21/99 |
| Jn. 4:46-53 | The Nobleman's Faith | Vol. 31 | pg. 565 | 10/11/85 |
| Jn. 4:48 | Characteristics of Faith | Vol. 6 | pg. 245 | 5/27/60 |
| Jn. 5:1-23 | Exposition | Vol. 38 | pg. 394 | 8/14/92 |
| Jn. 5:1-9 | Exposition | Vol. 44 | pg. 214 | 5/1/98 |
| Jn. 5:1-9 | Jesus At Bethesda; Or, Waiting Changed For Believers | Vol. 13 | pg. 193 | 4/7/67 |
| Jn. 5:5-9 | Impotence and Omnipotence | Vol. 38 | pg. 385 | 8/14/92 |
| Jn. 5:6 | A Singular But Needful Question | Vol. 16 | pg. 565 | 10/16/70 |
| Jn. 5:8 | The Hospital of Waiters Visited with the Gospel | Vol. 21 | pg. 13 | 1875 |
| Jn. 5:9 | Sabbath-work | Vol. 44 | pg. 205 | 5/1/98 |
| Jn. 5:11 | The Work of Grace the Warrant For Obedience | Vol. 25 | pg. 337 | 6/15/79 |
| Jn. 5:24-44 | Exposition | Vol. 42 | pg. 299 | 6/21/96 |
| Jn. 5:24; 6:47 | "Verily, Verily" | Vol. 28 | pg. 61 | 1/29/82 |
| Jn. 5:25 | The Soul's Awakening | Vol. 60 | pg. 25 | 1/15/14 |
| Jn. 5:28-29 | The Coming Resurrection | Vol. 15 | pg. 577 | 10/17/69 |
| Jn. 5:40 | Free Will — A Slave | Vol. 1 | pg. 395 | 12/2/55 |
| Jn. 5:40 | Unwillingness To Come To Christ | Vol. 22 | pg. 637 | 11/2/76 |
| Jn. 5:44 | Why Men Cannot Believe In Christ | Vol. 21 | pg. 409 | 1875 |
| Jn. 5:44 | Why Men Do Not Believe | Vol. 61 | pg. 277 | 6/17/15 |
| Jn. 6:1-14 | Exposition | Vol. 52 | pg. 382 | 8/2/06 |
| Jn. 6:1-21 | Exposition | Vol. 57 | pg. 274 | 6/8/11 |
| Jn. 6:1-41 | Exposition | Vol. 59 | pg. 213 | 5/1/13 |
| Jn. 6:6 | Jesus Knew What He Would Do | Vol. 27 | pg. 353 | 6/2/81 |
| Jn. 6:11 | The Lad's Loaves In the Lord's Hands | Vol. 37 | pg. 409 | 9/8/91 |
| Jn. 6:14-40 | Exposition | Vol. 51 | pg. 358 | 7/20/05 |
| Jn. 6:17 | Night, and Jesus Not There! | Vol. 51 | pg. 349 | 7/20/05 |
| Jn. 6:22-40 | Exposition | Vol. 40 | pg. 91 | 2/25/94 |
| Jn. 6:22-59 | Exposition | Vol. 56 | pg. 177 | 4/7/10 |
| Jn. 6:24 | Seeking For Jesus | Vol. 16 | pg. 469 | 8/21/70 |
| Jn. 6:25-51 | Exposition | Vol. 45 | pg. 45 | 1/22/99 |
| Jn. 6:29 | A Plain Answer To An Important Enquiry | Vol. 26 | pg. 93 | 1880 |
| Jn. 6:30-45 | Exposition | Vol. 52 | pg. 383 | 8/2/06 |
| Jn. 6:33 | Spiritual Religion | Vol. 46 | pg. 253 | 6/3/00 |

| | | | | |
|----------------|--|---------|---------|----------|
| Jn. 6:35 | Soul-satisfying Bread | Vol. 19 | pg. 277 | 5/18/73 |
| Jn. 6:37 | The Certainty and Freeness of Divine Grace | Vol. 10 | pg. 633 | 11/13/64 |
| Jn. 6:37 | High Doctrine and Broad Doctrine | Vol. 30 | pg. 49 | 1884 |
| Jn. 6:37 | All Comers To Christ Welcomed | Vol. 40 | pg. 85 | 2/25/94 |
| Jn. 6:37 | The Big Gates Wide Open | Vol. 51 | pg. 457 | 9/21/05 |
| Jn. 6:37 | No. 3,000; or, Come And Welcome | Vol. 52 | pg. 385 | 8/9/06 |
| Jn. 6:37 | The Last Message For the Year | Vol. 56 | pg. 625 | 12/29/10 |
| Jn. 6:39-40 | The Father's Will | Vol. 19 | pg. 537 | 1873 |
| Jn. 6:41-65 | Exposition | Vol. 46 | pg. 611 | 12/23/00 |
| Jn. 6:41-66 | Exposition | Vol. 60 | pg. 454 | 9/17/14 |
| Jn. 6:41-71 | Exposition | Vol. 40 | pg. 538 | 11/11/94 |
| Jn. 6:41-71 | Exposition | Vol. 43 | pg. 371 | 8/1/97 |
| Jn. 6:44 | Human Inability | Vol. 4 | pg. 137 | 3/7/58 |
| Jn. 6:44-45 | The Drawings of Divine Love | Vol. 40 | pg. 529 | 11/11/94 |
| Jn. 6:45 | Choice Teaching For the Chosen | Vol. 45 | pg. 37 | 1/22/99 |
| Jn. 6:47-48 | Feeding On the Bread of Life | Vol. 46 | pg. 601 | 12/23/00 |
| Jn. 6:48 | The Best Bread | Vol. 33 | pg. 25 | 1/16/87 |
| Jn. 6:53-56 | Truly Eating the Flesh of Jesus | Vol. 22 | pg. 205 | 4/9/76 |
| Jn. 6:55 | The Meat and Drink of the New Nature | Vol. 25 | pg. 109 | 1879 |
| Jn. 6:55 | The Soul's Meat and Drink | Vol. 56 | pg. 169 | 4/7/10 |
| Jn. 6:55 | Meat Indeed, and Drink Indeed | Vol. 60 | pg. 445 | 9/17/14 |
| Jn. 6:63 | A Blow For Puseyism | Vol. 11 | pg. 553 | 10/8/65 |
| Jn. 6:64 | The Search Warrant | Vol. 50 | pg. 409 | 8/25/04 |
| Jn. 6:66-69 | A Home Question and a Right Answer | Vol. 28 | pg. 109 | 2/5/82 |
| Jn. 6:67 | A Mournful Defection | Vol. 50 | pg. 601 | 12/15/04 |
| Jn. 6:67 | Absconding and Apostasy | Vol. 63 | pg. 133 | 3/22/17 |
| Jn. 6:67-68 | Cleaving To Christ | Vol. 56 | pg. 385 | 8/11/10 |
| Jn. 7:1-13 | Exposition | Vol. 47 | pg. 179 | 4/14/01 |
| Jn. 7:14-53 | Exposition | Vol. 47 | pg. 33 | 1/20/01 |
| Jn. 7:30-53 | Exposition | Vol. 52 | pg. 430 | 8/30/06 |
| Jn. 7:37 | The Preacher's Last Sermon For the Season | Vol. 31 | pg. 673 | 11/29/85 |
| Jn. 7:38; 16:7 | The Indwelling and Outflowing of the Holy Spirit | Vol. 28 | pg. 301 | 5/28/82 |
| Jn. 7:43 | Christ The Cause of Division | Vol. 47 | pg. 25 | 1/20/01 |
| Jn. 7:46 | The Unrivaled Eloquence of Jesus | Vol. 16 | pg. 517 | 9/18/70 |
| Jn. 7:53; 8:1 | A Vivid Contrast | Vol. 52 | pg. 421 | 8/30/06 |
| Jn. 7:53 | Exposition | Vol. 45 | pg. 420 | 8/27/99 |
| Jn. 8:1 | Exposition | Vol. 52 | pg. 430 | 8/30/06 |
| Jn. 8:1-11 | Exposition | Vol. 45 | pg. 420 | 8/27/99 |
| Jn. 8:12 | The Light of the World | Vol. 62 | pg. 493 | 10/19/16 |
| Jn. 8:12-45 | Exposition | Vol. 44 | pg. 130 | 3/13/98 |
| Jn. 8:28-59 | Exposition | Vol. 44 | pg. 405 | 8/21/98 |
| Jn. 8:29 | The Christian's Motto | Vol. 20 | pg. 181 | 3/22/74 |
| Jn. 8:29-59 | Exposition | Vol. 60 | pg. 213 | 4/30/14 |
| Jn. 8:30-32 | Believing On Jesus, and Its Counterfeits | Vol. 37 | pg. 109 | 2/22/91 |
| Jn. 8:31-59 | Exposition | Vol. 45 | pg. 598 | 12/10/99 |
| Jn. 8:36 | The Great Liberator | Vol. 10 | pg. 217 | 4/17/64 |
| Jn. 8:37 | Place For the Word | Vol. 44 | pg. 397 | 8/21/98 |
| Jn. 8:37-59 | Exposition [Revised Version] | Vol. 43 | pg. 299 | 6/20/97 |
| Jn. 8:38 | Universal Fatherhood, A Lie! | Vol. 44 | pg. 121 | 3/13/98 |
| Jn. 8:42 | Love To Jesus the Great Test | Vol. 21 | pg. 553 | 10/3/75 |
| Jn. 8:46 | Nominal Christians — Real Infidels | Vol. 9 | pg. 61 | 2/1/63 |
| Jn. 8:51-53 | The Man Who Shall Never See Death | Vol. 36 | pg. 565 | 10/19/90 |
| Jn. 8:56 | Seeing Christ's Day | Vol. 45 | pg. 589 | 12/10/99 |
| Jn. 9:1-7 | Exposition | Vol. 51 | pg. 480 | 9/28/05 |
| Jn. 9:1-38 | Exposition | Vol. 39 | pg. 250 | 5/21/93 |
| Jn. 9:1-38 | Exposition | Vol. 53 | pg. 154 | 3/21/07 |
| Jn. 9:1-14 | Exposition | Vol. 44 | pg. 214 | 5/1/98 |

| | | | | |
|---------------|---|--------|---------|----------|
| Jn. 9:1-41 | Exposition | Vol.46 | pg. 153 | 1/7/00 |
| Jn. 9:1-41 | Exposition | Vol.46 | pg. 9 | 4/1/00 |
| Jn. 9:1-41 | Exposition | Vol.55 | pg. 93 | 2/18/09 |
| Jn. 9:1-41 | Exposition | Vol.62 | pg. 525 | 11/2/16 |
| Jn. 9:3 | God's Works Made Manifest | Vol.39 | pg. 241 | 5/21/93 |
| Jn. 9:3-4 | The Blind Man's Eyes Opened; or Practical Christianity | Vol.29 | pg. 673 | 8/12/83 |
| Jn. 9:4 | Work | Vol.13 | pg. 337 | 3/21/67 |
| Jn. 9:4 | The Spur | Vol.16 | pg. 421 | 7/31/70 |
| Jn. 9:5-7 | The Blind Beggar of the Temple and His Wonderful Cure | Vol.33 | pg. 445 | 8/14/87 |
| Jn. 9:21 | Speak For Yourself. A Challenge! | Vol.24 | pg. 25 | 1878 |
| Jn. 9:25 | Simple But Sound | Vol.51 | pg. 469 | 9/28/05 |
| Jn. 9:31 | True and Not True | Vol.51 | pg. 409 | 8/24/05 |
| Jn. 9:32 | The Healing of One Born Blind | Vol.18 | pg. 445 | 8/11/72 |
| Jn. 9:35 | The Question of Questions | Vol.36 | pg. 229 | 5/4/90 |
| Jn. 9:35 | A Question For Thee | Vol.55 | pg. 85 | 2/18/09 |
| Jn. 9:35 | An All-important Question | Vol.52 | pg. 481 | 10/4/06 |
| Jn. 9:35-36 | The Essence of Simplicity | Vol.18 | pg. 721 | 12/29/72 |
| Jn. 9:35-38 | A Pressed Man Yielding To Christ | Vol.46 | pg. 133 | 3/25/00 |
| Jn. 9:39 | Sight For Those Who See Not | Vol.30 | pg. 481 | 9/14/84 |
| Jn. 10:1-18 | Exposition | Vol.58 | pg. 59 | 2/1/12 |
| Jn. 10:1-30 | Exposition | Vol.56 | pg. 153 | 3/24/10 |
| Jn. 10:1-30 | Exposition | Vol.58 | pg. 573 | 11/28/12 |
| Jn. 10:1-31 | Exposition | Vol.40 | pg. 213 | 5/6/94 |
| Jn. 10:3 | Personal and Effectual Calling | Vol.40 | pg. 193 | 5/6/94 |
| Jn. 10:9 | The Door | Vol.47 | pg. 529 | 11/10/01 |
| Jn. 10:9 | The Only Door | Vol.58 | pg. 49 | 2/1/12 |
| Jn. 10:10 | Life More Abundant | Vol.20 | pg. 1 | 1/4/74 |
| Jn. 10:11 | "Whose Goodness Faileth Never" | Vol.51 | pg. 37 | 1/19/05 |
| Jn. 10:14-15 | Our Own Dear Shepherd | Vol.32 | pg. 1 | 1/3/86 |
| Jn. 10:16 | Other Sheep and One Flock | Vol.29 | pg. 181 | 3/25/83 |
| Jn. 10:17 | The Father's Love to His Dying Son | Vol.35 | pg. 649 | 12/8/89 |
| Jn. 10:27 | The Sheep and Their Shepherd | Vol.17 | pg. 325 | 1871 |
| Jn. 10:27-30 | The Security of Believers; or, Sheep Who Shall Never Perish | Vol.35 | pg. 685 | 12/29/89 |
| Jn. 10:28 | Life Eternal | Vol.12 | pg. 697 | 1866 |
| Jn. 10:28 | Perseverance Without Presumption | Vol.18 | pg. 337 | 3/7/72 |
| Jn. 10:39-42 | A Cheering Incident at Bethabara | Vol.32 | pg. 553 | 10/10/86 |
| Jn. 10:39-42 | Jesus and His Forerunner | Vol.49 | pg. 73 | 2/15/03 |
| Jn. 11:1-26 | Exposition | Vol.59 | pg. 95 | 2/20/13 |
| Jn. 11:1-44 | Exposition | Vol.57 | pg. 69 | 2/9/11 |
| Jn. 11:3 | Beloved, and Yet Afflicted | Vol.26 | pg. 73 | 1880 |
| Jn. 11:14-15 | A Mystery! Saints Sorrowing and Jesus Glad! | Vol.10 | pg. 461 | 8/7/64 |
| Jn. 11:20 | Faith Seeing God's Glory | Vol.59 | pg. 85 | 2/20/13 |
| Jn. 11:22 | "Even Now" | Vol.38 | pg. 145 | 3/27/92 |
| Jn. 11:24-26 | "Though He Were Dead" | Vol.30 | pg. 493 | 9/14/84 |
| Jn. 11:26 | The Believer Catechized | Vol.26 | pg. 637 | 11/21/80 |
| Jn. 11:27-46 | Exposition | Vol.59 | pg.624 | 12/25/13 |
| Jn. 11:28 | The Master | Vol.20 | pg. 577 | 1874 |
| Jn. 11:28-32 | Exposition | Vol.61 | pg. 359 | 6/3/15 |
| Jn. 11:35 | "Jesus Wept" | Vol.35 | pg. 337 | 6/23/89 |
| Jn. 11:36 | "Oh, How He Loves!" | Vol.56 | pg. 601 | 12/15/10 |
| Jn. 11:37 | Might Have Been, or May Be | Vol.33 | pg. 53 | 1/30/87 |
| Jn. 11:37 | Could He Not? Ah! But He Would Not | Vol.60 | pg. 397 | 8/20/14 |
| Jn. 11:39, 44 | The Sphere of Instrumentality | Vol.18 | pg. 289 | 5/26/72 |
| Jn. 11:43-44 | Unbinding Lazarus | Vol.30 | pg. 217 | 4/20/84 |
| Jn. 11:43-44 | The Spiritual Resurrection | Vol.44 | pg. 49 | 1/30/98 |
| Jn. 11:45-57 | Exposition | Vol.61 | pg. 359 | 7/29/15 |
| Jn. 11:47 | The Great Miracle Worker | Vol.47 | pg. 337 | 7/21/01 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Jn. 12:1-7 | Exposition | Vol. 60 | pg. 216 | 4/30/14 |
| Jn. 12:1-8 | Exposition | Vol. 51 | pg. 444 | 3/16/05 |
| Jn. 12:1-43 | Exposition | Vol. 55 | pg. 596 | 12/9/09 |
| Jn. 12:3 | Concentration and Diffusion | Vol. 55 | pg. 589 | 12/9/09 |
| Jn. 12:12-36 | Exposition | Vol. 53 | pg. 58 | 1/24/07 |
| Jn. 12:19-43 | Exposition | Vol. 39 | pg. 598 | 12/10/93 |
| Jn. 12:20-41 | Exposition | Vol. 50 | pg. 130 | 3/10/04 |
| Jn. 12:20-50 | Exposition | Vol. 41 | pg. 238 | 5/19/95 |
| Jn. 12:20-50 | Exposition | Vol. 58 | pg. 34 | 1/18/12 |
| Jn. 12:23-24 | Christ's Death and Ours | Vol. 53 | pg. 49 | 1/24/07 |
| Jn. 12:26 | Christ's Servant — His Duty, and Reward | Vol. 8 | pg. 433 | 8/3/62 |
| Jn. 12:26 | The Rule and Reward of Serving Christ | Vol. 42 | pg. 37 | 1/26/96 |
| Jn. 12:26 | The Christian's Service and Honour | Vol. 45 | pg. 577 | 12/3/99 |
| Jn. 12:26 | Precepts and Promises | Vol. 50 | pg. 121 | 3/10/04 |
| Jn. 12:28 | A Golden Prayer | Vol. 24 | pg. 1 | 12/30/77 |
| Jn. 12:31-33 | The Crisis of This World | Vol. 39 | pg. 589 | 12/10/93 |
| Jn. 12:32 | The Great Attraction | Vol. 13 | pg. 565 | 10/13/67 |
| Jn. 12:32 | Christ Lifted Up | Vol. 3 | pg. 257 | 7/5/57 |
| Jn. 12:32-33 | The Marvelous Magnet | Vol. 29 | pg. 229 | 1883 |
| Jn. 12:36 | Despised Light Withdrawn | Vol. 41 | pg. 229 | 5/19/95 |
| Jn. 12:37-41 | Israel and Britain. A Note of Warning | Vol. 31 | pg. 313 | 6/7/85 |
| Jn. 12:37-50 | Exposition | Vol. 60 | pg. 609 | 12/17/14 |
| Jn. 13:1-17 | Exposition | Vol. 51 | pg. 251 | 5/18/05 |
| Jn. 13:1-19 | Exposition | Vol. 40 | pg. 430 | 9/9/94 |
| Jn. 13:1 | The Faithfulness of Jesus | Vol. 14 | pg. 265 | 5/10/68 |
| Jn. 13:1 | Love Stronger Than Death | Vol. 40 | pg. 421 | 9/9/94 |
| Jn. 13:3-5 | The Teaching of the Foot-washing | Vol. 25 | pg. 577 | 10/12/79 |
| Jn. 13:6 | Jesus Washing His Disciples' Feet | Vol. 11 | pg. 61 | 1/29/65 |
| Jn. 13:7 | The Unknown Ways of Love | Vol. 22 | pg. 265 | 5/14/76 |
| Jn. 13:8 | The Sine Qua Non | Vol. 16 | pg. 217 | 4/17/70 |
| Jn. 13:12 | Knowing and Doing | Vol. 59 | pg. 157 | 4/3/13 |
| Jn. 13:23-26 | "On His Breast" | Vol. 34 | pg. 613 | 11/18/88 |
| Jn. 13:34-35 | Christ's "New Commandment" | Vol. 51 | pg. 241 | 5/18/05 |
| Jn. 14:1-12 | Exposition | Vol. 47 | pg. 526 | 11/3/01 |
| Jn. 14:1-20 | Exposition | Vol. 62 | pg. 214 | 5/4/16 |
| Jn. 14:1-21 | Exposition | Vol. 46 | pg. 202 | 4/29/00 |
| Jn. 14:1-31 | Exposition | Vol. 43 | pg. 213 | 5/2/97 |
| Jn. 14:1-31 | Exposition | Vol. 54 | pg. 70 | 2/6/08 |
| Jn. 14:1-31 | Exposition | Vol. 58 | pg. 296 | 6/20/12 |
| Jn. 14:1-31 | Exposition | Vol. 59 | pg. 528 | 10/30/13 |
| Jn. 14:1 | Let Not Your Hearts Be Troubled | Vol. 13 | pg. 25 | 1/20/67 |
| Jn. 14:1-4 | "Let Not Your Heart Be Troubled" | Vol. 29 | pg. 517 | 9/23/83 |
| Jn. 14:2 | "A Prepared Place For a Prepared People" | Vol. 47 | pg. 517 | 11/3/01 |
| Jn. 14:5 | Self-sufficiency Slain | Vol. 6 | pg. 469 | 11/11/60 |
| Jn. 14:6 | The Personality of the Holy Ghost | Vol. 1 | pg. 25 | 1/21/55 |
| Jn. 14:6 | The Way To God | Vol. 5 | pg. 161 | 3/27/59 |
| Jn. 14:6 | The Way | Vol. 16 | pg. 409 | 7/24/70 |
| Jn. 14:6 | Jesus The Way | Vol. 51 | pg. 265 | 6/1/05 |
| Jn. 14:6 | The Only Road | Vol. 62 | pg. 613 | 12/28/16 |
| Jn. 14:6 | The Way To God | Vol. 5 | pg. 161 | 3/27/59 |
| Jn. 14:9 | Chiding and Cheering | Vol. 60 | pg. 517 | 10/29/14 |
| Jn. 14:14-15 | "Honey In the Mouth" | Vol. 37 | pg. 373 | 7/19/91 |
| Jn. 14:15 | Love's Law and Life | Vol. 32 | pg. 649 | 12/5/86 |
| Jn. 14:15-31 | Exposition | Vol. 50 | pg. 383 | 8/4/04 |
| Jn. 14:15-31 | Exposition | Vol. 51 | pg. 455 | 9/14/05 |
| Jn. 14:15-31 | Exposition | Vol. 57 | pg. 502 | 10/19/11 |
| Jn. 14:16 | The Paraclete | Vol. 18 | pg. 553 | 10/6/72 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Jn. 14:17 | The Saint and the Spirit | Vol. 13 | pg. 313 | 6/9/67 |
| Jn. 14:17 | Intimate Knowledge of the Holy Spirit | Vol. 35 | pg. 133 | 3/10/89 |
| Jn. 14:18 | The Believer Not An Orphan | Vol. 52 | pg. 265 | 5/31/06 |
| Jn. 14:19 | Life In Christ | Vol. 17 | pg. 1 | 1/1/71 |
| Jn. 14:19 | Sharing Christ's Life | Vol. 60 | pg. 169 | 4/9/14 |
| Jn. 14:19 | Seeing Jesus | Vol. 61 | pg. 37 | 1/28/15 |
| Jn. 14:21-31 | Exposition | Vol. 62 | pg. 324 | 7/6/16 |
| Jn. 14:22 | Christ Manifesting Himself To His People | Vol. 1 | pg. 221 | 6/10/55 |
| Jn. 14:23 | A Blessed Gospel Chain | Vol. 50 | pg. 373 | 8/4/04 |
| Jn. 14:24-26 | The Private Tutor | Vol. 31 | pg. 289 | 5/24/85 |
| Jn. 14:26 | The Comforter | Vol. 1 | pg. 33 | 1/21/55 |
| Jn. 14:26 | The Great Teacher and Remembrancer | Vol. 59 | pg. 217 | 5/8/13 |
| Jn. 14:26 | The Teaching of the Holy Ghost | Vol. 6 | pg. 229 | 5/13/60 |
| Jn. 14:27 | The Cause and Effect of Heart Trouble | Vol. 54 | pg. 37 | 1/23/08 |
| Jn. 14:27 | The Best of Masters | Vol. 5 | pg. 177 | 4/10/59 |
| Jn. 14:27 | Spiritual Peace | Vol. 6 | pg. 109 | 2/19/60 |
| Jn. 14:28 | Love's Transformations: A Communion Meditation | Vol. 31 | pg. 634 | 9/4/81 |
| Jn. 15:1-8 | Exposition | Vol. 48 | pg. 94 | 2/23/02 |
| Jn. 15:1-11 | Exposition | Vol. 47 | pg. 95 | 2/24/01 |
| Jn. 15:1-11 | Exposition | Vol. 51 | pg. 239 | 5/11/05 |
| Jn. 15:1-17 | Exposition | Vol. 61 | pg. 574 | 12/2/15 |
| Jn. 15:1-27 | Exposition | Vol. 41 | pg. 610 | 12/22/95 |
| Jn. 15:1-27 | Exposition | Vol. 52 | pg. 273 | 5/31/06 |
| Jn. 15:2 | A Sharp Knife for the Vine-branches | Vol. 13 | pg. 553 | 10/6/67 |
| Jn. 15:5 | Without Christ — Nothing | Vol. 27 | pg. 593 | 10/23/81 |
| Jn. 15:7 | The Secret of Power In Prayer | Vol. 34 | pg. 13 | 1/8/88 |
| Jn. 15:9 | Love At Its Utmost | Vol. 33 | pg. 505 | 9/11/87 |
| Jn. 15:9 | Cheering Words | Vol. 41 | pg. 601 | 12/22/95 |
| Jn. 15:9-27 | Exposition | Vol. 45 | pg. 503 | 6/18/99 |
| Jn. 15:9-27 | Exposition | Vol. 45 | pg. 299 | 12/3/99 |
| Jn. 15:11 | Christ's Joy and Ours | Vol. 51 | pg. 229 | 5/11/05 |
| Jn. 15:12-27 | Exposition | Vol. 47 | pg. 24 | 1/13/01 |
| Jn. 15:13 | Love's Crowning Deed | Vol. 19 | pg. 469 | 8/24/73 |
| Jn. 15:13 | One Aspect of Christ's Death | Vol. 52 | pg. 217 | 5/3/06 |
| Jn. 15:14 | The Friends of Jesus | Vol. 26 | pg. 445 | 8/4/80 |
| Jn. 15:14 | Friendship's Guide | Vol. 60 | pg. 601 | 12/17/14 |
| Jn. 15:1-8 | Exposition | Vol. 45 | pg. 503 | 10/15/99 |
| Jn. 15:22 | Human Responsibility | Vol. 4 | pg. 233 | 5/16/58 |
| Jn. 15:25 | Hatred Without Cause | Vol. 2 | pg. 281 | 6/29/56 |
| Jn. 15:27 | Christ's Past and Present Witnesses | Vol. 47 | pg. 13 | 1/13/01 |
| Jn. 16:1-14 | Exposition | Vol. 55 | pg. 143 | 3/17/09 |
| Jn. 16:1-16 | Exposition | Vol. 40 | pg. 490 | 10/14/94 |
| Jn. 16:1-20 | Exposition | Vol. 39 | pg. 226 | 5/7/93 |
| Jn. 16:1-22 | Exposition | Vol. 53 | pg. 394 | 8/8/07 |
| Jn. 16:1-33 | Exposition | Vol. 50 | pg. 526 | 10/27/04 |
| Jn. 16:1-33 | Exposition | Vol. 61 | pg. 261 | 6/3/15 |
| Jn. 16:7 | The Superlative Excellence of the Holy Spirit | Vol. 10 | pg. 329 | 6/12/64 |
| Jn. 16:8-11 | The Holy Spirit's Threefold Conviction of Men | Vol. 29 | pg. 121 | 2/25/83 |
| Jn. 16:13 | The Holy Ghost — The Great Teacher | Vol. 1 | pg. 379 | 11/18/55 |
| Jn. 16:14 | The Holy Spirit Glorifying Christ | Vol. 8 | pg. 457 | 8/17/62 |
| Jn. 16:14 | The Holy Spirit Glorifying Christ | Vol. 50 | pg. 529 | 10/27/04 |
| Jn. 16:14 | The Spirit's Office Towards Disciples | Vol. 53 | pg. 505 | 10/17/07 |
| Jn. 16:14 | A Promise and Precedent | Vol. 55 | pg. 25 | 1/14/09 |
| Jn. 16:14-15 | The Holy Spirit's Chief Office | Vol. 40 | pg. 481 | 10/14/94 |
| Jn. 16:16-33 | Exposition | Vol. 38 | pg. 418 | 8/28/92 |
| Jn. 16:16-33 | Exposition | Vol. 43 | pg. 333 | 7/11/97 |
| Jn. 16:20 | A Wonderful Transformation | Vol. 52 | pg. 181 | 4/12/06 |

| | | | | |
|--------------------------------|---|---------|---------|----------|
| Jn. 16:20-22 | Sorrow At The Cross Turned Into Joy | Vol. 24 | pg. 613 | 11/3/78 |
| Jn. 16:22 | Joy In Place of Sorrow | Vol. 43 | pg. 325 | 7/11/97 |
| Jn. 16:26-27 | “Pray, Always Pray” | Vol. 48 | pg. 481 | 10/12/02 |
| Jn. 16:31-32 | Alone, Yet <i>Not</i> Alone | Vol. 38 | pg. 409 | 8/28/92 |
| Jn. 16:31-32 | Christ’s Loneliness and Ours | Vol. 53 | pg. 385 | 8/8/07 |
| Jn. 16:33 | Christ, The Overcomer of the World | Vol. 22 | pg. 673 | 12/3/76 |
| Jn. 16:33 | Sweet Peace For Tried Believers | Vol. 33 | pg. 649 | 12/4/87 |
| | A Postscript To the Sermon From Mr. Spurgeon | Vol. 33 | pg. 660 | 12/4/87 |
| Jn. 16:33 | Good Cheer From Christ’s Victory Over the World | Vol. 58 | pg. 25 | 1/18/12 |
| Jn. 17:1-12 | Exposition | Vol. 40 | pg. 322 | 7/8/94 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 40 | pg. 418 | 4/8/94 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 39 | pg. 514 | 10/22/93 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 42 | pg. 46 | 1/26/96 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 42 | pg. 454 | 9/20/96 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 45 | pg. 163 | 4/2/99 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 49 | pg. 118 | 3/8/03 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 55 | pg. 320 | 7/1/09 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 57 | pg. 597 | 12/14/11 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 61 | pg. 202 | 4/29/15 |
| Jn. 17:1-26 | Exposition | Vol. 62 | pg. 81 | 2/17/16 |
| Jn. 17:1 | The Son Glorified by the Father and the Father Glorified By the Son | Vol. 25 | pg. 163 | 1879 |
| Jn. 17:2 | General and Yet Particular | Vol. 10 | pg. 229 | 4/24/64 |
| Jn. 17:3 | Eternal Life! | Vol. 41 | pg. 25 | 1/20/95 |
| 1 Jn. 5:20-21 | | | | |
| Jn. 17:9-10 | Christ’s Pastoral Prayer for His People | Vol. 39 | pg. 505 | 10/22/93 |
| Jn. 17:11-12 | Prospect — ”He Will Keep” | Vol. 32 | pg. 69 | 1886 |
| Jn. 17:15 | Christ’s Prayer for His People | Vol. 1 | pg. 355 | 10/21/55 |
| Jn. 17:15 | Christ’s Negative and Positive Prayer | Vol. 40 | pg. 157 | 4/8/94 |
| Jn. 17:15 | The Preservation of Christians In the World | Vol. 46 | pg. 565 | 12/2/00 |
| Jn. 17:15-26 | Exposition | Vol. 40 | pg. 418 | 9/2/94 |
| Jn. 17:16 | The Character of Christ’s People | Vol. 2 | pg. 193 | 11/22/55 |
| Jn. 17:17 | Our Lord’s Prayer For His People’s Sanctification | Vol. 32 | pg. 145 | 3/7/86 |
| Jn. 17:18 | Believers Sent By Christ, As Christ Is Sent By The Father | Vol. 36 | pg. 265 | 5/11/90 |
| Jn. 17:20 | Christ’s Prayer For Believers | Vol. 55 | pg. 97 | 2/25/09 |
| Jn. 17:20-21 | Unity In Christ | Vol. 12 | pg. 1 | 1/7/66 |
| Jn. 17:22-23 | The Glory, Unity, and Triumph of the Church | Vol. 25 | pg. 253 | 5/4/79 |
| Jn. 17:24 | Why They Leave Us | Vol. 32 | pg. 169 | 3/21/86 |
| Jn. 17:24 | The Redeemer’s Prayer | Vol. 4 | pg. 185 | 4/18/58 |
| Jn. 17:24 & Mt. 26:39 | “I Will;” Yet, “Not As I Will” | Vol. 40 | pg. 409 | 9/2/94 |
| Jn. 17:25-26 | The Righteous Father Known and Loved | Vol. 23 | pg. 565 | 10/14/77 |
| Jn. 17:26 | “Love and I”—A Mystery | Vol. 28 | pg. 361 | 7/2/82 |
| Jn. 18:1-9 | Exposition | Vol. 45 | pg. 163 | 4/2/99 |
| Jn. 18:1-9 | Exposition | Vol. 55 | pg. 320 | 7/1/09 |
| Jn. 18:1-14 | Exposition | Vol. 40 | pg. 322 | 7/8/94 |
| Jn. 18:1-27 | Exposition | Vol. 56 | pg. 45 | 1/20/10 |
| Jn. 18:1-2 | Jesus In Gethsemane | Vol. 48 | pg. 85 | 2/23/02 |
| Jn. 18:8 | Christ’s Care of His Disciples | Vol. 45 | pg. 157 | 4/2/99 |
| Jn. 18:8-9 | The Captive Saviour Freeing His People | Vol. 12 | pg. 649 | 11/25/66 |
| Jn. 18:8-9 | The Living Care of the Dying Christ | Vol. 40 | pg. 313 | 7/8/94 |
| Jn. 18:12-13 & Jn. 18:19-23 | Christ Before Annas | Vol. 49 | pg. 97 | 3/1/03 |
| Jn. 18:12-14 | Exposition | Vol. 49 | pg. 131 | 3/15/03 |
| Jn. 18:12-27 | Exposition | Vol. 56 | pg. 359 | 7/21/10 |
| Jn. 18:15-18 | Exposition | Vol. 47 | pg. 335 | 7/14/01 |
| Jn. 18:15-18 | Exposition | Vol. 48 | pg. 142 | 3/23/02 |
| Jn. 18:18 | A Sermon For A Winter’s Evening | Vol. 56 | pg. 37 | 1/20/10 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Jn. 18:19-24 | Exposition | Vol. 49 | pg. 131 | 3/15/03 |
| Jn. 18:24 | Christ In Bonds | Vol. 49 | pg. 121 | 3/15/03 |
| Jn. 18:25 | Secret Disciples Encouraged | Vol. 56 | pg. 349 | 7/21/10 |
| Jn. 18:25-27 | Exposition | Vol. 47 | pg. 335 | 7/14/01 |
| Jn. 18:25-27 | Exposition | Vol. 48 | pg. 142 | 3/23/02 |
| Jn. 18:26 | “In the Garden With Him” | Vol. 35 | pg. 517 | 8/8/89 |
| Jn. 18:28-38 | Exposition | Vol. 49 | pg. 154 | 3/29/03 |
| Jn. 18:28-40 | Exposition | Vol. 49 | pg. 178 | 4/12/03 |
| Jn. 18:34 | Second-hand | Vol. 45 | pg. 253 | 5/28/99 |
| Jn. 18:37 | Jesus, The King of Truth | Vol. 18 | pg. 697 | 12/19/72 |
| Jn. 18:37 | The King In Pilate’s Hall | Vol. 49 | pg. 169 | 4/12/03 |
| Jn. 18:38 | Our Lord’s First Appearance Before Pilate | Vol. 28 | pg. 85 | 2/12/82 |
| Jn. 18:40 | Barabbas Preferred to Jesus | Vol. 10 | pg. 585 | 10/16/64 |
| Jn. 19:1-16 | Exposition | Vol. 61 | pg. 215 | 5/6/15 |
| Jn. 19:1-37 | Exposition | Vol. 54 | pg. 610 | 12/17/08 |
| Jn. 19:14 | Ecce Rex | Vol. 23 | pg. 265 | 5/6/77 |
| Jn. 19:14-37 | Exposition | Vol. 57 | pg. 585 | 12/7/11 |
| Jn. 19:16 | The Procession of Sorrow | Vol. 9 | pg. 121 | 3/1/63 |
| Jn. 19:19 | Spiritual Sight and Eternal Life | Vol. 51 | pg. 445 | 9/14/05 |
| Jn. 19:19 | “The King of the Jews” | Vol. 54 | pg. 601 | 12/17/08 |
| Jn. 19:23-37 | Exposition | Vol. 58 | pg. 347 | 7/18/12 |
| Jn. 19:25-30 | Exposition | Vol. 38 | pg. 322 | 7/3/92 |
| Jn. 19:28 | The Shortest of the Seven Cries | Vol. 24 | pg. 217 | 4/14/78 |
| Jn. 19:28 | The Saviour’s Thirst | Vol. 59 | pg. 601 | 12/18/13 |
| Jn. 19:30 | Christ’s Finished Work — (Rev. Octavius Winslow) | Vol. 7 | pg. 243 | 4/4/61 |
| Jn. 19:30 | “It Is Finished!” | Vol. 7 | pg. 585 | 12/1/61 |
| Jn. 19:30 | Christ’s Dying Word For His Church | Vol. 40 | pg. 25 | 1/21/94 |
| Jn. 19:31-37 | On the Cross After Death | Vol. 33 | pg. 193 | 4/3/87 |
| Jn. 19:32-37 | The Pierced Heart of Jesus | Vol. 63 | pg. 169 | 4/12/17 |
| Jn. 19:34 | The Water and the Blood | Vol. 58 | pg. 337 | 7/18/12 |
| Jn. 19:38-42 | Exposition | Vol. 40 | pg. 586 | 12/9/94 |
| Jn. 19:38-42 | A Royal Funeral | Vol. 40 | pg. 577 | 12/9/94 |
| Jn. 20:1-18 | Exposition | Vol. 53 | pg. 573 | 11/21/07 |
| Jn. 20:10-16 | Magdalene At The Sepulchre: An Instructive Scene | Vol. 35 | pg. 673 | 12/22/89 |
| Jn. 20:11-29 | Exposition | Vol. 42 | pg. 358 | 7/26/96 |
| Jn. 20:15 | “Supposing Him To be the Gardener” | Vol. 29 | pg. 13 | 12/31/82 |
| Jn. 20:15 | A Handkerchief | Vol. 51 | pg. 481 | 10/5/05 |
| Jn. 20:17 | Noli Me Tangere | Vol. 44 | pg. 133 | 3/20/98 |
| Jn. 20:17 | Christ’s Manifestation To Mary Magdalene | Vol. 47 | pg. 301 | 6/30/01 |
| Jn. 20:18-31 | Exposition | Vol. 62 | pg. 588 | 12/7/16 |
| Jn. 20:19 | Jesus In Our Midst | Vol. 21 | pg. 517 | 9/12/75 |
| Jn. 20:19-31 | Exposition | Vol. 47 | pg. 166 | 4/7/01 |
| Jn. 20:27-28 | A Memorable Interview | Vol. 62 | pg. 577 | 12/7/16 |
| Jn. 20:28 | “My Lord and My God” | Vol. 30 | pg. 205 | 4/13/84 |
| Jn. 20:27 | The Evidence of Our Lord’s Wounds | Vol. 34 | pg. 713 | 12/2/77 |
| Jn. 20:29 | Faith Without Sight | Vol. 47 | pg. 157 | 4/7/01 |
| Jn. 20:30-31 | The Main Matter | Vol. 27 | pg. 653 | 11/6/81 |
| Jn. 21:1-25 | Exposition | Vol. 53 | pg. 454 | 9/12/07 |
| Jn. 21:1-25 | Exposition | Vol. 55 | pg. 262 | 5/27/09 |
| Jn. 21:1-25 | Exposition | Vol. 62 | pg. 381 | 8/10/16 |
| Jn. 21:7 | The Power of Christ’s Presence | Vol. 55 | pg. 253 | 5/27/09 |
| Jn. 21:7-8 | Visits From the Lord | Vol. 61 | pg. 481 | 10/14/15 |
| Jn. 21:12 | Breakfast With Jesus | Vol. 45 | pg. 109 | 2/24/89 |
| Jn. 21:15 | “Feed My Lambs:” A Sabbath-School Sermon | Vol. 28 | pg. 565 | 10/15/82 |
| Jn. 21:15-17 | Lovest Thou Me? | Vol. 3 | pg. 81 | 9/7/56 |
| Jn. 21:16 | “Lovest Thou Me?” | Vol. 22 | pg. 121 | 2/27/76 |
| Jn. 21:16 | “Feed My Sheep” | Vol. 56 | pg. 397 | 8/18/10 |

| | | | | |
|-----------|-----------------------------------|---------|---------|---------|
| Jn. 21:17 | Comfort From Christ's Omniscience | Vol. 46 | pg. 157 | 4/8/00 |
| Jn. 21:17 | "Do I Love The Lord or No?" | Vol. 62 | pg. 373 | 8/10/16 |
| Jn. 21:20 | "The Disciple Whom Jesus Loved" | Vol. 26 | pg. 301 | 5/23/80 |
| Jn. 21:22 | Following Christ | Vol. 53 | pg. 445 | 9/12/07 |

ACTS

| | | | | |
|----------------|--|---------|---------|----------|
| Acts 1:1-12 | Exposition | Vol. 51 | pg. 419 | 8/24/05 |
| Acts 1:6-8 | Witnessing Better Than Knowing The Future | Vol. 39 | pg. 493 | 10/15/93 |
| Acts 1:10-11 | The Ascension and the Second Advent Practically Considered | Vol. 31 | pg. 13 | 12/28/84 |
| Acts 1:14 | Prayer Meetings | Vol. 60 | pg. 409 | 8/27/14 |
| Acts 2:1-21 | Expectation | Vol. 56 | pg. 575 | 11/24/10 |
| Acts 2:1-42 | Exposition | Vol. 44 | pg. 429 | 9/4/98 |
| Acts 2:1-47 | Exposition | Vol. 47 | pg. 58 | 2/3/01 |
| Acts 2:1 | Pentecost | Vol. 30 | pg. 301 | 6/1/84 |
| Acts 2:1-4 | Pentecost | Vol. 9 | pg. 289 | 5/24/63 |
| Acts 2:2-4 | The Pentecostal Wind and Fire | Vol. 27 | pg. 521 | 9/18/81 |
| Acts 2:14-43 | Exposition | Vol. 54 | pg. 405 | 8/20/08 |
| Acts 2:17 | A Young Man's Vision | Vol. 14 | pg. 217 | 4/16/68 |
| Acts 2:24 | Bonds Which Could Not Hold | Vol. 47 | pg. 49 | 2/3/01 |
| Acts 2:36-37 | "Pricked In Their Heart" | Vol. 35 | pg. 469 | 9/1/89 |
| Acts 2:36-47 | Exposition | Vol. 56 | pg. 563 | 11/17/10 |
| Acts 2:37 | Heart Piercing | Vol. 54 | pg. 253 | 5/28/08 |
| Acts 2:39 | A Far-reaching Promise | Vol. 44 | pg. 421 | 9/4/98 |
| Acts 2:47 | Additions to the Church | Vol. 20 | pg. 205 | 4/5/74 |
| Acts 3:1-21 | Exposition | Vol. 44 | pg. 502 | 10/16/98 |
| Acts 3:11-26 | Exposition | Vol. 45 | pg. 310 | 6/25/99 |
| Acts 3:15 | The Prince of Life | Vol. 36 | pg. 205 | 4/20/90 |
| Acts 3:16 | The Power of Christ's Name | Vol. 44 | pg. 493 | 10/16/98 |
| Acts 3:19 | Apostolic Exhortation | Vol. 14 | pg. 193 | 4/5/68 |
| Acts 4:1-4 | Exposition | Vol. 45 | pg. 310 | 6/25/99 |
| Acts 4:8-33 | Exposition | Vol. 60 | pg. 419 | 8/27/14 |
| Acts 4:12 | The Way of Salvation | Vol. 4 | pg. 353 | 8/15/58 |
| Acts 4:13 | Christ's People Imitators of Him | Vol. 1 | pg. 157 | 4/29/55 |
| Acts 4:30 | The Holy Child, Jesus | Vol. 9 | pg. 697 | 12/20/63 |
| Acts 5:19-20 | The Charge of the Angel | Vol. 34 | pg. 373 | 7/8/88 |
| Acts 5:31 | A Prince And A Saviour | Vol. 22 | pg. 361 | 6/25/76 |
| Acts 5:31 | The Royal Saviour | Vol. 56 | pg. 613 | 12/22/10 |
| Acts 5:42 | The First Sermon In The Tabernacle | Vol. 7 | pg. 169 | 3/25/61 |
| | Opening Service of the Metropolitan Tabernacle | Vol. 7 | pg. 168 | 3/18/61 |
| | Opening Services, Meeting of the Contributors | Vol. 7 | pg. 184 | 3/26/61 |
| | Meeting of the Neighbouring Churches | Vol. 7 | pg. 193 | 3/27/61 |
| Acts 6:7 | Good Earnests of Great Success | Vol. 14 | pg. 169 | 1/12/68 |
| Acts 7:8 | The World Turned Upside Down | Vol. 4 | pg. 225 | 5/9/58 |
| Acts 7:13 | The Second Time | Vol. 54 | pg. 277 | 6/11/08 |
| Acts 7:14-43 | Exposition | Vol. 45 | pg. 346 | 7/16/99 |
| Acts 7:55-56 | Stephen's Martyrdom | Vol. 13 | pg. 145 | 3/17/67 |
| Acts 7:58 | Stephen and Saul | Vol. 51 | pg. 385 | 8/10/05 |
| Acts 7:59-60 | Stephen's Death | Vol. 20 | pg. 301 | 5/24/74 |
| Acts 8:1-40 | Exposition | Vol. 40 | pg. 129 | 3/18/94 |
| Acts 8:4-40 | Exposition | Vol. 47 | pg. 359 | 7/28/01 |
| Acts 8:4-5, 35 | All At It | Vol. 34 | pg. 517 | 9/16/88 |
| Acts 8:8 | Great Joy in the City | Vol. 40 | pg. 121 | 3/18/94 |
| Acts 8:30-33 | Understandest Thou What Thou Readest? | Vol. 30 | pg. 409 | 5/11/84 |
| Acts 8:37 | Who Should Be Baptized! | Vol. 47 | pg. 349 | 7/28/01 |
| Acts 8:46-48 | Further Afield | Vol. 34 | pg. 529 | 9/23/88 |

| | | | | |
|---------------|---|---------|---------|----------|
| Acts 9:1-22 | Exposition | Vol. 56 | pg. 334 | 7/7/10 |
| Acts 9:1-22 | Exposition | Vol. 62 | pg. 275 | 6/8/16 |
| Acts 9:1-31 | Exposition | Vol. 54 | pg. 142 | 3/19/08 |
| Acts 9:5 | Kicking Against the Pricks | Vol. 12 | pg. 495 | 9/9/66 |
| Acts 9:5-6 | Pressing Questions of an Awakened Mind | Vol. 26 | pg. 85 | 1880 |
| Acts 9:10 | The Good Ananias: A Lesson For Believers | Vol. 31 | pg. 241 | 4/26/85 |
| Acts 9:11 | Paul's First Prayer | Vol. 1 | pg. 117 | 3/25/55 |
| Acts 9:11 | "Behold, He Prayeth" | Vol. 31 | pg. 505 | 9/20/85 |
| Acts 9:13-16 | An Encouraging Lesson From Paul's Conversion | Vol. 16 | pg. 433 | 8/7/70 |
| Acts 9:18 | Scales Taken From the Eyes | Vol. 56 | pg. 325 | 7/7/10 |
| Acts 9:32-35 | Aeneas | Vol. 22 | pg. 529 | 7/16/76 |
| Acts 10:14 | Peter's Blunder: A Lesson To Ourselves | Vol. 31 | pg. 85 | 2/22/85 |
| Acts 10:36 | Negotiations for Peace | Vol. 16 | pg. 529 | 9/18/70 |
| Acts 10:38 | The Great Itinerant | Vol. 11 | pg. 577 | 10/22/65 |
| Acts 10:38 | The Model Home Mission & and the Model Home Missionary | Vol. 16 | pg. 253 | 4/14/70 |
| Acts 10:42 | Jesus, the Judge | Vol. 25 | pg. 301 | 5/25/79 |
| Acts 10:42-43 | The Mediator, — Judge and Saviour | Vol. 26 | pg. 313 | 5/30/80 |
| Acts 10:44 | The Outpouring of the Holy Spirit | Vol. 4 | pg. 289 | 6/20/58 |
| Acts 11:21 | Conversions Desired | Vol. 22 | pg. 133 | 3/5/76 |
| Acts 11:18 | Repentance Unto Life | Vol. 1 | pg. 331 | 9/23/55 |
| Acts 12:9 | No Illusion | Vol. 9 | pg. 469 | 1863 |
| Acts 12:18 | What Was Become of Peter? | Vol. 54 | pg. 529 | 11/12/08 |
| Acts 12:12 | The Special Prayer-meeting | Vol. 21 | pg. 433 | 7/25/75 |
| Acts 13:12 | Two Pauls and A Blinded Sorcerer | Vol. 30 | pg. 277 | 5/18/84 |
| Acts 13:26 | "To You" | Vol. 50 | pg. 421 | 9/1/04 |
| Acts 13:13-49 | Exposition | Vol. 40 | pg. 298 | 6/24/94 |
| Acts 13:13-49 | Exposition | Vol. 50 | pg. 430 | 9/1/04 |
| Acts 13:14-42 | Exposition | Vol. 63 | pg. 35 | 1/18/17 |
| Acts 13:34 | "The Sure Mercies of David" | Vol. 40 | pg. 289 | 6/24/94 |
| Acts 13:36 | His Own Funeral Sermon | Vol. 38 | pg. 73 | 2/14/92 |
| Acts 13:38 | The True Aim of Preaching | Vol. 56 | pg. 157 | 3/31/10 |
| Acts 13:38-39 | Simple Fact and Simple Faith | Vol. 63 | pg. 25 | 1/18/17 |
| Acts 13:49 | Gospel Missions | Vol. 2 | pg. 177 | 4/27/56 |
| Acts 14:9-10 | The Cripple At Lystra | Vol. 10 | pg. 145 | 1864 |
| Acts 15:9 | Faith Purifying The Heart | Vol. 23 | pg. 217 | 4/15/77 |
| Acts 15:11 | Grace — The One Way of Salvation | Vol. 13 | pg. 445 | 1867 |
| Acts 16:9-34 | Exposition | Vol. 38 | pg. 466 | 9/25/92 |
| Acts 16:9 | The Cry of the Heathen | Vol. 4 | pg. 193 | 4/25/58 |
| Acts 16:13-14 | Lessons From Lydia's Conversions | Vol. 9 | pg. 685 | 12/13/63 |
| Acts 16:14 | Lydia, the First European Convert | Vol. 37 | pg. 481 | 9/20/91 |
| Acts 16:24-34 | Conversion and Character | Vol. 59 | pg. 445 | 9/18/13 |
| Acts 16:31 | Faith In Christ | Vol. 54 | pg. 265 | 6/4/08 |
| Acts 16:31 | The King's Highway Opened and Cleared | Vol. 6 | pg. 57 | 1/8/60 |
| Acts 16:32-34 | Household Salvation | Vol. 17 | pg. 613 | 11/5/71 |
| Acts 16:33-34 | Belief, Baptism, Blessing | Vol. 38 | pg. 457 | 9/25/92 |
| Acts 17:6 | The World Turned Upside Down | Vol. 4 | pg. 225 | 5/9/58 |
| Acts 17:27 | God's Nearness To Us | Vol. 33 | pg. 397 | 7/17/87 |
| Acts 18:1-28 | Exposition | Vol. 61 | pg. 95 | 2/25/15 |
| Acts 18:9-10 | Cheer For the Worker, and Hope for London | Vol. 26 | pg. 613 | 10/28/80 |
| Acts 18:10 | A Present Helper | Vol. 61 | pg. 85 | 2/25/15 |
| Acts 18:27 | The Shank-bone Sermon; or, True Believers and Their Helpers | Vol. 36 | pg. 193 | 4/13/90 |
| Acts 19:2 | Receiving the Holy Ghost | Vol. 30 | pg. 385 | 7/13/84 |
| Acts 19:19-20 | The Powerful Truth of God | Vol. 62 | pg. 301 | 6/29/16 |
| Acts 20:19 | Humility | Vol. 7 | pg. 137 | 3/17/61 |
| Acts 20:21 | Two Essential Things | Vol. 35 | pg. 121 | 3/3/89 |
| Acts 20:24 | A Gospel Worth Dying For | Vol. 29 | pg. 433 | 8/12/83 |
| Acts 20:26-27 | The Minister's Farewell | Vol. 6 | pg. 25 | 12/11/59 |

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|---------|
| Acts 22:1-16 | Exposition | Vol. 56 | pg. 334 | 7/7/10 |
| Acts 23:10-13 | Paul Cheered In Prison By His Lord | Vol. 55 | pg. 337 | 7/15/09 |
| Acts 24:15 | The Resurrection of the Dead | Vol. 2 | pg. 97 | 2/17/56 |
| Acts 24:15 | Resurrection for the Just and the Unjust | Vol. 59 | pg. 133 | 3/20/13 |
| Acts 24:25 | Paul's Sermon Before Felix | Vol. 4 | pg. 49 | 1/10/58 |
| Acts 24:28 | To Those Who Are "Almost Persuaded" | Vol. 15 | pg. 277 | 5/16/69 |
| Acts 25:1-27 | Exposition | Vol. 55 | pg. 341 | 7/15/09 |
| Acts 25:18-19 | Jesus Affirmed To Be Alive | Vol. 34 | pg. 181 | 4/1/88 |
| Acts 26:1-28 | Exposition | Vol. 63 | pg. 47 | 1/25/17 |
| Acts 26:1-32 | Exposition | Vol. 55 | pg. 341 | 7/15/09 |
| Acts 26:8 | The Resurrection Credible | Vol. 18 | pg. 469 | 8/25/72 |
| Acts 26:16-18 | God's Work Upon Minister and Convert | Vol. 30 | pg. 193 | 4/6/84 |
| Acts 26:14 | The Conversion of Saul of Tarsus | Vol. 4 | pg. 297 | 6/27/58 |
| Acts 27:1-26 | Exposition | Vol. 55 | pg. 249 | 5/20/09 |
| Acts 27:11-44 | Exposition | Vol. 51 | pg. 538 | 11/2/05 |
| Acts 27:18-25 | Paul In the Tempest | Vol. 55 | pg. 241 | 5/20/09 |
| Acts 27:20 | Wrecked, But Not Reckless | Vol. 18 | pg. 505 | 6/9/72 |
| Acts 27:24 | The Church The World's Hope | Vol. 51 | pg. 433 | 9/7/05 |
| Acts 27:25 | A Cheery Word In Troublous Times | Vol. 23 | pg. 49 | 1877 |
| Acts 28:1-31 | Exposition | Vol. 55 | pg. 166 | 4/1/09 |
| Acts 28:2 | Lessons From The Malta Fire | Vol. 55 | pg. 133 | 3/18/09 |
| Acts 28:23 | Loving Persuasion | Vol. 33 | pg. 361 | 6/26/87 |
| Acts 28:24 | The Minister's Stock-taking | Vol. 9 | pg. 349 | 1863 |

ROMANS

| | | | | |
|--------------------------|---|---------|---------|----------|
| Rom. 1:1-17 | Exposition | Vol. 39 | pg. 382 | 8/6/93 |
| Rom. 1:1-25 | Exposition | Vol. 38 | pg. 250 | 5/22/92 |
| Rom. 1:7 | The Beloved Pastor's Plea For Unity | Vol. 39 | pg. 373 | 8/6/93 |
| Rom. 1:15 | Paul the Ready | Vol. 38 | pg. 577 | 12/4/92 |
| Rom. 1:20-21 | Knowledge. Worship. Gratitude | Vol. 30 | pg. 61 | 1884 |
| Rom. 1:20-21 | Inexcusable Irreverence and Ingratitude | Vol. 38 | pg. 241 | 5/22/92 |
| Rom. 2:4 | Earnest Expostulation | Vol. 29 | pg. 193 | 4/1/83 |
| Rom. 2:4 | God's Goodness Leading To Repentance | Vol. 49 | pg. 541 | 11/12/03 |
| Rom. 2:4 | Concerning The Forbearance of God | Vol. 55 | pg. 349 | 7/22/09 |
| Rom. 2:16 | Coming Judgment of the Secrets of Men | Vol. 31 | pg. 373 | 7/12/85 |
| Rom. 2:25-29 | Exposition | Vol. 61 | pg. 430 | 9/9/15 |
| Rom. 3:1-27 | Exposition | Vol. 40 | pg. 190 | 4/22/94 |
| Rom. 3:1-27 | Exposition | Vol. 61 | pg. 431 | 9/9/15 |
| Rom. 3:1-31 | Exposition | Vol. 45 | pg. 70 | 2/5/99 |
| Rom. 3:3-4 | God Justified, Though Man Believes Not | Vol. 38 | pg. 217 | 5/8/92 |
| Rom. 3:9-27 | Exposition | Vol. 52 | pg. 80 | 2/8/06 |
| Rom. 3:9-31 | Exposition | Vol. 59 | pg. 264 | 5/29/13 |
| Rom. 3:11 | The Greatest Folly in the World | Vol. 43 | pg. 565 | 11/28/97 |
| Rom. 3:19-31 | Exposition | Vol. 53 | pg. 227 | 5/2/07 |
| Rom. 3:22-23 | "There Is No Difference" | Vol. 45 | pg. 61 | 2/5/99 |
| Rom. 3:24 | Justification By Grace | Vol. 3 | pg. 153 | 4/5/57 |
| Rom. 3:24-26 | Justice Vindicated, and Righteousness Exemplified | Vol. 53 | pg. 217 | 5/2/07 |
| Rom. 3:24-26 | Justification, Propitiation, Declaration | Vol. 61 | pg. 565 | 12/2/15 |
| Rom. 3:25 | Christ Set Forth As A Propitiation | Vol. 7 | pg. 201 | 3/29/61 |
| Rom. 3:26 & 1 Jn. 1:9 | Justice Satisfied | Vol. 5 | pg. 241 | 5/29/59 |
| Rom. 3:27 | Grace Exalted — Boasting Excluded | Vol. 8 | pg. 25 | 1/19/62 |
| Rom. 4:1-20 | Exposition | Vol. 61 | pg. 275 | 6/10/15 |
| Rom. 4:1-21 | Exposition | Vol. 53 | pg. 227 | 5/2/07 |
| Rom. 4:1-25 | Exposition | Vol. 55 | pg. 358 | 7/22/09 |
| Rom. 4:16-25 | Exposition | Vol. 40 | pg. 190 | 4/22/94 |

| | | | | |
|--------------|---|---------|---------|----------|
| Rom. 4:16 | How Is Salvation Received? | Vol. 23 | pg. 193 | 4/1/77 |
| Rom. 4:16-17 | The Hold-fasts of Faith | Vol. 36 | pg. 445 | 8/17/90 |
| Rom. 4:19-21 | Unstaggering Faith | Vol. 13 | pg. 61 | 2/3/67 |
| Rom. 4:20 | Strong Faith | Vol. 23 | pg. 433 | 7/15/77 |
| Rom. 4:24 | “Jesus Our Lord” | Vol. 48 | pg. 553 | 11/23/02 |
| Rom. 4:24-25 | The Two Pillars of Salvation | Vol. 40 | pg. 181 | 4/22/94 |
| Rom. 5:1-2 | Exposition | Vol. 55 | pg. 358 | 7/22/09 |
| Rom. 5:1-5 | Exposition | Vol. 47 | pg. 515 | 10/27/01 |
| Rom. 5:1-9 | Exposition | Vol. 60 | pg. 264 | 5/28/14 |
| Rom. 5:1-10 | Exposition | Vol. 56 | pg. 308 | 6/23/10 |
| Rom. 5:1-11 | Exposition | Vol. 58 | pg. 262 | 5/30/12 |
| Rom. 5:1-11 | Exposition | Vol. 58 | pg. 526 | 10/31/12 |
| Rom. 5:1-21 | Exposition | Vol. 39 | pg. 635 | 12/31/93 |
| Rom. 5:1-21 | Exposition | Vol. 43 | pg. 560 | 11/21/97 |
| Rom. 5:1-21 | Exposition | Vol. 44 | pg. 442 | 9/11/98 |
| Rom. 5:1-21 | Exposition | Vol. 54 | pg. 514 | 10/22/08 |
| Rom. 5:1 | Peace by Believing | Vol. 9 | pg. 277 | 1863 |
| Rom. 5:1 | Peace: A Fact and a Feeling | Vol. 25 | pg. 61 | 1879 |
| Rom. 5:1 | Justification By Faith | Vol. 60 | pg. 61 | 2/5/14 |
| Rom. 5:5 | The Perfuming of the Heart | Vol. 14 | pg. 493 | 9/6/68 |
| Rom. 5:5 | The Heart Perfumed | Vol. 59 | pg. 49 | 1/30/13 |
| Rom. 5:6-11 | Exposition | Vol. 52 | pg. 81 | 2/8/06 |
| Rom. 5:6-21 | Exposition | Vol. 47 | pg. 443 | 9/15/01 |
| Rom. 5:6 | The Old, Old Story | Vol. 8 | pg. 230 | 3/30/62 |
| Rom. 5:6 | For Whom Did Christ Die? | Vol. 20 | pg. 493 | 9/6/74 |
| Rom. 5:6 | The Sad Plight and Sure Relief | Vol. 20 | pg. 409 | 1874 |
| Rom. 5:6 | The Personal Pentecost and the Glorious Hope | Vol. 32 | pg. 313 | 6/13/86 |
| Rom. 5:6 | The Undying Gospel For the Dying Year | Vol. 39 | pg. 625 | 12/31/93 |
| Rom. 5:8 | Love’s Commendation | Vol. 2 | pg. 401 | 11/23/56 |
| Rom. 5:10 | “Much More” | Vol. 44 | pg. 433 | 9/11/98 |
| Rom. 5:10-21 | Exposition | Vol. 60 | pg. 324 | 7/2/14 |
| Rom. 5:11 | Joy In A Reconciled God | Vol. 18 | pg. 205 | 4/7/72 |
| Rom. 5:11 | Joy In God | Vol. 44 | pg. 13 | 1/2/98 |
| Rom. 5:15 | Honey From A Lion | Vol. 27 | pg. 181 | 4/3/81 |
| Rom. 5:16 | The One and the Many | Vol. 43 | pg. 553 | 11/21/97 |
| Rom. 5:16 | Lost Through One; Saved Through One | Vol. 47 | pg. 433 | 9/15/01 |
| Rom. 5:20 | Law and Grace | Vol. 1 | pg. 285 | 8/26/55 |
| Rom. 5:20 | Grace Abounding Over Abounding Sin | Vol. 34 | pg. 133 | 3/4/88 |
| Rom. 5:20 | Sin and Grace | Vol. 54 | pg. 505 | 10/22/08 |
| Rom. 5:20 | Grace Abounding | Vol. 58 | pg. 253 | 5/30/12 |
| Rom. 5:21 | Reigning Grace | Vol. 6 | pg. 349 | 8/26/60 |
| Rom. 6:1-19 | Exposition | Vol. 60 | pg. 166 | 4/2/14 |
| Rom. 6:1-23 | Exposition | Vol. 51 | pg. 274 | 6/1/05 |
| Rom. 6:1-23 | Exposition | Vol. 58 | pg. 190 | 4/18/12 |
| Rom. 6:1-23 | Exposition | Vol. 59 | pg. 153 | 3/27/13 |
| Rom. 6:3-4 | Baptism—A Burial | Vol. 27 | pg. 617 | 10/30/81 |
| Rom. 6:4 | Christ’s Resurrection and Our Newness of Life | Vol. 37 | pg. 181 | 3/29/91 |
| Rom. 6:6 | The Old Man Crucified | Vol. 15 | pg. 409 | 4/11/69 |
| Rom. 6:8-11 | Death and Life In Christ | Vol. 9 | pg. 193 | 4/5/63 |
| Rom. 6:11-12 | Dead, Yet Alive | Vol. 51 | pg. 205 | 4/27/05 |
| Rom. 6:14 | The Upper Hand | Vol. 15 | pg. 637 | 1869 |
| Rom. 6:14 | Believers Free From the Dominion of Sin | Vol. 24 | pg. 229 | 4/21/78 |
| Rom. 6:14-15 | The Doctrines of Grace Do Not Lead To Sin | Vol. 29 | pg. 445 | 8/19/83 |
| Rom. 6:18 | Our Change of Masters | Vol. 25 | pg. 373 | 7/6/79 |
| Rom. 6:23 | Death and Life: The Wage and the Gift | Vol. 31 | pg. 601 | 11/1/85 |
| Rom. 7:1-25 | Exposition | Vol. 46 | pg. 190 | 4/22/00 |
| Rom. 7:7-25 | Exposition | Vol. 59 | pg. 478 | 10/2/13 |

| | | | | |
|--------------|---|---------|---------|----------|
| Rom. 7:13 | The Monster Dragged To Light | Vol. 19 | pg. 73 | 2/9/73 |
| Rom. 7:13 | Sin's True Quality | Vol. 59 | pg. 469 | 10/2/13 |
| Rom. 7:22-23 | Why Am I Thus? | Vol. 18 | pg. 409 | 3/14/72 |
| Rom. 7:23 | The Dual Nature and the Duel Within | Vol. 25 | pg. 101 | 1879 |
| Rom. 7:24-25 | The Fainting Warrior | Vol. 5 | pg. 81 | 1/23/59 |
| Rom. 8:1-4 | Exposition | Vol. 46 | pg. 190 | 4/22/00 |
| Rom. 8:1-9 | Exposition | Vol. 54 | pg. 390 | 8/13/08 |
| Rom. 8:1-14 | Exposition | Vol. 58 | pg. 214 | 5/2/12 |
| Rom. 8:1-22 | Exposition | Vol. 57 | pg. 298 | 6/22/11 |
| Rom. 8:1-31 | Exposition | Vol. 59 | pg. 129 | 3/13/13 |
| Rom. 8:1-32 | Exposition | Vol. 52 | pg. 82 | 2/8/06 |
| Rom. 8:1-34 | Exposition | Vol. 61 | pg. 550 | 11/18/15 |
| Rom. 8:1-39 | Exposition | Vol. 62 | pg. 117 | 3/9/16 |
| Rom. 8:1 | In Christ No Condemnation | Vol. 32 | pg. 469 | 8/29/86 |
| Rom. 8:3 | Sin Condemned And Executed By Christ Jesus | Vol. 12 | pg. 373 | 7/8/66 |
| Rom. 8:3 | How God Condemned Sin | Vol. 16 | pg. 289 | 5/8/70 |
| Rom. 8:3-4 | The Law's Failure and Fulfillment | Vol. 37 | pg. 553 | 11/1/91 |
| Rom. 8:7 | The Carnal Mind Enmity Against God | Vol. 1 | pg. 149 | 4/22/55 |
| Rom. 8:7 | A Traitor Suspected and Convicted | Vol. 32 | pg. 13 | 1/10/86 |
| Rom. 8:8-9 | The Soul's Great Crisis | Vol. 61 | pg. 421 | 9/9/15 |
| Rom. 8:9 | A Fatal Deficiency | Vol. 19 | pg. 529 | 9/21/73 |
| Rom. 8:11-14 | Dressing In the Morning | Vol. 27 | pg. 461 | 8/21/81 |
| Rom. 8:12 | The Christian — A Debtor | Vol. 2 | pg. 337 | 8/10/56 |
| Rom. 8:14-17 | Exposition | Vol. 44 | pg. 273 | 6/5/98 |
| Rom. 8:14-30 | Exposition | Vol. 59 | pg. 514 | 10/23/13 |
| Rom. 8:14-39 | Exposition | Vol. 45 | pg. 285 | 6/11/99 |
| Rom. 8:14 | The Leading of the Spirit, The Secret Tokens of the Sons of God | Vol. 21 | pg. 121 | 1875 |
| Rom. 8:14 | The Family Likeness | Vol. 61 | pg. 505 | 10/28/15 |
| Rom. 8:15-16 | The Spirit of Bondage and of Adoption | Vol. 30 | pg. 15 | 1884 |
| Rom. 8:15-31 | Exposition | Vol. 62 | pg. 166 | 4/6/16 |
| Rom. 8:16-17 | What Christians Were and Are | Vol. 56 | pg. 241 | 5/19/10 |
| Rom. 8:16-17 | The Sons of God | Vol. 6 | pg. 421 | 10/7/60 |
| Rom. 8:17 | The Joint Heirs and Their Divine Portion | Vol. 7 | pg. 433 | 7/28/61 |
| Rom. 8:17 | "Heirs of God" | Vol. 51 | pg. 541 | 11/9/05 |
| Rom. 8:18-39 | Exposition | Vol. 50 | pg. 106 | 2/25/04 |
| Rom. 8:19-39 | Exposition | Vol. 44 | pg. 10 | 1/2/98 |
| Rom. 8:22-23 | Creation's Groans and the Saints' Sighs | Vol. 14 | pg. 1 | 1/5/68 |
| Rom. 8:23-39 | Exposition | Vol. 57 | pg. 394 | 8/17/11 |
| Rom. 8:24 | The Believer's Challenge | Vol. 5 | pg. 249 | 6/5/59 |
| Rom. 8:24-25 | Saved In Hope | Vol. 27 | pg. 485 | 8/28/81 |
| Rom. 8:26-39 | Exposition | Vol. 60 | pg. 142 | 3/19/14 |
| Rom. 8:26-27 | The Holy Spirit's Intercession | Vol. 26 | pg. 217 | 4/11/80 |
| Rom. 8:26-30 | Exposition | Vol. 62 | pg. 405 | 8/24/16 |
| Rom. 8:26-39 | Exposition | Vol. 56 | pg. 322 | 6/30/10 |
| Rom. 8:28-39 | Exposition | Vol. 60 | pg. 432 | 9/3/14 |
| Rom. 8:28 | The True Christian's Blessedness | Vol. 3 | pg. 413 | 10/18/57 |
| Rom. 8:29 | Portraits of Christ | Vol. 7 | pg. 57 | 1/13/61 |
| Rom. 8:29 | Glorious Predestination | Vol. 18 | pg. 181 | 3/24/72 |
| Rom. 8:30 | Justification and Glory | Vol. 11 | pg. 241 | 4/30/65 |
| Rom. 8:30 | Predestination and Calling | Vol. 5 | pg. 129 | 3/6/59 |
| Rom. 8:31 | God Is With Us | Vol. 10 | pg. 401 | 7/17/64 |
| Rom. 8:32 | The Gospel of Abraham's Sacrifice of Isaac | Vol. 15 | pg. 255 | 5/2/69 |
| Rom. 8:32 | The Saints' Riches | Vol. 56 | pg. 313 | 6/30/10 |
| Rom. 8:34 | Jesus, The Substitute For His People | Vol. 21 | pg. 157 | 1875 |
| Rom. 8:34 | A Challenge and a Shield | Vol. 38 | pg. 37 | 1/24/92 |
| Rom. 8:34 | A Bold Challenge Justified | Vol. 53 | pg. 565 | 11/21/07 |
| Rom. 8:34 | The Believer's Challenge | Vol. 5 | pg. 249 | 6/5/59 |

| | | | | |
|----------------|--|---------|---------|----------|
| Rom. 8:37 | More Than Conquerors | Vol. 13 | pg. 277 | 5/19/67 |
| Rom. 8:38-39 | Paul's Persuasion | Vol. 42 | pg. 553 | 11/22/96 |
| Rom. 9:1-25 | Exposition | Vol. 59 | pg. 71 | 2/6/13 |
| Rom. 9:1-33 | Exposition | Vol. 43 | pg. 418 | 8/29/97 |
| Rom. 9:1-5 | Exposition | Vol. 60 | pg. 130 | 3/12/14 |
| Rom. 9:1-5 | Concern For Other Men's Souls | Vol. 24 | pg. 409 | 1878 |
| Rom. 9:13 | Jacob and Esau | Vol. 5 | pg. 113 | 1/16/59 |
| Rom. 9:23-24 | Vessels of Mercy, — A Sermon of Self-examination | Vol. 6 | pg. 325 | 8/5/60 |
| Rom. 9:26-32 | Exposition | Vol. 59 | pg. 228 | 5/8/13 |
| Rom. 9:30-33 | S. S.: Or, The Sinner Saved | Vol. 33 | pg. 253 | 5/1/87 |
| Rom. 9:33 | Unbelievers Stumbling, Believers Rejoicing | Vol. 10 | pg. 289 | 5/22/64 |
| Rom. 10:1-15 | Exposition | Vol. 52 | pg. 251 | 5/17/06 |
| Rom. 10:1-19 | Exposition | Vol. 61 | pg. 23 | 1/14/15 |
| Rom. 10:1-20 | Exposition | Vol. 62 | pg. 357 | 7/27/16 |
| Rom. 10:1-21 | Exposition | Vol. 39 | pg. 466 | 9/24/93 |
| Rom. 10:1-21 | Exposition | Vol. 47 | pg. 538 | 11/10/01 |
| Rom. 10:1-21 | Exposition | Vol. 51 | pg. 202 | 4/20/05 |
| Rom. 10:1-21 | Exposition | Vol. 53 | pg. 382 | 8/1/07 |
| Rom. 10:1-21 | Exposition | Vol. 56 | pg. 622 | 12/22/10 |
| Rom. 10:1-21 | Exposition | Vol. 60 | pg. 131 | 3/12/14 |
| Rom. 10:1-3 | Zealous, But Wrong | Vol. 32 | pg. 253 | 1886 |
| Rom. 10:3 | Barriers Broken Down | Vol. 37 | pg. 385 | 7/26/91 |
| Rom. 10:4 | Christ The End of the Law | Vol. 22 | pg. 649 | 11/19/76 |
| Rom. 10:5-9 | A Monument for the Dead, and a Voice to the Living | Vol. 29 | pg. 25 | 1/7/83 |
| Rom. 10:9 | Mouth and Heart | Vol. 32 | pg. 241 | 4/25/86 |
| Rom. 10:10 | Believing With the Heart - AM | Vol. 9 | pg. 385 | 7/12/63 |
| Rom. 10:10 | Confession With the Mouth — PM | Vol. 9 | pg. 397 | 7/12/63 |
| Rom. 10:10 | Faith First, Confession Following | Vol. 52 | pg. 517 | 10/25/06 |
| Rom. 10:11 | Scriptural Salvation | Vol. 36 | pg. 277 | 5/18/90 |
| Rom. 10:13 | A Simple Sermon For Seeking Souls | Vol. 3 | pg. 265 | 7/12/57 |
| Rom. 10:14-15 | The Whole Machinery of Salvation | Vol. 39 | pg. 457 | 9/24/93 |
| Rom. 10:16 | Disobedience to the Gospel | Vol. 48 | pg. 529 | 11/9/02 |
| Rom. 10:17 | How Can I Obtain Faith? | Vol. 18 | pg. 37 | 1/21/72 |
| Rom. 10:17 | Faith's Way of Approach | Vol. 57 | pg. 337 | 7/20/11 |
| Rom. 10:20-21 | Sovereign Grace and Man's Responsibility | Vol. 4 | pg. 337 | 8/1/58 |
| Rom. 11:36 | Laus Deo | Vol. 10 | pg. 301 | 5/29/64 |
| Rom. 12:1-16 | Exposition | Vol. 62 | pg. 298 | 6/22/16 |
| Rom. 12:11 | Serving the Lord | Vol. 15 | pg. 445 | 9/15/69 |
| Rom. 12:12 | Constant, Instant, Expectant | Vol. 25 | pg. 349 | 6/22/79 |
| Rom. 12:15 | Sympathy and Song | Vol. 62 | pg. 289 | 6/22/16 |
| Rom. 12:21 | Overcome Evil With Good | Vol. 22 | pg. 553 | 10/8/76 |
| Rom. 13:11 | Timely Reflections | Vol. 15 | pg. 110 | 12/27/68 |
| Rom. 13:11 | Wake Up! Wake Up! | Vol. 24 | pg. 649 | 1878 |
| Rom. 13:14 | Christ Put On | Vol. 36 | pg. 121 | 2/23/90 |
| Rom. 14:10-12 | The Judgment Seat of God | Vol. 27 | pg. 305 | 5/29/81 |
| Rom. 15:1-16 | Exposition | Vol. 47 | pg. 551 | 11/17/01 |
| Rom. 15:4 | Patience, Comfort, and Hope From the Scriptures | Vol. 47 | pg. 541 | 11/17/01 |
| Rom. 15:13-33 | Exposition | Vol. 48 | pg. 107 | 3/2/02 |
| Rom. 15:13 | The Power of the Holy Ghost | Vol. 1 | pg. 229 | 6/17/55 |
| Rom. 15:13 | Joy and Peace In Believing | Vol. 12 | pg. 289 | 5/20/66 |
| Rom. 15:13 | A Round of Delights | Vol. 23 | pg. 637 | 11/11/77 |
| Rom. 15:13 | "Peace In Believing" | Vol. 45 | pg. 277 | 6/11/99 |
| Rom. 15:13, 19 | Our Urgent Need of The Holy Spirit | Vol. 23 | pg. 13 | 1/7/77 |
| Rom. 15:30-33 | Pleading For Prayer | Vol. 32 | pg. 109 | 2/21/86 |
| Rom. 15:33 | The God of Peace | Vol. 1 | pg. 371 | 11/4/55 |
| Rom. 16:1-16 | Romans, But Not Romanists | Vol. 19 | pg. 289 | 1873 |
| Rom. 16:24 | The Pastor's Parting Blessing | Vol. 17 | pg. 241 | 1871 |

FIRST CORINTHIANS

| | | | | |
|-------------------|---|---------|---------|----------|
| 1 Cor. 1:1-9 | Exposition | Vol. 44 | pg. 359 | 7/24/98 |
| 1 Cor. 1:1-24 | Exposition | Vol. 59 | pg. 346 | 7/17/13 |
| 1 Cor. 1:25-31 | Exposition | Vol. 59 | pg. 372 | 7/31/13 |
| 1 Cor. 1:1-31 | Exposition | Vol. 45 | pg. 95 | 2/19/99 |
| 1 Cor. 1:1-31 | Exposition | Vol. 56 | pg. 490 | 10/6/10 |
| 1 Cor. 1:6 | Confirming the Witness of Christ | Vol. 50 | pg. 133 | 3/17/04 |
| 1 Cor. 1:9 | The Special Call and the Unfailing Result | Vol. 11 | pg. 111 | 1865 |
| 1 Cor. 1:9 | Partnership With Christ | Vol. 44 | pg. 349 | 7/24/98 |
| 1 Cor. 1:18 | The Word of the Cross | Vol. 27 | pg. 425 | 7/31/81 |
| 1 Cor. 1:23 | Christ Crucified | Vol. 1 | pg. 49 | 2/11/55 |
| 1 Cor. 1:23 | Preaching Christ Crucified | Vol. 56 | pg. 481 | 10/6/10 |
| 1 Cor. 1:24 | Christ — The Power and Wisdom of God. | Vol. 3 | pg. 201 | 5/17/57 |
| 1 Cor. 1:26-29 | God's Strange Choice | Vol. 10 | pg. 485 | 8/28/64 |
| 1 Cor. 1:30-31 | The Fourfold Treasure | Vol. 17 | pg. 277 | 4/27/71 |
| 1 Cor. 1:31 | Glorying In the Lord | Vol. 20 | pg. 337 | 1874 |
| 1 Cor. 2:2 | The Man of One Subject | Vol. 21 | pg. 637 | 10/31/75 |
| 1 Cor. 2:2 | Christ Crucified | Vol. 46 | pg. 205 | 5/6/00 |
| 1 Cor. 2:9-10 | Heaven | Vol. 2 | pg. 17 | 12/16/55 |
| 1 Cor. 2:14 | Natural or Spiritual? | Vol. 7 | pg. 473 | 9/1/61 |
| 1 Cor. 3:1-16 | Exposition | Vol. 60 | pg. 59 | 1/29/14 |
| 1 Cor. 3:1-23 | Exposition | Vol. 50 | pg. 491 | 10/6/04 |
| 1 Cor. 3:6-9 | Farm Labourers | Vol. 27 | pg. 317 | 6/5/81 |
| 1 Cor. 3:11 | The One Foundation | Vol. 25 | pg. 517 | 9/14/79 |
| 1 Cor. 3:17-23 | Exposition | Vol. 60 | pg. 84 | 2/12/14 |
| 1 Cor. 3:21-23 | The Christian's Glorious Inventory | Vol. 44 | pg. 457 | 9/25/98 |
| 1 Cor. 3:22 | Things Present | Vol. 15 | pg. 265 | 5/9/69 |
| 1 Cor. 3:22 | "Things To Come" | Vol. 15 | pg. 325 | 6/13/69 |
| 1 Cor. 4:1-2 | "Stewards" | Vol. 59 | pg. 181 | 4/17/13 |
| 1 Cor. 4:2 | Faithful Stewardship | Vol. 41 | pg. 553 | 11/24/95 |
| 1 Cor. 4:7 | Pride Catechized and Condemned | Vol. 22 | pg. 1 | 1/2/76 |
| 1 Cor. 4:7 | A Catechism For The Proud | Vol. 24 | pg. 13 | 1/6/78 |
| 1 Cor. 4:7 | Distinguishing Grace | Vol. 5 | pg. 297 | 2/6/59 |
| 1 Cor. 5:6-8 | Purging Out the Leaven | Vol. 16 | pg. 685 | 12/11/70 |
| 1 Cor. 5:7 | Christ Our Passover | Vol. 2 | pg. 1 | 12/2/55 |
| 1 Cor. 6:1-14 | Exposition | Vol. 46 | pg. 71 | 2/11/00 |
| 1 Cor. 6:9-11 | A Marvelous Change | Vol. 46 | pg. 61 | 2/11/00 |
| 1 Cor. 6:17 | The Saint One With His Saviour | Vol. 16 | pg. 637 | 11/20/70 |
| 1 Cor. 6:19-20 | "Bought With A Price" | Vol. 17 | pg. 433 | 8/6/71 |
| 1 Cor. 6:19-20 | Redemption By Price | Vol. 26 | pg. 469 | 8/22/80 |
| 1 Cor. 6:20; 7:23 | Redemption and Its Claims | Vol. 20 | pg. 157 | 3/8/74 |
| 1 Cor. 7:29 | "The Time Is Short" | Vol. 49 | pg. 589 | 12/10/03 |
| 1 Cor. 7:29-31 | A Drama In Five Acts | Vol. 8 | pg. 649 | 11/23/62 |
| 1 Cor. 7:31 | "The Fashion of this World" | Vol. 53 | pg. 145 | 3/21/07 |
| 1 Cor. 7:32 | "Without Carefulness" | Vol. 28 | pg. 661 | 1882 |
| 1 Cor. 9:16 | Preach The Gospel | Vol. 1 | pg. 261 | 8/5/55 |
| 1 Cor. 9:22 | "By All Means Save Some" | Vol. 20 | pg. 241 | 4/26/74 |
| 1 Cor. 9:22 | Soul Saving Our One Business | Vol. 25 | pg. 673 | 1879 |
| 1 Cor. 9:22-27 | Exposition | Vol. 51 | pg. 59 | 1/26/05 |
| 1 Cor. 9:24 | The Heavenly Race | Vol. 4 | pg. 265 | 6/11/58 |
| 1 Cor. 10:1-13 | Exposition | Vol. 50 | pg. 587 | 12/1/04 |
| 1 Cor. 10:1-14 | Exposition | Vol. 45 | pg. 226 | 5/7/99 |
| 1 Cor. 10:12 | A Caution To the Presumptuous | Vol. 1 | pg. 165 | 5/13/55 |
| 1 Cor. 10:13 | Comfort For The Tempted | Vol. 45 | pg. 1 | 1/1/99 |
| 1 Cor. 10:13 | Comfort For Tried Believers | Vol. 50 | pg. 577 | 12/1/04 |

| | | | | |
|-----------------|---|---------|---------|----------|
| 1 Cor. 10:15-33 | Exposition | Vol. 46 | pg. 9 | 1/7/99 |
| 1 Cor. 10:16 | Fellowship With Christ | Vol. 44 | pg. 253 | 5/29/98 |
| 1 Cor. 10:16-17 | Communion With Christ and His People | Vol. 58 | pg. 145 | 3/28/12 |
| 1 Cor. 11:1 | Exposition | Vol. 46 | pg. 9 | 1/7/99 |
| 1 Cor. 11:7 | The Battle of Life | Vol. 62 | pg. 217 | 4/11/16 |
| 1 Cor. 11:17-34 | Exposition | Vol. 45 | pg. 430 | 9/3/99 |
| 1 Cor. 11:18-34 | Exposition | Vol. 50 | pg. 23 | 1/7/04 |
| 1 Cor. 11:20-34 | Exposition | Vol. 38 | pg. 382 | 8/7/92 |
| 1 Cor. 11:20-26 | Exposition | Vol. 52 | pg. 180 | 4/5/06 |
| 1 Cor. 11:20-34 | Exposition | Vol. 44 | pg. 538 | 11/6/98 |
| 1 Cor. 11:20-34 | Exposition | Vol. 46 | pg. 526 | 11/4/00 |
| 1 Cor. 11:23-26 | The Right Observance of The Lord's Supper | Vol. 45 | pg. 421 | 9/3/99 |
| 1 Cor. 11:24 | The Double Forget-me-not | Vol. 54 | pg. 313 | 7/2/08 |
| 1 Cor. 11:24 | The Remembrance of Christ | Vol. 1 | pg. 9 | 1/7/55 |
| 1 Cor. 11:24-25 | "In Remembrance" | Vol. 55 | pg. 61 | 2/4/09 |
| 1 Cor. 11:25-26 | The Lord's Supper, Simple But Sublime! | Vol. 55 | pg. 97 | 7/1/09 |
| 1 Cor. 11:26 | The Greatest Exhibition of the Age | Vol. 39 | pg. 217 | 5/7/93 |
| 1 Cor. 11:26 | What the Lord's Supper Sees and Says | Vol. 44 | pg. 529 | 11/6/98 |
| 1 Cor. 11:26 | The Lord's Supper | Vol. 50 | pg. 97 | 2/25/04 |
| 1 Cor. 11:26 | The Object of the Lord's Supper | Vol. 51 | pg. 313 | 6/29/05 |
| 1 Cor. 11:26 | The Witness of the Lord's Supper | Vol. 59 | pg. 37 | 1/23/13 |
| 1 Cor. 11:26 | The Feast of the Lord | Vol. 62 | pg. 97 | 3/2/16 |
| 1 Cor. 11:28 | Preparation Necessary For the Communion | Vol. 45 | pg. 529 | 11/5/99 |
| 1 Cor. 11:28 | Examination Before Communion | Vol. 46 | pg. 517 | 11/4/00 |
| 1 Cor. 11:28 | Fencing the Table | Vol. 50 | pg. 13 | 1/7/04 |
| 1 Cor. 11:28 | Preparation for the Lord's Supper | Vol. 60 | pg. 49 | 1/29/14 |
| 1 Cor. 11:32 | The Nature and Design of Divine Chastenings | Vol. 47 | pg. 457 | 9/29/01 |
| 1 Cor. 12:1-31 | Exposition | Vol. 47 | pg. 405 | 8/25/01 |
| 1 Cor. 12:28 | Helps | Vol. 13 | pg. 589 | 1867 |
| 1 Cor. 12:12-31 | Exposition | Vol. 44 | pg. 262 | 5/29/98 |
| 1 Cor. 12:31 | Grace Preferred To Gifts | Vol. 46 | pg. 457 | 9/30/00 |
| 1 Cor. 13:1-13 | Exposition | Vol. 62 | pg. 393 | 8/17/16 |
| 1 Cor. 13:1-3 | Exposition | Vol. 47 | pg. 405 | 8/25/01 |
| 1 Cor. 13:7 | Love's Labours | Vol. 27 | pg. 497 | 9/4/81 |
| 1 Cor. 13:12 | Now and Then | Vol. 17 | pg. 409 | 1871 |
| 1 Cor. 15:1-9 | Exposition | Vol. 40 | pg. 586 | 12/2/94 |
| 1 Cor. 15:1-20 | Exposition | Vol. 38 | pg. 611 | 12/18/92 |
| 1 Cor. 15:1-28 | Exposition | Vol. 46 | pg. 46 | 1/28/00 |
| 1 Cor. 15:1-32 | Exposition | Vol. 58 | pg. 45 | 1/25/12 |
| 1 Cor. 15:1-58 | Exposition | Vol. 2 | pg. 108 | 2/17/56 |
| 1 Cor. 15:1-58 | Exposition | Vol. 51 | pg. 297 | 6/15/05 |
| 1 Cor. 15:50-58 | Exposition | Vol. 46 | pg. 46 | 1/28/00 |
| 1 Cor. 15:6 | Fallen Asleep | Vol. 46 | pg. 37 | 1/28/00 |
| 1 Cor. 15:8 | A Leap Year Sermon | Vol. 46 | pg. 85 | 2/25/00 |
| 1 Cor. 15:10 | Lessons On Divine Grace | Vol. 49 | pg. 253 | 5/31/03 |
| 1 Cor. 15:10 | Paul's Parenthesis | Vol. 54 | pg. 133 | 3/19/08 |
| 1 Cor. 15:12-19 | "If There Be No Resurrection—" | Vol. 38 | pg. 601 | 12/18/92 |
| 1 Cor. 15:25 | "He Must Reign" | Vol. 51 | pg. 289 | 6/15/05 |
| 1 Cor. 15:31 | Dying Daily | Vol. 14 | pg. 481 | 8/30/68 |
| 1 Cor. 15:19 | "Alas For Us, If Thou Wert All, and Nought Beyond, O Earth" | Vol. 10 | pg. 181 | 3/27/64 |
| 1 Cor. 15:20 | Resurrection — Christ the Firstfruits | Vol. 8 | pg. 217 | 4/20/62 |
| 1 Cor. 15:25 | Good News for Loyal Subjects | Vol. 14 | pg. 229 | 4/19/68 |
| 1 Cor. 15:26 | The Last Enemy Destroyed | Vol. 12 | pg. 637 | 11/18/66 |
| 1 Cor. 15:26 | Christ the Destroyer of Death | Vol. 22 | pg. 697 | 12/17/76 |
| 1 Cor. 15:35-38 | Resurgam | Vol. 6 | pg. 157 | 4/1/60 |
| 1 Cor. 15:55-58 | A Challenge and War-charge | Vol. 51 | pg. 157 | 3/30/05 |
| 1 Cor. 15:56-57 | Thoughts On the Last Battle | Vol. 1 | pg. 173 | 5/13/55 |

1 Cor. 15:58 Motives for Steadfastness Vol. 19 pg. 265 5/11/73

2 CORINTHIANS

| | | | | |
|----------------|---|---------|---------|----------|
| 2 Cor. 1:1-20 | Exposition | Vol. 45 | pg. 454 | 9/17/99 |
| 2 Cor. 1:1-24 | Exposition | Vol. 46 | pg. 22 | 1/14/00 |
| 2 Cor. 1:3-4 | Comforted And Comforting | Vol. 45 | pg. 445 | 9/17/99 |
| 2 Cor. 1:5 | Consolation Proportionate To Spiritual Sufferings | Vol. 1 | pg. 93 | 3/11/55 |
| 2 Cor. 1:9 | Sentence Of Death, The Death of Self-trust | Vol. 26 | pg. 265 | 5/2/80 |
| 2 Cor. 1:10 | The Tenses | Vol. 47 | pg. 121 | 3/17/01 |
| 2 Cor. 1:11-12 | The Power of Prayer and the Pleasure of Praise | Vol. 9 | pg. 241 | 5/3/63 |
| 2 Cor. 1:20 | All the Promises | Vol. 46 | pg. 13 | 1/14/00 |
| 2 Cor. 2:1 | Exposition | Vol. 46 | pg. 22 | 1/14/00 |
| 2 Cor. 2:12 | Grace For Grace | Vol. 35 | pg. 289 | 5/19/89 |
| 2 Cor. 2:15-16 | The Two Effects of the Gospel | Vol. 1 | pg. 197 | 5/27/55 |
| 2 Cor. 3:5-6 | Not Sufficient, and Yet Sufficient | Vol. 36 | pg. 457 | 8/24/90 |
| 2 Cor. 3:17 | Spiritual Liberty | Vol. 1 | pg. 61 | 2/18/55 |
| 2 Cor. 4:1-18 | Exposition | Vol. 55 | pg. 537 | 11/4/09 |
| 2 Cor. 4:1-18 | Exposition | Vol. 56 | pg. 308 | 6/23/10 |
| 2 Cor. 4:1-18 | Exposition | Vol. 57 | pg. 165 | 4/6/11 |
| 2 Cor. 4:1-18 | Exposition | Vol. 58 | pg. 70 | 2/8/12 |
| 2 Cor. 4:3 | Why The Gospel Is Hidden | Vol. 58 | pg. 61 | 2/8/12 |
| 2 Cor. 4:3-4 | The True Gospel No Hidden Gospel | Vol. 28 | pg. 313 | 6/4/82 |
| 2 Cor. 4:4 | The Gospel of the Glory of Christ | Vol. 35 | pg. 169 | 3/31/89 |
| 2 Cor. 4:4 | Blinded By Satan | Vol. 39 | pg. 181 | 4/16/93 |
| 2 Cor. 4:6 | The Glory of God in the Face of Jesus Christ | Vol. 25 | pg. 505 | 9/7/79 |
| 2 Cor. 4:17 | "Our Light Affliction" | Vol. 57 | pg. 157 | 4/6/11 |
| 2 Cor. 4:18 | Vanities and Verities | Vol. 23 | pg. 589 | 1877 |
| 2 Cor. 5:1-9 | Exposition | Vol. 58 | pg. 70 | 2/8/12 |
| 2 Cor. 5:1-21 | Exposition | Vol. 56 | pg. 308 | 6/23/10 |
| 2 Cor. 5:1 | The Tent Dissolved and the Mansion Entered | Vol. 29 | pg. 253 | 5/6/83 |
| 2 Cor. 5:5 | The Glorious Hereafter and Ourselves | Vol. 16 | pg. 49 | 1/23/70 |
| 2 Cor. 5:5 | Preparation for Heaven | Vol. 62 | pg. 541 | 11/16/16 |
| 2 Cor. 5:5-10 | The Believer In the Body and Out of the Body | Vol. 22 | pg. 385 | 7/2/76 |
| 2 Cor. 5:7 | Faith <i>Versus</i> Sight | Vol. 12 | pg. 109 | 1866 |
| 2 Cor. 5:8 | To Die Or Not To Die! | Vol. 7 | pg. 521 | 9/11/61 |
| 2 Cor. 5:9-21 | Exposition | Vol. 49 | pg. 311 | 6/28/03 |
| 2 Cor. 5:10 | The Great Assize | Vol. 18 | pg. 577 | 8/25/72 |
| 2 Cor. 5:14 | Under Constraint | Vol. 24 | pg. 241 | 4/28/78 |
| 2 Cor. 5:17 | The Believer A New Creature | Vol. 15 | pg. 397 | 7/18/69 |
| 2 Cor. 5:17 | Is Conversion Necessary? | Vol. 20 | pg. 397 | 7/19/74 |
| 2 Cor. 5:17 | Christ the Maker of all Things New | Vol. 22 | pg. 685 | 12/10/76 |
| 2 Cor. 5:18 | "The Ministry of Reconciliation" | Vol. 49 | pg. 301 | 6/28/03 |
| 2 Cor. 5:18 | High Doctrine | Vol. 6 | pg. 253 | 6/3/60 |
| 2 Cor. 5:18-21 | God Beseeking Sinners By His Ministers | Vol. 19 | pg. 421 | 7/27/73 |
| 2 Cor. 5:20 | Christ's Ambassadors | Vol. 55 | pg. 277 | 6/10/09 |
| 2 Cor. 5:20 | A Solemn Embassy | Vol. 62 | pg. 49 | 2/3/16 |
| 2 Cor. 5:20-21 | The Heart of the Gospel | Vol. 32 | pg. 385 | 7/18/86 |
| 2 Cor. 5:21 | Christ Made Sin | Vol. 56 | pg. 301 | 6/23/10 |
| 2 Cor. 5:21 | Substitution | Vol. 3 | pg. 273 | 7/19/57 |
| 2 Cor. 5:21 | Christ — Our Substitute | Vol. 6 | pg. 189 | 4/15/60 |
| 2 Cor. 6:1-18 | Exposition | Vol. 50 | pg. 263 | 5/26/04 |
| 2 Cor. 6:2 | Now | Vol. 10 | pg. 681 | 12/4/64 |
| 2 Cor. 6:2 | The Day of Salvation | Vol. 24 | pg. 37 | 1/13/78 |
| 2 Cor. 7:1 | Our Position and Our Purpose | Vol. 57 | pg. 169 | 4/13/11 |
| 2 Cor. 7:10 | Sorrow <i>and</i> Sorrow | Vol. 46 | pg. 421 | 9/9/00 |

| | | | | |
|----------------------------|--|---------|---------|--------------|
| 2 Cor. 8:1-23 | Exposition | Vol. 60 | pg. 298 | 6/18/14 |
| 2 Cor. 8:1-24 | Exposition | Vol. 54 | pg. 237 | 5/14/08 |
| 2 Cor. 8:5 | The Best Donation | Vol. 37 | pg. 625 | 12/13/91 |
| 2 Cor. 8:5 | Joining the Church | Vol. 60 | pg. 289 | 6/18/14 |
| 2 Cor. 8:9 & Phil. 1:29 | Christ's Motive and Ours | Vol. 37 | pg. 601 | 11/29/91 |
| 2 Cor. 8:9 | Christ's Poverty, Our Riches | Vol. 47 | pg. 97 | 3/3/01 |
| 2 Cor. 8:9 | Knowing and Doing | Vol. 54 | pg. 229 | 5/14/08 |
| 2 Cor. 8:9 | Our Lord's Voluntary Poverty | Vol. 59 | pg. 541 | 11/13/13 |
| 2 Cor. 8:9 | Poverty and Riches | Vol. 40 | pg. 265 | 6/10/94 |
| 2 Cor. 8:9 | The Condescension of Christ | Vol. 3 | pg. 349 | 9/13/57 |
| 2 Cor. 8:24 | Expected Proof of Professed Love | Vol. 26 | pg. 101 | 1880 |
| 2 Cor. 9:7 | A Cheerful Giver Beloved of God | Vol. 14 | pg. 565 | 8/27/68 |
| 2 Cor. 9:15 | The Gift Unspeakable | Vol. 26 | pg. 421 | 7/25/80 |
| 2 Cor. 9:15 | Praise For the Gift of Gifts | Vol. 38 | pg. 121 | 3/13/92 |
| 2 Cor. 9:15 | God's Unspeakable Gift | Vol. 39 | pg. 13 | 1/8/93 |
| 2 Cor. 10:5 | Forts Demolished and Prisoners Taken | Vol. 25 | pg. 265 | 5/11/79 |
| 2 Chr. 11:15 | God's Unspeakable Gift | Vol. 39 | pg. 13 | 1/8/93 |
| 2 Cor. 11:22 | Pedigree | Vol. 54 | pg. 217 | 5/7/08 |
| 2 Cor. 12:7-9 | The Thorn In The Flesh | Vol. 18 | pg. 673 | 12/8/72 |
| 2 Cor. 12:9 | Strengthening Words From the Saviour's Lips | Vol. 22 | pg. 193 | 4/2/76 |
| 2 Cor. 12:9 | A Wafer of Honey | Vol. 52 | pg. 73 | 2/8/06 |
| 2 Cor. 12:10 | A Paradox | Vol. 34 | pg. 589 | 11/4/88 |
| 2 Cor. 12:11 | A Sermon Upon One Nothing By Another Nothing | Vol. 25 | pg. 85 | 1879, pg. 85 |
| 2 Cor. 13:3-5 | The Proof of Our Ministry | Vol. 30 | pg. 361 | 6/29/84 |
| 2 Cor. 13:5 | Self-examination | Vol. 4 | pg. 425 | 10/10/58 |

GALATIANS

| | | | | |
|--------------|---|---------|---------|----------|
| Gal. 1:1-24 | Exposition | Vol. 44 | pg. 525 | 10/30/98 |
| Gal. 1:11-24 | Exposition | Vol. 56 | pg. 298 | 6/16/10 |
| Gal. 1:4-5 | The Object of Christ's Death | Vol. 42 | pg. 445 | 9/20/96 |
| Gal. 1:11 | Our Manifesto | Vol. 37 | pg. 37 | 1/25/91 |
| Gal. 1:15 | Prevenient Grace | Vol. 11 | pg. 589 | 1865 |
| Gal. 1:15 | "It Pleased God" | Vol. 56 | pg. 289 | 6/16/10 |
| Gal. 1:16 | God-guided Men | Vol. 54 | pg. 61 | 2/6/08 |
| Gal. 2:1-21 | Exposition | Vol. 56 | pg. 298 | 6/16/10 |
| Gal. 2:15-21 | Exposition | Vol. 53 | pg. 514 | 10/17/07 |
| Gal. 2:16-21 | Exposition | Vol. 40 | pg. 346 | 7/22/94 |
| Gal. 2:10 | The Duty of Remembering The Poor | Vol. 2 | pg. 361 | 9/25/56 |
| Gal. 2:20 | Christus Et Ego | Vol. 13 | pg. 637 | 11/17/67 |
| Gal. 2:20 | Everyday Religion | Vol. 27 | pg. 281 | 5/22/81 |
| Gal. 2:20 | "Christ First, Me Last: Nothing Between But Love" | Vol. 40 | pg. 337 | 7/22/94 |
| Gal. 2:21 | Salvation By Works, A Criminal Doctrine | Vol. 26 | pg. 241 | 4/18/80 |
| Gal. 3:1-29 | Exposition | Vol. 41 | pg. 105 | 3/3/95 |
| Gal. 3:1-29 | Exposition | Vol. 40 | pg. 346 | 7/22/94 |
| Gal. 3:1-29 | Exposition | Vol. 53 | pg. 514 | 10/17/07 |
| Gal. 3:1-29 | Exposition | Vol. 56 | pg. 201 | 4/21/10 |
| Gal. 3:1 | Men Bewitched | Vol. 26 | pg. 385 | 1880 |
| Gal. 3:2 | The Hearing of Faith | Vol. 29 | pg. 85 | 2/11/83 |
| Gal. 3:3 | The Work of the Holy Spirit | Vol. 4 | pg. 105 | 11/5/57 |
| Gal. 3:10 | A Call To the Unconverted | Vol. 4 | pg. 73 | 11/8/57 |
| Gal. 3:10-14 | The Curse: and The Curse For Us | Vol. 35 | pg. 361 | 5/26/89 |
| Gal. 3:11 | Life By Faith | Vol. 14 | pg. 313 | 6/7/68 |
| Gal. 3:13 | Christ Made A Curse For Us | Vol. 15 | pg. 301 | 5/30/69 |
| Gal. 3:13 | The Curse Removed | Vol. 57 | pg. 277 | 6/15/11 |

| | | | | |
|-------------------|--|---------|---------|---------------|
| Gal. 3:19 | The Uses of the Law | Vol. 3 | pg. 169 | 4/19/57 |
| Gal. 3:20 | A Mediator | Vol. 36 | pg. 693 | 2/23/90 |
| Gal. 3:22 | The Great Jail, and How To Get Out Of It | Vol. 19 | pg. 673 | 11/30/73 |
| Gal. 3:23 | Under Arrest | Vol. 41 | pg. 97 | 3/3/95 |
| Gal. 3:24-25 | The Stern Pedagogue | Vol. 20 | pg. 553 | 1874 |
| Gal. 4:1-31 | Exposition | Vol. 44 | pg. 286 | 6/12/98 |
| Gal. 4:3-6 | The Great Birthday and Our Coming of Age | Vol. 30 | pg. 685 | 12/21/84 |
| Gal. 4:6 | Adoption — The Spirit and the Cry | Vol. 24 | pg. 529 | 9/22/78 |
| Gal. 4:12-31 | Exposition | Vol. 61 | pg. 142 | 3/25/15 |
| Gal. 4:24 | The Allegories of Sarah and Hagar | Vol. 2 | pg. 121 | 3/2/56 |
| Gal. 5:1-26 | Exposition | Vol. 57 | pg. 226 | 5/11/11 |
| Gal. 5:1 | Exposition | Vol. 44 | pg. 286 | 6/12/98 |
| Gal. 5:1-4; 19-26 | Exposition | Vol. 61 | pg. 143 | 3/25/15 |
| Gal. 5:5 | Salvation By Faith and the Work of the Spirit | Vol. 21 | pg. 205 | 4/11/75 |
| Gal. 5:6 | A Remonstrance and a Rejoinder | Vol. 22 | pg. 109 | 1876, pg. 109 |
| Gal. 5:6 | The Luther Sermon at Exeter-hall | Vol. 29 | pg. 625 | 11/11/83 |
| Gal. 5:6 | Faith Working By Love | Vol. 26 | pg. 457 | 8/15/80 |
| Gal. 5:6 | Circumcision and Uncircumcision | Vol. 61 | pg. 169 | 4/15/15 |
| Gal. 5:11 | “The Offence of the Cross” | Vol. 44 | pg. 517 | 10/30/98 |
| Gal. 5:13-26 | Exposition | Vol. 45 | pg. 358 | 7/23/99 |
| Gal. 5:13-26 | Exposition | Vol. 49 | pg. 239 | 5/17/03 |
| Gal. 5:22 | The Fruit of the Spirit: Joy | Vol. 27 | pg. 73 | 2/6/81 |
| Gal. 5:22 | The First Fruit of the Spirit | Vol. 30 | pg. 289 | 5/25/84 |
| Gal. 6:1-2 | Exposition | Vol. 49 | pg. 239 | 5/17/03 |
| Gal. 6:1-10 | Exposition | Vol. 45 | pg. 358 | 7/23/99 |
| Gal. 6:1-11 | Exposition | Vol. 61 | pg. 144 | 3/25/15 |
| Gal. 6:2, 5 | Burden-bearing | Vol. 49 | pg. 229 | 5/17/03 |
| Gal. 6:5 | Life’s Inevitable Burden | Vol. 59 | pg. 241 | 5/22/13 |
| Gal. 6:7 | Sowing and Reaping | Vol. 54 | pg. 433 | 9/10/08 |
| Gal. 6:9 | The Cause And Cure of Weariness In Sabbath-School Teachers | Vol. 23 | pg. 625 | 11/8/77 |
| Gal. 6:14 | Three Crosses | Vol. 24 | pg. 673 | 1878 |
| Gal. 6:14 | The Cross Our Glory | Vol. 31 | pg. 493 | 9/13/85 |
| Gal. 6:14 | Grand Glorifying | Vol. 61 | pg. 133 | 3/25/15 |
| Gal. 6:6-18 | Exposition | Vol. 49 | pg. 275 | 6/7/03 |

EPHESIANS

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Eph. 1:1-14 | Exposition | Vol. 53 | pg. 359 | 7/18/07 |
| Eph. 1:1-23 | Exposition | Vol. 38 | pg. 358 | 7/24/92 |
| Eph. 1:1-23 | Exposition | Vol. 45 | pg. 394 | 8/13/99 |
| Eph. 1:1-23 | Exposition | Vol. 48 | pg. 573 | 11/30/02 |
| Eph. 1:1-23 | Exposition | Vol. 58 | pg. 417 | 8/29/12 |
| Eph. 1:1-23 | Exposition | Vol. 60 | pg. 515 | 10/22/14 |
| Eph. 1:1-23 | Exposition | Vol. 62 | pg. 394 | 8/17/16 |
| Eph. 1:3-4 | “Glory Be Unto the Father” | Vol. 29 | pg. 481 | 9/9/83 |
| Eph. 1:3-4 | Blessing for Blessing | Vol. 38 | pg. 349 | 7/24/92 |
| Eph. 1:5 | Adoption | Vol. 7 | pg. 97 | 1861 |
| Eph. 1:12-13 | Trust | Vol. 33 | pg. 457 | 8/21/87 |
| Eph. 1:6 | “Accepted In the Beloved” | Vol. 8 | pg. 529 | 9/21/62 |
| Eph. 1:6 | Accepted of the Great Father | Vol. 29 | pg. 397 | 7/15/83 |
| Eph. 1:6 | Dei Gratia | Vol. 16 | pg. 601 | 10/30/70 |
| Eph. 1:6 | The Glory of Grace | Vol. 48 | pg. 37 | 1/26/02 |
| Eph. 1:6 | “Accepted In the Beloved” | Vol. 60 | pg. 505 | 10/22/14 |
| Eph. 1:7 | The Glories of Forgiving Grace | Vol. 26 | pg. 481 | 8/29/80 |
| Eph. 1:7 | Redemption Through Blood, The Gracious Forgiveness of sins | Vol. 37 | pg. 301 | 6/7/91 |
| Eph. 1:7 | Great Forgiveness For Great Sin | Vol. 49 | pg. 613 | 12/24/03 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Eph. 1:7 | The Treasure of Grace | Vol. 6 | pg. 73 | 1/22/60 |
| Eph. 1:13 | The True Position of Assurance | Vol. 10 | pg. 549 | 10/2/64 |
| Eph. 1:13-14 | The Earnest of Heaven | Vol. 7 | pg. 81 | 2/3/61 |
| Eph. 1:13-14 | The Sealing of the Spirit | Vol. 22 | pg. 157 | 3/19/76 |
| Eph. 1:18-20 | The Three Whats | Vol. 25 | pg. 181 | 1879 |
| Eph. 1:19-23 | The Mighty Power Which Creates and Sustains Faith | Vol. 9 | pg. 565 | 10/11/63 |
| Eph. 2:1 | Exposition | Vol. 60 | pg. 515 | 10/22/14 |
| Eph. 2:1-19 | Exposition | Vol. 60 | pg. 34 | 1/15/14 |
| Eph. 2:1-21 | Exposition | Vol. 38 | pg. 370 | 7/24/92 |
| Eph. 2:1-22 | Exposition | Vol. 48 | pg. 130 | 3/16/02 |
| Eph. 2:1-22 | Exposition | Vol. 49 | pg. 359 | 7/26/03 |
| Eph. 2:1-22 | Exposition | Vol. 56 | pg. 250 | 5/19/10 |
| Eph. 2:1-22 | Exposition | Vol. 61 | pg. 418 | 9/2/15 |
| Eph. 2:1-22 | Exposition | Vol. 38 | pg. 370 | 7/31/92 |
| Eph. 2:1 | Life From the Dead | Vol. 38 | pg. 361 | 7/31/92 |
| Eph. 2:1 | Spiritual Resurrection | Vol. 3 | pg. 161 | 4/12/57 |
| Eph. 2:1 | Once Dead, Now Alive | Vol. 40 | pg. 553 | 11/25/94 |
| Eph. 2:4-5 | Resurrection With Christ | Vol. 14 | pg. 205 | 4/12/68 |
| Eph. 2:4-5 | "His Great Love" | Vol. 52 | pg. 1 | 12/28/05 |
| Eph. 2:5 | Salvation By Grace | Vol. 47 | pg. 397 | 8/25/01 |
| Eph. 2:7 | The Exceeding Riches of Grace | Vol. 28 | pg. 337 | 6/18/82 |
| Eph. 2:8 | Salvation All of Grace | Vol. 18 | pg. 433 | 8/4/72 |
| Eph. 2:8 | Faith: What is It? How Can It Be Obtained? | Vol. 27 | pg. 401 | 7/17/81 |
| Eph. 2:8 | All of Grace | Vol. 61 | pg. 469 | 10/7/15 |
| Eph. 2:9 | Not Boasting, But Trusting | Vol. 60 | pg. 253 | 5/28/14 |
| Eph. 2:9-10 | The Agreement of Salvation by Grace With Walking In Good Works | Vol. 37 | pg. 337 | 6/28/91 |
| Eph. 2:10 | The Singular Origin of a Christian Man | Vol. 31 | pg. 145 | 3/22/85 |
| Eph. 2:12 | A Solemn Deprival | Vol. 61 | pg. 385 | 8/19/15 |
| Eph. 2:13 | Nearness To God | Vol. 15 | pg. 37 | 1/17/69 |
| Eph. 2:13 | Our Glorious Transforming | Vol. 62 | pg. 37 | 1/27/16 |
| Eph. 2:14 | Christ Our Peace | Vol. 59 | pg. 613 | 12/25/13 |
| Eph. 2:20 | Jesus Christ Himself | Vol. 23 | pg. 685 | 12/9/77 |
| Eph. 2:22 | The Tabernacle of the Most High | Vol. 5 | pg. 337 | 8/14/59 |
| Eph. 3:8 | The Unsearchable Riches of Christ | Vol. 13 | pg. 205 | 4/14/67 |
| Eph. 3:8 | A Grateful Summary of Twenty Volumes | Vol. 20 | pg. 709 | 12/27/74 |
| Eph. 3:10 | Another and a Nobler Exhibition | Vol. 8 | pg. 253 | 5/4/62 |
| Eph. 3:10 | Angelic Studies | Vol. 16 | pg. 301 | 5/1/70 |
| Eph. 3:15 | Saints In Heaven and Earth One Family | Vol. 21 | pg. 457 | 8/8/75 |
| Eph. 3:16-19 | Heavenly Geometry | Vol. 12 | pg. 469 | 8/19/66 |
| Eph. 3:19 | "The Love of Jesus, What It Is — None But His Loved Ones Know | Vol. 8 | pg. 337 | 6/18/62 |
| Eph. 3:19 | The Top of the Ladder | Vol. 29 | pg. 685 | 10/25/83 |
| Eph. 3:20-21 | Paul's Doxology | Vol. 21 | pg. 661 | 11/7/75 |
| Eph. 4:1-32 | Exposition | Vol. 40 | pg. 561 | 11/25/94 |
| Eph. 4:1-32 | Exposition | Vol. 48 | pg. 45 | 1/26/02 |
| Eph. 4:1-32 | Exposition | Vol. 61 | pg. 321 | 7/8/15 |
| Eph. 4:3 | True Unity Promoted | Vol. 11 | pg. 1 | 1/1/65 |
| Eph. 4:7-12 | The Ascension of Christ | Vol. 17 | pg. 169 | 3/26/71 |
| Eph. 4:15-16 | The Head and the Body | Vol. 45 | pg. 601 | 12/17/99 |
| Eph. 4:20 | Grieving the Holy Spirit | Vol. 5 | pg. 425 | 10/9/59 |
| Eph. 4:20-21 | True Learning | Vol. 47 | pg. 133 | 3/24/01 |
| Eph. 4:30 | Grieve Not the Holy Spirit | Vol. 13 | pg. 121 | 3/3/67 |
| Eph. 4:32 | "For Christ's Sake" | Vol. 11 | pg. 85 | 2/12/65 |
| Eph. 4:32 | Forgiveness Made Easy | Vol. 24 | pg. 685 | 1878 |
| Eph. 5:1-33 | Exposition | Vol. 41 | pg. 94 | 2/24/95 |
| Eph. 5:1 | Imitators of God | Vol. 29 | pg. 325 | 6/10/83 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Eph. 5:11 | The Child of Light and the Works of Darkness | Vol. 41 | pg. 85 | 2/24/95 |
| Eph. 5:14 | The Church Aroused | Vol. 12 | pg. 577 | 10/7/66 |
| Eph. 5:18 | Filling with the Spirit, and Drunkenness With Wine | Vol. 35 | pg. 577 | 5/26/89 |
| Eph. 5:20 | Always, And For All Things | Vol. 19 | pg. 61 | 2/2/73 |
| Eph. 5:25 | Christ's Love To His Spouse | Vol. 42 | pg. 505 | 10/25/96 |
| Eph. 5:25-27 | A Glorious Church | Vol. 11 | pg. 253 | 5/7/65 |
| Eph. 5:30 | The Matchless Mystery | Vol. 20 | pg. 37 | 1874 |
| Eph. 5:30 | Members of Christ | Vol. 38 | pg. 85 | 2/21/92 |
| Eph. 5:30 | "Living, Loving, Lasting Union" | Vol. 38 | pg. 97 | 2/28/92 |
| Eph. 6:1-15 | Exposition | Vol. 61 | pg. 323 | 7/8/15 |
| Eph. 6:7 | Our Motto | Vol. 25 | pg. 397 | 7/20/79 |
| Eph. 6:10-24 | Exposition | Vol. 55 | pg. 226 | 5/6/09 |
| Eph. 6:15 | Shoes For Pilgrims and Warriors | Vol. 55 | pg. 217 | 5/6/09 |
| Eph. 6:16 | The Shield of Faith | Vol. 7 | pg. 545 | 10/27/61 |
| Eph. 6:17 | The Sword of the Spirit | Vol. 37 | pg. 229 | 4/19/91 |

PHILIPPIANS

| | | | | |
|---------------|---|---------|---------|----------|
| Phil. 1:3-7 | The Pastor's Joy and Confidence | Vol. 36 | pg. 385 | 7/13/90 |
| Phil. 1:6 | The Perseverance of the Saints | Vol. 15 | pg. 289 | 5/23/69 |
| Phil. 1:12-30 | Exposition | Vol. 47 | pg. 106 | 3/3/01 |
| Phil. 1:18 | Evangelical Congratulation — Rev. W. Brock | Vol. 7 | pg. 177 | 3/25/61 |
| Phil. 1:19 | The Minister's Plea | Vol. 19 | pg. 601 | 11/2/73 |
| Phil. 1:21 | The Good Man's Life and Death | Vol. 3 | pg. 309 | 8/16/57 |
| Phil. 1:21-30 | Exposition | Vol. 55 | pg. 154 | 3/25/09 |
| Phil. 1:23 | "For Ever With the Lord" | Vol. 19 | pg. 565 | 10/12/73 |
| Phil. 1:23 | Paul's Desire To Depart | Vol. 5 | pg. 393 | 9/11/59 |
| Phil. 1:27 | The Gospel's Power In A Christian's Life | Vol. 11 | pg. 399 | 1865 |
| Phil. 2:1-11 | Exposition | Vol. 55 | pg. 154 | 3/25/09 |
| Phil. 2:1-13 | Exposition | Vol. 47 | pg. 106 | 3/3/01 |
| Phil. 2:1-18 | Exposition | Vol. 38 | pg. 538 | 11/6/92 |
| Phil. 2:1 | Consolation In Christ | Vol. 7 | pg. 1 | 12/2/60 |
| Phil. 2:8 | Our Lord In the Valley of Humiliation | Vol. 38 | pg. 529 | 11/6/92 |
| Phil. 2:9-11 | The Exaltation of Christ | Vol. 2 | pg. 377 | 11/2/56 |
| Phil. 2:12 | "Your Own Salvation" | Vol. 17 | pg. 421 | 7/30/71 |
| Phil. 2:12-13 | Working Out What Is Worked In | Vol. 14 | pg. 385 | 7/12/68 |
| Phil. 2:14-16 | Believers — Lights In the World | Vol. 8 | pg. 541 | 9/28/62 |
| Phil. 3:1-21 | Exposition | Vol. 39 | pg. 322 | 7/2/93 |
| Phil. 3:1-21 | Exposition | Vol. 56 | pg. 382 | 8/4/10 |
| Phil. 3:7-9 | A Business-like Account | Vol. 23 | pg. 313 | 6/3/77 |
| Phil. 3:1-21 | Exposition | Vol. 44 | pg. 45 | 1/23/98 |
| Phil. 3:8 | The Priceless Prize | Vol. 56 | pg. 373 | 8/4/10 |
| Phil. 3:10 | Do You Know Him? | Vol. 10 | pg. 61 | 1/31/64 |
| Phil. 3:10 | The Power Of His Resurrection | Vol. 35 | pg. 205 | 4/21/89 |
| Phil. 3:12 | Paul Apprehended and Apprehending | Vol. 39 | pg. 313 | 7/2/93 |
| Phil. 3:13-14 | Onward | Vol. 19 | pg. 301 | 5/25/73 |
| Phil. 3:18-19 | False Professors Solemnly Warned | Vol. 2 | pg. 385 | 8/24/56 |
| Phil. 3:18-19 | The Enemies of the Cross of Christ | Vol. 44 | pg. 37 | 1/23/98 |
| Phil. 3:20 | Citizenship in Heaven | Vol. 8 | pg. 589 | 10/12/62 |
| Phil. 3:20-21 | The Power of Christ Illustrated by the Resurrection | Vol. 17 | pg. 61 | 1/29/71 |
| Phil. 3:20-21 | The Watchword For Today: "Stand Fast" | Vol. 33 | pg. 229 | 4/17/87 |
| Phil. 4:1-9 | Exposition | Vol. 41 | pg. 10 | 1/6/95 |
| Phil. 4:1-23 | Exposition | Vol. 40 | pg. 117 | 3/11/94 |
| Phil. 4:1-23 | Exposition | Vol. 41 | pg. 142 | 3/24/95 |
| Phil. 4:1-23 | Exposition | Vol. 57 | pg. 9 | 1/5/11 |
| Phil. 4:4 | Joy, A Duty | Vol. 41 | pg. 133 | 3/24/95 |

| | | | | |
|-------------|-----------------------------|---------|---------|----------|
| Phil. 4:6 | Prayer Perfumed With Praise | Vol. 25 | pg. 217 | 4/20/79 |
| Phil. 4:6-7 | Prayer, The Cure For Care | Vol. 40 | pg. 121 | 3/11/94 |
| Phil. 4:7 | The Peace of God | Vol. 24 | pg. 73 | 1/6/78 |
| Phil. 4:7 | How To Keep the Heart | Vol. 4 | pg. 121 | 2/21/58 |
| Phil. 4:11 | Contentment | Vol. 6 | pg. 269 | 3/25/60 |
| Phil. 4:13 | All-sufficiency Magnified | Vol. 6 | pg. 477 | 11/18/60 |
| Phil. 4:19 | Filling the Empty Vessels | Vol. 29 | pg. 169 | 9/17/82 |
| Phil. 4:19 | A New Year's Wish | Vol. 57 | pg. 1 | 1/5/11 |

COLOSSIANS

| | | | | |
|-----------------------------|---|---------|---------|----------|
| Col. 1:1-19 | Exposition | Vol. 47 | pg. 526 | 11/3/01 |
| Col. 1:1-29 | Exposition | Vol. 56 | pg. 34 | 1/13/10 |
| Col. 1:1-29 | Exposition | Vol. 42 | pg. 238 | 5/17/96 |
| Col. 1:5 | The Hope Laid Up In Heaven | Vol. 24 | pg. 565 | 10/13/78 |
| Col. 1:12-13 | Special Thanksgiving To the Father | Vol. 6 | pg. 261 | 1/15/60 |
| Col. 1:13 | Deliverance From the Power of Darkness | Vol. 59 | pg. 373 | 8/7/13 |
| Col. 1:16 | Christ The Creator | Vol. 56 | pg. 25 | 1/13/10 |
| Col. 1:18 | The Head of the Church | Vol. 14 | pg. 613 | 11/1/68 |
| Col. 1:19 | All Fullness In Christ | Vol. 17 | pg. 121 | 2/26/71 |
| Col. 1:23 | Stand Fast | Vol. 28 | pg. 613 | 8/27/82 |
| Col. 1:27 | Christ In You | Vol. 29 | pg. 265 | 5/13/83 |
| Col. 1:28 | Perfection In Christ | Vol. 44 | pg. 361 | 7/31/98 |
| Col. 1:29 | Work In Us and Work By Us | Vol. 16 | pg. 73 | 2/6/70 |
| Col. 2:1-23 | Exposition | Vol. 56 | pg. 142 | 3/17/10 |
| Col. 2:6 | Life and Walk of Faith | Vol. 8 | pg. 673 | 12/7/62 |
| Col. 2:6 | A Consistent Walk For Time To Come | Vol. 53 | pg. 121 | 3/7/07 |
| Col. 2:6 | "As" and "So" | Vol. 55 | pg. 577 | 12/2/09 |
| Col. 2:6-17 | Exposition | Vol. 39 | pg. 119 | 3/5/93 |
| Col. 2:18 | A Warning To Believers | Vol. 61 | pg. 313 | 7/8/15 |
| Col. 2:6-23 | Exposition | Vol. 45 | pg. 35 | 1/15/99 |
| Col. 2:12 | Christian Baptism — Rev. Hugh Stowell Brown | Vol. 7 | pg. 265 | 4/9/61 |
| Col. 2:13 | Life and Pardon | Vol. 35 | pg. 457 | 8/25/89 |
| Col. 2:13-14 | Death and Its Sentence Abolished | Vol. 45 | pg. 25 | 1/15/99 |
| Col. 2:15 | Christ Triumphant | Vol. 5 | pg. 385 | 9/4/59 |
| Col. 3:1-3 | Exposition | Vol. 45 | pg. 35 | 1/15/99 |
| Col. 3:1-25 | Exposition | Vol. 53 | pg. 215 | 4/25/07 |
| Col. 3:1-2 | Following The Risen Christ | Vol. 26 | pg. 193 | 3/28/80 |
| Col. 3:1-17 | Exposition | Vol. 46 | pg. 285 | 6/17/00 |
| Col. 3:1-22 | Exposition | Vol. 61 | pg. 81 | 2/18/15 |
| Col. 3:4 | Christ Our Life — Soon to Appear | Vol. 11 | pg. 121 | 2/26/65 |
| Col. 3:11 | Christ Is All | Vol. 17 | pg. 457 | 8/20/71 |
| Col. 3:11 | "Christ Is All" | Vol. 50 | pg. 301 | 6/16/04 |
| Col. 3:11 & 1 Cor. 15:28 | All and All In All | Vol. 43 | pg. 37 | 1/24/97 |
| Col. 3:11 | "Christ Is All" | Vol. 61 | pg. 73 | 2/18/15 |
| Col. 3:13 | Divine Forgiveness Admired and Imitated | Vol. 31 | pg. 277 | 5/17/85 |
| Col. 3:15 | That Horrible East Wind | Vol. 28 | pg. 673 | 1882 |
| Col. 3:16 | Christ's Indwelling Word | Vol. 46 | pg. 277 | 6/17/00 |
| Col. 3:17 | Method & Music, or the Art of Holy and Happy Living | Vol. 16 | pg. 61 | 1/30/70 |
| Col. 3:24 | All For Jesus | Vol. 20 | pg. 661 | 11/29/74 |
| Col. 4:1-4 | Exposition | Vol. 53 | pg. 215 | 4/25/07 |
| Col. 4:1-4 | Exposition | Vol. 61 | pg. 82 | 2/18/15 |
| Col. 4:2 | A Sermon For the Week of Prayer | Vol. 7 | pg. 49 | 1/6/61 |

I THESSALONIANS

| | | | | |
|------------------|--|---------|---------|----------|
| 1 Thess. 1:1-10 | Exposition | Vol. 63 | pg. 83 | 2/15/17 |
| 1 Thess. 1:4-6 | Election: Its Defences and Evidences | Vol. 51 | pg. 49 | 1/26/05 |
| 1 Thess. 1:5 | Degrees of Power Attending the Gospel | Vol. 11 | pg. 493 | 9/3/65 |
| 1 Thess. 1:5-10 | The Gospel In Power | Vol. 63 | pg. 73 | 2/15/17 |
| 1 Thess. 1:8 | Sounding Out the Word of the Lord | Vol. 35 | pg. 157 | 3/24/89 |
| 1 Thess. 1:9-10 | A Summary of Experience and a Body of Divinity | Vol. 30 | pg. 577 | 10/26/84 |
| 1 Thess. 2:13-14 | Three Sights Worth Seeing | Vol. 33 | pg. 469 | 3/24/87 |
| 1 Thess. 2:18 | Satanic Hindrances | Vol. 11 | pg. 601 | 10/29/65 |
| 1 Thess. 3:8 | The Pastor's Life Wrapped Up With His People's Steadfastness | Vol. 30 | pg. 7 | 1884 |
| 1 Thess. 4:13 | Death, A Sleep | Vol. 54 | pg. 49 | 1/30/08 |
| 1 Thess. 4:13-18 | Exposition | Vol. 42 | pg. 538 | 11/8/96 |
| 1 Thess. 4:17 | "For Ever With The Lord" | Vol. 23 | pg. 517 | 9/16/77 |
| 1 Thess. 5:1-28 | Exposition | Vol. 42 | pg. 738 | 11/8/96 |
| 1 Thess. 5:1-28 | Exposition | Vol. 55 | pg. 515 | 10/21/09 |
| 1 Thess. 5:1-28 | Exposition | Vol. 62 | pg. 129 | 3/16/16 |
| 1 Thess. 5:6 | The Enchanted Ground | Vol. 2 | pg. 81 | 2/3/56 |
| 1 Thess. 5:6 | Sleep Not | Vol. 17 | pg. 649 | 1871 |
| 1 Thess. 5:6 | Awake! Awake! | Vol. 3 | pg. 445 | 11/15/57 |
| 1 Thess. 5:8 | The Christian's Helmet | Vol. 55 | pg. 505 | 10/21/09 |
| 1 Thess. 5:16 | Rejoice Evermore | Vol. 32 | pg. 265 | 5/23/86 |
| 1 Thess. 5:17 | "Pray Without Ceasing" | Vol. 18 | pg. 133 | 3/10/72 |

2 THESSALONIANS

| | | | | |
|------------------|-------------------------------------|---------|---------|---------|
| 2 Thess. 1:1-12 | Exposition | Vol. 52 | pg. 311 | 6/21/06 |
| 2 Thess. 1:1-12 | Exposition | Vol. 56 | pg. 95 | 2/17/10 |
| 2 Thess. 1:3 | A Lecture For Little-Faith | Vol. 4 | pg. 321 | 7/18/58 |
| 2 Thess. 1:3 | The Necessity of Growing Faith | Vol. 31 | pg. 469 | 9/30/85 |
| 2 Thess. 1:3 | The Growth of Faith | Vol. 57 | pg. 229 | 5/18/11 |
| 2 Thess. 1:10 | Jesus Admired In Them That Believe | Vol. 25 | pg. 313 | 6/1/79 |
| 2 Thess. 2:1-4 | Exposition | Vol. 52 | pg. 311 | 6/21/06 |
| 2 Thess. 2:1-17 | Exposition | Vol. 40 | pg. 261 | 6/3/94 |
| 2 Thess. 2:13 | Titles of Honour | Vol. 58 | pg. 205 | 5/2/12 |
| 2 Thess. 2:13-14 | Election | Vol. 1 | pg. 311 | 9/2/55 |
| 2 Thess. 2:16-17 | Divine Love and Its Gifts | Vol. 19 | pg. 85 | 2/16/73 |
| 2 Thess. 2:16-17 | Free Grace A Motive For Free Giving | Vol. 26 | pg. 337 | 6/13/80 |
| 2 Thess. 2:16-17 | Comfort and Constancy | Vol. 40 | pg. 253 | 6/3/94 |
| 2 Thess. 2:16-17 | What We Have, and Are To Have | Vol. 52 | pg. 277 | 6/7/06 |
| 2 Thess. 2:16-17 | A Comprehensive Benediction | Vol. 56 | pg. 13 | 1/6/10 |
| 2 Thess. 3:1-5 | Exposition | Vol. 40 | pg. 261 | 6/3/94 |
| 2 Thess. 3:1-18 | Exposition | Vol. 51 | pg. 166 | 3/30/05 |
| 2 Thess. 3:13 | Facing the Wind | Vol. 51 | pg. 25 | 1/12/05 |
| 2 Thess. 3:16 | The Jewel of Peace | Vol. 23 | pg. 145 | 3/18/77 |

1 TIMOTHY

| | | | | |
|----------------|--|----------|---------|---------|
| 1 Tim. 1:1-17 | Exposition | Vol. 39 | pg. 143 | 3/19/93 |
| 1 Tim. 1:11 | The Glorious Gospel of the Blessed God | Vol. 13 | pg. 361 | 6/30/67 |
| 1 Tim. 1:13 | I Was Before | Vol. 26 | pg. 709 | 1880 |
| 1 Tim. 1:15 | The Glorious Gospel | Vol. 4 | pg. 153 | 3/21/58 |
| 1 Tim. 1:15 | The Chief of Sinners | Vol. 9 | pg. 517 | 1863 |
| 1 Tim. 1:15 | The Faithful Saying | Vol. 24 | pg. 301 | 5/26/78 |
| 1 Tim. 1:15 | The Whole Gospel In A Single Verse | Vol. 39 | pg. 133 | 3/19/93 |
| 1 Tim. 1:15 | A Sermon On a Grand Old Text | Vol. 54. | pg. 193 | 4/23/08 |
| 1 Tim. 1:15-17 | A Great Gospel for Great Sinners | Vol. 31 | pg. 229 | 5/3/85 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| 1 Tim. 1:16 | Paul As Pattern Convert | Vol. 59 | pg. 385 | 8/14/13 |
| 1 Tim. 2:3-4 | Salvation By Knowing the Truth | Vol. 26 | pg. 49 | 1880 |
| 1 Tim. 3:15 | The Church — Conservative and Aggressive | Vol. 7 | pg. 361 | 5/19/61 |
| 1 Tim. 3:15 | What The Church Should Be | Vol. 24 | pg. 541 | 9/29/78 |
| 1 Tim. 3:15 | The Church of God and the Truth of God | Vol. 54 | pg. 241 | 5/21/08 |
| 1 Tim. 3:16 | The Great Mystery of Godliness | Vol. 13 | pg. 697 | 12/22/67 |
| 1 Tim. 3:16 | The Hexapla of Mystery | Vol. 18 | pg. 709 | 12/22/72 |
| 1 Tim. 4:8-9 | The Profit of Godliness In This Life | Vol. 16 | pg. 349 | 6/19/70 |
| 1 Tim. 4:10 | “Trust In the Living God” | Vol. 51 | pg. 577 | 11/30/05 |
| 1 Tim. 4:13 | How To Read The Bible | Vol. 58 | pg. 421 | 9/5/12 |
| 1 Tim. 5:22 | Accomplices In Sin | Vol. 53 | pg. 421 | 8/29/07 |
| 1 Tim. 6:12 | Eternal Life Within Present Grasp | Vol. 33 | pg. 73 | 2/6/87 |
| 1 Tim. 6:12 | “Lay Hold On Eternal Life!” | Vol. 37 | pg. 529 | 10/18/91 |

2 TIMOTHY

| | | | | |
|----------------|--|---------|---------|----------|
| 2 Tim. 1:1-8 | Exposition | Vol. 49 | pg. 419 | 8/27/03 |
| 2 Tim. 1:1-18 | Exposition | Vol. 57 | pg. 511 | 10/26/11 |
| 2 Tim. 1:1-18 | Exposition | Vol. 62 | pg. 466 | 9/28/16 |
| 2 Tim. 1:6 | Our Gifts, and How To Use Them | Vol. 18 | pg. 625 | 1872 |
| 2 Tim. 1:9 | Salvation Altogether by Grace | Vol. 12 | pg. 421 | 7/29/66 |
| 2 Tim. 1:12 | Assured Security In Christ | Vol. 16 | pg. 1 | 1/2/70 |
| 2 Tim. 1:12 | Knowing and Believing | Vol. 58 | pg. 577 | 12/5/12 |
| 2 Tim. 1:12 | Faith Illustrated | Vol. 5 | pg. 369 | 8/21/59 |
| 2 Tim. 1:13 | The Form of Sound Words | Vol. 2 | pg. 201 | 5/11/56 |
| 2 Tim. 1:12-14 | Confidence and Concern | Vol. 32 | pg. 421 | 8/8/86 |
| 2 Tim. 1:18 | “The Day” And Its Disclosures | Vol. 62 | pg. 457 | 9/28/16 |
| 2 Tim. 2:1-13 | Exposition | Vol. 57 | pg. 511 | 10/26/11 |
| 2 Tim. 2:1-14 | Exposition | Vol. 59 | pg. 275 | 6/5/13 |
| 2 Tim. 2:2-3 | A Good Soldier of Jesus Christ | Vol. 16 | pg. 361 | 6/26/70 |
| 2 Tim. 2:8 | The Resurrection of Our Lord Jesus | Vol. 28 | pg. 193 | 4/9/82 |
| 2 Tim. 2:9 | Not Bound Yet | Vol. 33 | pg. 685 | 12/18/87 |
| 2 Tim. 2:12 | Suffering and Reigning With Jesus | Vol. 10 | pg. 1 | 1/3/64 |
| 2 Tim. 2:13 | Eternal Faithfulness Unaffected by Human Unbelief | Vol. 25 | pg. 25 | 1879 |
| 2 Tim. 2:15 | Rightly Dividing The Word of Truth | Vol. 21 | pg. 85 | 12/27/74 |
| 2 Tim. 2:15-26 | Exposition | Vol. 60 | pg. 95 | 2/19/14 |
| 2 Tim. 2:19 | The Foundation and it’s Seal: A Sermon for the Times | Vol. 31 | pg. 433 | 9/9/85 |
| 2 Tim. 2:20-21 | The Great House and The Vessels In It | Vol. 23 | pg. 205 | 4/8/77 |
| 2 Tim. 3:1-17 | Exposition | Vol. 49 | pg. 419 | 8/27/03 |
| 2 Tim. 3:5 | The Form of Godliness Without the Power | Vol. 35 | pg. 301 | 6/2/89 |
| 2 Tim. 3:15 | The Sunday School and the Scriptures | Vol. 31 | pg. 577 | 10/18/85 |
| 2 Tim. 4:1-6 | Exposition | Vol. 49 | pg. 419 | 8/27/03 |
| 2 Tim. 4:1-11 | Exposition | Vol. 58 | pg. 587 | 12/5/12 |
| 2 Tim. 4:6 | A Last Look-out | Vol. 17 | pg. 253 | 1871 |
| 2 Tim. 4:13 | Paul — His Cloak and His Books | Vol. 9 | pg. 661 | 11/29/63 |
| 2 Tim. 4:20 | The Sick Man Left Behind | Vol. 25 | pg. 13 | 1/12/79 |

TITUS

| | | | | |
|-------------|------------------------------|---------|---------|----------|
| Tit. 1:1-16 | Exposition | Vol. 41 | pg. 550 | 11/17/95 |
| Tit. 1:2 | What God Cannot Do! | Vol. 10 | pg. 253 | 5/8/64 |
| Tit. 1:4 | Five Links In A Golden Chain | Vol. 41 | pg. 541 | 11/17/95 |
| Tit. 1:15 | A Searching Test | Vol. 62 | pg. 337 | 7/20/16 |
| Tit. 2:1-15 | Exposition | Vol. 41 | pg. 550 | 11/17/95 |
| Tit. 2:6-15 | Exposition | Vol. 41 | pg. 274 | 6/9/95 |
| Tit. 2:10 | Adorning the Gospel | Vol. 41 | pg. 265 | 6/9/95 |

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|---------|
| Tit. 2:11-14 | The Two Appearings and the Discipline of Grace | Vol. 32 | pg. 193 | 4/4/86 |
| Tit. 2:14 | Good Works | Vol. 2 | pg. 129 | 3/16/56 |
| Tit. 2:14 | Christ's Marvelous Giving | Vol. 62 | pg. 241 | 5/25/16 |
| Tit. 3:1-15 | Exposition | Vol. 41 | pg. 274 | 6/9/95 |
| Tit. 3:1-15 | Exposition | Vol. 48 | pg. 550 | 2/16/02 |
| Tit. 3:3-8 | The Maintenance of Good Works | Vol. 34 | pg. 493 | 9/2/88 |

PHILEMON

| | | | | |
|-----------|------------------------------|---------|---------|---------|
| Phl. 1-25 | Exposition | Vol. 54 | pg. 371 | 7/30/08 |
| Phl. 2 | A Pastoral Visit | Vol. 54 | pg. 361 | 7/30/08 |
| Phl. 15 | The Story of a Runaway Slave | Vol. 21 | pg. 685 | 1875 |

HEBREWS

| | | | | |
|--------------|--------------------------------------|---------|---------|----------|
| Heb. 1:2-3 | Depths and Heights | Vol. 45 | pg. 385 | 8/13/99 |
| Heb. 1:1-14 | Exposition | Vol. 58 | pg. 573 | 11/28/12 |
| Heb. 2:1-15 | Exposition | Vol. 45 | pg. 203 | 4/23/99 |
| Heb. 2:1-18 | Exposition | Vol. 45 | pg. 634 | 12/31/99 |
| Heb. 2:1-18 | Exposition | Vol. 56 | pg. 477 | 9/29/10 |
| Heb. 2:9 | Seeing Jesus | Vol. 13 | pg. 517 | 1867 |
| Heb. 2:9 | The Best of all Sights | Vol. 25 | pg. 697 | 1879 |
| Heb. 2:10 | Christ — Perfect Through Sufferings | Vol. 8 | pg. 613 | 11/2/62 |
| Heb. 2:10 | The Captain of our Salvation | Vol. 45 | pg. 193 | 4/23/99 |
| Heb. 2:11-13 | "All of One" | Vol. 41 | pg. 289 | 6/23/95 |
| Heb. 2:14 | The Destroyer Destroyed | Vol. 4 | pg. 9 | 12/6/57 |
| Heb. 2:14-15 | The Fear of Death | Vol. 58 | pg. 37 | 1/25/12 |
| Heb. 2:15 | Fear of Death | Vol. 55 | pg. 1 | 12/31/08 |
| Heb. 2:15-28 | Exposition | Vol. 61 | pg. 34 | 1/21/15 |
| Heb. 2:16 | Men Chosen — Fallen Angels Rejected | Vol. 2 | pg. 289 | 6/29/56 |
| Heb. 2:18 | A Tempted Saviour — Our Best Succour | Vol. 9 | pg. 1 | 1/4/63 |
| Heb. 2:18 | The Suffering Saviour's Sympathy | Vol. 33 | pg. 409 | 1887 |
| Heb. 2:18 | Christ's Sympathy With His People | Vol. 50 | pg. 253 | 5/26/04 |
| Heb. 3:1-16 | Exposition | Vol. 44 | pg. 34 | 1/16/98 |
| Heb. 3:1-19 | Exposition | Vol. 55 | pg. 430 | 9/2/09 |
| Heb. 3:1-19 | Exposition | Vol. 56 | pg. 477 | 9/29/10 |
| Heb. 3:1-19 | Exposition | Vol. 62 | pg. 33 | 1/20/16 |
| Heb. 3:7 | The Entreaty of the Holy Ghost | Vol. 20 | pg. 121 | 3/1/74 |
| Heb. 3:7 | The Call of "Today" | Vol. 55 | pg. 421 | 9/2/09 |
| Heb. 3:12 | "Take Heed, Brethren" | Vol. 44 | pg. 25 | 1/16/98 |
| Heb. 3:13 | A Warning Against Hardness of Heart | Vol. 11 | pg. 157 | 3/19/65 |
| Heb. 3:13 | The Deceitfulness of Sin | Vol. 36 | pg. 97 | 2/16/90 |
| Heb. 3:14 | A Persuasive To Steadfastness | Vol. 18 | pg. 169 | 2/29/72 |
| Heb. 3:18-19 | An Earnest Warning Against Unbelief | Vol. 56 | pg. 469 | 9/29/10 |
| Heb. 4:1 | Exposition | Vol. 55 | pg. 430 | 9/2/09 |
| Heb. 4:1-9 | Exposition | Vol. 62 | pg. 33 | 1/20/16 |
| Heb. 4:1-16 | Exposition | Vol. 56 | pg. 83 | 2/10/10 |
| Heb. 4:1-2 | Fearful of Coming Short | Vol. 20 | pg. 325 | 6/7/74 |
| Heb. 4:2 | Profitable Mixture | Vol. 35 | pg. 313 | 6/9/89 |
| Heb. 4:3 | Rest | Vol. 15 | pg. 217 | 4/18/69 |
| Heb. 4:3 | The Believer's Present Rest | Vol. 55 | pg. 529 | 11/4/09 |
| Heb. 4:3 | A Delicious Experience | Vol. 35 | pg. 325 | 6/16/89 |
| Heb. 4:9 | Heavenly Rest | Vol. 3 | pg. 209 | 5/24/57 |
| Heb. 4:12 | The Word A Sword | Vol. 34 | pg. 109 | 5/17/87 |
| Heb. 4:15 | The Tenderness of Jesus | Vol. 36 | pg. 313 | 6/8/90 |
| Heb. 4:14-16 | Exposition | Vol. 43 | pg. 382 | 8/8/97 |

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|----------|
| Heb. 4:16 | “The Throne of Grace” | Vol. 17 | pg. 673 | 11/19/71 |
| Heb. 4:16 | Boldness At the Throne | Vol. 56 | pg. 49 | 1/27/10 |
| Heb. 5:1-14 | Exposition | Vol. 43 | pg. 382 | 8/8/97 |
| Heb. 5:1-14 | Exposition | Vol. 46 | pg. 407 | 8/26/00 |
| Heb. 5:1-14 | Exposition | Vol. 47 | pg. 179 | 4/14/01 |
| Heb. 5:2 | Compassion On the Ignorant | Vol. 24 | pg. 193 | 1878 |
| Heb. 5:2 | Our Compassionate High Priest | Vol. 38 | pg. 169 | 4/10/92 |
| Heb. 5:2 | Compassion On the Ignorant | Vol. 43 | pg. 373 | 8/8/97 |
| Heb. 5:7-10 | Our Sympathizing High Priest | Vol. 32 | pg. 589 | 10/31/86 |
| Heb. 5:9 | The Saviour You Need | Vol. 20 | pg. 265 | 5/10/74 |
| Heb. 5:9 | The Education of Sons of God | Vol. 47 | pg. 169 | 4/14/01 |
| Heb. 5:14 | Strong Meat | Vol. 9 | pg. 229 | 4/19/63 |
| Heb. 6:1-20 | Exposition | Vol. 42 | pg. 562 | 11/22/96 |
| Heb. 6:4-6 | Final Perseverance | Vol. 2 | pg. 169 | 4/20/56 |
| Heb. 6:9 | Things That Accompany Salvation | Vol. 3 | pg. 357 | 9/20/57 |
| Heb. 6:17-18 | Strong Consolation | Vol. 15 | pg. 541 | 9/26/69 |
| Heb. 6:17-20 | The Anchor | Vol. 22 | pg. 277 | 5/21/76 |
| Heb. 6:18 | Strong Consolation For The Lord’s Refugees | Vol. 23 | pg. 253 | 4/29/77 |
| Heb. 6:20 | The Forerunner | Vol. 54 | pg. 349 | 7/23/08 |
| Heb. 7:1-14 | Exposition | Vol. 61 | pg. 47 | 1/28/15 |
| Heb. 7:2 | First King of Righteousness, and After the King Of Peace | Vol. 30 | pg. 121 | 2/3/84 |
| Heb. 7:4 | The Man Christ Jesus | Vol. 31 | pg. 205 | 4/12/85 |
| Heb. 7:20-22 | The Priest Ordained By The Oath of God | Vol. 27 | pg. 257 | 5/1/81 |
| Heb. 7:23-25 | The Ever-living Priest | Vol. 32 | pg. 445 | 8/22/86 |
| Heb. 7:25 | Salvation to the Uttermost | Vol. 2 | pg. 241 | 6/8/56 |
| Heb. 7:27 | Priest and Victim | Vol. 46 | pg. 445 | 9/23/00 |
| Heb. 8:7-13 | Exposition | Vol. 48 | pg. 35 | 1/19/02 |
| Heb. 8:10 | God’s Law In Man’s Heart | Vol. 43 | pg. 97 | 2/28/97 |
| Heb. 8:10 | The Wondrous Covenant | Vol. 58 | pg. 517 | 8/31/12 |
| Heb. 9:1-22 | Exposition | Vol. 40 | pg. 333 | 7/15/94 |
| Heb. 9:1-28 | Exposition | Vol. 41 | pg. 406 | 8/25/95 |
| Heb. 9:1-28 | Exposition | Vol. 58 | pg. 130 | 3/14/12 |
| Heb. 9:8 | The Call of Abraham | Vol. 5 | pg. 289 | 7/10/59 |
| Heb. 9:12 | Our Lord’s Entrance Within the Veil | Vol. 35 | pg. 145 | 3/17/89 |
| Heb. 9:13-14 | The Red Heifer | Vol. 25 | pg. 361 | 6/29/79 |
| Heb. 9:13-14 | The Purging of the Conscience | Vol. 31 | pg. 337 | 6/21/85 |
| Heb. 9:18-28 | Exposition | Vol. 51 | pg. 430 | 8/31/05 |
| Heb. 9:19-20 | “The Blood of the Testament” | Vol. 58 | pg. 109 | 3/13/12 |
| Heb. 9:20 | The Blood of the Testament | Vol. 26 | pg. 625 | 11/14/80 |
| Heb. 9:22 | The Blood-shedding | Vol. 3 | pg. 89 | 2/22/57 |
| Heb. 9:22 | With or Without Blood-shedding | Vol. 51 | pg. 421 | 8/31/05 |
| Heb. 9:22 | An Unalterable Law | Vol. 60 | pg. 373 | 8/6/14 |
| Heb. 9:24-28 | Exposition | Vol. 38 | pg. 563 | 11/20/92 |
| Heb. 9:24-28 | Exposition | Vol. 54 | pg. 357 | 7/23/08 |
| Heb. 9:26 | Jesus Putting Away Sin | Vol. 13 | pg. 373 | 7/7/67 |
| Heb. 9:26 | The Putting Away Of Sins | Vol. 16 | pg. 37 | 1/16/70 |
| Heb. 9:26 | A Personal Application | Vol. 16 | pg. 649 | 1/16/70 |
| Heb. 9:26 | Christ’s One Sacrifice For Sin | Vol. 38 | pg. 553 | 11/20/92 |
| Heb. 9:26-28 | Between the Two Appearings | Vol. 37 | pg. 145 | 3/15/91 |
| Heb. 9:27-28 | The Two Advents of Christ | Vol. 8 | pg. 37 | 12/22/61 |
| Heb. 10:1-18 | Exposition | Vol. 38 | pg. 563 | 11/20/92 |
| Heb. 10:1-22 | Exposition | Vol. 46 | pg. 455 | 9/23/00 |
| Heb. 10:1-25 | Exposition | Vol. 51 | pg. 431 | 8/31/05 |
| Heb. 10:9 | The First and the Second | Vol. 46 | pg. 505 | 10/28/00 |
| Heb. 10:10 | Perfect Sanctification | Vol. 26 | pg. 157 | 1880 |
| Heb. 10:11-14 | The Only Atoning Priest | Vol. 18 | pg. 73 | 2/4/72 |
| Heb. 10:12-13 | Christ Exalted | Vol. 2 | pg. 297 | 7/6/56 |

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|----------|
| Heb. 10:14 | Perfection In Faith | Vol. 5 | pg. 59 | 1/2/59 |
| Heb. 10:15-18 | A Saviour Such As You Need | Vol. 12 | pg. 553 | 10/7/66 |
| Heb. 10:19-39 | Exposition | Vol. 48 | pg. 609 | 12/21/02 |
| Heb. 10:23 | Holding Fast Our Profession | Vol. 32 | pg. 229 | 1886 |
| Heb. 10:31 | Future Punishment A Fearful Things | Vol. 12 | pg. 169 | 3/25/66 |
| Heb. 10:35 | Hold Fast Your Shield | Vol. 21 | pg. 625 | 1875 |
| Heb. 10:38 | The Vital Force | Vol. 15 | pg. 517 | 1869 |
| Heb. 11:1-13 | Exposition | Vol. 50 | pg. 322 | 6/30/04 |
| Heb. 11:1-21 | Exposition | Vol. 39 | pg. 46 | 1/22/93 |
| Heb. 11:1-21 | Exposition | Vol. 54 | pg. 574 | 11/26/08 |
| Heb. 11:1-26 | Exposition | Vol. 61 | pg. 466 | 9/30/15 |
| Heb. 11:1-40 | Exposition | Vol. 45 | pg. 381 | 8/6/99 |
| Heb. 11:1-40 | Exposition | Vol. 47 | pg. 394 | 8/18/01 |
| Heb. 11:1-40 | Exposition | Vol. 57 | pg. 345 | 7/20/11 |
| Heb. 11:1-40 | Exposition | Vol. 59 | pg. 166 | 4/3/13 |
| Heb. 11:32-40 | Exposition | Vol. 50 | pg. 322 | 6/30/04 |
| Heb. 11:6 | Faith | Vol. 3 | pg. 1 | 12/14/56 |
| Heb. 11:6 | Faith Essential To Pleasing God | Vol. 35 | pg. 445 | 8/18/89 |
| Heb. 11:6 | How To Please God | Vol. 43 | pg. 181 | 4/18/97 |
| Heb. 11:6 | What Is Essential In Coming To God? | Vol. 47 | pg. 385 | 8/18/01 |
| Heb. 11:7 | Noah's Faith, Fear, Obedience, And Salvation | Vol. 36 | pg. 301 | 6/1/90 |
| Heb. 11:8 | The Call of Abraham | Vol. 5 | pg. 289 | 7/10/59 |
| Heb. 11:8 | Abraham's Prompt Obedience to the Call of God | Vol. 21 | pg. 373 | 6/27/75 |
| Heb. 11:8 | The Obedience of Faith | Vol. 37 | pg. 157 | 8/21/90 |
| Heb. 11:9-10 | Abraham, A Pattern To Believers | Vol. 39 | pg. 37 | 1/22/93 |
| Heb. 11:13-14 | An Inscription For the Mausoleum of the Saints | Vol. 31 | pg. 105 | 3/1/85 |
| Heb. 11:15-16 | The Pilgrim's Longings | Vol. 18 | pg. 25 | 1872 |
| Heb. 11:15-16 | Go Back? Never! | Vol. 61 | pg. 457 | 9/30/15 |
| Heb. 11:21 | Jacob Worshipping On His Staff | Vol. 24 | pg. 121 | 1878 |
| Heb. 11:22 | Joseph's Bones | Vol. 16 | pg. 697 | 12/18/70 |
| Heb. 11:23 | The Hiding of Moses By Faith | Vol. 24 | pg. 361 | 1878 |
| Heb. 11:24-26 | Moses' Decision | Vol. 18 | pg. 421 | 7/28/72 |
| Heb. 11:24-26 | Moses: His Faith and Decision | Vol. 34 | pg. 349 | 6/24/88 |
| Heb. 11:31 | Rahab's Faith | Vol. 3 | pg. 97 | 3/1/57 |
| Heb. 11:31 | Rahab | Vol. 18 | pg. 397 | 7/21/72 |
| Jas. 2:25 | | | | |
| Heb. 11:33 | Obtaining Promises | Vol. 8 | pg. 97 | 2/16/62 |
| Heb. 11:34 | God's Cure for Man's Weakness | Vol. 12 | pg. 349 | 6/24/66 |
| Heb. 11:34 | The Best Strengthening Medicine | Vol. 37 | pg. 325 | 6/21/91 |
| Heb. 11:37 | "They were Tempted" | Vol. 26 | pg. 169 | 3/14/80 |
| Heb. 12:1-8 | Exposition | Vol. 63 | pg. 10 | 1/4/17 |
| Heb. 12:1-17 | Exposition | Vol. 57 | pg. 357 | 7/27/11 |
| Heb. 12:1-17 | Exposition | Vol. 58 | pg. 539 | 11/7/12 |
| Heb. 12:1-29 | Exposition | Vol. 54 | pg. 466 | 9/24/08 |
| Heb. 12:1-29 | Exposition | Vol. 56 | pg. 345 | 7/14/10 |
| Heb. 12:1-29 | Exposition | Vol. 61 | pg. 622 | 12/30/15 |
| Heb. 12:1-2 | The Rule of the Race | Vol. 34 | pg. 433 | 8/5/88 |
| Heb. 12:2 | The Shameful Sufferer | Vol. 5 | pg. 89 | 1/30/59 |
| Heb. 12:3 | A Honeycomb | Vol. 18 | pg. 541 | 9/29/72 |
| Heb. 12:3 | Our Lord's Heroic Endurance | Vol. 58 | pg. 529 | 11/7/12 |
| Heb. 12:5 | Chastisement | Vol. 1 | pg. 363 | 10/28/55 |
| Heb. 12:11 | Chastisement-Now and Afterwards | Vol. 9 | pg. 493 | 9/6/63 |
| Heb. 12:13 | Lame Sheep | Vol. 49 | pg. 505 | 10/22/03 |
| Heb. 12:14 | Holiness Demanded | Vol. 50 | pg. 457 | 9/22/04 |
| Heb. 12:14-15 | The Winnowing Fan | Vol. 16 | pg. 385 | 7/10/70 |
| Heb. 12:22-24 | The General Convocation Around Mount Zion | Vol. 28 | pg. 625 | 11/5/82 |
| Heb. 12:23 | "The Church of the Firstborn" | Vol. 56 | pg. 337 | 7/14/10 |

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|---------------|
| Heb. 12:24 | The Voice of the Blood of Christ | Vol. 4 | pg. 369 | 8/29/58 |
| Heb. 12:24-25 | The Blood of Sprinkling (#1) | Vol. 32 | pg. 121 | 2/28/86 |
| Heb. 12:24-25 | The Blood of Sprinkling (#2) | Vol. 32 | pg. 133 | 2/28/86 |
| Heb. 12:25 | God's Word Not To Be Refused | Vol. 61 | pg. 613 | 12/30/15 |
| Heb. 12:27 | A Lesson From the Great Panic | Vol. 12 | pg. 265 | 5/13/66 |
| Heb. 12:28-29 | Acceptable Service | Vol. 28 | pg. 25 | 1/15/82 |
| Heb. 13:1-21 | Exposition | Vol. 55 | pg. 311 | 6/24/09 |
| Heb. 13:1-25 | Exposition | Vol. 40 | pg. 203 | 4/29/94 |
| Heb. 13:5 | Never! Never! Never! Never! | Vol. 8 | pg. 601 | 10/26/62 |
| Heb. 13:5 | A Lesson and a Fortune For Christian Men of Business | Vol. 32 | pg. 37 | 1/24/86 |
| Heb. 13:5 | A New Year's Benediction | Vol. 60 | pg. 1 | 1/1/14 |
| Heb. 13:5-6 | A Vile Weed and a Fair Flower | Vol. 24 | pg. 697 | 1878, pg. 697 |
| Heb. 13:5-6 | "Never, No Never, No Never" | Vol. 55 | pg. 301 | 6/24/09 |
| Heb. 13:8 | Jesus Christ Immutable | Vol. 15 | pg. 1 | 1/3/69 |
| Heb. 13:8 | The Immutability of Christ | Vol. 4 | pg. 41 | 1/3/58 |
| Heb. 13:8 | The Unchangeable Christ | Vol. 40 | pg. 193 | 4/29/94 |
| Heb. 13:12 | Suffering Without the Camp | Vol. 46 | pg. 49 | 2/4/00 |
| Heb. 13:13 | "Let Us Go Forth" | Vol. 10 | pg. 365 | 6/26/64 |
| Heb. 13:15 | A Life-long Occupation | Vol. 34 | pg. 565 | 10/14/88 |
| Heb. 13:20 | The Blood of the Everlasting Covenant | Vol. 5 | pg. 417 | 10/2/59 |
| Heb. 13:20-21 | The Blood of the Covenant | Vol. 20 | pg. 433 | 8/2/74 |
| Heb. 13:20-21 | The God of Peace and Our Sanctification | Vol. 23 | pg. 445 | 8/5/77 |

JAMES

| | | | | |
|--------------|--|---------|---------|----------|
| Jas. 1:1-26 | Exposition | Vol. 60 | pg. 574 | 11/26/14 |
| Jas. 1:1-27 | Exposition | Vol. 39 | pg. 298 | 6/18/93 |
| Jas. 1:1-27 | Exposition | Vol. 43 | pg. 477 | 10/3/97 |
| Jas. 1:1-27 | Exposition | Vol. 56 | pg. 418 | 8/25/10 |
| Jas. 1:2-4 | All Joy In All Trials | Vol. 29 | pg. 73 | 2/4/83 |
| Jas. 1:5 | Loving Advice For Anxious Seekers | Vol. 13 | pg. 85 | 2/17/67 |
| Jas. 1:6-7 | A Warning To Waverers | Vol. 43 | pg. 469 | 10/3/97 |
| Jas. 1:12 | A Discourse Upon True Blessedness Here & Hereafter | Vol. 31 | pg. 661 | 12/13/85 |
| Jas. 1:18 | "A Kind of Firstfruits" | Vol. 57 | pg. 529 | 11/9/11 |
| Jas. 1:21-22 | Before Sermon, At Sermon, and After Sermon | Vol. 31 | pg. 349 | 6/28/85 |
| Jas. 1:22-25 | Two Sorts of Hearers | Vol. 25 | pg. 197 | 1879 |
| Jas. 1:23-25 | The Looking-glass | Vol. 31 | pg. 361 | 7/5/85 |
| Jas. 1:27 | Charity and Purity | Vol. 39 | pg. 289 | 6/18/93 |
| Jas. 2:17 | Fruitless Faith | Vol. 60 | pg. 565 | 11/26/14 |
| Jas. 3:12 | Figs and Olive Berries | Vol. 56 | pg. 577 | 12/1/10 |
| Jas. 4:1-17 | Exposition | Vol. 48 | pg. 430 | 9/7/02 |
| Jas. 4:2-3 | Ask and Have | Vol. 28 | pg. 541 | 10/1/82 |
| Jas. 4:6 | More and More | Vol. 61 | pg. 229 | 5/20/15 |
| Jas. 4:7 | Unconditional Surrender | Vol. 22 | pg. 61 | 1/30/76 |
| Jas. 4:7-10 | The Reason Why Many Cannot Find Peace | Vol. 24 | pg. 205 | 4/7/78 |
| Jas. 4:8 | The Double Drawing Nigh | Vol. 48 | pg. 421 | 9/7/02 |
| Jas. 4:8 | A Command And a Promise | Vol. 56 | pg. 409 | 8/25/10 |
| Jas. 4:13-17 | God's Will About the Future | Vol. 38 | pg. 61 | 2/7/92 |
| Jas. 4:14 | What Is Your Life? | Vol. 30 | pg. 181 | 3/30/84 |
| Jas. 4:14 | Pictures of Life | Vol. 55 | pg. 13 | 1/7/09 |
| Jas. 5:11 | The Pitifulness of the Lord the Comfort of the Afflicted | Vol. 31 | pg. 325 | 6/14/85 |
| Jas. 5:11 | The Pearl of Patience | Vol. 57 | pg. 289 | 6/22/11 |
| Jas. 5:7-8 | A Visit To the Harvest Field | Vol. 17 | pg. 685 | 1871 |
| Jas. 5:19-20 | Conversion | Vol. 1 | pg. 339 | 10/7/55 |
| Jas. 5:19-20 | To Sabbath-School Teachers & Other soul-winners | Vol. 19 | pg. 577 | 10/19/73 |

1 PETER

| | | | | |
|-----------------|--|---------|---------|----------|
| 1 Pet. 1:1-12 | Exposition | Vol. 45 | pg. 611 | 12/17/99 |
| 1 Pet. 1:1-16 | Exposition | Vol. 60 | pg. 106 | 2/26/14 |
| 1 Pet. 1:1-25 | Exposition | Vol. 46 | pg. 622 | 12/30/00 |
| 1 Pet. 1:1-25 | Exposition | Vol. 56 | pg. 550 | 11/10/10 |
| 1 Pet. 2:1-5 | Exposition | Vol. 61 | pg. 538 | 11/11/15 |
| 1 Pet. 1:3-5 | A String of Pearls | Vol. 16 | pg. 481 | 8/28/70 |
| 1 Pet. 1:6 | The Christian's Heaviness and Rejoicing | Vol. 4 | pg. 457 | 11/7/58 |
| 1 Pet. 1:7 | The Trial of Your Faith | Vol. 34 | pg. 649 | 12/2/88 |
| 1 Pet. 1:8-9 | Seeing Is Not Believing, But Believing Is Seeing | Vol. 12 | pg. 361 | 7/1/66 |
| 1 Pet. 1:8-9 | Salvation As It Is Now Received | Vol. 56 | pg. 541 | 11/10/10 |
| 1 Pet. 1:9-12 | Your Personal Salvation | Vol. 26 | pg. 121 | 2/22/80 |
| 1 Pet. 1:12 | Angelic Interest In the Gospel | Vol. 46 | pg. 493 | 10/21/00 |
| 1 Pet. 1:13 | A Seasonable Exhortation | Vol. 32 | pg. 373 | 7/11/86 |
| 1 Pet. 1:13 | Girded For the Work | Vol. 45 | pg. 553 | 11/19/99 |
| 1 Pet. 1:13-25 | Exposition | Vol. 45 | pg. 564 | 11/19/99 |
| 1 Pet. 1:17-25 | Exposition | Vol. 57 | pg. 334 | 7/13/11 |
| 1 Pet. 1:19 | "The Precious Blood of Christ" | Vol. 11 | pg. 169 | 2/26/65 |
| 1 Pet. 1:19 | The Saviour's Precious Blood | Vol. 60 | pg. 97 | 2/26/14 |
| 1 Pet. 1:23-25 | The New Nature | Vol. 7 | pg. 401 | 6/30/61 |
| 1 Pet. 2:1-12 | Exposition | Vol. 57 | pg. 334 | 7/13/11 |
| 1 Pet. 2:1-25 | Exposition | Vol. 48 | pg. 70 | 2/9/02 |
| 1 Pet. 2:1-25 | Exposition | Vol. 48 | pg. 371 | 8/3/02 |
| 1 Pet. 2:1-25 | Exposition | Vol. 52 | pg. 562 | 1/15/06 |
| 1 Pet. 2:1-25 | Exposition | Vol. 54 | pg. 477 | 10/1/08 |
| 1 Pet. 2:1-25 | Exposition | Vol. 61 | pg. 538 | 11/11/15 |
| 1 Pet. 2:1-3 | A Sermon For Men of Taste | Vol. 8 | pg. 385 | 7/6/62 |
| 1 Pet. 2:3 | The Test of Taste | Vol. 36 | pg. 553 | 10/12/90 |
| 1 Pet. 2:4 | Coming — Always Coming | Vol. 23 | pg. 37 | 1877 |
| 1 Pet. 2:4 | Coming To Christ | Vol. 62 | pg. 193 | 4/27/16 |
| 1 Pet. 2:4-5 | The True Priesthood, Temple and Sacrifice | Vol. 23 | pg. 541 | 9/30/77 |
| 1 Pet. 2:5 | The Priesthood of Believers | Vol. 57 | pg. 421 | 9/7/11 |
| 1 Pet. 2:6 | Faith's Sure Foundation | Vol. 24 | pg. 457 | 8/18/78 |
| 1 Pet. 2:7 & | Three Precious Things | Vol. 16 | pg. 277 | 5/8/70 |
| 2 Pet. 1:4; 1:1 | | | | |
| 1 Pet. 2:7 | Christ Precious To Believers | Vol. 5 | pg. 137 | 3/13/59 |
| 1 Pet. 2:7 | Christ Precious To Believers | Vol. 36 | pg. 181 | 3/30/90 |
| 1 Pet. 2:7 | A Sermon From A Sick Preacher | Vol. 52 | pg. 553 | 11/15/06 |
| 1 Pet. 2:7 | A Sermon and A Reminiscence | Vol. 54 | pg. 469 | 10/1/08 |
| 1 Pet. 2:7 | Christ Precious To Believers | Vol. 5 | pg. 137 | 3/13/59 |
| 1 Pet. 2:7-8 | Jesus, The Stumbling Stone of Unbelievers | Vol. 21 | pg. 164 | 1875 |
| 1 Pet. 2:8 | Stumbling at the Word | Vol. 57 | pg. 325 | 7/13/11 |
| 1 Pet. 2:9 | Marvelous Light | Vol. 48 | pg. 61 | 2/9/02 |
| 1 Pet. 2:18-25 | Exposition | Vol. 47 | pg. 286 | 6/16/01 |
| 1 Pet. 2:24 | Death For Sin, and Death To Sin | Vol. 19 | pg. 649 | 11/16/73 |
| 1 Pet. 2:24 | Our Lord's Substitution | Vol. 48 | pg. 361 | 8/3/02 |
| 1 Pet. 3:1-17 | Exposition | Vol. 47 | pg. 286 | 6/16/01 |
| 1 Pet. 3:6 | Sarah and Her Daughters | Vol. 27 | pg. 677 | 4/28/81 |
| 1 Pet. 3:7 | Hindrances To Prayer | Vol. 20 | pg. 505 | 9/13/74 |
| 1 Pet. 3:18 | Unparalleled Suffering | Vol. 44 | pg. 265 | 6/5/98 |
| 1 Pet. 3:22 | Our Ascended Lord | Vol. 32 | pg. 601 | 11/7/86 |
| 1 Pet. 4:1-13 | Exposition | Vol. 52 | pg. 203 | 4/19/06 |
| 1 Pet. 4:1-19 | Exposition | Vol. 43 | pg. 622 | 12/26/97 |
| 1 Pet. 4:1-3 | Luminous Words | Vol. 43 | pg. 613 | 12/26/97 |
| 1 Pet. 4:18 | If so, — What Then? | Vol. 53 | pg. 325 | 7/4/07 |

| | | | | |
|--------------|---|---------|---------|----------|
| 1 Pet. 5:1-9 | Exposition | Vol. 46 | pg. 622 | 12/30/00 |
| 1 Pet. 5:1 | A Witness And a Partaker | Vol. 45 | pg. 85 | 2/19/99 |
| 1 Pet. 5:6 | On Humbling Ourselves Before God | Vol. 29 | pg. 421 | 1883 |
| 1 Pet. 5:7 | A Cure For Care | Vol. 8 | pg. 13 | 1/12/62 |
| 1 Pet. 5:7 | A Sermon to Ministers and Other Tried Believers | Vol. 57 | pg. 505 | 10/26/11 |
| 1 Pet. 5:8-9 | The Roaring Lion | Vol. 7 | pg. 569 | 11/17/61 |
| 1 Pet. 5:10 | Glory! | Vol. 29 | pg. 277 | 5/20/83 |
| 1 Pet. 5:10 | A New Year's Benediction | Vol. 6 | pg. 49 | 1/1/60 |

2 PETER

| | | | | |
|----------------|--|---------|---------|----------|
| 2 Pet. 1:1-8 | Exposition | Vol. 57 | pg. 179 | 4/13/11 |
| 2 Pet. 1:1-21 | Exposition | Vol. 54 | pg. 549 | 11/12/08 |
| 2 Pet. 1:2-4 | Faith and Life | Vol. 10 | pg. 49 | 1/24/64 |
| 2 Pet. 1:9-21 | Exposition | Vol. 57 | pg. 214 | 5/4/11 |
| 2 Pet. 1:10-11 | Particular Election | Vol. 3 | pg. 129 | 3/22/57 |
| 2 Pet. 1:16-21 | Exposition | Vol. 41 | pg. 574 | 12/1/95 |
| 2 Pet. 2:1-10 | Exposition | Vol. 41 | pg. 574 | 12/1/95 |
| 2 Pet. 2:4 | Fallen Angels A Lesson To Fallen Men | Vol. 31 | pg. 49 | 1885 |
| 2 Pet. 2:9 | The Lord's Knowledge, Our Safeguard | Vol. 41 | pg. 565 | 12/1/95 |
| 2 Pet. 3:1-18 | Exposition | Vol. 43 | pg. 430 | 9/5/97 |
| 2 Pet. 3:1-18 | Exposition | Vol. 45 | pg. 310 | 6/25/99 |
| 2 Pet. 3:8 | God's Estimate of Time | Vol. 8 | pg. 241 | 4/27/62 |
| 2 Pet. 3:10-11 | The World On Fire | Vol. 19 | pg. 433 | 8/3/73 |
| 2 Pet. 3:15 | God's Longsuffering: An Appeal To the Conscience | Vol. 33 | pg. 678 | 1887 |
| 2 Pet. 3:17 | The Ever-present Crisis | Vol. 43 | pg. 421 | 9/5/97 |
| 2 Pet. 3:18 | A Psalm For the New Year | Vol. 8 | pg. 1 | 1/5/62 |
| 2 Pet. 3:18 | Growth In Grace | Vol. 46 | pg. 529 | 11/11/00 |

1 JOHN

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|----------|
| 1 Jn. 1:1-3 | Exposition | Vol. 61 | pg. 240 | 5/20/15 |
| 1 Jn. 1:1-10 | Exposition | Vol. 41 | pg. 369 | 8/4/95 |
| 1 Jn. 1:1-10 | Exposition | Vol. 50 | pg. 503 | 10/13/04 |
| 1 Jn. 1:1-10 | Exposition | Vol. 57 | pg. 465 | 9/28/11 |
| 1 Jn. 1:3 | Fellowship With God | Vol. 7 | pg. 489 | 9/15/61 |
| 1 Jn. 1:3 | Fellowship With the Father and the Son | Vol. 50 | pg. 505 | 10/13/04 |
| 1 Jn. 1:4 | How To Become Full of Joy | Vol. 57 | pg. 493 | 10/19/11 |
| 1 Jn. 1:4 | Fulness of Joy Our Privilege | Vol. 60 | pg. 229 | 5/14/14 |
| 1 Jn. 1:4-7 | Exposition | Vol. 61 | pg. 252 | 5/27/15 |
| 1 Jn. 1:6-7 | The Child of Light Walking In Light | Vol. 33 | pg. 553 | 10/2/87 |
| 1 Jn. 1:7 | Walking In the Light and Washed In the Blood | Vol. 11 | pg. 673 | 12/3/65 |
| 1 Jn. 1:7 | The Evil and Its Remedy | Vol. 4 | pg. 465 | 11/14/58 |
| 1 Jn. 1:8-10 | Honest Dealing With God | Vol. 21 | pg. 361 | 6/20/75 |
| 1 Jn. 2:1-2 | Exposition | Vol. 57 | pg. 465 | 9/28/11 |
| 1 Jn. 2:1-6 | Exposition | Vol. 50 | pg. 504 | 10/13/04 |
| 1 Jn. 2:1-29 | Exposition | Vol. 51 | pg. 335 | 7/6/05 |
| 1 Jn. 2:1-29 | Exposition | Vol. 52 | pg. 442 | 9/6/06 |
| 1 Jn. 2:1-29 | Exposition | Vol. 57 | pg. 429 | 9/7/11 |
| 1 Jn. 2:1 | The Sinner's Advocate | Vol. 9 | pg. 337 | 6/21/63 |
| 1 Jn. 2:3-4 | Sincerity and Duplicity | Vol. 16 | pg. 169 | 3/6/70 |
| 1 Jn. 2:6 | In Him: Like Him | Vol. 29 | pg. 409 | 5/17/83 |
| 1 Jn. 2:12-13 | A Sermon to the Lord's Little Children | Vol. 29 | pg. 157 | 3/18/83 |
| 1 Jn. 2:13-14 | A Description of Young Men In Christ | Vol. 29 | pg. 205 | 4/8/83 |
| 1 Jn. 2:13-14 | Fathers In Christ | Vol. 29 | pg. 637 | 11/18/83 |
| 1 Jn. 2:14 | Unto You, Young Men | Vol. 14 | pg. 277 | 5/13/68 |

| | | | | |
|---------------|---|---------|---------|----------|
| 1 Jn. 2:28 | Preparation for the Coming of the Lord | Vol. 35 | pg. 505 | 9/22/89 |
| 1 Jn. 3:1-2 | Exposition | Vol. 52 | pg. 444 | 9/6/06 |
| 1 Jn. 3:1-10 | Exposition | Vol. 2 | pg. 70 | 1/20/56 |
| 1 Jn. 3:1-24 | Exposition | Vol. 42 | pg. 514 | 10/25/96 |
| 1 Jn. 3:1-24 | Exposition | Vol. 43 | pg. 141 | 3/21/97 |
| 1 Jn. 3:1-24 | Exposition | Vol. 51 | pg. 526 | 10/26/05 |
| 1 Jn. 3:1 | “And We Are” A Jewel From the Revised Version | Vol. 32 | pg. 673 | 12/19/86 |
| 1 Jn. 3:2 | A Present Religion | Vol. 4 | pg. 249 | 5/30/58 |
| 1 Jn. 3:2 | The Beatific Vision | Vol. 2 | pg. 57 | 1/20/56 |
| 1 Jn. 3:2 | The Christian’s Manifestation | Vol. 52 | pg. 433 | 9/6/06 |
| 1 Jn. 3:3 | The Hope That Purifies | Vol. 57 | pg. 49 | 2/2/11 |
| 1 Jn. 3:4-5 | The Sinful Made Sinless | Vol. 43 | pg. 133 | 3/21/97 |
| 1 Jn. 3:8 | The Works of the Devil Destroyed | Vol. 29 | pg. 361 | 7/1/83 |
| 1 Jn. 3:10-24 | Exposition | Vol. 55 | pg. 588 | 12/2/09 |
| 1 Jn. 3:14 | Life Proved By Love | Vol. 44 | pg. 73 | 2/13/98 |
| 1 Jn. 3:16 | The Death of Christ For His People | Vol. 46 | pg. 1 | 1/7/00 |
| 1 Jn. 3:16 | God’s Love to the Saints | Vol. 51 | pg. 517 | 10/26/05 |
| 1 Jn. 3:20-21 | The Lower Courts | Vol. 55 | pg. 325 | 7/8/09 |
| 1 Jn. 3:21 | What Is the Verdict? | Vol. 31 | pg. 445 | 9/16/85 |
| 1 Jn. 3:22-24 | The Conditions of Power In Prayer | Vol. 19 | pg. 169 | 3/23/73 |
| 1 Jn. 3:23 | The Warrant of Faith | Vol. 9 | pg. 529 | 9/20/63 |
| 1 Jn. 4:1-21 | Exposition | Vol. 40 | pg. 503 | 10/21/94 |
| 1 Jn. 4:1-21 | Exposition | Vol. 41 | pg. 10 | 1/6/95 |
| 1 Jn. 4:1-21 | Exposition | Vol. 47 | pg. 274 | 6/9/01 |
| 1 Jn. 4:1-21 | Exposition | Vol. 55 | pg. 341 | 7/15/09 |
| 1 Jn. 4:10 | Love’s Climax | Vol. 41 | pg. 1 | 1/6/95 |
| 1 Jn. 4:10-11 | “Herein Is Love” | Vol. 29 | pg. 109 | 2/18/83 |
| 1 Jn. 4:10 | “Herein Is Love” | Vol. 42 | pg. 25 | 1/19/96 |
| 1 Jn. 4:14 | Seeing and Testifying | Vol. 40 | pg. 493 | 10/21/94 |
| 1 Jn. 4:16 | A Psalm of Remembrance | Vol. 5 | pg. 225 | 5/22/59 |
| 1 Jn. 4:19 | Love | Vol. 5 | pg. 33 | 12/19/58 |
| 1 Jn. 4:19 | Love’s Logic | Vol. 17 | pg. 481 | 8/27/71 |
| 1 Jn. 4:19 | Love’s Birth and Parentage | Vol. 22 | pg. 337 | 6/11/76 |
| 1 Jn. 4:19 | The Secret of Love To God | Vol. 47 | pg. 265 | 6/9/01 |
| 1 Jn. 4:19 | Love’s Great Reason | Vol. 60 | pg. 133 | 12/19/58 |
| 1 Jn. 5:1-21 | Exposition | Vol. 47 | pg. 622 | 12/29/01 |
| 1 Jn. 5:1-21 | Exposition | Vol. 53 | pg. 622 | 12/19/07 |
| 1 Jn. 5:1-21 | Exposition | Vol. 57 | pg. 262 | 6/1/11 |
| 1 Jn. 5:1 | Faith and Regeneration | Vol. 17 | pg. 133 | 3/5/71 |
| 1 Jn. 5:4 | The Victory of Faith | Vol. 1 | pg. 101 | 3/18/55 |
| 1 Jn. 5:4-5 | Victorious Faith | Vol. 47 | pg. 589 | 12/15/01 |
| 1 Jn. 5:6 | “By Water and Blood” | Vol. 57 | pg. 253 | 6/1/11 |
| 1 Jn. 5:8 | The Three Witnesses | Vol. 20 | pg. 445 | 8/9/74 |
| 1 Jn. 5:9-10 | Faith, and the Witness Upon Which It Is Founded | Vol. 21 | pg. 37 | 1875 |
| 1 Jn. 5:10 | A Solemn Impeachment of Unbelievers | Vol. 20 | pg. 685 | 12/13/74 |
| 1 Jn. 5:10 | The Priest Dispensed With | Vol. 21 | pg. 469 | 8/15/75 |
| 1 Jn. 5:10 | The True Position of the Witness Within | Vol. 24 | pg. 445 | 8/11/78 |
| 1 Jn. 5:12 | Alive or Dead — Which? | Vol. 13 | pg. 325 | 6/16/67 |
| 1 Jn. 5:13 | Helps To Full Assurance | Vol. 30 | pg. 397 | 7/20/84 |
| 1 Jn. 5:13 | The Blessing of Full Assurance | Vol. 34 | pg. 265 | 5/13/88 |
| 1 Jn. 5:13-15 | Praying and Waiting | Vol. 10 | pg. 597 | 10/23/64 |
| 1 Jn. 5:18-20 | Positivism | Vol. 55 | pg. 433 | 9/9/09 |
| 1 Jn. 5:21 | Idolatry Condemned | Vol. 53 | pg. 613 | 12/19/07 |

3 JOHN

3 Jn. 4 The Parents and Pastor's Joy Vol. 19 pg. 709 12/21/73

JUDE

| | | | | |
|------------|---|---------|---------|----------|
| Jude 1-25 | Exposition | Vol. 41 | pg. 225 | 5/12/95 |
| Jude 1-25 | Exposition | Vol. 52 | pg. 321 | 6/28/06 |
| Jude 1 | Threefold Sanctification | Vol. 8 | pg. 85 | 2/9/62 |
| Jude 1-2 | A Special Benediction | Vol. 41 | pg. 217 | 5/12/95 |
| Jude 19 | The Holy Spirit and the One Church | Vol. 4 | pg. 17 | 12/13/57 |
| Jude 3 | The Common Salvation | Vol. 27 | pg. 193 | 4/10/81 |
| Jude 12 | Spots In Our Feasts of Charity | Vol. 14 | pg. 109 | 2/23/68 |
| Jude 20 | Praying In the Holy Ghost | Vol. 12 | pg. 613 | 11/4/66 |
| Jude 21 | A Weighty Charge | Vol. 22 | pg. 181 | 3/26/76 |
| Jude 21 | God's Prison, Warder, and Prisoner | Vol. 59 | pg. 517 | 10/30/13 |
| Jude 24-25 | Christians Kept In Time and Glorified In Eternity | Vol. 11 | pg. 325 | 1865 |
| Jude 24-25 | Saints Guarded From Stumbling | Vol. 39 | pg. 85 | 2/19/93 |
| Jude 24-25 | Jude's Doxology | Vol. 52 | pg. 313 | 6/28/06 |
| Jude 24-25 | Danger, Safety, Gratitude | Vol. 54 | pg. 13 | 1/9/08 |

REVELATION

| | | | | |
|-----------------|---|---------|---------|----------|
| Rev. 1:1-14 | Exposition | Vol. 61 | pg. 334 | 7/15/15 |
| Rev. 1:1-20 | Exposition | Vol. 43 | pg. 10 | 1/3/97 |
| Rev. 1:1-20 | Exposition | Vol. 62 | pg. 106 | 3/2/16 |
| Rev. 1:5-6 | John's First Doxology | Vol. 29 | pg. 469 | 9/2/83 |
| Rev. 1:5-6 | Loved and Laved | Vol. 37 | pg. 577 | 11/15/91 |
| Rev. 1:7 | "He Cometh With Clouds" | Vol. 33 | pg. 589 | 1887 |
| Rev. 1:12-17 | The Christ of Patmos | Vol. 7 | pg. 73 | 1/27/61 |
| Rev. 1:13 | With Golden Girdle Girt | Vol. 63 | pg. 121 | 3/15/17 |
| Rev. 1:15-20 | Exposition | Vol. 61 | pg. 334 | 7/22/15 |
| Rev. 1:16 | Lessons From The Christ of Patmos | Vol. 33 | pg. 433 | 8/7/87 |
| Rev. 1:16 | A Portrait No Artist Can Paint | Vol. 43 | pg. 1 | 1/3/97 |
| Rev. 1:17 | Fear Not | Vol. 26 | pg. 229 | 3/9/80 |
| Rev. 1:17-18 | The Glorious Master and the Swooning Disciple | Vol. 18 | pg. 1 | 1/7/72 |
| Rev. 1:18 | Christ With the Keys of Death and Hell | Vol. 15 | pg. 553 | 10/3/69 |
| Rev. 1:18 | The Ever-living Christ | Vol. 46 | pg. 397 | 8/26/00 |
| Rev. 2:3 | Labouring and Not Fainting | Vol. 18 | pg. 493 | 9/8/72 |
| Rev. 2:4 | Declension From First Love | Vol. 4 | pg. 417 | 9/26/58 |
| Rev. 2:4-6 | Love's Complaining | Vol. 32 | pg. 577 | 10/24/86 |
| Rev. 2:12-13 | Holding Fast the Faith | Vol. 34 | pg. 73 | 2/5/88 |
| Rev. 3:4 | A Solemn Warning For All Churches | Vol. 2 | pg. 113 | 2/24/56 |
| Rev. 3:8-10 | Commendation for the Steadfast | Vol. 30 | pg. 673 | 1884 |
| Rev. 3:14 | The Amen | Vol. 12 | pg. 133 | 3/4/66 |
| Rev. 3:14-21 | An Earnest Warning Against Lukewarmness | Vol. 20 | pg. 421 | 7/26/74 |
| Rev. 3:15-16 | Lukewarmness | Vol. 48 | pg. 505 | 10/26/02 |
| Rev. 3:17-18 | A Great Mistake and the Way To Rectify It | Vol. 28 | pg. 481 | 9/3/82 |
| Rev. 3:19 | The Loved Ones Chastened | Vol. 3 | pg. 453 | 11/22/57 |
| Rev. 4:1 | A Door Opened In Heaven | Vol. 15 | pg. 469 | 8/22/69 |
| Rev. 4:3 | The Heavenly Rainbow | Vol. 60 | pg. 301 | 6/25/14 |
| Rev. 4:4, 10-11 | The Elders Before the Throne | Vol. 8 | pg. 169 | 3/23/62 |
| Rev. 4:10 | Royal Homage | Vol. 19 | pg. 157 | 1873 |
| Rev. 5:6-7 | The Lamb In Glory | Vol. 35 | pg. 385 | 7/14/89 |
| Rev. 5:8 | Golden Vials Full of Odours | Vol. 18 | pg. 277 | 5/19/72 |
| Rev. 5:8-10 | The Heavenly Singers and Their Song | Vol. 39 | pg. 385 | 8/13/93 |
| Rev. 5:9-10 | Jesus, The Delight of Heaven | Vol. 21 | pg. 172 | 1875 |
| Rev. 5:10 | The Kingly Priesthood of the Saints | Vol. 1 | pg. 69 | 1/28/55 |

| | | | | |
|---------------|--|---------|---------|--------------|
| Rev. 6:12-17 | Exposition | Vol. 42 | pg. 333 | 5/12/96 |
| Rev. 7:9-10 | The Multitude Before the Throne | Vol. 60 | pg. 193 | 4/23/14 |
| Rev. 7:1-17 | Exposition | Vol. 58 | pg. 490 | 10/10/12 |
| Rev. 7:1-17 | Exposition | Vol. 60 | pg. 203 | 4/23/14 |
| Rev. 7:9-17 | Exposition | Vol. 46 | pg. 46 | 1/28/00 |
| Rev. 7:9-17 | Exposition | Vol. 46 | pg. 586 | 12/9/00 |
| Rev. 7:9-17 | Exposition | Vol. 57 | pg. 93 | 2/23/11 |
| Rev. 7:13-14 | What and Whence Are These? | Vol. 18 | pg. 145 | 2/25/72 |
| Rev. 7:14 | Why The Heavenly Robes Are White | Vol. 22 | pg. 541 | 9/24/76 |
| Rev. 7:16 | The Bliss of the Glorified | Vol. 62 | pg. 73 | 2/17/16 |
| Rev. 7:16-17 | Heaven Below | Vol. 30 | pg. 505 | 9/21/84 |
| Rev. 7:17 | No Tears In Heaven | Vol. 11 | pg. 433 | 8/6/65 |
| Rev. 8:3-4 | Preparing For the Week of Prayer | Vol. 57 | pg. 613 | 12/28/11 |
| Rev. 11:12 | The Voice From Heaven | Vol. 9 | pg. 13 | 11/23/62 |
| Rev. 11:19 | “The Ark of His Covenant” | Vol. 41 | pg. 397 | 8/25/95 |
| Rev. 12:1-17 | Exposition | Vol. 59 | pg. 574 | 11/27/13 |
| Rev. 12:11 | How They Conquered The Dragon | Vol. 21 | pg. 313 | 5/30/75 |
| Rev. 12:11 | The Blood of the Lamb, The Conquering Weapon | Vol. 34 | pg. 505 | 9/9/88 |
| Rev. 14:1-3 | Heavenly Worship | Vol. 3 | pg. 25 | 12/28/56 |
| Rev. 14:1-20 | Exposition | Vol. 39 | pg. 429 | 9/3/93 |
| Rev. 14:1-20 | Exposition | Vol. 42 | pg. 129 | 3/15/96 |
| Rev. 14:1-20 | Exposition | Vol. 50 | pg. 562 | 11/17/04 |
| Rev. 14:4 | The Lamb Our Leader | Vol. 42 | pg. 121 | 3/15/96 |
| Rev. 14:4-5 | The Followers of the Lamb | Vol. 39 | pg. 421 | 9/3/93 |
| Rev. 14:12-13 | A Voice From Heaven | Vol. 21 | pg. 109 | 1875 |
| Rev. 14:14-20 | The Harvest and the Vintage | Vol. 50 | pg. 553 | 11/17/04 |
| Rev. 15:3 | Israel In Egypt | Vol. 3 | pg. 233 | 6/14/57 |
| Rev. 16:9 | Judgments and No Repentance: Repentance and No Salvation | Vol. 34 | pg. 637 | 8/25/87 |
| Rev. 18:20-24 | Exposition | Vol. 41 | pg. 419 | 9/1/95 |
| Rev. 18:21-24 | Exposition | Vol. 60 | pg. 312 | 6/25/14 |
| Rev. 19:1-10 | Exposition | Vol. 60 | pg. 312 | 6/25/14 |
| Rev. 19:1-18 | Exposition | Vol. 41 | pg. 419 | 9/1/95 |
| Rev. 19:7-8 | “The Marriage of the Lamb” | Vol. 35 | pg. 397 | 7/21/89 |
| Rev. 19:9 | The Marriage Supper of the Lamb | Vol. 41 | pg. 409 | 9/1/95 |
| Rev. 19:9 | “The True Sayings of God” | Vol. 55 | pg. 229 | 5/13/09 |
| Rev. 19:11-16 | Exposition | Vol. 60 | pg. 528 | 10/29/14 |
| Rev. 19:11-16 | The Rider On The White Horse and the Armies With Him | Vol. 25 | pg. 17 | 1879, pg. 17 |
| Rev. 19:11-16 | Exposition | Vol. 42 | pg. 333 | 7/12/96 |
| Rev. 19:12 | The Saviour’s Many Crowns | Vol. 5 | pg. 449 | 10/30/59 |
| Rev. 20:11 | The Great White Throne | Vol. 12 | pg. 505 | 8/12/66 |
| Rev. 20:11-15 | Exposition | Vol. 42 | pg. 333 | 7/12/96 |
| Rev. 21:1 | Exposition | Vol. 42 | pg. 333 | 7/12/96 |
| Rev. 21:1-27 | Exposition | Vol. 55 | pg. 57 | 1/28/09 |
| Rev. 21:5 | Sermon For New Year’s Day | Vol. 31 | pg. 1 | 1/1/85 |
| Rev. 21:5 | A New Creation | Vol. 61 | pg. 325 | 7/15/15 |
| Rev. 21:9-27 | Exposition | Vol. 45 | pg. 552 | 11/12/99 |
| Rev. 21:10-27 | Exposition | Vol. 62 | pg. 406 | 8/24/16 |
| Rev. 21:22-27 | Exposition | Vol. 57 | pg. 621 | 12/28/11 |
| Rev. 21:23 | The Lamb — The Light | Vol. 10 | pg. 437 | 7/31/64 |
| Rev. 21:27 | The Barrier | Vol. 27 | pg. 169 | 3/27/81 |
| Rev. 22:1-5 | Exposition | Vol. 62 | pg. 406 | 8/24/16 |
| Rev. 22:1-7 | Exposition | Vol. 46 | pg. 56 | 2/4/00 |
| Rev. 22:1-21 | Exposition | Vol. 40 | pg. 226 | 5/13/94 |
| Rev. 22:1-21 | Exposition | Vol. 57 | pg. 621 | 5/25/11 |
| Rev. 22:1-21 | Exposition | Vol. 57 | pg. 248 | 12/28/11 |
| Rev. 22:2 | Healing Leaves | Vol. 21 | pg. 265 | 5/9/75 |
| Rev. 22:2 | Christ The Tree of Life | Vol. 57 | pg. 241 | 5/25/11 |

| | | | | |
|-----------------|--|---------|---------|----------|
| Rev. 22:3 | The Throne of God and of the Lamb | Vol. 27 | pg. 13 | 1881 |
| Rev. 22:4 | The Heaven of Heaven | Vol. 14 | pg. 433 | 8/9/68 |
| Rev. 22:4-6, 12 | The First Resurrection | Vol. 7 | pg. 345 | 5/5/61 |
| Rev. 22:12 | Satan In a Rage | Vol. 25 | pg. 613 | 11/2/79 |
| Rev. 22:13 | Alpha and Omega | Vol. 9 | pg. 709 | 12/27/63 |
| Rev. 22:17 | Come and Welcome | Vol. 5 | pg. 433 | 10/16/59 |
| Rev. 22:17 | God's Will and Man's Will | Vol. 8 | pg. 181 | 3/30/62 |
| Rev. 22:17 | The Two "Comes" | Vol. 23 | pg. 1 | 12/31/76 |
| Rev. 22:17 | The Double "Come" | Vol. 27 | pg. 389 | 7/10/81 |
| Rev. 22:17 | The Oft-repeated Invitation | Vol. 46 | pg. 349 | 7/29/00 |
| Rev. 22:21 | Till We Meet Again | Vol. 27 | pg. 629 | pg. 629 |
| Tract | The Infidel's Sermon to the Pirates | Vol. 2 | pg. 229 | 5/25/56 |
| Tract | The Actress | Vol. 2 | pg. 231 | 5/25/56 |
| | A Pastoral Letter | Vol. 4 | pg. 419 | 11/2/58 |
| | A Ceremony of Laying of the First Stone of the New Tabernacle | Vol. 5 | pg. 345 | 8/16/59 |
| | The Proceedings of the Great Meeting In the Metropolitan Tabernacle, Newington | Vol. 6 | pg. 357 | 8/21/60 |
| | Opening Service of the Metropolitan Tabernacle, Newington | Vol. 7 | pg. 168 | 3/25/61 |
| | Opening Services: Meeting of the Contributors | Vol. 7 | pg. 185 | 1861 |
| | Opening Services: Meeting of the Neighbouring Churches | Vol. 7 | pg. 193 | 1861 |
| | Public Meeting of Our London Baptist Brethren | Vol. 7 | pg. 225 | 4/2/61 |
| | Public Meeting of the Various Denominations | Vol. 7 | pg. 234 | 4/3/61 |
| | Meeting of Our Own Church | Vol. 7 | pg. 257 | 4/8/61 |
| | Exposition of the Doctrines of Grace | Vol. 7 | pg. 297 | 4/11/61 |
| | Election — Rev. John Bloomfield of Meard's Court | Vol. 7 | pg. 304 | 4/11/61 |
| | Human Depravity — Rev. Evan Probert of Bristol | Vol. 7 | pg. 307 | 4/11/61 |
| | Particular Redemption — J. A. Spurgeon of Southampton | Vol. 7 | pg. 313 | 4/11/61 |
| | Effectual Calling — Rev. James Smith of Cheltenham | Vol. 7 | pg. 318 | 4/11/61 |
| | Final Perseverance of Believers In Christ Jesus — Rev. William O'Neill | Vol. 7 | pg. 323 | 4/11/61 |
| | Minister of New Broad Street Chapel, London | | | |
| | Nonconformity, An Oration — Henry Vincent, Esq. | Vol. 7 | pg. 331 | 4/12/61 |
| | Our Morning Readings | Vol. 12 | pg. 264 | 1866 |
| | Personal Testimonies — Dr. Macaulay, Dr. Alexander McLaren, Dr. Clifford, "The Original Succession Magazine" (Edinburgh), Pastor W. J. Harris, "The Free Methodist," "The Methodist Recorder", "The Methodist Times" | | | |
| | Letter Concerning His Illness | Vol. 17 | pg. 312 | 6/5/71 |
| | Letter From Mr. Spurgeon | Vol. 17 | pg. 324 | 6/11/71 |
| | Letter Concerning His Illness | Vol. 17 | pg. 336 | 6/18/71 |
| | Letter To Church While On Vacation | Vol. 18 | pg. 636 | 11/5/72 |
| | A New Work For Families | Vol. 18 | pg. 660 | 11/21/72 |
| | Spurgeon's Prayer For The Church While Ill | Vol. 21 | pg. 48 | 1/17/75 |
| | Letter From Mr. Spurgeon | Vol. 21 | pg. 72 | 1/31/75 |
| | Letter To Church While Absent Due To Illness | Vol. 21 | pg. 84 | 2/7/75 |
| | Letter To Church While In Quarantine | Vol. 21 | pg. 96 | 2/14/75 |
| | To My Beloved Church and Congregation | Vol. 25 | pg. 36 | 1/18/79 |
| | To Hearers and Readers At Tabernacle And Elsewhere | Vol. 25 | pg. 60 | 1/79 |
| | Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 25 | pg. 72 | 1879 |
| | "To My Church And People", Mentone | Vol. 25 | pg. 84 | 2/6/79 |
| | Letter From Spurgeon Written From Mentone | Vol. 25 | pg. 96 | 2/11/79 |
| | Letter From Mr. Spurgeon | Vol. 25 | pg. 120 | 2/20/79 |
| | Letter From Spurgeon Written From Mentone | Vol. 25 | pg. 132 | 2/28/79 |
| | Letter To Church Written From Mentone | Vol. 25 | pg. 156 | 3/14/79 |
| | Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 25 | pg. 180 | 3/20/79 |
| | Letter From Mr. Spurgeon Written From Mentone | Vol. 25 | pg. 192 | 3/27/79 |
| | To My Church, Congregation, and Sermon Readers | Vol. 25 | pg. 648 | 11/14/79 |
| | Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 25 | pg. 672 | 11/27/79 |
| | Christmas Letter While Absent From His Church | Vol. 25 | pg. 708 | 12/19/79 |
| | Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 26 | pg. 12 | 12/26/79 |

| | | | |
|--|---------|---------|----------|
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 26 | pg. 24 | 1/1/80 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 26 | pg. 36 | 1/8/80 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 26 | pg. 60 | 1/16/80 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 26 | pg. 72 | 1/22/80 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 26 | pg. 84 | 1/31/80 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 27 | pg. 664 | 11/19/81 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 27 | pg. 676 | 11/24/81 |
| To the Readers of the Sermon, Mentone | Vol. 28 | pg. 648 | 11/18/82 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 30 | pg. 24 | 12/29/83 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 30 | pg. 60 | 1/17/84 |
| To My Congregation of Hearers and Readers | Vol. 31 | pg. 60 | 1885 |
| To My Hearers And Readers, Mentone | Vol. 31 | pg. 72 | 2/1/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 84 | 2/7/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 96 | 2/16/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 120 | 2/21/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 132 | 3/1/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 144 | 3/8/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 156 | 3/14/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 180 | 3/21/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 192 | 3/27/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 31 | pg. 204 | 4/5/85 |
| Letter From Mr. Spurgeon | Vol. 32 | pg. 60 | 1886 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Westwood | Vol. 32 | pg. 276 | 5/16/86 |
| Letter From Mr. Spurgeon | Vol. 32 | pg. 648 | 11/20/86 |
| From Mr. Spurgeon at Mentone, France | Vol. 32 | pg. 660 | 1886 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 33 | pg. 24 | 1/1/87 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 33 | pg. 36 | 1/8/87 |
| Letter From Mr. Spurgeon , Mentone | Vol. 33 | pg. 48 | 1/15/87 |
| Letter From Mr. Spurgeon | Vol. 33 | pg. 624 | 1887 |
| Letter From Mr. Spurgeon | Vol. 33 | pg. 636 | 1887 |
| To The Church At The Tabernacle | Vol. 33 | pg. 648 | 11/17/87 |
| A Letter To My Sermon-readers | Vol. 33 | pg. 684 | 1887 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 33 | pg. 696 | 12/9/87 |
| The Baptist Union Censure | Vol. 34 | Forward | 1888 |
| Letter From Westwood | Vol. 34 | pg. 624 | 11/13/88 |
| On The Wing | Vol. 34 | pg. 636 | 11/19/88 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 34 | pg. 660 | 11/24/88 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 34 | pg. 672 | 12/1/88 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 34 | pg. 684 | 12/8/88 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 34 | pg. 696 | 12/13/88 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 34 | pg. 720 | 12/20/88 |
| New Year's Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 12 | 1/1/89 |
| Letter Following A Serious Fall, Mentone | Vol. 35 | pg. 24 | 1/3/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 36 | 1/12/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 60 | 1/17/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 72 | 1/26/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 84 | 1/31/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 96 | 2/11/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 108 | 2/16/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 660 | 11/28/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 35 | pg. 672 | 12/7/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon Upon Losing His Voice | Vol. 35 | pg. 684 | 12/14/89 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 36 | pg. 24 | 1/3/90 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Mentone | Vol. 36 | pg. 48 | 1/11/90 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 36 | pg. 636 | 11/15/90 |
| Spurgeon "Brought Very Low" | Vol. 36 | pg. 648 | 11/20/90 |
| Spurgeon Unable To Write Letter, Menton | Vol. 36 | pg. 660 | 11/30/90 |

| | | | |
|---|---------|---------|----------|
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 36 | pg. 672 | 12/6/90 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 36 | pg. 684 | 12/12/90 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 12 | 1891 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 24 | 1/3/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 36 | 1/9/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 72 | 1891 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 60 | 1/15/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, London | Vol. 37 | pg. 216 | 4/13/91 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 360 | 1891 |
| Spurgeon Suffers Relapse | Vol. 37 | pg. 372 | 7/12/91 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 384 | 7/19/91 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 396 | 1891 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 408 | 1891 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 420 | 1891 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 432 | 1891 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 444 | 1891 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 456 | 1891 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 468 | 1891 |
| Report Concerning Mr. Spurgeon | Vol. 37 | pg. 480 | 9/13/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Westwood | Vol. 37 | pg. 492 | 9/13/91 |
| Letter To the Congregation, Westwood | Vol. 37 | pg. 504 | 9/20/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Westwood | Vol. 37 | pg. 516 | 9/24/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Westwood | Vol. 37 | pg. 528 | 10/3/91 |
| Letter To the Congregation, Eastbourne | Vol. 37 | pg. 540 | 10/10/91 |
| “To My Beloved Flock At the Tabernacle | Vol. 37 | pg. 552 | 10/18/91 |
| Spurgeon Travels From London to Calai | Vol. 37 | pg. 564 | 10/26/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 576 | 10/31/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 588 | 11/7/91 |
| “Narrowly Escaped the Hand of Death” | Vol. 37 | pg. 600 | 11/14/91 |
| To The Readers of My Sermons, Menton | Vol. 37 | pg. 612 | 11/21/91 |
| To The Readers of My Sermons, Menton | Vol. 37 | pg. 624 | 11/28/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 636 | 12/5/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 37 | pg. 648 | 12/12/91 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 38 | pg. 24 | 1/2/92 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 38 | pg. 36 | 1/9/92 |
| Letter From Mr. Spurgeon, Menton | Vol. 38 | pg. 48 | 1/17/92 |
| First Report of the Death of Mr. Spurgeon | Vol. 38 | pg. 72 | 2/7/92 |
| Fuller Report of the Death of Mr. Spurgeon | Vol. 38 | pg. 84 | 2/14/92 |
| Report of Funeral Services | Vol. 38 | pg. 96 | 2/21/92 |
| Comments of Dr. Pierson Concerning Spurgeon | Vol. 38 | pg. 132 | 1892 |

